तालीमकी बुनियादें

लेखक : कि० घ० मशरूवाला

अिस पुस्तकके निबन्ध तालीम लेनेवाले बालक तथा तालीम देनेवाले शिक्षक दोनोंको ध्यानमें रखकर लिखे गये हैं। तालीमके विभिन्न पहलुओंकी अपने मौलिक और तात्त्विक ढंगसे गहरी चर्चा करके लेखकने अिसमें यह दिखानेका प्रयत्न किया है कि तालीमका मुख्य ध्येय मनुष्यकी दैवी सम्पत्तियोंका अुत्कर्ष साधना, चित्तका गुण-विकास करना और विवेक-बुद्धिकी वृद्धि करना है। स्वतंत्र भारतकी नअी पीढ़ीकी तालीममें रस लेनेवाले प्रत्येक शिक्षाशास्त्री, शिक्षक और माता-पिताको यह पुस्तक जरूर पढ़नी चाहिये।

कीमत २.०० डाकखर्च १.००

शिक्षाका विकास

लेखक : कि० घ० मशरूवाला

बुनियादी तालीमका धीरे-धीरे कैसे विकास हुआ, यह बतानेवाले तथा बुनियादी शिक्षाके आधारभूत सिद्धान्तोंकी गहरी और विशद चर्चा करनेवाले लेखोंका अिस पुस्तकमें संग्रह किया गया है। साथमें श्री नरहरि परीखकी भूमिका भी दी गअी है, जो पाठकोंको आगे आनेवाले लेखोंके लिअे तैयार करती है। भूमिकाके दो प्रकरणोंमें बुनियादी शिक्षाके मुद्दों, अुसकी कठिनािअयों और अुनके अुपायोंके बारेमें तथा अितिहासके शिक्षणके बारेमें विस्तृत चर्चा की गअी है।

१.२५ डाकखर्च ०.३१

सम्पादकका निवेदन

नवजीवन ट्रस्टने सन् १९४९ में 'विद्यार्थियोंसे' नामक जो बड़ा ग्रन्थ प्रकाशित किया था, अुसका यह संक्षिप्त संस्करण है। अुसकी पृष्ठसंख्या ३०० से अूपर थी। अुसमें विद्यार्थियों सम्बन्धी गांधीजीका सारा साहित्य आ गया है और अुसकी सामग्री कालक्रमसे जमाओ गओ है। अुस ग्रन्थका अपना महत्त्व तो है ही। फिर भी हमें लगा कि अैसी अेक छोटी पुस्तक तैयार करना अुपयोगी होगा, जो विद्यार्थियोंके सामने संक्षेपमें और व्यवस्थित ढंगसे वे सारी बातें गांधीजीके ही शब्दोंमें रख सके, जो गांधीजी अुनसे कहना चाहते थे। अुसीका परिणाम यह प्रस्तुत पुस्तक है।

अिस संक्षिप्त संस्करणकी सामग्री आवश्यक रूपमें विषयके अनुसार जमाओ गओ है। लेकिन हर अुद्धरणके नीचे अुसकी तारीख दी गओ है, ताकि यह मालूम हो सके कि वह कब लिखा या कहा गया था। ये अुद्धरण अुन्हीं शब्दों तक सीमित रखे गये हैं, जो गांधीजीने खास करके विद्यार्थियोंको ही ध्यानमें रखकर कहे या लिखे थे।

अनुक्रमणिकामें दिये गये शीर्षकों पर सरसरी निगाह डालनेसे मालूम हो जायगा कि गांधीजीने विद्यार्थियोंके जीवनके हर पहलूको छुआ है। अुससे यह भी प्रगट होगा कि गांधीजीका सबसे ज्यादा जोर धर्म, चारित्र्य और सेवा पर था। वे नौजवानोंके भारी महत्त्वको जानते थे — खास करके विद्यार्थी-जीवनके — और अुन्होंने अिस मूल्यवान समयको समझ लिया था कि विद्यार्थियोंकी परेशानियों, अुत्साह और शक्तिको अैसी दिशामें मोड़ना चाहिये, जिससे स्वयं अुन्हें, हमारे राष्ट्रको और सारे विश्वको अधिकसे अधिक सुख प्राप्त हो।

हमें आशा है कि विद्यार्थी अुस अमर सन्देशका सावधानीसे अध्ययन करेंगे और अुसे अपने हृदयमें बैठा लेंगे, जो गांधीजीने अुन्हें दिया है।

अंग्रेजीसे हिन्दी अनुवाद श्री रामनारायण चौधरीने किया है।

चिकागो, ८-११-'५०
अमेरिका

भारतन् कुमारप्पा

अनुक्रमणिका

छठा विभाग : शिक्षा

सातवां विभाग : रचनात्मक कार्य

आठवां विभाग : विद्यार्थिनियोंके लिअे

नवां विभाग : विवाह और संतति-निग्रह

दसवां विभाग : विविध

मेरा अधिकार

मैंने अुनके (विद्यार्थियोंके) साथ सदा गहरा सम्पर्क रखा है। वे मुझे जानते हैं और मैं अुन्हें जानता हूं। अुन्होंने मुझे सेवा दी है। बहुतसे भूतपूर्व कालेज-छात्र मेरे आदरणीय साथी हैं। मैं जानता हूं कि वे भविष्यकी आशा हैं। असहयोगके वैभवकालमें अुन्हें अपने स्कूल-कालेज छोड़नेका निमंत्रण दिया गया था। कुछ अध्यापक और विद्यार्थी, जिन्होंने कांग्रेसकी पुकारका जवाब दिया था, अभी तक अुस पर डटे हुअे हैं और अुन्होंने अपना और देशका बड़ा लाभ किया है।

रचनात्मक कार्यक्रम अुसका अर्थ और स्थान, पृ० २५

मैं पिछले दस वर्षोंमें हजारों विद्यार्थियोंके सम्पर्कमें आया हूं। अुन्होंने मुझ पर विश्वास करके अपने अत्यन्त भीतरी भेद मुझे बताये हैं और अपने दिलोंमें घुसनेका मुझे हक दिया है। अिसलिअे मैं आपकी तमाम कठिनाअियां और हरअेक कमजोरी जानता हूं। मुझे यह पता नहीं है कि मैं आपकी कोअी कारगर मदद कर सकता हूं या नहीं। मैं केवल आपका हितैषी और पथप्रदर्शक बन सकता हूं, आपके रंजमें शरीक होनेकी कोशिश कर सकता हूं और अपने अनुभवका लाभ आपको दे सकता हूं।

यंग अिंडिया, ४–८–'२७

मेरा अधिकार

मैंने अुनके (विद्यार्थियोंके) साथ सदा गहरा सम्पर्क रखा है। वे मुझे जानते हैं और मैं अुन्हें जानता हूं। अुन्होंने मुझे सेवा दी है। बहुतसे भूतपूर्व कालेज-छात्र मेरे आदरणीय साथी हैं। मैं जानता हूं कि वे भविष्यकी आशा हैं। असहयोगके वैभवकालमें अुन्हें अपने स्कूल-कालेज छोड़नेका निमंत्रण दिया गया था। कुछ अध्यापक और विद्यार्थी, जिन्होंने कांग्रेसकी पुकारका जवाब दिया था, अभी तक अुस पर डटे हुअे हैं और अुन्होंने अपना और देशका बड़ा लाभ किया है।

रचनात्मक कार्यक्रम अुसका अर्थ और स्थान, पृ० २५

मैं पिछले दस वर्षोंमें हजारों विद्यार्थियोंके सम्पर्कमें आया हूं। अुन्होंने मुझ पर विश्वास करके अपने अत्यन्त भीतरी भेद मुझे बताये हैं और अपने दिलोंमें घुसनेका मुझे हक दिया है। असलिअे मैं आपकी तमाम कठिनाअियां और हरअेक कमजोरी जानता हूं। मुझे यह पता नहीं है कि मैं आपकी कोअी कारगर मदद कर सकता हूं या नहीं। मैं केवल आपका हितैषी और पथप्रदर्शक बन सकता हूं, आपके रंजमें शरीक होनेकी कोशिश कर सकता हूं और अपने अनुभवका लाभ आपको दे सकता हूं।

यंग अिंडिया, ४-८-'२७

आपने विद्यार्थी-जगतके सिलसिलेमें मेरे लिअे जिस सम्मानका दावा किया है, अुसे स्वीकार करनेका मुझमें साहस नहीं है। परन्तु अेक और सम्मानका दावा करनेका मैं प्रयत्न कर रहा हूं और वह है छात्र-जगतका सेवक बननेका—केवल भारत या बर्माका ही नहीं, बल्कि अगर यह दावा बहुत बड़ा न हो तो विश्वभरके छात्र-जगतका सेवक बननेका। मैं पृथ्वीके दूरतम स्थानोंके कुछ विद्यार्थियोंके सम्पर्कमें हूं और यदि अीश्वर जीवनके कुछ और वर्ष मुझे देगा, तो शायद मैं वह दावा सच्चा सिद्ध कर सकूंगा।

यंग अिंडिया, ४-४-'२९

अुत्तर जीवनमें केवल किताबी पढ़ाअी आपको बहुत काम नहीं देगी। भारतभरके विद्यार्थियोंके पत्र-व्यवहार द्वारा मुझे मालूम हुआ है कि गंदीमार पुस्तकोंमें प्राप्त जानकारीसे अपने मस्तिष्कोंको भरकर अुन्होंने अपना कितना नाश कर लिया है। कुछका मानसिक सन्तुलन नष्ट हो गया है, कुछ पागल हो गये हैं और कुछ नि.सहाय होकर अशुद्ध जीवन व्यतीत कर रहे हैं। मेरा हृदय अुमड आता है, जब वे कहते हैं कि कितना ही प्रयत्न करने पर भी वे जैसेके तैसे रहते हैं, क्योंकि वे शैतान पर काबू नहीं पा सकते। वे कातर होकर पूछते हैं: 'हमें बताअिये, हम शैतानसे कैसे पिण्ड छुड़ायें? जिस अपवित्रताने हमें ग्रसित कर लिया है अुससे कैसे मुक्त हों?' जब मैं अुन्हें रामनाम लेने और अीश्वरके सामने घुटने टेककर अुसकी सहायता लेनेको कहता हूं, तो वे आकर मुझसे कहते हैं, 'हमें पता नहीं अीश्वर कहां है, हम नहीं जानते प्रार्थना क्या होती है।' अुनकी यह दशा हो गअी है। अिसलिअे मैं विद्यार्थियोंसे कहता रहता हूं कि वे सचेत रहें और जो साहित्य अुनके हाथ लग जाय वह सभी न पढ़ें। अुनके शिक्षकोंसे मैं यह कहता हूं कि वे अपने हृदयोंका परिष्कार करें और विद्यार्थियोंसे हृदयका सम्पर्क स्थापित करें। मैंने अनुभव किया है कि शिक्षकोंका काम व्याख्यान-भवनके भीतरकी अपेक्षा बाहर अधिक है। अिस दुनियादारीके जीवनमें जहां शिक्षकों और अध्यापकोंको पेटके लिअे काम करना पड़ता है, अुन्हें विद्यार्थियोंको कक्षा-भवनसे बाहर कुछ देनेके लिअे समय नहीं मिलता। और आजकलके विद्यार्थियोंके जीवन और चरित्रके विकासमें यही सबसे बड़ी रुकावट है। परन्तु जब तक शिक्षक कक्षा-भवनसे बाहरका अपना सारा समय छात्रोंको देनेके लिअे तैयार नहीं होंगे, तब तक बहुत कुछ नहीं हो सकता। अुन्हें छात्रोंके मस्तिष्कके बजाय अुनके हृदयको तैयार करना चाहिये।

यंग अिंडिया, ४–४–'२९

संसारके महानतम पुरुष सदा अकेले रहे हैं। महान पैगम्बर जरथुस्त, बुद्ध, अीसा और मुहम्मदको लीजिये; वे सब अकेले थे।

वस्तु है, जिसके बिना हम कोअी स्थायी या वास्तविक सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। यह गुण धार्मिक चेतनाके बिना अप्राप्य है। हम अीश्वरसे डरें तो हमें मनुष्यका डर नहीं रहेगा। अगर हम यह अच्छी तरह समझ लें कि हमारे भीतर कोअी दिव्य शक्ति है, जो हमारे हर विचार और कृत्यकी साक्षी है और सत्य मार्ग पर हमारी रक्षा और मार्गदर्शन करती है, तो यह स्पष्ट है कि हमें अीश्वरके सिवा पृथ्वीतल पर और किसीका डर नहीं रहेगा। अुस राजाओंके राजाके प्रति स्वामिभक्ति मुख्य है, और सब प्रकारकी स्वामिभक्ति अुसके बाद आती है; और वह पहले प्रकारकी स्वामिभक्ति ही दूसरे प्रकारकी स्वामिभक्तिको अर्थ और आधार देती है।

स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी

मैं गहरे दुःखकी भावनासे स्वीकार करता हूं कि विद्यार्थी-जगतसे श्रद्धा धीरे-धीरे अुठती जा रही है। जब मैं किसी हिन्दू लड़केको राम-नामका आश्रय लेनेका सुझाव देता हूं, तो वह मेरे मुंहकी ओर देखने लगता है और आश्चर्यमें पड़ जाता है कि राम कौन है; जब मैं किसी मुसलमान लड़केसे कुरान पढ़ने और खुदासे डरनेको कहता हूं, तो वह स्वीकार करता है कि वह कुरान नहीं पढ़ सकता और अल्लाह तो केवल कहनेकी बात है। अैसे लड़कोंको मैं कैसे विश्वास दिला सकता हूं कि सच्ची शिक्षाकी पहली सीढ़ी शुद्ध हृदय है? अगर आपको मिलनेवाली शिक्षा आपको अीश्वरसे विमुख करती है, तो मैं नहीं जानता कि अुससे आपको कैसे सहायता मिलेगी और आप संसारकी कैसे मदद करेंगे। आपने अपने अभिनंदन-पत्रमें ठीक कहा है कि मैं मानव-जातिकी सेवा द्वारा अीश्वर-दर्शनका प्रयत्न कर रहा हूं। क्योंकि मुझे मालूम है कि अीश्वर न तो आकाशमें है और न पातालमें है, परन्तु प्रत्येकमें है — भले ही वह हिन्दू हो, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र या पंचम हो, मुसलमान हो, पारसी हो, अीसाअी हो, पुरुष हो या स्त्री हो।

यंग अिंडिया, ४–८–'२७

वह सुख भौतिक बिलकुल नहीं होता, बल्कि भगवानके साथ लौ लगानेसे पैदा होता है। अिसीलिअे मैंने कहा है कि जो मनुष्य धर्मको अस्वीकार करता है, वह भी धर्मके बिना न तो जी सकता है और न जीता है।

यंग अिंडिया, २३-१-'३०

आजकल जीवनसे अीश्वरका सर्वथा बहिष्कार करनेका फैशन हो गया है और आग्रहपूर्वक यह कहा जाता है कि किसी जीते-जागते अीश्वरमें सजीव श्रद्धा रखनेकी आवश्यकताके बिना भी सर्वोच्च प्रकारका जीवन प्राप्त किया जा सकता है। मैं स्वीकार करता हूं कि जिन लोगोंको अपनेसे बेहद अूची किसी सत्तामें विश्वास नहीं है, अुनके दिलों पर मैं धर्मकी महत्ता अंकित नहीं कर सकता। मेरे अपने अनुभवसे तो मुझे यह ज्ञान हुआ है कि किसी अैसे सजीव नियममें, जिसकी आज्ञा पर सारा विश्व चलता है, अटल विश्वास हुअे बिना सम्पूर्ण जीवन असम्भव है। अैसी श्रद्धाके बिना मनुष्य अुस बूंदके सदृश है, जो समुद्रसे बाहर फेंक दी जाने पर नष्ट हुअे बिना नहीं रहती। समुद्रके भीतरकी प्रत्येक बूंद अुसकी शानकी हिस्सेदार होती है और अुसे हमें प्राणवायु प्रदान करनेका सम्मान प्राप्त होता है।

हरिजन, २५-४-'३६

मेरे लिअे नीति, सदाचार और धर्म तीनों पर्यायवाची शब्द हैं। धर्मके बिना नैतिक जीवन बालूकी भीतके समान है। और सदाचार-रहित धर्म अुस पीतलकी तरह है, जो केवल शोर मचाने और सिर फोड़नेके लिअे ही अच्छा है। सदाचारमें सत्य, अहिंसा और ब्रह्मचर्यका समावेश होता है। प्रत्येक सद्गुणका, जिस पर मानव-जातिने कभी भी अमल किया है, सम्बन्ध और अुद्गम अिन्हीं तीन बुनियादी सद्गुणोंसे रहा है। अिनमें भी अहिंसा और ब्रह्मचर्य सत्यसे ही अुत्पन्न होते हैं, और मेरे लिअे सत्य ही अीश्वर है।

हरिजन, ३-१०-'३६

अैसे ही और कअी नाम मैं बता सकता हूं। परन्तु अुन्हें अपनेमें और अीश्वरमें सजीव श्रद्धा थी और चूंकि अुन्हें यह विश्वास था कि अीश्वर अुनके पक्षमें है, अिसलिअे अुन्हें अकेलापन कभी महसूस नही होता था। आपको वह अवसर याद होगा, जब अबू बकर पैगम्बरके भागनेमें अुनके साथ थे और बहुसंख्यक शत्रु अनका पीछा कर रहे थे। अुन्हें अपने भाग्यकी कल्पना करके कम्पन हो रहा था। वे बोले: "हम पर चढ़े आ रहे दुश्मनोंकी तादाद तो देखिये। हम दो आदमी अितनी भारी ताकतका मुकाबला कैसे करेंगे?" क्षण भर भी विचार किये बिना पैगम्बरने अपने वफादार साथीको यह कहकर डांट दिया, "नही, अबू बकर, हम तीन हैं, क्योंकि खुदा हमारे साथ है।" अथवा विभीषण और प्रह्लादकी अजेय श्रद्धाको लीजिये। मैं चाहता हूं कि आप भी अपनेमें और अीश्वरमें अैसी ही सजीव श्रद्धा रखें।

यंग अिंडिया, १०–१०–'२९

कोअी भी मनुष्य धर्मके बिना जी नही सकता। कुछ लोग अैसे है, जो अपनी बुद्धिके अहकारमें कहते है कि हमारा धर्मसे कोअी वास्ता नही। लेकिन यह अुस आदमीकी-सी बात है, जो कहता है कि मैं सांस तो लता हूं, परन्तु मेरे नाक नही है। बुद्धिसे हो या स्वभावसे या अंधविश्वाससे हो, मनुष्य दिव्य तत्त्वके साथ किसी न किसी तरहका सम्बन्ध स्वीकार करता है। घोरसे घोर अज्ञेयवादी या नास्तिक भी किसी नैतिक सिद्धान्तकी आवश्यकता अवश्य स्वीकार करता है और अुसका पालन करनेमें कुछ न कुछ भलाअी और न पालन करनेमें बुराअी मानता है। ब्रेडला, जो अपनी नास्तिकताके लिअे मशहूर है, सदा अपने अंतरतम विश्वासकी घोषणा करनेका आग्रह रखता था। अिस प्रकार सच बोलनेके लिअे अुसे बहुत कष्ट अुठाने पड़े, परन्तु अिससे अुसे आनन्द होता था और वह कहता था कि सत्य स्वयं ही अपना पुरस्कार है। यह बात नहीं थी कि सत्य-पालनसे होनेवाले सुखका अुसे कुछ भी खयाल न हो। परन्तु

गुण बड़ा होता है, यह सिद्धान्त सही है, क्योंकि यह व्यवहारमें सत्य है। मेरी राय तो यह है कि जिसे व्यवहारमें सिद्ध नहीं किया जा सकता, वह सिद्धान्तके रूपमें सही नहीं हो सकता।

जब गैलीलियोने घोषणा की कि पृथ्वी गेंदकी तरह गोल है और अपनी धुरी पर घूमती है, तब अुसे कल्पनाशूर और स्वप्नद्रष्टा बना कर अुसकी खिल्ली अुड़ाअी गअी और गालियोंसे अुसका स्वागत किया गया। परन्तु आज हमें मालूम है कि गैलीलियोका कहना ठीक था और अुसके विरोधी ही, जो पृथ्वीको स्थिर और थालीकी तरह चपटी मानते थे, अपने अज्ञानके कल्पनालोकमें रम रहे थे।

आधुनिक शिक्षाका झुकाव हमारी दृष्टिको आत्मासे विमुख बनानेकी ओर है। अिसलिअे आत्मबल या रूहानी ताकतकी सम्भावनाअें हमें अपील नहीं करतीं और परिणामस्वरूप हमारी आंखें नाशवान और क्षणभंगुर भौतिक शक्ति पर जम जाती हैं। अवश्य ही यह जड़ कल्पना-हीनताकी पराकाष्ठा है।

परन्तु मैं आशा और धैर्य पर जीवित हूं। मुझे अपनी बातकी सचाअी पर अटल श्रद्धा है — अैसी श्रद्धा है जिसका आधार मेरा और मेरे साथियोंका अनुभव है। और हरअेक छात्र केवल धीरज और निष्पक्षतासे खोज करनेकी शक्ति रखकर ही प्रयोग करके अपने लिअे सिद्ध कर सकता है कि

१. केवल सख्या बेकार चीज है।

२. आत्मबलके सिवा अन्य सब बल क्षणभंगुर और व्यर्थ हैं।

यह कहनेकी तो जरूरत ही नहीं कि यदि अुपरोक्त बातें ठीक हैं, तो प्रत्येक विद्यार्थीका सतत प्रयत्न होना चाहिये कि वह आत्म-संयम और आत्मशुद्धिके द्वारा अपने आपको आत्मबलके अिस बेमिसाल अस्त्रसे सुसज्जित कर ले।

यंग अिंडिया, १४-११-'२९

संख्याबलसे कायरोंको खुशी होती है। जो व्यक्ति बहादुर हैं, वे अकेले लड़नेमें गौरव मानते हैं। और आप सब यहां यह व्यक्ति

यदि 'आत्मबल' शब्द आजकलके विद्यार्थियोको निरर्थक मालूम होता है, तो अिससे यही प्रगट होता है कि हमारी कितनी हीन दशा हो गअी है। क्या यह अत्यन्त दुःखकी बात नही है कि आत्मा-सम्बन्धी बातों अर्थात् शाश्वत सचाअियोको तो हमारे युवक खयाली पुलाव समझें और अस्थायी व्यवस्थाओको ही व्यावहारिक मानकर अुनसे प्रभावित हो?

हम दिन-रात अपनी आखोके सामने निरी संख्याकी व्यर्थताका प्रत्यक्ष प्रमाण देख रहे है। अिस बातके लिअे अिससे अधिक प्रबल प्रमाणकी क्या आवश्यकता है कि तीस करोड़ भारतीयोके राष्ट्र पर आज अेक लाखसे भी थोडे अग्रेज राज्य कर रहे है? अेक सिंहको देखते ही हजारो भेडें भाग जाती है। कारण स्पष्ट है। भेड़ोंको अपनी दुर्बलताका ज्ञान है और सिंहको अपने बलका। सिंहका अपनी ताकतका खयाल भेडोके सख्याबल पर प्रभुत्व जमा लेता है। अिसी अुपमासे क्या हम यह निष्कर्ष नही निकाल सकते कि 'आत्मबल' या 'रूहानी ताकत' आखिर निरी कल्पना या हवाअी किला न होकर ठोस वास्तविकता हो सकती है?

मै संख्याबलकी निंदा नही करना चाहता। अुसका अुपयोग तो है, परन्तु तभी जब अुसकी पीठ पर भीतरी आत्मबल हो। लाखो चीटिया मिलकर हाथीके किसी मर्मस्थान पर हमला करके अुसे मार डाल सकती है। अुनकी अेकताकी भावना, भिन्न-भिन्न शरीर होने पर भी अेक आत्माका भान, दूसरे शब्दोमें अुनका आत्मबल चीटियोंको अजेय बना देता है। अिसी तरह जिस क्षण हम चीटियोंकी तरह सामूहिक अेकताकी भावना पैदा कर लेंगे, अुसी क्षण हमारा भी कोअी मुकाबला नही कर सकेगा और हम अपनी जंजीरोंसे मुक्त हो जायेंगे।

मेरा यह दृढ विश्वास है कि हमारी राष्ट्रीय पाठशालाओंके छात्र मुट्ठीभर होने पर भी यदि त्यागकी सच्ची भावना और अपने आदर्शोंमें सजीव श्रद्धासे प्रेरित हो, तो वे सरकारी शिक्षा-संस्थाओंके तमाम विद्यार्थियोंसे भी देशके अधिक काम आयेंगे। सख्यासे

रखती है। मैं यह भी जानता हूं कि भारत जैसे देशमें, जहां संसारके अधिकांश धर्मोंका प्रतिनिधित्व है और जहां अेक ही धर्ममें अितने अधिक सम्प्रदाय हैं, धार्मिक शिक्षाकी व्यवस्था करनेके बारेमें अवश्य कठिनाअी होगी। परन्तु यदि भारतको रूहानी दिवालियापन घोषित नहीं करना है, तो अुसके युवक-युवतियोंकी धार्मिक शिक्षा कमसे कम अुतनी जरूरी अवश्य मानी जानी चाहिये जितनी लौकिक शिक्षा। यह सच है कि धार्मिक पुस्तकोंका ज्ञान और धर्मका ज्ञान दोनों अेक ही चीज नहीं हैं। परन्तु हमें धर्म नहीं मिल सकता हो तो अपने लड़के-लड़कियोंको अुससे अुतरती हुअी दूसरी चीज देकर ही सन्तोष करना होगा, और अैसी शिक्षा स्कूलोंमें दी जा सके या न दी जा सके, फिर भी वयस्क छात्रोंको अन्य विषयोंकी भांति धार्मिक मामलोंमें भी स्वावलम्बनकी कला सीख लेनी चाहिये। जैसे अुनकी अपनी वाद-विवाद सभायें और अब कताअी-मंडल हैं, वैसे वे अपनी धार्मिक कक्षायें जारी कर सकते हैं।

शिमोगामें कालेजियट हाअीस्कूलके विद्यार्थियोंमें भाषण देते समय सभामें पूछताछ करने पर मुझे पता लगा कि सौ या अधिक हिन्दू लड़कोंमें से मुश्किलसे आठ अैसे थे जिन्होंने भगवद्गीता पढ़ी थी। अिस प्रश्नके जवाबमें कि जिन थोड़ेसे विद्यार्थियोंने गीता पढ़ी थी अुनमें क्या कोअी अैसा भी है जो अुसे समझता हो, किसीने अपना हाथ नहीं अुठाया। पांच या छह मुसलमान लड़कोंमें से सबने हाथ अुठाकर कहा कि हमने कुरान पढ़ा है, परन्तु केवल अेक ही कह सका कि मैं अुसका अर्थ जानता हूं। मेरी रायमें गीता समझनेके लिअे बहुत ही आसान पुस्तक है। वह कुछ मौलिक समस्यायें जरूर अुपस्थित करती है, जिनका हल बेशक कठिन है। परन्तु मेरे मतानुसार गीताके साधारण अर्थके बारेमें कोअी भूल नहीं हो सकती। समस्त हिन्दू सम्प्रदाय अुसे प्रमाण मानते हैं। वह हर प्रकारकी कट्टरतासे मुक्त है। थोड़ीसी जगहमें वह सम्पूर्ण युक्तियुक्त नैतिक नियमावली दे देती है। अुससे बुद्धि और हृदय दोनोंको सन्तोष होता है। अिस प्रकार वह दार्शनिक और भक्तिपूर्ण दोनों है। अुसका प्रभाव सार्वत्रिक है। अुसकी भाषा

बहादुरी पैदा करने ही के लिअे है। आप अेक हो या अनेक, यही बहादुरी अेकमात्र सच्ची बहादुरी है, और सब झूठी है। और आत्माकी बहादुरी त्याग, निश्चय, श्रद्धा और नम्रताके बिना प्राप्त नहीं हो सकती।

यंग अिंडिया, १७-६-'२६

३

विद्यार्थी और गीता

अुस दिन बातचीतके दौरानमें अेक पादरी मित्रने मुझसे पूछा कि 'यदि भारत सचमुच आध्यात्मिक दृष्टिसे अुन्नत देश है, तो यह क्या बात है कि मैं अैसे थोड़ेसे ही विद्यार्थी पाता हूं जिन्हें अपने धर्मका, भगवद्‌गीता तकका कुछ भी ज्ञान हो।' अिस कथनके समर्थनमें अुन मित्रने, जो स्वयं अेक शिक्षाशास्त्री हैं, मुझसे कहा कि 'मुझसे जो विद्यार्थी मिलते हैं अुनसे मैं यह जरूर पूछ लेता हूं कि तुम्हें अपने धर्मका या भगवद्‌गीताका ज्ञान है या नहीं। अुनमें से बहुत ज्यादा लोगोंको अैसा कोअी ज्ञान नहीं होता।'

अिस अवसर पर मेरा अिस निष्कर्ष पर विचार करनेका अिरादा नहीं है कि चूंकि कुछ छात्रोंको अपने ही धर्मका ज्ञान नहीं है, अिसलिअे भारत आध्यात्मिक दृष्टिसे अुन्नत देश नहीं है। मैं अितना ही कहूंगा कि छात्रोंमें धार्मिक पुस्तकोंके अज्ञानका जरूरी तौर पर यह अर्थ नहीं है कि विद्यार्थी जिन लोगोंमें से हैं अुनमें कोअी धार्मिक जीवन या आध्यात्मिकता ही नहीं है। परन्तु अिसमें सन्देह नहीं कि सरकारी शिक्षा-संस्थाओंसे निकलनेवाले अधिकांश विद्यार्थी किसी भी धार्मिक शिक्षासे वंचित रहते हैं। पादरी महाशयके कथनोंका सम्बन्ध मैसूरके छात्रोंसे था और मुझे यह देखकर कुछ पीड़ा हुअी कि मैसूरके विद्यार्थियोंको भी राज्यकी पाठशालाओंमें धार्मिक शिक्षा नहीं मिलती। मुझे यह भी मालूम है कि अेक अैसी विचारसरणी है, जो सार्वजनिक पाठशालाओंमें केवल धर्मनिरपेक्ष शिक्षा देनेमें ही विश्वास

कुरान और बाअिबल भी अीश्वरके अपूर्ण शब्द हैं। और चूंकि हम अपूर्ण प्राणी हैं और तरह तरहके विकारोंसे अिधर-अुधर खिंचते होते हैं, अिसलिअे हमारे लिअे अीश्वरका यह शब्द पूरी तरह समझना भी असम्भव है। अिसीलिअे मैं हिन्दू लड़केसे कहता हूं कि जिस परम्पराओंमें वह पला है, अुसकी जड़ अुसे नहीं अुखाड़ना चाहिये। अिसी प्रकार मैं मुसलमान या अीसाअी लड़केसे भी कहता हूं कि अुसे अपनी परम्पराओंकी जड़ नहीं अुखाड़ना चाहिये। और जिस प्रकार जहां मैं आपके बाअिबल सीखनेका और कुरान सीखनेका स्वागत करूंगा, वहां यदि मुझमें आग्रह करनेकी सत्ता होगी तो मैं निःसन्देह आग्रह करूंगा कि आप सारे हिन्दू लड़के गीता सीखें। यह मेरा विश्वास है कि हम स्कूलोंमें लड़कोंके आसपास जो अुच्छृंखलता देखते हैं, जीवन-सम्बन्धी महत्त्वकी बातोंमें जो लापरवाही पाअी जाती है और जिस हलकेपनसे विद्यार्थी-जगत जीवनके सबसे बड़े और बुनियादी सवालोंके बारेमें काम लेता है, अुसका कारण अुस परम्पराका अुखड़ जाना है जिससे लड़कोंको अब तक पोषण मिलता रहा है।

परन्तु कोअी मुझे गलत न समझे। मेरी यह राय नहीं है कि सभी प्राचीन बातें अिसीलिअे अच्छी हैं कि वे प्राचीन हैं। मैं प्राचीन परम्पराके सामने अीश्वर-प्रदत्त बुद्धिशक्तिको समर्पित कर देनेके पक्षमें नहीं हूं। कोअी परम्परा कितनी ही पुरानी हो, यदि अुसका सदाचारके साथ मेल नहीं बैठता, तो वह देशसे मुंह काला कर देने योग्य है। अस्पृश्यता प्राचीन परम्परा मानी जा सकती है, बाल-विधवापन और बाल-विवाहकी सम्थाको पुरानी परम्परा माना जा सकता है और अिसी तरह बहुतसी प्राचीन भयंकर मान्यताओं और अंधविश्वासपूर्ण रिवाज भी माने जा सकते हैं। मेरे पास सत्ता हो तो मैं अुनका अेक सपाटेमें सफाया कर दूं। अिसलिअे जब मैं प्राचीन परम्पराका आदर करनेकी बात कहता हूं, तो अब आप समझ गये होंगे कि मेरा क्या मतलब होता है। और चूंकि मुझे भगवद्गीतामें वही अीश्वर दिखाअी देता है जो बाअिबल और कुरानमें दिखाअी देता है, अिसीलिअे मैं हिन्दू लड़कोंसे कहता हूं कि वे भगवद्गीताके

निहायत ही आसान है। फिर भी मेरे खयालसे अुसका हर देशी भाषामें अधिकृत संस्करण होना चाहिये और अनुवाद अिस प्रकार तैयार होने चाहिये कि अुनमें बारीक सैद्धान्तिक चर्चा न आये और गीताकी शिक्षा साधारण आदमियोंकी समझमें आ जाय। अिस सुझावका अुद्देश्य किसी भी प्रकार यह नहीं है कि अनुवाद मूलग्रंथका पूरक हो सकता है। कारण, मैं अपना यह मत दोहराता हूं कि प्रत्येक हिन्दू लड़के और लड़कीको संस्कृत जानना चाहिये। परन्तु अभी बहुत समय तक लाखों लोग संस्कृतके ज्ञानसे विहीन रहेंगे। अुन्हें संस्कृत न जाननेके कारण भगवद्गीताकी शिक्षासे वंचित रखना आत्म-घातक होगा।

यंग अिंडिया, २५–८–'२७

आप अपने मानपत्रमें कहते हैं कि आप भी मेरी ही तरह रोज बाअिबल पढ़ते हैं। मैं नहीं कह सकता कि मैं रोज बाअिबल पढ़ता हूं, परन्तु मैं यह कह सकता हूं कि मैंने बाअिबलको नम्र और प्रार्थनापूर्ण वृत्तिसे पढ़ा है, और यदि आप भी बाअिबलको अुसी वृत्तिसे पढ़ रहे हैं तो यह अच्छी बात है। लेकिन आपमें से ज्यादा लड़के तो हिन्दू होंगे; काश आप मुझे कह सकते कि कमसे कम आपके हिन्दू लड़के प्रेरणा प्राप्त करनेके लिअे नित्य भगवद्गीता पढ़ रहे हैं। कारण, मेरा विश्वास है कि संसारके समस्त महान धर्म न्यूनाधिक रूपमें सत्य हैं। मैं 'न्यूनाधिक' अिसलिअे कहता हूं कि हर चीज, जिसे मनुष्यका हाथ स्पर्श कर देता है, अिसी कारण अपूर्ण बन जाती है कि मानव प्राणी अपूर्ण होते हैं। पूर्णता अेकमात्र अीश्वरका ही गुण है और वह अवर्णनीय है, और अनिर्वचनीय है। मैं यह अवश्य मानता हूं कि प्रत्येक मानव प्राणीके लिअे वैसा ही सम्पूर्ण बनना सम्भव है जैसा अीश्वर है। हम सबके लिअे सम्पूर्णताकी आकांक्षा रखना आवश्यक है। परन्तु जब वह सुखद अवस्था प्राप्त होती है, तब वह अवर्णनीय हो जाती है, अुसकी व्याख्या नहीं की जा सकती। और अिसलिअे मैं सम्पूर्ण विनयके साथ स्वीकार करता हूं कि वेद,

अधिक प्रेरणा प्राप्त करेंगे। कारण, अन्य किसी पुस्तककी अपेक्षा गीता अुनके लिअे अधिक अनुकूल होगी।

यंग अिंडिया, २२–९–'२७

मैं भगवद्गीताके श्रद्धापूर्ण अध्ययनके बराबर बलदायक और किसी चीजकी कल्पना नही कर सकता और यदि विद्यार्थी यह याद रखे कि अुन्हें संस्कृतके ज्ञानका या गीताके ज्ञानका भी दिखावा करनेके लिअे अुसे नही सीखना है, तो अुन्हें मालूम हो जायगा कि वे अुसे आध्यात्मिक शाति प्राप्त करने और अपने सामने आनेवाली नैतिक कठिनाअियां हल करनेके लिअे सीखते हैं। कोअी भी मनुष्य, जो पूज्य भावसे अुस पुस्तकके अध्ययनमें प्रवृत्त होता है, राष्ट्रका और अुसके द्वारा मानव-जातिका सच्चा सेवक बने बिना नही रह सकता।

यंग अिंडिया, ३–११–'२७

गीतामें कर्मका अुपदेश है, भक्तिका अुपदेश है और ज्ञानका अुपदेश है। जीवनमें अिन तीनोंका सामंजस्य होना चाहिये। परन्तु सेवाका अुपदेश सबका आधार है। और जो लोग देशकी सेवा करना चाहते हैं, अुनके लिअे अिससे ज्यादा जरूरी और क्या हो सकता है कि वे अुस अध्यायसे आरम्भ करें जिसमें कर्मके अुपदेशकी मीमांसा की गअी है। परन्तु यह आरम्भ आपको पांच आवश्यक साधनाओं अर्थात् अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह और अस्तेयके साथ करना चाहिये। तभी, और केवल तभी, आप गीताका ठीक ठीक अर्थ समझ सकेंगे। और फिर आप अुसे पढ़ेंगे तो आपको अुसमें अहिंसा दिखाअी देगी, न कि हिंसा, जैसा आजकल बहुत लोग देखनेका प्रयत्न करते हैं। आवश्यक तैयारीके साथ आप अुसे पढ़ें, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आपको वह शांति मिलेगी, जिसका आपको पहले कभी पता भी नही होगा।

यंग अिंडिया, ३–११–'२७

धार्मिक शिक्षा

मैंने यह समझनेके खातिर कि धार्मिक शिक्षा देनेका अुत्तम तरीका क्या है, बहुतसे लडको पर प्रयोग किये हैं। जहा मुझे यह पता लगा कि किताबी तालीम कुछ सहायक होती है, वहा मैंने यह भी जाना कि अपने-आपमें अर्थात् अकेली वह बेकार है। मैंने पाया कि धार्मिक शिक्षा वे ही गुरु दे सकते हैं, जो स्वयं धर्ममय जीवन व्यतीत करते हैं। मैंने देखा है कि लडकोंको शिक्षक जो पुस्तकें पढाते या अपनी जबानसे जो व्याख्यान देते हैं, अुनकी अपेक्षा जो जीवन शिक्षक स्वयं व्यतीत करते हैं अुससे लडके अधिक ग्रहण करते हैं। मुझे यह देखकर बडा हर्ष हुआ कि लडके-लडकियोंमें अनजाने ही लोगोंके मनमें प्रवेश करनेकी अेक अैसी शक्ति होती है, जिसके द्वारा वे अपने शिक्षकोंके विचार जान लेते हैं। वह शिक्षक अभागा है, जो मुखसे अेक बात पढाता है और हृदयमें दूसरी ही रखता है!

विथ गाधीजी अिन सीलोन, पृ० १०८–०९

धार्मिक शिक्षाके पाठ्यक्रममें अपने धर्मके अलावा दूसरे मजहबोंके अुसूलोंका अध्ययन शामिल होना चाहिये। अिस कामके लिअे विद्यार्थियोंको संसारके भिन्न-भिन्न महान धर्मोंके सिद्धान्तोंको आदर और अुदार सहिष्णुताकी वृत्तिसे समझने और अुनकी कद्र करनेकी आदत डालनेकी तालीम दी जानी चाहिये। यह काम ठीक ढंगसे किया जायगा, तो अुन्हें आध्यात्मिक आश्वासन प्राप्त होगा और स्वयं अपने धर्मकी अधिक कद्र करनेमें सहायता मिलेगी। परन्तु तमाम बडे धर्मोंका अध्ययन करते समय अेक नियम सदा याद रखना चाहिये और वह यह है कि अुनका अध्ययन अुन धर्मोंके प्रसिद्ध अनुयायियोंके लेखों द्वारा ही करना चाहिये। अुदाहरणार्थ, यदि कोअी भागवतका अध्ययन करना

चाहता है, तो अुसे किसी विरोधी आलोचकके अनुवाद द्वारा नहीं करना चाहिये, बल्कि भागवतके किसी प्रेमी द्वारा किये गये अनुवादसे करना चाहिये। अिसी प्रकार बाअिबलका अध्ययन अीसाअी भक्तोंकी टीकाओं द्वारा ही करना चाहिये। स्वयं अपने धर्मके अतिरिक्त अन्य धर्मोंके अिस अध्ययनसे मनुष्यको तमाम धर्मोंकी मौलिक अेकताका ज्ञान होगा और अुस सार्वत्रिक अेवं शुद्ध सत्यकी भी झांकी मिलेगी, जो मजहबों और सम्प्रदायोंके बाहरी कर्मकाडसे परे है।

कोअी क्षणभरके लिअे भी यह डर न रखे कि दूसरे धर्मोंके श्रद्धापूर्ण अध्ययनसे अपने धर्ममें श्रद्धा कम हो जाने या कमजोर पड जानेकी संभावना है। हिंदू दर्शन मानता है कि सब धर्मोंमें सत्यके तत्त्व विद्यमान हैं और वह अुन सबके प्रति आदर और श्रद्धाका रवैया रखनेका आदेश देता है। अवश्य ही अिसमें यह बात तो आ ही जाती है कि मनुष्यको अपने धर्मके प्रति आदर हो। दूसरे धर्मोंका अध्ययन और अुनकी कद्र करनेसे अुस आदरमें कमी होनेकी जरूरत नहीं; अुसका अर्थ यह होना चाहिये कि वह आदर दूसरे धर्मोंके लिअे भी हो जाय।

अिस मामलेमें धर्मका वही हाल है जो संस्कृतिका है। जैसे अपनी संस्कृतिकी रक्षाका अर्थ दूसरी संस्कृतियोंका तिरस्कार नहीं है, बल्कि दूसरी सब संस्कृतियोंमें जो अुत्तम बातें हों अुनको ग्रहण कर लेनेकी आवश्यकता है, ठीक अुसी तरहकी बात धर्मके बारेमें होनी चाहिये। हमारे वर्तमान डर और अंदेशे आपसी घृणा, दुर्भाव और अविश्वासके अुस जहरीले वातावरणके परिणाम हैं, जो अिस देशमें अुत्पन्न कर दिया गया है। हम पर सदा अिस भयका भूत सवार रहता है कि कहीं कोअी चुपके-चुपके हमारे धर्मकी या हमारे प्रियजनोंके धर्मकी जड़ न अुखाड़ दे। परन्तु जब हम अन्य धर्मों और अुनके अनुयायियोंके प्रति आदर और सहिष्णुता रखना सीख लेंगे, तब यह अस्वाभाविक स्थिति मिट जायगी।

यं० अिंडिया, ६–१२–'२८

५

दूसरे धर्म

अिस कालेजमें शिक्षा पानेवाले ७५ फी सदी हिन्दुओंमें मैं कहूंगा कि जब तक आप अीसाके अुपदेशोंका श्रद्धापूर्वक अध्ययन नहीं करेंगे, तब तक आपके जीवन अपूर्ण रहेंगे। मैं अपने ही अनुभवसे अिस परिणाम पर पहुंचा हूं कि जो लोग दूसरे धर्मोंके अुपदेशोंका श्रद्धापूर्वक अध्ययन करते हैं, वे किसी भी धर्मके हों, अुनके हृदय संकुचित होनेके बजाय विशाल बनते हैं। व्यक्तिशः मैं संसारके किसी भी बड़े धर्मको झूठा नहीं समझता। सभीने मनुष्य-जातिको सम्पन्न बनानेका काम किया है और वे अपना काम अब भी कर रहे हैं। जैसा मैंने कहा है, किसी भी अुदार शिक्षामें दूसरे धर्मोंके श्रद्धापूर्वक अध्ययनका समावेश होना चाहिये, परन्तु मैं अिस बातको लम्बाना नहीं चाहता और न अैसा करनेके लिअे मेरे पास समय है।

अेक बात है जो मुझे आपसे बोलते बोलते सूझी है और जो मेरे बाअिबलके प्रारम्भिक अध्ययन-कालमें आअी थी। ज्यों ही मैंने यह पाठ पढ़ा कि "अिस संसारको अीश्वर और अुसकी नेकीका राज्य बना लो तो और सब वस्तुअें तुम्हें मिल जायंगी", त्यों ही यह मेरे हृदय पर अंकित हो गया। मैं आपसे कहता हूं कि आप अिस पाठको समझें और अुसकी भावनाके अनुसार आचरण करें, तो आपको यह भी जाननेकी जरूरत नहीं रहेगी कि अीसा या किसी अन्य गुरुका आपके हृदयमें क्या स्थान है। यदि आप भंगीका काम करें, अपने हृदयोंको शुद्ध और पवित्र बना लें और अुन्हें तैयार कर लें, तो आप देखेंगे कि ये सारे महान गुरु आपके दिलोंमें आपके निमंत्रणके बिना ही अपना-अपना स्थान ग्रहण कर लेंगे। मेरे खयालसे सभी प्रकारकी सही तालीमका यही आधार है। मनकी संस्कृति हृदयकी संस्कृतिके अधीन होनी चाहिये। भगवान आपको शुद्ध होनेमें सहायता दे!

विथ गांधीजी अिन सीलोन, पृ० १४४

आपका पहला अुद्देश्य है प्राचीन संस्कृतिको पुनर्जीवित करना। फिर आपको यह समझना है कि वह प्राचीन संस्कृति क्या है; और वह निश्चय ही अैसी सस्कृति होनी चाहिये, जिसे पुनर्जीवित करनेमें तमाम विद्यार्थियोको, भले ही वे हिन्दू, अीसाअी, बौद्ध या अन्य किसी धर्मके हों, दिलचस्पी हो। क्योंकि मैं यह मान लेता हूं कि प्राचीन सस्कृतिसे आपका मतलब हिन्दू विद्यार्थियों तक ही सीमित रहनेका नही है।

मैं मान लेता हूं कि विद्यार्थी-काग्रेसमें हिन्दू, अीसाअी, मुसलमान और बौद्ध सभी विद्यार्थी शरीक है। यद्यपि आज अुसकी सूचीमें कोअी मुसलमान या बौद्ध छात्र नही है, परन्तु मेरे तर्कके लिअे यह महत्त्वकी बात नही है। अिसका सीधासा कारण यह है कि आपका अंतिम लक्ष्य स्वराज्य-प्राप्ति है, न केवल जाफनाके हिन्दुओं और अीसाअियोके लिअे, बल्कि अिस द्वीपके तमाम निवासियोके लिअे जिसका जाफना अेक भागमात्र है। अत मैंने अिन धर्मोके विद्यार्थियोंको सम्मिलित करनेके सम्बन्धमें जो कुछ कहा है वह सही है। अैसी स्थितिमे हम फिर अुसी प्रश्न पर पहुंच जाते है कि वह कौनसी प्राचीन सस्कृति है जिसे हम फिरसे जिन्दा करना चाहते हैं। अिसलिअे वह अैसी होनी चाहिये, जो अिन सब वर्गोके लिअे सामान्य हो और स्वीकार्य हो। अिसलिअे वह सस्कृति बेशक मुख्यत. तो हिन्दू सस्कृति ही होगी, फिर भी वह निरी हिन्दू सस्कृति हरगिज नही हो सकती। मैं यह क्यों कहता हू कि वह मुख्यतः हिन्दू संस्कृति ही होगी? अिसीलिअे कि आप लोग, जो प्राचीन संस्कृतिको पुनर्जीवित करना चाहते है, मुख्यत. हिन्दू हैं और बराबर अुस देशकी बात सोचते रहते है जिसे आप अुचित रूपमें और गर्वपूर्ण हर्पके साथ अपनी मातृभूमि कहते है।

हिन्दू संस्कृतिमें, मै नम्रतापूर्वक कहनेका साहस करता हूं कि बौद्ध संस्कृतिका अवश्य समावेश होता है। अिसका सीधासा कारण यह है कि बुद्ध स्वयं अेक भारतीय थे; केवल भारतीय ही नही थे, बल्कि हिन्दुओंमें से अेक हिन्दू थे। मुझे गौतमके जीवनमें कभी अैसी

कोअी बात दिखाअी नहीं दी, जिससे यह माना जा सके कि अुन्होंने हिन्दूधर्मका त्याग करके कोअी नया धर्म अपनाया हो। मेरा काम आसान हो जाता है, जब मैं यह भी सोचता हूं कि ओसा स्वयं अेक अेशियाअी थे; और अिसलिअे वास्तवमें प्रश्न यह विचार करनेका हो जाता है कि अेशियाअी अथवा प्राचीन अेशियाअी संस्कृति क्या है। अिसी प्रकार मुहम्मद भी अेक अेशियाअी थे।

चूंकि आप प्राचीन संस्कृतिमें जो कुछ अुदात्त और स्थायी है अुसीको पुनर्जीवित करना चाह सकते हैं अिसलिअे आपका पुनरुद्धार-कार्य निःसन्देह अिन धर्मोंमें से किसीका विरोधी नहीं होना चाहिये। सो अब प्रश्न अिन तमाम महान धर्मोंके समान तत्त्व अधिकसे अधिक मिलती-जुलती बातें, ढूंढनेका है। और अिस प्रकार अुदात्त और महान वस्तुओंके मेरे अपने अंदाजके अनुसार आप अिस अन्तिम सीधी-सादी बात पर आ जायेंगे कि आप सत्यशील और अहिंसक बनना चाहते हैं, क्योंकि सत्य और अहिंसा अिन तमाम धर्मोंके लिअे समान है।

विथ गांधीजी अिन सीलोन, पृ० १२९-३०

प्राचीन संस्कृतिके गुप्त खजानोंकी खोज करते-करते मुझे अिस अमूल्य रत्नकी प्राप्ति हुअी है कि प्राचीन हिन्दू संस्कृतिमें जो कुछ स्थायी है, वही ओसा, बुद्ध, मुहम्मद और जरथुस्तके अुपदेशोंमें भी पाया जाता है। अिस प्रकार अपने लिअे मैंने यह कामचलाअू व्यवस्था कर ली है। यदि हिन्दूधर्ममें मुझे कोअी अैसी पुरानी बात मिलती है जो मेरे ओसाअी भाअी या मुसलमान भाअीके लिअे दुःखरूप है, तो मैं तुरन्त अुस दावेकी पुरातनताके बारेमें बेचैन और शंकाशील होने लगता हूं। अिस प्रकार आपकी प्रतिज्ञासे मैं अिस अनिवार्य परिणाम पर पहुंचा कि अिन दो अच्छी पुरानी चीजों अर्थात् सत्य और अहिंसा जैसी पुरानी और कोअी चीज दुनियामें नहीं है। और सत्य और अहिंसाके मार्ग पर काम करते हुअे मुझे यह भी पता चला कि यदि प्राचीन रिवाज आजके जुल्मोंमें सहायता दें तो उन

होना चाहिये अुनके अनुकूल न हों, तो मुझे अुन्हें फिरसे जारी करनेका प्रयत्न नहीं करना चाहिये। प्राचीन रिवाज जिस समय अपनाये गये अुस समय बिलकुल अच्छे और शायद सर्वथा आवश्यक रहे होंगे, परन्तु वे वर्तमान आवश्यकताओंकी दृष्टिसे सर्वथा असामयिक हो सकते हैं और फिर भी सत्य और अहिंसाके विपरीत न हों।

तो आप देख सकते हैं कि आपके और मेरे सामने मार्ग कितना सुरक्षित हो जाता है, जब हम अस्पृश्यता, देवदासी-प्रथा, शराबखोरी और दयासागर तथा क्षमासागर अीश्वरके नाम पर होनेवाले पशुवधको झटसे और निःसंकोच अस्वीकार कर देते हैं। हम अिन सब वस्तुओंको निःसंकोच और तुरन्त अस्वीकार कर सकते हैं, क्योंकि वे हमारी नैतिक भावनाको नहीं जंचती। यह तो हुअी अिसके नकारात्मक पहलूकी बात; परन्तु अिसका अेक रचनात्मक पक्ष भी है, जो अुतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना नकारात्मक पहलू है।

रचनात्मक पक्ष आपके सामने रखते हुअे मैं अहिंसाके सिद्धान्तके अेक अति आवश्यक अुप-परिणामकी ओर ध्यान दिला दूं। मैंने चेट्टीनाडमें धुनवाले कार्यकर्ताओंकी अेक छोटीसी मंडलीके सामने यह बात रखी थी। वे मेरे अति प्रिय मित्र और सुधारक हैं। वह अुप-परिणाम या निष्कर्ष यह है: यदि हमें अहिंसक बनना है तो हमें संसारमें अैसी किसी भी वस्तुकी अिच्छा नहीं करनी चाहिये, जो छोटेसे छोटा या नीचेसे नीचा मानव प्राणी भी प्राप्त नहीं कर सकता। यदि यह बात ठीक है — और मेरा दावा है कि यह अहिंसाके सिद्धान्तका सीधा निष्कर्ष है — और आप अिसे स्वीकार करते हैं, तो अिससे यह नतीजा निकलता है कि हमें संसारकी किसी भी वस्तुके बदलेमें अपनी प्राचीन सादगीको छोड़ नहीं देना चाहिये। अब आप शायद समझ सकेंगे कि जो आधुनिक भाग-दौड और आकर्षक चकाचौंध हम पर छाये जा रही है और जो हमारी तरफ पश्चिमसे अितनी जबरदस्त ताकतके साथ आ रही है, अुसका मैं अितना दृढ़ विरोध क्यों करता हूं।

मैंने अपने लेखोंमें भी यह बतानेकी बडी कोशिश की है कि पश्चिममें अपनाये गये आधुनिक तरीकों, आवश्यकताओं और भौतिक

सुपोकी बुद्धिमें और अीसाके महान पार्वतीय अुपदेशकी मूल शिक्षामें क्या अन्तर है। अिसलिअे मैंने अपने भाषणके प्रारम्भिक वाक्योंमें यह संकेत कर दिया था कि आगे क्या आनेवाला है. जब मैंने आपसे यह कहा था कि आखिर तो अीसा भी अेक अेशियाअी ही थे और मुहम्मद भी अेशियाअी थे। परन्तु अीसाके अुपदेशों और सन्देशमें तथा अमरीका, अिग्लैंड और पश्चिमके दूसरे भागोंमें आज जो कुछ हो रहा है अुसमें तीव्र भेद बताते हुअे मैं दक्षिण अफ्रीकाके अपने हजारों अीसाअी भाअियोंके साथ प्रेमपूर्वक रहा हूं; और अब चूंकि मेरा दायरा बड़ा होता जा रहा है, अिसलिअे संसारभरके अीसाअियोंके साथ अुसी प्रकार रह रहा हूं।

अिसलिअे आप यहांके हिन्दू और बौद्ध — बौद्ध मुट्ठीभर हों तो भी — यदि अपनी संस्कृतिके प्रति सच्चे होंगे, तो आप अिस आकर्षक चकाचौंधसे कोअी वास्ता नहीं रखेंगे, भले ही वह अीसाअी वेष धारण करके भी क्यों न आपके पास आये।

यदि आपको अपने पर अटल विश्वास है, यदि आप साथ ही असीम धैर्यकी आदत डालेंगे, तो आप देखेंगे कि अीसाअी मित्र अपने साथ पश्चिमकी चकाचौंध लेकर भी आपके पास आयेंगे तो भी वे अुसे छोड़ देंगे और अपनेमें परिवर्तन करके सादगीके सिद्धान्तको अपना लेंगे; क्योंकि अिसीसे अुस निष्कर्षकी कसौटी पूरी होगी, जो मैंने अिस श्रोता-मंडलीके सामने निकालकर रखनेका साहस किया है।

विथ गांधीजी अिन सीलोन, पृ० १३१–३३

६

प्रार्थना

अेक डाक्टरी शिक्षा पाये हुअे भाअी पूछते हैं :

"प्रार्थनाका अुत्तम रूप क्या है? अुसमें कितना समय लगाना चाहिये? मेरी रायमें न्याय करना प्रार्थनाका सबसे अच्छा तरीका है; और जो सबके साथ न्याय करनेमें सच्चा है, अुसे और कोअी प्रार्थना करनेकी जरूरत नही है। कुछ लोग संध्या करनेमें लम्बा समय खर्च करते हैं और अुनमें से ९५ प्रतिशत जो कुछ बोलते हैं अुसका अर्थ नही समझते। मेरी रायमें प्रार्थना अपनी मातृभाषामें बोलनी चाहिये। अुसीका आत्मा पर अुत्तम प्रभाव पड़ सकता है। मैं कहूंगा कि सच्चे दिलकी प्रार्थना अेक मिनटकी काफी है। अीश्वरसे पाप न करनेकी प्रतिज्ञा करना काफी होना चाहिये।"

प्रार्थनाका अर्थ है पूज्य भावसे अीश्वरसे कुछ मागना। परन्तु अिस शब्दका प्रयोग किसी भी भक्तिपूर्ण कार्यके लिअे भी होता है। पत्रलेखकके ध्यानमें जो बात है अुसके लिअे पूजा शब्द बेहतर है। परन्तु व्याख्याकी बात जाने दीजिअे। वह क्या चीज है जो करोडों हिन्दू, मुसलमान, अीसाअी, यहूदी और दूसरे लोग भगवानकी स्तुतिके लिअे निश्चित समयमे रोज करते हैं? मुझे अैसा प्रतीत होता है कि वह भगवानसे अेकता स्थापित करनेके लिअे हृदयकी चाह है, अुसके आशीर्वादकी माग है। अिस मामलेमें महत्त्व वृत्तिका है, न कि बोले हुअे या गुनगुनाये हुअे शब्दोका। और अक्सर प्राचीन कालसे चले आये परम्परागत शब्दोमें अैसा असर होता है, जो मातृभाषामें अनुवाद होने पर बिलकुल चला जाता है। अिस प्रकार गायत्रीका गुजरातीमें अनुवाद करके पाठ किया जाय, तो वह प्रभाव

नहीं पड़ेगा जो मूल संस्कृतका पड़ता है। राम शब्दके कहते ही लाखों हिन्दुओं पर असर होगा, जब कि गॉड शब्द वे समझ लें तो भी अुसका अुन पर कुछ असर नहीं होगा। दीर्घ अभ्यास और प्रयोगकी पवित्रताके कारण शब्दोंमें अन्तमें अेक शक्ति आ जाती है। अिसलिअे अत्यन्त प्रचलित मंत्रों या श्लोकोंके पुराने संस्कृत रूप बनाये रखनेके पक्षमें बहुत कुछ कहा जा सकता है। यह कहनेकी मैं जरूरत ही नहीं कि अुनका अर्थ ठीक तरहसे समझना चाहिये।

भक्तिके अिन कार्योंमें कितना समय दिया जाय, अिसका कोअी निश्चित नियम नहीं बनाया जा सकता। यह व्यक्तिके स्वभाव पर निर्भर करता है। ये क्षण मनुष्यके दैनिक जीवनमें मूल्यवान होते हैं। अिन अभ्यासोंका अुद्देश्य यह होता है कि हम गंभीर और विनम्र बनें और यह अनुभव कर सकें कि 'असकी' अिच्छाके बिना कुछ नहीं होता और हम 'कुम्भकारके हाथोंकी केवल मिट्टी हैं। अैसे क्षण आते हैं जब मनुष्य अपने निकट भूतकालका सिंहावलोकन करता है, अपनी दुर्बलताअें स्वीकार करता है, क्षमा-याचना करता है और अधिक अच्छा बनने और करनेका बल मांगता है। किसीके लिअे कुछ लोगोंको अेक मिनट काफी है और दूसरोंके लिअे चौबीस घंटे भी थोड़े हैं। जिनके हृदयोंमें ओश्वर निवास करता है, अुनके लिअे परिश्रम करना ही प्रार्थना करना है। अुनका जीवन अेक लगातार प्रार्थना या पूजाका काम है। अुन दूसरे लोगोंके लिअे, जो पापके लिअे कर्म करते हैं, अिन्द्रियोंमें डूबे रहते हैं और स्वार्थके लिअे जीते हैं, कितना भी समय बहुत नहीं होता। यदि अुनमें धैर्य, श्रद्धा और शुद्ध होनेका संकल्प हो तो वे तब तक प्रार्थना करते रहेंगे, जब तक अुन्हें अपने भीतर ओश्वरका निश्चित और शुद्ध करनेवाला अस्तित्व अनुभव न होने लगे। हम साधारण मनुष्योंके लिअे अिन दोनों सीमाओंके बीचका मार्ग ही होना चाहिये। हम अितने अूंचे नहीं हैं जो यह कह सकें कि हमारे सारे कार्य समर्पणके हैं और न शायद हम अितने गिरे हुअे ही हैं कि केवल स्वार्थके लिअे जी रहे हों। अिसीलिअे सब धर्मोंने साधारण भक्तिके लिअे समय निश्चित कर दिये हैं। दुर्भाग्यसे

आजकल यह काम जहां दंभपूर्ण नही है, वहां भी केवल यांत्रिक और औपचारिक हो गया है। अिसलिअे आवश्यकता अिस बातकी है कि भक्तिके अिन कामोंके साथ ठीक वृत्ति रखी जाय।

अीश्वरसे कोअी चीज मागनेके अर्थमें निश्चित व्यक्तिगत प्रार्थना तो वेशक अपनी ही मातृभाषामें होनी चाहिये। अिससे अधिक भव्य बात और क्या हो सकती है कि अीश्वरसे हम सब प्राणियोंके प्रति न्यायपूर्ण व्यवहार कर सकनेकी याचना करें?

यंग अिंडिया, १०–६–'२९

"जहा तक सामूहिक प्रार्थनाका सम्बन्ध है, वह बेकार है। क्या मनुष्योंका अितना भारी समुदाय किसी वस्तु पर, चाहे वह कितनी ही तुच्छ क्यो न हो, कभी अेकाग्र-चित्त हो सकता है? क्या छोटे-छोटे और अज्ञान बालकोंसे यह आशा रखी जा सकती है कि वे अीश्वर और आत्मा और सब मनुष्योंकी समानता तथा अन्य बहुतसी बड़ी-बड़ी बातों-सम्बन्धी हमारे महान धर्मग्रंथोंके सूक्ष्म विचारों पर अपने चंचल मन स्थिर कर लेंगे? यह अपेक्षा रखी जाती है कि यह महान कार्य किसी विशेष व्यक्तिके आदेश पर अेक विशेष समय किया जाय। क्या अैसी किसी यांत्रिक क्रियासे लडकोंके दिलोंमें कथित प्रभुका प्रेम जड पकड सकता है? हर तरहके स्वभाववाले मनुष्योंसे अेक ही प्रकारके व्यवहारकी आशा रखना भी बुद्धिके अत्यन्त विपरीत है। अिसलिअे प्रार्थनामें जब्र नही होना चाहिये। जिन्हें रुचि हो वे प्रार्थना करें और जिन्हें नापसन्द हो वे न करें। विश्वासके बिना जो कुछ किया जाता है, वह अनैतिक और पतनकारी होता है।"

पहले हम अंतिम विचारका मूल्यांकन कर लें। क्या अनुशासनकी आवश्यकताके बारेमें विश्वास जमनेसे पहले अुसे मानना कोअी अनैतिक और पतनकारी कर्म है? क्या स्कूलके पाठ्यक्रमकी अुपयोगिताके बारेमें किसीको यकीन न हो जाय तब तक तदनुसार विषयोंका अध्ययन

करना अनैतिक और पापकारी है? कोओी लड़का यह मान बैठे कि अपनी मातृभाषाका अध्ययन करना बेकार है तो क्या अुसे अुस अध्ययनसे मुक्त किया जा सकता है? क्या यह कहना अधिक सही नहीं है कि पाठशालामें लड़केको जो कुछ पढ़ना पड़ता है, अुसके बारेमें अुसका कोओी दृढ़ मत नहीं होता? अुसकी कोओी पसन्द हो भी तो जब वह किसी संस्थामें दाखिल होना पसन्द कर लेता है तब वह खतम हो जाती है। अुसके भरती हो जानेका अर्थ ही यह है कि वह अुसके नियमोपनियम खुशीसे मानेगा। वह अुसे छोड़ सकता है, परन्तु वह यह नहीं चुन सकता कि वह क्या और कैसे पढ़े।

विद्यार्थीको जो चीज पहले पहले नीरस या अरुचिकर प्रतीत हो, अुसे आकर्षक और समझमें आने लायक बनाना गुरुओंका काम है।

यह कहना बड़ा आसान है कि 'मेरा ओीश्वरमें विश्वास नहीं है', क्योंकि ओीश्वर अपने बारेमें सब बातें निर्भय होकर कहने देता है। वह हमारे कामोंको देखता रहता है। और अुसके नियमोंका कोओी भंग होता है तो अुसके साथ अुसका दण्ड भी लगा रहता है। परन्तु वह दण्ड प्रतिशोधात्मक न होकर पवित्र करनेवाला और कर्तव्यकी प्रेरणा देनेवाला होता है। ओीश्वरका अस्तित्व साबित नहीं किया जा सकता, अुसके साबित करनेकी जरूरत भी नहीं। ओीश्वर तो है ही। यदि अुसकी हमें अनुभूति नहीं होती तो यह हमारे लिअे और भी बुरा है। अनुभूतिका अभाव अेक रोग है, जिसे हम जिच्छा हो या न हो फिर भी किसी दिन दूर भगा देंगे।

परन्तु लड़का तर्क नहीं कर सकता। वह जिस संस्थामें है वह यदि अुसकी अुपस्थिति चाहती है तो अुसे अनुशासनकी भावनासे प्रार्थना-सभामें अवश्य जाना चाहिये। वह अपनी शंकाअें आदरपूर्वक अपने शिक्षकोंके सामने रख सकता है। जो चीज अुसे न जंचे अुस पर विश्वास रखना अुसके लिअे जरूरी नहीं है। परन्तु यदि अुसे अपने शिक्षकोंके लिअे आदर है, तो वह बिना विश्वास किये जो कुछ अुससे करनेको कहा जाता है करेगा; वह डरकर या मन मारकर नहीं, बल्कि अिस ज्ञानके साथ करेगा कि अैसा करना

अुसके लिअे ठीक है और अिस आशासे करेगा कि जो चीज आज अुसके लिअे अज्ञात है वह किसी दिन स्पष्ट हो जायगी।

प्रार्थना याचना नहीं है। वह तो आत्माकी चाह है। प्रार्थना अपनी कमजोरीको नित्य स्वीकार करना है। हममें से बड़ेसे बड़ेको वह सदा याद दिलाती है कि मौत, बीमारी, बुढ़ापा और आकस्मिक घटनाओं आदिके सामने हम कुछ भी नहीं हैं। हम मृत्युके बीचमें रहते हैं। हमारी अपनी ही योजनाओंके लिअे काम करनेका मूल्य ही क्या है, जब वे पलभरमें नष्ट की जा सकती हैं? या जब हम अुतनी ही तेजीसे और अचानक अुनसे दूर हटाये जा सकते हैं? परन्तु हम चट्टान जैसी मजबूती अनुभव कर सकते हैं, यदि हम सच-मुच कह सकें कि हम अीश्वर और अुसकी योजनाओंके लिअे काम करते हैं। अुस हालतमें सब कुछ सूर्यकी भांति स्पष्ट हो जाता है, फिर कोअी चीज नष्ट नहीं होती। फिर तो नाशका केवल आभास होता है। **अुस समय और केवल अुसी समय** मृत्यु और विनाशमें कोअी वास्तविकता नहीं रह जाती। कारण, अुस अवस्थामें मृत्यु या विनाश केवल अेक परिवर्तन होता है। अेक कलाकार अपने चित्रको अुससे अच्छा चित्र बनानेके लिअे नष्ट कर देता है। अेक घड़ीसाज खराब कमानीको नअी और अुपयोगी कमानी लगानेके लिअे फेंक देता है।

सामूहिक प्रार्थना अेक प्रबल वस्तु है। जो चीज हम अकसर अकेले नहीं कर पाते वह मिलकर कर लेते हैं। लड़कोंको अिसकी आवश्यकता नहीं है कि पहले अुनकी सारी शंकाओंका समाधान करके अुन्हें अुसका लाभ पूरा समझा दिया जाय। यदि वे भीतरसे शिक्षककी आज्ञा मानकर ही नहीं, पर विरोध किये बगैर प्रार्थनामें अुपस्थित ही होते हैं तो भी अुन्हें आनन्द अनुभव होता है। परन्तु बहुतोंको नहीं होता, वे तो शरारत भी करते हैं। फिर भी अज्ञात प्रभाव नहीं रोका जा सकता। क्या अैसे लड़के मौजूद नहीं हैं जो अपने प्रारंभिक कालमें प्रार्थनाकी खिल्ली अुड़ाते थे, परन्तु बादमें सामूहिक प्रार्थनाकी [illegible]में प्रबल विश्वास रखने लगे? जिनकी श्रद्धा बलवान नहीं लोगोंके लिअे सामूहिक प्रार्थनाकी शान्ति तलाश करना सामान्य

अनुभव है। जो लोग गिरजाघरों, मंदिरों या मस्जिदोंमें बड़ी संख्यामें जाते हैं वे सभी सिल्ली अुड़ानेवाले या ढोंगी नहीं होते। वे प्रामाणिक स्त्री-पुरुष होते हैं। अुनके लिअे सामूहिक प्रार्थना दैनिक स्नानकी भांति दैनिककी आवश्यकता होती है। पूजाके ये स्थान निरे अन्धविश्वासकी वस्तु नहीं है, जिन्हें अवसर मिलते ही मिटा दिया जाय। वे अब तकके तमाम हमलोंके बावजूद जिंदा रहे हैं और शायद अनन्त काल तक बने रहेंगे।

यंग अिंडिया, २३-९-'२६

"अुपरोक्त शीर्षक *वाले अपने लेखमें आपने अुस 'लड़के' के प्रति या अेक महान विचारकके नाते अपनी ही प्रतिष्ठाके साथ न्याय नहीं किया है। यह सच है कि लेखकने अपने पत्रमें जो शब्द काममें लिये हैं, वे सब बहुत अुपयुक्त नहीं हैं। परन्तु अुसके विचारोंकी स्पष्टतामें कोअी संदेह नहीं है। यह भी बहुत साफ है कि वह वैसा ही लड़का नहीं है जैसा अिस शब्दसे समझा जाता है। यदि अुसकी आयु बीस वर्षसे कम हो तो मुझे बहुत आश्चर्य होगा। वह छोटा भी हो तो अुसका अितना बौद्धिक विकास हुआ दिखता है कि अुसे यह कहकर चुप न किया जाय कि 'लड़का तर्क नहीं कर सकता।' पत्रलेखक बुद्धिवादी है और आप श्रद्धालु हैं। ये दो पुराने नमूने हैं और दोनोंमें पुराना संघर्ष है। पहलेका रवैया यह है कि 'मुझे निश्चय करा दिया जाय तो मैं विश्वास कर लूंगा।' दूसरेकी वृत्ति है कि 'विश्वास करो तो निश्चय हो जायगा।' पहलेको तर्क जचता है, दूसरा शास्त्रको प्रमाण माननेको कहता है। आपका यह विचार मालूम होता है कि अनीश्वरवाद सभी नौजवान लोगोंमें केवल अेक चंदरोजा चीज है और आगे-पीछे अुनमें श्रद्धा आ जाती है। आपके विचारके समर्थनमें स्वामी विवेकानन्दका प्रख्यात अुदाहरण मौजूद है।

* पिछला अुद्धरण देखिये।

देंगे? हिन्दू-मुस्लिम दगोंका अिलाज धर्मनिरपेक्ष शिक्षा है, परन्तु आप अिस हलकी कद्र नही कर सकेंगे, क्योंकि आपके मनकी रचना ही अुस तरहकी नही है।

"यद्यपि हम पर आपका बडा अृण है कि आपने अिस देशमें, जहा लोग सदा बडे डरपोक रहे हैं, साहस, धर्म और त्यागका अभूतपूर्व अुदाहरण अुपस्थित किया है; फिर भी जब आपके काम पर आखिरी फैसला दिया जायगा, तब यह कहा जायगा कि आपके प्रभावने अिस देशमें बौद्धिक प्रगतिको बडा धक्का पहुचाया।"

यदि बीस वर्षके किशोरको 'लड़का' नही कहा जा सके, तो यह ठीक है कि 'लड़का' शब्दका साधारणत: जो अर्थ माना जाता है, वह मैं नही जानता। सच पूछा जाय तो मैं स्कूल जानेवाले सभी लोगोंको अुनकी अुम्रका लिहाज किये बिना लडके-लडकिया कहूंगा। परन्तु शका करनेवाला विद्यार्थी 'लड़का' कहा जाय चाहे 'आदमी' कहा जाय, मेरी दलील कायम रहेगी। अेक विद्यार्थी अेक सिपाहीकी तरह है (और सिपाही भले ही ४० वर्षका हो), जब वह अपनेको अनुशासनमें रख देता है और अुसके अधीन रहना पसन्द कर लेता है, तो अनुशासनके मामलोंमें वह दलील नही कर सकता। सिपाही अपनी सैनिक टुकडीका अग न रहकर यह अधिकार प्राप्त कर सकता है कि जो बातें करनेको अुससे कहा जाय अुन्हें करे या न करे। अिसी तरह अेक विद्यार्थी कितना ही बुद्धिमान या बडा क्यों न हो, जब वह किसी स्कूल या कालेजमें भरती हो जाता है, तब अुसके अनुशासनको अस्वीकार करनेका अधिकार छोड देता है। अिसमें विद्यार्थीकी बुद्धिका मूल्य कम करने या तिरस्कार करनेकी बात नहीं है। वह स्वेच्छापूर्वक अेक अनुशासन स्वीकार करता है, अिससे जो अुसकी बुद्धिके विकासमें मदद होगी। परन्तु मेरा पत्रलेखक शब्दोंके अर्थाधारका भारी जुआ खुशीसे सहन करता है। अुसे हर अैसे काममें, जिससे करनेवाला नाराज हो, 'जबरदस्ती' की गध आती है।

... जबरदस्ती जबरदस्तीमें फर्क होता है। हम अपने आप पर की

करनेवाली जबरदस्तीको आत्मसात करते हैं। हम अुसे छातीसे लगाकर अुसे दर्शन करना विकास करते हैं। परन्तु जिस जबरदस्तीसे हमें प्राणोंकी बाजी लगाकर भी बचना चाहिये, वह है हमारी अिच्छाके विरुद्ध अूपरसे थोपी गयी पाबन्दी, जो अक्सर हमें अपमानित करनेके लिअे और मनुष्य — या स्त्री या पुरुष भी कह लीजिये — के गौरवको छीननेके अिरादेसे लगाओ जाती है। सामाजिक प्रतिबन्ध आम तौर पर लाभदायक होते हैं और अुन्हें अस्वीकार करके हम अपना ही विनाश करते हैं। पेटके बल चलनेकी आज्ञाओंका मानना नामर्दी और कायरता है। अुससे भी बुरा अुन अनेक विकारोंके आगे झुकना है, जो हमारे जीवनके हर क्षणमें हमें घेरे रहते हैं और हमें अपना गुलाम बनानेको तैयार रहते हैं।

परन्तु पत्रलेखकके पास अेक और शब्द है, जिसने अुन्हें अपनी कैदमें जकड़ रखा है। वह बलवान शब्द 'बुद्धिवाद' है। खैर, जिसका मैंने पूरा स्वाद चखा है। अनुभवने मुझे अितना नम्र बना दिया है कि मैंने बुद्धिकी विशेष मर्यादाओंको समझ लिया है। जैसे गलत जगह पर रख देनेसे कोअी चीज कचरा बन जाती है, ठीक वैसे ही बुद्धिका दुरुपयोग किया जाय तो वह पागलपन बन जाती है। यदि हम बुद्धिकी बात बुद्धिकी अधिकार-सीमाके ही भीतर मानें, तो सब कुछ ठीक हो जाय।

बुद्धिवादी बढ़िया लोग होते हैं। परन्तु जब बुद्धिवाद अपने सर्वशक्तिमान होनेका दावा करता है, तब वह विकराल राक्षस बन जाता है। बुद्धिमें सर्वशक्तिमत्ताका आरोपण करना अुतनी ही बुरी मूर्तिपूजा है जितना औट-पत्थरको औश्वर मानकर अुसकी पूजा करना है।

प्रार्थनाका अुपयोग बुद्धिसे किसने पहचाना है? अुसका तो अभ्याससे अनुभव होता है। संसार भरकी यही शहादत है। कार्डिनल न्यूमैनने अपनी बुद्धिको कभी नहीं छोड़ा। परन्तु जब अुसने नम्रतापूर्वक यह गाया कि 'मेरे लिअे अेक कदम काफी है', तब अुसने प्रार्थनाको अधिक अच्छा स्थान दिया। शंकर तार्किकोंके शिरोमणि थे।

लिअे भूखी आत्माकी तीव्र पुकार है। हमारे पैमानेमें वे सन्त थे, परन्तु अपने पैमानेमें वे घोषित पापी थे। आध्यात्मिक दृष्टिमें वे हमसे कोसों आगे थे। परन्तु वे भगवानके वियोगको अितनी तीव्रतामें महसूस करते थे कि अुन्होंने ग्लानि और निराशासे यह पीडाभरी पुकार की है।

मैंने प्रार्थनाकी आवश्यकताका जिक्र किया है और अुसके द्वारा प्रार्थनाके सारका विवेचन भी। हमने अपने मानव भाअियोंकी सेवाके लिअे जन्म लिया है और यदि हम पूरी तरह जाग्रत न रहें तो वह सेवा ठीक तरहसे नहीं कर सकते। मनुष्यके हृदयमें अंधकार और प्रकाशकी शक्तियोंमें सतत द्वंद्व चलता रहता है और जिसने प्रार्थनाका सहारा नहीं पकडा है वह अंधकारकी शक्तियोंका शिकार बन जायगा। प्रार्थना करनेवाले मनुष्यको भीतरी और बाहरी दोनों तरहकी शांति रहेगी। जो मनुष्य प्रार्थनामय हृदयके बिना दुनियादारीके कामोंमें लगा रहेगा, वह स्वयं दुःखी होगा और दुनियाको भी दुःखी करेगा। अिसलिअे मनुष्यकी मरणोत्तर स्थिति पर प्रार्थनाका क्या असर पडता है, अिस बातको छोड दिया जाय तो भी अिस जीवित संसारमें मनुष्यके लिअे प्रार्थनाका अपार मूल्य है। हमारे दैनिक कार्योंमें व्यवस्थितता, शांति और स्थिरता लानेका प्रार्थना ही अेक-मात्र अुपाय है।

यंग अिंडिया, २३–१–'३०

अिसलिअे आप अपना दिवसारम्भ प्रार्थनाके साथ कीजिये और अुसमें अपना हृदय अितना अुड़ेल दीजिये कि वह शाम तक आपके साथ रहे। दिनका अंत प्रार्थनाके साथ कीजिये जिससे आपको स्वप्नों और दुःस्वप्नोंसे मुक्त शांतिपूर्ण रात्रि नसीब हो। प्रार्थनाके स्वरूपकी चिन्ता न कीजिये। स्वरूप कुछ भी हो, वह अैसा होना चाहिये, जिससे हमारी भगवानके साथ लौ लग जाय। अितनी ही बात है कि प्रार्थनाका रूप चाहे जो हो, जिस समय आपके मुंहसे प्रार्थनाके शब्द निकलें, अुस समय मन अिधर-अुधर न भटके।

जब तक साक्षात्कार नहीं होता है तब भी साधकको आत्माकी ज्योति और शुद्धिके लिये जो अनाज और असबाब मनमें भरे रहते हैं उनसे मुक्ति प्राप्त किया करनी चाहिये। जिसलिये जिसे अपने अन्दरके देवता जगानेकी भूख है उसे प्रार्थनाका आश्रय लेना ही पड़ेगा। परन्तु प्रार्थना सिर्फ शब्दों या कानोंका व्यायाम नहीं है, कोरे मन्त्रोंका रटना नहीं है। रामनाम कितना ही रटा जाय, यदि उससे आत्मा जाग्रत न हो तो वह व्यर्थ है। प्रार्थनामें हृदयरहित शब्दोंकी अपेक्षा शब्दरहित हृदय होना अच्छा है। वह साफ तौर पर उस आत्माकी पुकार होनी चाहिये जो प्रभुकी भूखी है। और जैसे अेक भूखे आदमीको भरपेट भोजनमें मजा आता है, वैसे ही हार्दिक प्रार्थनामें भूखी आत्माको मजा आयेगा। और मैं अपना और अपने साथियोंका थोड़ासा अनुभव बताते हुअे कहता हूं कि जिसने प्रार्थनाके जादूका अनुभव किया है वह कभी दिनों तक लगातार भोजनके बिना रह सकता है, मगर प्रार्थनाके बिना क्षणभर भी नहीं रह सकता। क्योंकि, प्रार्थनाके बिना भीतरी शांति नहीं मिलती।

यदि अैसा हाल है तो कोअी कहेगा कि हमें अपने जीवनके हर क्षणमें प्रार्थना ही करते रहना चाहिये। अिसमें कोअी सन्देह नहीं। परन्तु हम भूल करनेवाले प्राणियोंके लिये जब अेक क्षणके लिये भी भगवानसे लौ लगानेके लिये अपने हृदयकी गहराअियोंमें प्रवेश करना कठिन होता है, तो भगवानसे सदा लौ लगाये रखना तो हमारे लिये असंभव ही होगा। अिसलिये हम कुछ घंटे मुकर्रर कर लेते हैं। और अुस समय थोड़ी देरके लिये संसारकी आसक्तियोंको हटानेका गंभीर प्रयत्न करते हैं और अेक तरहसे अशरीरी बन जानेकी कोशिश करते हैं। आपने सूरदासका भजन * सुना है। यह भगवानसे अेकता साधनेके

* मो सम कौन कुटिल खल कामी।
जिन तनु दियो ताहि बिसरायो
अैसो निमकहरामी॥

लिअे भूखी आत्माकी तीव्र पुकार है। हमारे पैमानेमें वे सन्त थे, परन्तु अपने पैमानेसे वे घोषित पापी थे। आध्यात्मिक दृष्टिसे वे हमसे कोसों आगे थे। परन्तु वे भगवानके वियोगको अितनी तीव्रतासे महसूस करते थे कि अुन्होंने ग्लानि और निराशासे यह पीडाभरी पुकार की है।

मैंने प्रार्थनाकी आवश्यकताका जिक्र किया है और अुसके द्वारा प्रार्थनाके सारका विवेचन भी। हमने अपने मानव भाअियोंकी सेवाके लिअे जन्म लिया है और यदि हम पूरी तरह जाग्रत न रहें तो वह सेवा ठीक तरहसे नहीं कर सकते। मनुष्यके हृदयमें अंधकार और प्रकाशकी शक्तियोंमें सतत द्वंद्व चलता रहता है और जिसने प्रार्थनाका सहारा नहीं पकड़ा है वह अंधकारकी शक्तियोंका शिकार बन जायगा। प्रार्थना करनेवाले मनुष्यको भीतरी और बाहरी दोनों तरहकी शांति रहेगी। जो मनुष्य प्रार्थनामय हृदयके बिना दुनियादारीके कामोंमें लगा रहेगा, वह स्वयं दुःखी होगा और दुनियाको भी दुःखी करेगा। अिसलिअे मनुष्यकी मरणोत्तर स्थिति पर प्रार्थनाका क्या असर पड़ता है, अिस बातको छोड़ दिया जाय तो भी अिस जीवित संसारमें मनुष्यके लिअे प्रार्थनाका अपार मूल्य है। हमारे दैनिक कार्योंमें व्यवस्थितता, शांति और स्थिरता लानेका प्रार्थना ही अेक-मात्र अुपाय है।

यंग अिंडिया, २३-१-'३०

अिसलिअे आप अपना दिवसारम्भ प्रार्थनाके साथ कीजिये और अुसमें अपना हृदय अितना अुडेल दीजिये कि वह शाम तक आपके साथ रहे। दिनका अंत प्रार्थनाके साथ कीजिये जिससे आपको स्वप्नों और दुःस्वप्नोंसे मुक्त शांतिपूर्ण रात्रि नसीब हो। प्रार्थनाके स्वरूपकी चिन्ता न कीजिये। स्वरूप कुछ भी हो, वह अैसा होना चाहिये, जिससे हमारी भगवानके साथ लौ लग जाय। अितनी ही बात है कि प्रार्थनाका रूप चाहे जो हो, जिस समय आपके मुंहसे प्रार्थनाके शब्द निकलें, अुस समय मन अिधर-अुधर न भटके।

यदि मैंने जो कुछ कहा है वह आपको पट गया हो तो आप तब तक चैन नहीं लेंगे, जब तक कि आप अपने छात्रावासके सचालकोंको आपकी प्रार्थनामें दिलचस्पी लेनेके लिअे मजबूर नहीं कर दें, और प्रार्थना अनिवार्य न बना दी जाय। अपने-आप लगाओ हुओी पाबन्दी जब्र नहीं है। जो आदमी सयमसे मुक्त रहनेका अर्थात् अिन्द्रियोंके भोगका रास्ता चुन लेता है, वह विकारोंका क्रीतदास रहेगा और जो आदमी अपनेको नियमों और पाबन्दियोंसे बाध लेता है वह मुक्त हो जाता है। विश्वकी तमाम वस्तुअें, जिनमें सूर्य, चन्द्र और तारे भी हैं, निश्चित नियमोंका पालन करती हैं। अिन नियमोंके नियमनके बिना संसारका काम अेक क्षण भी नहीं चलेगा। आप, जिनका जीवन-ध्येय अपने मानव बंधुओंकी सेवा करना है, नष्ट-भ्रष्ट हो जायंगे, यदि आप अपने पर किसी न किसी प्रकारका अनुशासन नहीं लगायेंगे; और प्रार्थना अेक आवश्यक आध्यात्मिक अनुशासन है। अनुशासन और सयम ही हमें पशुओंसे अलग करते हैं। यदि हमें सिर अूचा करके चलनेवाले मनुष्य बनना है और जानवरोंकी तरह हाथ-पैरोंके बल नहीं चलना है, तो हमें समझ-बूझकर अपने-आपको स्वेच्छापूर्ण अनुशासन और संयमके अधीन रख देना चाहिये।

यंग अिंडिया, २३-१-'३०

अीश्वर अहंकारियोंकी अथवा जो लोग अुससे सौदा करते हैं अुनकी प्रार्थनाओंका कभी अुत्तर नहीं देता। आपने गजेन्द्र-मोक्षकी कहानी सुनी है? मैं यहाके बर्मी विद्यार्थियोंसे, जो अिस महानतम काव्यको, ससारकी अेक अत्यन्त दिव्य वस्तुको, नहीं जानते, कहूंगा कि वे अपने भारतीय मित्रोंसे अुसे जान लें। अेक तामिल कहावत सदा मेरी स्मृतिमें रही है और अुसका अर्थ यह है कि अीश्वर असहायोंका सहायक है। यदि आप अुससे सहायता चाहते हैं, तो आप अुसके पास पूरे नग्न स्वरूपमें जाअिये, मनमें कुछ भी न रखकर जाअिये और कोअी भय या शंका भी न रखिये कि वह आप जैसे पतित प्राणीको कैसे सहायता दे सकता है? अुसने लाखोंकी, जो

अुसके पास गये हैं, सहायता की है। फिर वह आपको ही कैसे बिसरायेगा? वह अिसमें कुछ भी अपवाद नहीं करता और आप देखेंगे कि आपकी प्रत्येक प्रार्थनाका अुत्तर मिल रहा है। अत्यन्त अधमकी प्रार्थनाका भी वह अुत्तर देता है। यह मैं अपने निजी अनुभव परसे कह रहा हूं। मैं परीक्षामें से गुजर चुका हूं। पहले स्वर्गका राज्य प्राप्त करनेकी कोशिश कीजिये, फिर सब कुछ मिल जायगा।

यंग अिंडिया, ४–४–'२९

७

चरित्रकी आवश्यकता

जो स्थिति है अुसे मानकर हमें यह सोचना होगा कि देशसेवाके लिअे विद्यार्थी क्या कर सकते हैं, साथ ही हम और क्या कर सकते हैं। मुझे और दूसरे बहुत लोगोंको, जो यह देखनेके लिअे अुत्सुक हैं कि विद्यार्थी-जगत अच्छी कारगुजारी दिखाये, अिस प्रश्नका यही अुत्तर मिला है कि विद्यार्थियोंको आत्म-निरीक्षण करना चाहिये और अपने व्यक्तिगत चरित्रकी देखभाल करनी चाहिये। समस्त ज्ञानका अुद्देश्य चरित्र-निर्माण होना चाहिये।

यंग अिंडिया, ८–९–'२७

आप कह सकते हैं कि मैं बहुतसे लडके-लडकियोंका, आप यहां तक कह सकते हैं कि हजारों बालक-बालिकाओंका, पिता हूं। अुस हैसियतसे मैं आप लडकोंसे कहना चाहता हूं कि आखिर तो आपका भाग्य आपके अपने ही हाथोंमें है। मुझे अिसकी परवाह नहीं है कि आप अपनी पाठशालामें क्या सीखते हैं या क्या नहीं सीखते, यदि आप दो शर्तोंका पालन करते हैं। अेक शर्त यह है कि चाहे कोअी भी अवस्था हो और कैसी भी भारी कठिनाअियां सामने हों, तो भी आपको निर्भय होकर सत्यपालन करना चाहिये। अेक सत्यशील लडका, बहादुर लडका, मक्खीको भी चोट पहुंचानेका कभी विचार नहीं करेगा। वह अपनी पाठशालाके तमाम कमजोर लड़कोंकी रक्षा करेगा और जिन्हें पाठशालाके भीतर या बाहर अुसकी मददकी जरूरत होगी अुन सबकी सहायता करेगा। जो लडका

व्यक्तिगत रूपमें मन, शरीर और कर्मसे शुद्धताका पालन न करे, अुसे किसी भी पाठशालासे निकाल देना चाहिये। और बालक सदा अपना मन पवित्र, आँखें सीधी और हाथ पवित्र रखेगा। जीवनकी ये बुनियादी शिक्षायें ग्रहण करनेके लिअे आपको किसी स्कूलमें जानेकी आवश्यकता नहीं है, और यदि आपमें यह त्रिविध चरित्र है, तो आपका निर्माण ठोस बुनियाद पर होगा।

विथ गांधीजी अिन सीलोन, पृ० १०९

मुझे कोओी सन्देह नहीं कि आपके शिक्षक आपसे बार-बार कहते होंगे कि आपको जो मानसिक और शारीरिक तालीम मिलती है वह आपके कुछ भी काम नहीं आयेगी, यदि अुसका आधार सत्य और प्रेम नहीं है। सत्यसे आप बहादुर और निर्भय मनुष्य बनेंगे और जहाँ कहीं जायेंगे अच्छी कारगुजारी दिखायेंगे। प्रेमसे आपका सारा जीवन मधुर बनेगा, क्योंकि प्रेममें यह विशेष गुण है कि अुसका बदला विपुल प्रेमसे मिलता है।

भगवान आपको दिन-दिन अिन गुणोंका अपने भीतर विकास करनेमें सहायता दे।

विथ गांधीजी अिन सीलोन, पृ० १५०

केवल पढ़ाओी-लिखाओी हमें काम नहीं देगी। स्वराज्य तो हमें ठोस चरित्रके बल पर ही मिलेगा। हमें विदेशी हुकूमतको [illegible] हिसाबका मामला अपने सत्य और आत्मशुद्धिके अन्दोलन द्वारा करना होगा, भले वह अपूर्ण ही हो। हमें स्वतन्त्रताके बीजको अिस प्रकार बोना और सींचना चाहिये कि अंकुरको फूटनेमें मदद पाकर वह बढ़े और स्वराज्यका सुन्दर वृक्ष बन जाय। और वह चरित्रबलसे ही बन सकता है।

[गुजरात विद्यापीठके कुमारोंको हैदराबादमें १०-११-'२० को दिये हुअे गांधीजीके अनुवादित-भाषणसे।]

हमारा यह मंदिर पुनर्वासका नहीं, प्रत्युत स्वातंत्र्यका है। हमारे सामने चरित्र-निर्माणका कार्य है। हम स्वराज्यके योग्य अभी तब बनेंगे जब हमें विद्यार्थियोंमें सफलता मिलेगी। स्वराज्यकी स्थापनाका अेकमात्र अंग विद्यार्थियोंमें काम करना है।

[गुजरात विद्यापीठके कुलपतिकी हैसियतसे १५–११–'२० को दिये गये गांधीजीके अुद्घाटन-भाषणसे।]

८

ब्रह्मचर्य

हिन्दू धर्मके अनुसार विद्यार्थी ब्रह्मचारी होता है और विद्यार्थी-अवस्था ब्रह्मचर्याश्रम होती है। अविवाहित अवस्था ब्रह्मचर्यका संकुचित अर्थ है। मूल अर्थ विद्यार्थी-जीवन या अवस्था है। अिसका अर्थ है अिन्द्रियोंका नियमन। परन्तु बादमें अिन्द्रिय-संयम द्वारा अध्ययन या ज्ञानप्राप्तिका संपूर्ण काल ही ब्रह्मचर्याश्रम माना जाने लगा। जीवनके अिस कालका आवश्यक रूपमें यही अर्थ है कि अिसमें लिया खूब जाय और दिया जाय बहुत थोड़ा। अिस अवस्थामें हम मुख्यतः ग्रहण करते हैं — माता-पिता, शिक्षकों और संसारसे जो कुछ मिल जाय वह लेते हैं। परन्तु अिस लेनेके साथ ही साथ देनेका कर्तव्य नहीं लगा हुआ हो — और यह नहीं लगा हुआ है — तो अुसके साथ यह जिम्मेदारी अवश्य लगी हुअी है कि अुचित समय पर सारा ॠण चक्रवृद्धि ब्याज सहित चुकाया जाय। अिसीलिअे हिन्दू ब्रह्मचर्याश्रमको धार्मिक कर्तव्यका विषय मानते हैं।

ब्रह्मचारी और सन्यासीका जीवन आध्यात्मिक दृष्टिसे अेक-सा माना जाता है। ब्रह्मचारीको ब्रह्मचारी बनना हो तो अुसे सन्यासी बनना ही होगा। सन्यासीके लिअे यह चुनावका विषय है। हिन्दू धर्मके चारों आश्रमोंका आजकल पवित्र स्वरूप नहीं रह गया है, और

अगर वे हैं तो केवल नाममात्रको। विद्यार्थी-ब्रह्मचारीके जीवनका मौज ही सिद्धान्त बन गया है। यद्यपि आजकल अिन आश्रमोंमें कोअी अैसी चीज नहीं रह गअी है, जिससे वर्तमान पीढ़ी कुछ सीख सके या जिसका वह अनुकरण कर सके, फिर भी हम अुन आदर्शोंको दिलमें अपना सकते हैं, जिनसे आश्रमोंको शुरूमें प्रेरणा मिली थी।

यंग अिंडिया, २९-१-'२५

विद्यार्थीके लिअे प्राचीन शब्द ब्रह्मचारी था, क्योंकि अुसके सारे अध्ययन और प्रवृत्तिका अुद्देश्य ब्रह्मकी खोज होता था और वह अपने जीवनका निर्माण अुस कठोर सादगी और संयमके ठोस आधार पर करता था, जिसका हर धर्मने विद्यार्थीके लिअे आदेश दिया है। जो अपने विकारों और वासनाओंको जवानीमें बेलगाम छोड़ देता है, वह अुन्हें कभी काबूमें नहीं रख सकता। मैं यह नहीं चाहता कि आप खेलें-कूदें नहीं और अपनी कोठरीमें बन्द रहें। परन्तु आपके सारे काम और खेलका अूंचा अुद्देश्य संयमी जीवन होना चाहिये। वे आपको अीश्वरके निकट ले जानेवाले हों।

यंग अिंडिया, २१-७-'२७

सच्ची शिक्षाका निर्माण करनेके लिअे व्यक्तिगत जीवनकी शुद्धता अेक अनिवार्य शर्त है। और हजारों छात्रोंसे मेरी जो मुलाकातें होती हैं और विद्यार्थियोंसे मेरा जो सतत पत्र-व्यवहार होता रहता है — जिसमें वे मुझ पर विश्वास करके अपने मनकी बातें भी बेखटके बह डालते हैं — अुससे मुझे बिलकुल स्पष्ट मालूम होता है कि अभी बहुत कुछ करना बाकी है। मुझे यकीन है कि आप मेरा मतलब पूरी तरह समझ रहे हैं। हमारी भाषामें छात्र शब्दका पर्यायवाची अेक सुन्दर शब्द है — ब्रह्मचारी। और मुझे आशा है कि आप ब्रह्मचारी शब्दका अर्थ जानते हैं। अिसका अर्थ है अीश्वरकी खोज करनेवाला, अैसा आचरण करनेवाला जिससे वह थोड़ेसे थोड़े समयमें अीश्वरके निकटसे निकट पहुंच जाय। और संसारके

अुन्होंने (गांधीजीने) अुन्हें (विद्यार्थियोंको) पश्चिमके अुस हानिकारक विषैले साहित्यके विरुद्ध चेतावनी दी, जिसकी देशमें बाढ़ आ रही है और जो अुन्हें विज्ञानके प्रतिष्ठित और आकर्षक वेषमें शुद्धता और संयमके मार्गसे विचलित करना चाहता है। कभी-कभी भोग-विलासको अुचित बतानेवाले घोषणापत्र पादरियों, डॉक्टरों और अन्य बड़े और प्रभावशाली लोगोंके हस्ताक्षरोंसे निकाले जाते हैं, परन्तु विद्यार्थियोंको सदाचारके सीधे और तंग रास्तेसे हरगिज नहीं हटना चाहिये। भोग-विलास और नैतिक असंयमका मार्ग विनाशका निश्चित मार्ग है। अुन्होंने विद्यार्थियोंसे अपील की कि वे मन और शरीरकी निष्कलंक शुद्धता पैदा करें, और अीश्वरसे प्रार्थना की कि वह अिसके लिअे अुन्हें बुद्धि और बल दे।

यंग अिंडिया, २८-२-'२९

मैं विद्यार्थियोंसे अिस प्रकार असमर्थता स्वीकार करनेकी बात सुननेको तैयार नहीं हूं। आपका सारा पाण्डित्य, आपका शेक्सपीयर और वर्ड्सवर्थका तमाम अध्ययन व्यर्थ होगा, यदि साथ-साथ आप अपना चरित्र-निर्माण नहीं करेंगे और अपने विकारों और कार्यों पर प्रभुत्व प्राप्त नहीं करेंगे। जब आप अपने पर काबू पा लेंगे और अपनेको वशमें रखना सीख जायंगे, तब आप निराशाके स्वर नहीं निकालेंगे। यह नहीं हो सकता कि आप अपना हृदय तो दे दें, परन्तु धर्ममें कायरता दिखायें। हृदय देना सर्वस्व देना ही है। आपके पास पहले तो देनेके लिअे दिल होने चाहिये। और दिल आप तभी दे सकते हैं जब आप अुन्हें परिष्कृत बनायें।

परन्तु अिसके स्थान पर आज हम क्या देखते हैं? मैंने सुना है कि आजकल अुत्तर प्रदेशमें लड़कोंके विवाह मा-बापके मजबूर करनेसे नहीं, बल्कि अुनकी अपनी ही आग्रहपूर्ण अिच्छासे होते हैं। विद्यार्थी-कालमें आपसे आशा की जाती है कि आप अपनी शक्तिको नष्ट न करके अुसकी रक्षा करेंगे। मैं देखता हूं कि आपमें से आधेसे ज्यादा विवाहित हैं। यदि आप बिगड़ी हुआी बातको बनाना चाहें

तो शादी हो जाने पर भी आप अपने विकारों पर कठोर संयम रखें और अपने अध्ययन-कालमें शुद्ध ब्रह्मचर्यका जीवन वितायें। फिर आप देखेंगे कि अध्ययन-कालके अन्तमें संयम रखनेसे आपका शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण ही हुआ है। आप किसी प्रकार यह न सोचिये कि मैं आपके सामने कोअी अैसी चीज रख रहा हूं, जिस पर बिलकुल अमल नहीं किया जा सकता। जो लोग विवाहित होकर भी पूर्ण संयम रख रहे हैं, अुनका पंथ बढ़ रहा है। अिससे स्वयं अुनको बहुत लाभ है और मानव-जातिको आम तौर पर फायदा है। जो अविवाहित हैं अुनसे मैं अपील करूंगा कि वे अिस प्रलोभनको रोकें।

यंग अिंडिया, १९-९-'२९

ब्रह्मचर्यके बिना स्त्री या पुरुषका नाश हो जाता है। अिंद्रियोंको वशमें न रखना अैसा ही है, जैसे किसी बिना पतवारके जहाजमें सफर करना, जो पहली ही चट्टानसे टकराने पर अवश्य चूर-चूर हो जायगा। अिसीलिअे मैं सदा ब्रह्मचर्य पर जोर देता हूं।

हरिजन, ३-१०-'३६

९

काम-विज्ञानकी शिक्षा

शेष भारतकी भांति गुजरातमें भी कामके विषयमें अस्वाभाविक कुतूहलका दोष दिन-दिन बढ़ता जा रहा है। अितना ही नहीं, जो अिस चक्करमें फंस जाते हैं, वे समझते हैं कि अिसमें कोअी तारीफकी बात है। जब कोअी गुलाम अपनी जंजीरों पर गर्व करने लगता है और मूल्यवान आभूषणोंकी भांति अुनसे चिपटा रहता है, तब अुसके मालिककी विजय सम्पूर्ण हो जाती है। परन्तु मुझे पक्का विश्वास है कि कामदेवकी यह विजय, चमत्कारिक भले ही हो, चंदरोजा और तुच्छ ही सिद्ध होगी। और अन्तमें अुस बिच्छूकी तरह, जिसका विष समाप्त हो चुका है, निर्जीव हो जायगी। परन्तु अिसका अर्थ यह नहीं है कि अिस

बीचमें हम हाथ बांधे बैठे रहे। अुसकी पराजयका विश्वास होनेसे हमें सुरक्षितताकी झूठी भावनामें सो नहीं जाना चाहिये। कामवासनाको जीतना स्त्री या पुरुषके जीवनका परम कर्तव्य है। वासना पर प्रभुत्व पाये बिना मनुष्य अपने पर प्रभुत्व पानेकी आशा नहीं रख सकता। और अपने पर प्रभुत्व पाये बिना स्वराज्य या रामराज्य नहीं हो सकता। स्व-राज्यके बिना स्वराज्य वैसे ही धोखा देनेवाला और निराशाजनक साबित होगा, जैसे कोअी रंग किया हुआ खिलौनेका आम। वह बाहरसे देखनेमें मोहक होता है, मगर भीतर खोखला और कोरा होता है। कोअी भी कार्यकर्ता, जिसने कामवासना पर विजय प्राप्त नहीं कर ली है, हरिजनों, साम्प्रदायिक अेकता, खादी, गोरक्षा या ग्राम-पुनर्निर्माणके कार्यकी सच्ची सेवा करनेकी आशा नहीं रख सकता। अिस प्रकारके बड़े-बड़े ध्येयोंकी सेवा केवल बौद्धिक तैयारीसे नहीं हो सकती, अुनमें आध्यात्मिक प्रयत्न या आत्मबलकी जरूरत होती है। आत्मबल अीश्वरकी कृपासे आता है और अीश्वरकी कृपा अुस आदमी पर कभी नहीं होती जो कामवासनाका दास है।

तो फिर, काम-विज्ञानकी शिक्षाका हमारी शिक्षा-प्रणालीमें क्या स्थान है, या अुसका कोअी स्थान है भी या नहीं? काम-विज्ञान दो प्रकारका होता है। अेक वह जो कामविकारको काबूमें रखने या जीतनेके काम आता है और दूसरा वह जो अुसे अुत्तेजन और पोषण देनेके काम आता है। पहले प्रकारके विज्ञानकी शिक्षा बाल-शिक्षाका अुतना ही आवश्यक अंग है, जितनी दूसरे प्रकारकी हानिकारक और खतरनाक है और अिसलिअे अुससे बचना ही अुचित है। सभी बड़े धर्मोंने कामको मनुष्यका घोर शत्रु माना है और वह ठीक ही माना है। क्रोध या द्वेषका स्थान दूसरा ही रखा गया है। गीताके अनुसार क्रोध कामकी सन्तान है। बेशक गीताने काम शब्दका प्रयोग अिच्छामात्रके व्यापक अर्थमें किया है। परन्तु जिस संकुचित अर्थमें वह यहां अिस्तेमाल किया गया है अुसमें भी यह बात लागू होती है।

परन्तु फिर भी अिस प्रश्नका कि छोटी अुम्रके विद्यार्थियोंको जननेंद्रियके कार्य और अुपयोगके बारेमें ज्ञान देना वाछनीय है या

नही, अुत्तर देना रह ही जाता है। मेरे खयालसे अेक हद तक अिस प्रकारका ज्ञान देना जरूरी है। अभी तो वे जैसे-तैसे अिधर-अुधरसे यह ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। नतीजा यह होता है कि पथभ्रष्ट होकर वे कुछ बुरी आदतें सीख लेते हैं। हम कामविकार पर अुसकी ओरसे आंखें बन्द कर लेनेसे ठीक तरह नियंत्रण प्राप्त नही कर सकते। अिसलिअे मैं जोरके साथ अिस पक्षमें हू कि नौजवान लडके-लड़कियोंको अुनकी जननेंद्रियोका महत्त्व और अुचित अुपयोग सिखाया जाय। और अपने ढगसे मैंने अुन अल्पायु बालक-बालिकाओंको, जिनकी तालीमकी जिम्मेदारी मुझ पर थी, यह ज्ञान देनेकी कोशिश की है।

जिस काम-शिक्षाके पक्षमें मैं हू अुसका लक्ष्य यही होना चाहिये कि अिस विकार पर विजय प्राप्त की जाय और अुसका सदुपयोग हो। अैसी शिक्षाका अपने-आप यह अुपयोग होना चाहिये कि बच्चोंके दिलोंमें अिन्सान और हैवानके बीचका फर्क अच्छी तरह जमा दिया जाय, अुन्हे यह अच्छी तरह समझा दिया जाय कि हृदय और मस्तिष्क दोनोंकी शक्तियोसे विभूपित होना मनुष्यका विशेष अधिकार है। वह जितना विचारशील प्राणी है अुतना ही भावनाशील भी है — जैसा कि मनुष्य शब्दके धात्वर्थसे प्रगट होता है — और अिसलिअे ज्ञानहीन प्राकृतिक अिच्छाओं पर बुद्धिका प्रभुत्व छोड देना मानव-सम्पत्तिको छोड देना है । मनुष्यमें बुद्धि भावनाको जाग्रत करती और रास्ता दिखाती है। पशुमें आत्मा सुषुप्त रहती है। हृदयको जाग्रत करना सोअी हुअी आत्माको जगाना है, बुद्धिको जाग्रत करना है और बुराअी-भलाअीमें विवेक पैदा करना है।

यह सच्चा काम-विज्ञान कौन सिखाये ? स्पष्ट है कि वही सिखाये जिसने अपने विकारो पर प्रभुत्व पा लिया है। ज्योतिष और अन्य विज्ञान सिखानेके लिअे हम अैसे शिक्षक रखते हैं जिन्होंने अिन विषयोकी तालीम पाअी है और जो अपनी कलामें प्रवीण हैं। अिसी तरह हमें काम-विज्ञान अर्थात् कामविकारको काबूमें रखनेका विज्ञान सिखानेके लिअे अैसे ही लोगोंको शिक्षक बनाना चाहिये, जिन्होंने अिसका अध्ययन किया है और अिन्द्रियों पर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया

है। अूँचे दर्जेका भाषण भी यदि अुसके पीछे हृदयकी सचाअी और अनुभव नहीं है तो निष्क्रिय और निर्जीव होगा और वह मनुष्योंके हृदयोंमें बिलकुल घुस नहीं सकेगा और अुन्हें जगा नहीं सकेगा, जब कि आत्म-दर्शन और सच्चे अनुभवमें निकलनेवाली वाणी सदा सफल होती है।

आज तो हमारे सारे वातावरणका — हमारे पढ़ने, हमारे सोचने और हमारे सामाजिक व्यवहारका — आम हेतु कामेच्छाकी पूर्ति करना होता है। अिस जालको तोड़कर निकलना आसान काम नहीं है। परन्तु यह हमारे अुच्चतम प्रयत्नके योग्य कार्य है। यदि व्यावहारिक अनुभववाले मुट्ठीभर शिक्षक भी अैसे हों, जो आत्म-संयमके आदर्शको मनुष्यका सर्वोच्च कर्तव्य मानते हों और अपने कार्यमें सच्चे और अमिट विश्वाससे अनुप्राणित हों, तो अुनके परिश्रमसे गुजरातके बालकोंका मार्ग प्रकाशमान हो जायगा। वे भोलेभाले लोगोंको आत्म-पतनके कीचड़में फसनेसे बचा लेंगे; और जो पहलेसे ही फस गये हैं अुनका अुद्धार कर देंगे।

हरिजन, २१-११-’३६

१०

आतंकवाद

जब मैं यह विचार करता हूं कि भारतमें आजकल क्या हो रहा है, तो मेरे खयालसे हमारे लिअे यह कहना जरूरी है कि राजनीतिक हत्याओं और राजनीतिक डकैतियोके बारेमें हमारी क्या राय है। मुझे लगता है कि ये चीजें केवल बाहरसे आअी हुअी हैं और अिस देशमें जड नही पकड सकती। परन्तु आप विद्यार्थी लोगोको सावधान रहना है कि आप कही मानसिक या नैतिक रूपमें अिस किस्मके आतंकवादका क्षणभरके लिअे भी समर्थन न करे। अहिंसक प्रतिरोधके समर्थकके नाते मैं आपको अिसके बदलेमें अेक और बहुत ठोस चीज दूगा। अपने-आप पर आतकका प्रयोग कीजिये; अपने दिल टटोलिये, अत्याचार जहा कही दिखाअी दे जरूर अुसका विरोध कीजिये; आपकी आजादी पर हमला हो तो अुसका भी बेशक मुकाबला कीजिये, मगर अत्याचारीका खून बहाकर नही। हमारे धर्मका आधार अहिंसा है, जो क्रियात्मक रूपमें प्रेमके सिवा कुछ नही है। और प्रेम भी न सिर्फ अपने पडोसियोके प्रति, न केवल अपने मित्रोके प्रति, बल्कि अुनके प्रति भी जो आपके शत्रु हो सकते हैं।

अिसीके सम्बन्धमें अेक बात और है। मेरे खयालमे यदि हम सत्यका पालन करे, अहिंसाका पालन करे, तो हमें तुरन्त मालूम हो जायगा कि हम निर्भयताका भी पालन करते हैं। यदि हमारे शासक अैसा काम कर रहे है, जो हमारी रायमें बेजा है और हमें अपनी सलाह अुन्हे बता देना कर्तव्य प्रतीत हो, भले वह राजद्रोह ही समझा

जाय, तो मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि राजद्रोहकी बात कहिये — परन्तु अपनी जोखिम पर कहिये, आपको परिणाम भुगतनेको अवश्य तैयार रहना चाहिये। और जब आप परिणाम भुगतनेको तैयार रहेंगे और कमरसे नीचे वार नहीं करेंगे, तो मेरे खयालसे आपका हक कायम हो जायगा कि सरकार भी आपकी सलाहको सुने।

स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी

मैक्समूलरने हमें बताया है — हमें अपने ही धर्मका अर्थ करनेके लिअे मैक्समूलरके पास जानेकी जरूरत नहीं, परन्तु वह कहता है — कि हमारा धर्म 'D-U-T-Y' (कर्तव्य) के चार अक्षरोंमें समाया हुआ है, न कि 'R-I-G-H-T' (अधिकार) के पांच अक्षरोंमें। और यदि आप मानते हों कि हमें जो चाहिये सो सब अपने कर्तव्यका अधिक अच्छी तरह पालन करनेसे मिल सकता है, तो सदा अपने कर्तव्यका विचार कीजिये, अिस ढंगसे लड़ते हुअे आपको किसी मनुष्यका डर नहीं रहेगा, आप केवल अीश्वरसे डरेंगे।

स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी

संभव है मेरे विचार आपको स्वीकार न हों। फिर भी मैं तो आपको वही चीज दे सकता हूं जो मेरे हृदयकी गहराअीको हिला रही है। दक्षिण अफ्रीकाके अपने अनुभवोंके आधार पर मैं दावा करता हूं कि आपके वे देशवासी, जिन्हें वर्तमान सभ्यता नहीं मिली, पर जिन्हें ऋषियोंकी दी हुअी तपश्चर्या अुत्तराधिकारमें मिली थी, जो अंग्रेजी साहित्यका अेक अक्षर भी नहीं जानते थे और जो आधुनिक संस्कृतिका ककहरा भी नहीं पढ़े थे, पूरी अूंचाअी तक अुठ सके। और जो बात दक्षिण अफ्रीकामें हमारे अशिक्षित और निरक्षर देशवासियोंके लिअे संभव थी, वह आज हमारी अिस पवित्र भूमिमें आपके और मेरे लिअे दस गुनी संभव है। भगवान करे आपका और मेरा दोनोंका यह सौभाग्य हो!

स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी

मैं अराजकतावादियोंकी अनके देशप्रेमके लिअे अिज्जत करता हूं; मैं देशके लिअे मरनेकी तैयारीकी अनकी बहादुरीका आदर करता हू; परन्तु मैं अनसे पूछता हू कि 'क्या मारना गौरवकी बात है? क्या सम्मानपूर्ण मृत्युके पहले हत्यारेका छुरा चलाना अच्छी बात है?' मैं यह नहीं मानता। किसी भी धर्मग्रंथमें अैसे तरीकोंका समर्थन नहीं है।

स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गाधी

बम्बअी प्रदेशके स्थानापन्न गवर्नर सर अर्नेस्ट हॉट्सनकी हत्याका जो प्रयत्न किया गया, अुसका सबसे बुरा पहलू यह था कि वह कृत्य अुस कालेजके छात्रने किया जिसने श्रीमानको निमंत्रित किया था और वह भी अैसे समय जब कि सम्माननीय अतिथिको कालेजके मकानात घूमकर दिखाये जा रहे थे। यह तो अैसी ही बात हुअी मानो अेक मेजबान अपने मेहमान पर अपने ही मकानमें वार कर रहा हो। घोरसे घोर शत्रुको भी, जब वह हमारे घर पर अतिथि हो, हक है कि अुसे हर प्रकारकी हानिसे बचाया जाय। अिसलिअे विद्यार्थीका कृत्य दरअसल विश्वासघात था और अुसके पक्षमें अेक भी बात नहीं थी।

स्थानापन्न गवर्नरको तो भगवानने ही बचाया और यह भारतके लिअे और खास तौर पर विद्यार्थी-जगतके लिअे सौभाग्यकी बात थी। मैं सर अर्नेस्ट हॉट्सन और राष्ट्र दोनोंको बधाअी देता हूं।

अच्छा हो कि हिंसामें विश्वास करनेवाले अिस सुखान्त दुर्घटनासे सबक लें — सुखान्त अिसलिअे कि हत्यारेके सिवा और किसीको नुकसान नहीं पहुंचा।

क्या अुसे दुख हुआ है, या हो रहा है? या वह अिस भ्रममें है कि वह वीर है? यह घटना विद्यार्थियोंके लिअे चेतावनी होनी चाहिये। आखिर तो स्कूल या कालेज अैसा पवित्र स्थान होता है, जहा कोअी निंद्य या अपवित्र बात नहीं होनी चाहिये। स्कूल-कालेज चरित्र-निर्माणकी जगह हैं। माता-पिता अपने लड़के-लड़कियोंको वहा

अिसलिअे भेजते है कि वे अच्छे स्त्री-पुरुष बन जाय। देशके लिअे वह बुरा दिन होगा जब हर विद्यार्थी पर यह शक किया जायगा कि वह किसी भी प्रकारका विश्वासघात कर सकनेवाला भावी हत्यारा है।

भगतसिंहकी पूजासे देशकी अपार हानि हुअी है और हो रही है। मैंने भगतसिंहके चरित्रके बारेमें विश्वस्त सूत्रोंसे अितनी अधिक बातें सुनी थी और मृत्युदण्डको कम करानेके जो प्रयत्न किये जा रहे थे अुनके साथ मेरा अितना गहरा सम्बन्ध था कि मैं अुनके असरमें बह गया, और कराचीमें जो सावधानीपूर्ण और सतुलित प्रस्ताव पास किया गया अुसके साथ मैं पूरी तरह सहमत रहा। मुझे यह देखकर दुःख होता है कि अुस सावधानीकी कोअी परवाह नहीं की गअी। अुस कृत्यकी ही अिस तरह पूजा की जा रही है मानो वह अनुकरणीय हो। नतीजा यह हो रहा है कि जहा कहीं यह पागल पूजा की जा रही है, वहां गुंडापन और पतन फैल रहा है।

देशमें काग्रेस अेक ताकत है। परन्तु मैं काग्रेसियोंको चेतावनी देता हू कि यदि वे विश्वासघात करेंगे और मन, वचन या कर्मसे किसी भी तरह भगतसिंहके सम्प्रदायको प्रोत्साहन देंगे, तो काग्रेसका सारा जादू शीघ्र ही नष्ट हो जायगा। यदि बहुमतसे काग्रेसकी अहिंसा और सत्यकी नीतिमें विश्वास नहीं है, तो वे अिस प्रथम नियमको बदलवा लें। हमें नीति और धर्मका भेद समझ लेना चाहिये। नीति बदली जा सकती है, धर्म नहीं बदला जा सकता। परन्तु जब तक दोनोंमें से कोअी भी माना जाय तब तक दोनों ही समान हैं। अिसलिअे जो अहिंसाको केवल नीति मानते हैं, वे यदि काग्रेसकी सदस्यताको हिंसाके लिअे आड समझेंगे, तो अुन पर बेअीमानीका अिल्जाम लगाया जा सकेगा। मेरा यह विश्वास मिट नहीं सकता कि स्वराज्यकी दिशामें प्रगति करनेमें सबसे बडी बाधा अपनी नीतिमें हमारी श्रद्धाकी कमी है। हत्याके प्रयत्नकी अिस सौभाग्यपूर्ण निष्फलतासे हमारी आंखें खुलनी चाहिये।

परन्तु कुछ जल्दबाज नौजवान या प्रौढ लोग भी यह दलील देंगे कि "गवर्नरके काले कारनामे तो देखिये। क्या हत्यारा

स्वय नहीं कहता कि मैंने गोली अिसलिअे चलाओ कि शोलापुरकी करतूतें अैसी ही थी और गवर्नर अेक भारतीयको धकेलकर स्थानापन्न गवर्नर बन गया था?" मेरा जवाब यह है कि जब हमने १९२० में काग्रेसकी नीति अहिंसा और सत्यकी तय की, तब हमें ये सब बातें मालूम थी। अुस समय हमारी जानकारीमें अुन करतूतोंसे भी, जिनका सर अर्नेस्ट हॉट्सनसे ताल्लुक बताया जाता है, ज्यादा काली करतूतें थी। १९२० में काग्रेस जान-बूझकर और पूरी बहसके बाद अिस परिणाम पर पहुंची थी कि सरकारके बुरे और हिंसापूर्ण कृत्योका अुत्तर यह नही है कि हम अुससे ज्यादा हिंसा करें, प्रत्युत यह अधिक लाभदायक है कि हम हिंसाका जवाब अहिंसासे और दुष्टताका जवाब सचाअीसे दें। काग्रेसने यह भी देख लिया कि बुरेसे बुरे शासक भी स्वभावत. बुरे नही होते, मगर वे अुस प्रणालीके परिणाम है जिसके वे अिच्छासे या अनिच्छासे शिकार होते हैं। हमने यह भी देखा कि प्रणाली हममें से अच्छेसे अच्छोको भी बिगाड़ देती है। और अिसलिअे हमने अहिंसक कार्रवाअीकी अेक अैसी नीतिका विकास किया जिससे वह प्रणाली नष्ट हो जाय। दस वर्षके अनुभवने दिखा दिया है कि अहिंसा और सत्यकी नीति अुस पर आधे मनसे चलने पर भी चमत्कारी ढगसे अुपयोगी सिद्ध हुअी है और हमारी नाव किनारेके बहुत निकट आ पहुंची है। सर अर्नेस्ट हॉट्सनकी कारगुजारी कितनी ही खराब हो तो भी वह सर्वथा अप्रस्तुत है और अुससे हत्याके प्रयत्न और विश्वासघातके दोहरे जुर्ममें कोअी कमी नही आती, अुसे दरगुजर करना तो दूरकी बात है। कुछ विद्यार्थियों द्वारा विरोधी-प्रदर्शन किये जानेके समाचारोसे तो अेक भद्दी घटना और भी भद्दी हो गअी है। मुझे आशा है कि भारतभरके विद्यार्थी और शिक्षक जल्दी ही गभीरतापूर्वक चेतेंगे और शिक्षा-संस्थाओका वातावरण ठीक कर लेंगे। और मेरी रायमें अखिल भारतीय काग्रेस कमेटीके आगामी अधिवेशनका अनिवार्य कर्तव्य है कि वह अिस विश्वासघातपूर्ण दुष्कृत्यकी निन्दा और अपनी नीतिकी पुनर्घोषणा असंदिग्ध शब्दोमें करे।

यग अिडिया, ३०–७–'३१

११

हुल्लड़बाजी

दूसरे आदमियोंके अलावा शिक्षकोंके भी मुझे दो पत्र मिले हैं, जिनमें त्रावणकोरके विद्यार्थियोंकी हुल्लडबाजीकी शिकायत की गअी है। सी० अेम० अेम० कालेज, कोट्टायमके आचार्य कहते हैं कि जो लोग कक्षाओंमें जाना चाहते थे विद्यार्थियोंने अुनका रास्ता रोक लिया। अुन्होंने दो बार अुन लडकियोंको भी लौटनेके लिअे मजबूर किया, जो अुनकी बात सुननेके लिअे तैयार नहीं थी। वे कक्षाओंकी ओर दौड़े, शोर मचाया और कक्षाओंका काम असंभव कर दिया।

अेक अैसे सग्राममें, जिसके सचालक अिसके सर्वथा अहिंसक होनेका दावा करते हैं, विद्यार्थियोंके अिस प्रकार हिंसापूर्ण ढगसे शरीक होनेसे प्रगति असभव नहीं तो कठिन अवश्य हो जाती है। जहा तक मुझे मालूम है आन्दोलनके नेता यह नहीं चाहते कि विद्यार्थी, वे अुसमें भाग लेना चाहते हों तो भी, किसी प्रकार अहिंसाके मार्गसे अलग रहें। अडगेबाजी, हुल्लडबाजी आदि स्पष्ट हिंसा है। मुझे यह श्रेय दिया जाता है कि विद्यार्थियो पर मेरा असर है। अगर मेरा कुछ भी असर है तो मैं अुनसे कहूंगा कि वे मन, कर्म, वचनसे अहिंसाका पालन करें। लेकिन अगर आन्दोलनको चलानेवाले हिंसाकी शक्तियो पर काबू नहीं रख सकते, तो अुनके लिअे यही बेहतर है कि वे स्वय आन्दोलनके हितमें सविनय अवज्ञाको मुलतवी कर दें।

मुझे अितनी दूरसे कोअी नियम बना देनेका साहस नहीं करना चाहिये। मगर मेरे सामने जो प्रमाण मौजूद हैं अुनके आधार पर मुझे यह जरूर लगता है कि नेता लोग गभीर जोखिम अुठायेंगे, यदि अुन्होंने विद्यार्थियोंको यह खयाल करने दिया कि अुनकी हिंसासे आन्दोलनको सहायता मिलेगी या अुसे नेतागण गुप्त रूपसे पसन्द करते हैं।

हरिजन, २२-१०-'३८

जिस बेकाबू भीड़ने खिडकियां तोड डाली और जो अुसका बस चलता तो छतको भी तोड़ डालती, अुसे बुरी तरह फटकारते हुअे गांधीजीने कहा कि यह आनेवाली स्वाधीनताके लिअे अपशकुन है। कार्यसमिति, जो शहरमें अपनी बैठक कर रही है, यह विचार कर रही थी कि कमसे कम समयमें भारतके लोगोंके लिअे स्वाधीनता कैसे हासिल की जाय। वह स्वामियोंके परिवर्तनके लिअे परिश्रम नहीं कर रही है। यदि जनसाधारण स्वाधीनताका अुपयोग करना चाहते हैं, तो अुन्हें पहले स्वेच्छापूर्वक अनुशासन पालन करनेका रहस्य सीख लेना होगा, अन्यथा सत्ताधारियोंको अुन पर अनुशासन थोपना पडेगा। यह स्वाधीनता नहीं होगी, बल्कि अुससे अुलटा होगा। हरअेक प्रजाको वैसी ही सरकार मिलती है जिसकी वह पात्र होती है। यदि प्रजा हुल्लड़बाजीसे काम लेगी, तो सरकार और कर्मचारी कानून और व्यवस्थाके नाम पर वैसा ही करेंगे। नतीजा स्वतंत्रता या स्वाधीनता नहीं होगी, बल्कि दो अराजकताओंका संघर्ष होगा जिसमें अेक-दूसरे पर काबू पानेकी कोशिश की जायगी। स्वेच्छापूर्ण अनुशासन सामूहिक आजादीकी पहली जरूरत है। यदि लोगोंका व्यवहार अच्छा होगा, तो सरकारी कर्मचारी अुनके सच्चे सेवक बन जायंगे; नहीं तो वे अुनकी गर्दन पर सवार हो जायंगे और अुसके लिअे थोडा बहुत औचित्य भी होगा। बोअर-युद्धके दिनोंमें मैंने हजारों सिपाहियोंको आधी रातके समय गहरे अंधकारमें घने जंगलमें चुपचाप कूच करते देखा है, क्योंकि सिगरेट सुलगानेको दियासलाअी तक नहीं जलानी थी, ताकि दुश्मनको अुनकी हलचलका पता न लग जाय। सारी टुकडी अेक आदमीकी तरह पूरी खामोशी और अेकदिलीसे आगे बढती थी। स्वाधीनताकी ओर कूच करते हुअे राष्ट्रके लिअे अनुशासनकी आवश्यकता अनंत गुनी अधिक है। अुसके बिना रामराज्य, जिसका अर्थ पृथ्वी पर अीश्वरका राज्य है, खाली सपना ही रहेगा।

हरिजन, १८-८-'४६

प्रार्थनाके बाद गांधीजीने कलकत्तेके विद्यार्थियोंको भाषण दिया: "आपने अनुकम्पा करके कृपा करके ग्रामको बारेंबाओंके बारेमें मुझसे मिल लिये थे। अुन्हें शहीद साहबके प्रति विद्यार्थियोंके व्यवहारके बारेमें डर लग रहा था। मैंने कहा कि मैं केवल प्रार्थना करूंगा और प्रार्थनाके बाद सदाकी भांति भाषण दूंगा। अैसा नहीं होना चाहिये था। विद्यार्थी-जगतमें सर्वत्र अराजकता दिखाअी देती है। वे अपने शिक्षकों और अपने अनुगुरुजनोंकी आज्ञाका पालन नहीं करते। अुलटे, वे अपने शिक्षकोंसे आज्ञा-पालनकी आशा रखते हैं। जो लोग राष्ट्रके भावी नेता होनेवाले हैं, अुनकी तरफसे अैसा होना दुःखद है। ग्रामको वे बेकाबू हो गये थे। मैंने अैसे विज्ञापन देखे, जिनमें विदेशी भाषामें शहीद साहबका अशोभनीय भाषामें वर्णन किया गया है। चूंकि आपने शहीद साहबका अशोभनीय अपमान किया है, अिसलिअे आपने मेरा अपमान किया है। शहीद साहबको तो अुनके खिलाफ अिस्तेमाल की गअी भाषासे अपमान महसूस नहीं होगा। लेकिन मैं यह रवैया अख्तियार नहीं कर सकता। विद्यार्थियोंमें सबसे अधिक नम्रता और सही व्यवहारका गुण होना चाहिये।"

हरिजन, ७-९-'४७

जहां तक मैं जानता हूं हिन्दू धर्म तो यह मानता है कि जब तक अुसकी पढ़ाअी खतम न हो जाय, तब तक विद्यार्थीका जीवन सन्यासीके जीवन जैसा होना चाहिये। अुसे अत्यन्त कठोर अनुशासनमें रहना चाहिये। अुसका आचरण आदर्श आत्म-संयमका होना चाहिये। यदि वे अुस आदर्श पर कुछ भी चलते होते, तो प्रार्थना-सभामें अुन्होंने जो कुछ किया वह न करते।

हरिजन, ७-९-'४७

१२

हड़तालें

गुजरात कालेज, अहमदाबादके लगभग सात सौ विद्यार्थियोंकी हड़ताल, जिसे अब २० दिनसे अधिक हो गये, केवल स्थानीय महत्त्वका विषय नही रह गयी है। मजदूरोंकी हड़ताल ही काफी बुरी चीज होती है, विद्यार्थियोंकी हड़ताल तो और भी खराब बात है, भले अुसकी घोषणा अुचित कारणोसे हुअी हो या अनुचित। वह ज्यादा बुरी अिसलिअे है कि अुसके परिणाम अन्तमें ज्यादा बुरे होते हैं, और अिसलिअे कि अुसमें जो दो पक्ष भाग ले रहे हैं अुनकी अेक विशेष प्रतिष्ठा है। मजदूर अशिक्षित होते हैं, विद्यार्थी शिक्षित होते हैं और अुन्हे हड़ताल करके कोअी अधिक लाभ अुठाना नही होता। अिसी प्रकार मालिकोकी भाति शिक्षा-संस्थाओंके सचालकोके हितोका विद्यार्थियोके हितोमे संघर्ष नही होता। साथ ही विद्यार्थी अनुशासनकी मूर्ति माने जाते हैं। अिसलिअे विद्यार्थियोकी हड़तालके दूरवर्ती परिणाम होते हैं और वह असाधारण परिस्थितिमें ही अुचित हो सकती है।

यद्यपि सुव्यवस्थित स्कूलो और कालेजोमे विद्यार्थियोकी हड़तालें होनेके अवसर क्वचित् ही आयेंगे, फिर भी अैसे मौकोकी कल्पना करना असभव नही है जब अुनका हड़ताल करना अुचित होगा। अुदाहरणके लिअे, अगर कोअी आचार्य लोकमतके विरुद्ध जाकर अेक अैसे सार्वभिक हर्ष मनानेके दिनको छुट्टी माननेसे अिनकार कर दे, जिसे माता-पिता और अुनके स्कूल-कालेज जानेवाले बच्चे दोनो चाहते हो, तो अुस दिनके लिअे विद्यार्थियोंका हड़ताल घोषित करना अुचित होगा। छात्रोंका आत्मभान ज्यों-ज्यों अधिक होगा और राष्ट्रके प्रति अपनी जिम्मेदारीका अुनका ज्ञान बढ़ेगा, त्यो-त्यो भारतमें अैसे अवसर अक्सर आयेंगे।

गुजरात कालेजके मामलेमें मैं यह कहे बिना नही रह सकता कि जहां तक मैं निर्णय कर सका हूं, विद्यार्थियोके लिअे हड़ताल करनेका

कानी कारण था। यह कहना बिलकुल गलत है, जैसा कि कुछ लोगोंमें कहा गया है, कि हड़ताल चंद शरारती विद्यार्थियोंने खड़ी कर दी है। सात सौ विद्यार्थियोंको अेक पखवाड़ेसे भी ज्यादा दिन तक अेक साथ टिकाये रखना मुट्ठीभर शरारतियोंके लिअे नामुमकिन है। स्थिति तो यह है कि जिम्मेदार नागरिक विद्यार्थियोंको सलाह दे रहे हैं और अनको मार्ग बता रहे हैं। अनमें से मुख्य श्री मावलंकर हैं, जो अनुभवी वकील हैं और अपनी बुद्धिमानी और नरमीके लिअे मशहूर हैं। अिस सिलसिलेमें अनका आचार्यसे सम्पर्क रहा है और अनकी पक्की राय है कि विद्यार्थी बिलकुल ठीक कर रहे हैं।

स्थितिका सारांश यों बयान की जा सकती है। विद्यार्थी कालेजसे गाअिमन फॉरवार दिवस पर अुसी तरह गैरहाजिर रहे जैसे भारत भरमें और लड़के गैरहाजिर रहे। यह अनुपस्थिति बेशक अनधिकृत थी। कायदेसे छात्रोंने भूल की। अुन्हें गैरहाजिर होनेसे पहले कमसे कम बाजाब्ता अिजाजत मांगनी चाहिये थी। परन्तु लड़के तो दुनियाभरमें अेकसे ही होते हैं। विद्यार्थियोंमें अुत्साह जाग्रत होनेके बाद अुसे रोकनेकी आशा करना अैसा ही है जैसे हवाको बांध कर रखना। अनके कृत्यको अधिकसे अधिक बचपनकी नादानी कह सकते हैं। समझौतेकी बहुत कुछ बातचीतके बाद आचार्यने अुसे दरगुजर कर दिया और लड़कोंको, वे चाहे तो तीन रुपये फीस देकर, सत्रान्त परीक्षामें बैठनेकी अिजाजत दे दी गअी। यह मान लिया गया था कि अधिकांश छात्र परीक्षामें बैठेंगे और जो नहीं बैठेंगे अुन्हें कोअी दंड नहीं दिया जायगा। परन्तु कहा जाता है कि आचार्यने अपना वचन भंग कर दिया और यह सूचना जारी कर दी कि तीन-तीन रुपये देकर सत्रान्त परीक्षा देना लड़कोंके लिअे लाजिमी है। जैसा कि स्वाभाविक था, अिससे लड़के भड़क अुठे। अुन्हें लगा कि 'नमक ही अपना सलोनापन छोड़ दे तो अुसे कैसे नमकीन बनाया जाय?' अिसलिअे अुन्होंने हड़ताल कर दी। और बाकीकी बात सीधी-सादी है। हड़ताल जारी है और शत्रु-मित्र सभी प्रमाणपत्र देते हैं कि लड़कोंने बड़ा संयम और सद्व्यवहार रखा है। मेरी रायमें कालेजके छात्रोंका धर्म है कि गुजरात कालेजके आचार्यके

विरुद्ध जैसी शिकायत है, अपने आचार्यके वैसे वचनभंगका वे विरोध करें। जब कोअी शिक्षक वचनभंगका दोषी पाया जाय, तब अुसका वैसा हार्दिक सम्मान नहीं किया जा सकता, जिसका वह अपने सम्मानपूर्ण पेशेके कारण हकदार है।

यदि विद्यार्थी अिरादेके पक्के हैं तो हड़तालका अेक ही नतीजा हो सकता है, और वह यही कि अुक्त अपमानजनक सूचना वापस ले ली जाय और विद्यार्थियोंको किसी भी प्रकारकी सजा न देनेका बिलाशर्त वचन दिया जाय। सच पूछा जाय तो सरकारके लिअे सबसे अुचित काम यह है कि वह कालेजके लिअे दूसरा आचार्य नियुक्त करे।

सरकारी कालेजोंमें अुन लड़कोंके खिलाफ, जो तीव्र राजनीतिक विचार रखते हैं या जो सरकारको नापसन्द राजनीतिक सभाओंमें कुछ भी भाग लेते हैं, बहुत ज्यादा जासूसी की जाती है और अुन्हें बेहद सताया जाता है। अब समय आ गया है कि यह अनुचित हस्तक्षेप बन्द कर दिया जाय। भारत जैसे विदेशी हुकूमतके दर्दसे कराहनेवाले देशमें विद्यार्थियोंको राष्ट्रीय स्वतंत्रताके आन्दोलनोंमें भाग लेनेसे रोकना असंभव है। अधिकसे अधिक यह किया जा सकता है कि अुनके अुत्साहका अिस प्रकार नियमन किया जाय कि अुनकी पढ़ाअीमें खलल न पड़े। वे युद्ध करनेवाले दलोंका पक्ष लेकर दलबन्दीमें न पड़ें। परन्तु अुन्हें जो भी राजनीतिक मत पसन्द हो अुसके रखने और क्रियात्मक रूपसे अुसकी हिमायत करनेका अुन्हें हक और आजादी है। शिक्षा-संस्थाओंका काम यह है कि जो लड़के और लड़कियां अुनमें भरती हों अुन्हें शिक्षा दें और अुनके द्वारा अुनके चरित्र-निर्माणमें सहायक हों। अुनका यह काम हरगिज नहीं है कि शालासे बाहरकी अुनकी राजनीतिक या नीतिसे सम्बन्ध न रखनेवाली दूसरी प्रवृत्तियोंमें हस्तक्षेप करें।

अिसलिअे अहमदाबादके विद्यार्थियोंकी हड़तालसे अुत्पन्न हुआ प्रश्न प्रथम श्रेणीका महत्त्व रखता है और वे अन्य शिक्षा-संस्थाओं और आम जनताकी सहानुभूति और समर्थनके पात्र हैं। माता-पिताओंकी

हड़तालके साथ अुतनी ही दिलचस्पी है जितनी कि स्कूल-कालेज जानेवाले लड़के-लड़कियोंकी है। कारण, मुझे मालूम हुआ है कि अहमदाबादके छात्रोंने जो कुछ किया है बराबर अपने माता-पिताओं या अभिभावकोंकी मंजूरीसे किया है।

यंग अिंडिया, २४-१-'२९

गुजरात कालेज, अहमदाबादके विद्यार्थियोंकी हड़ताल ज्योंकी त्यों जोरके साथ जारी है। विद्यार्थी जो दृढ़ निश्चय, शान्ति और अेकता दिखा रहे हैं वह सम्पूर्ण प्रशंसाके योग्य है। अपनी ताकतका अनुभव तो अभी-अभी अुन्हें हो रहा है। और मैं सोचता हूं कि यदि वे कुछ रचनात्मक कार्य करेंगे तो अुन्हें अपनी ताकत और भी ज्यादा महसूस होगी। मेरा पक्का विश्वास है कि हमारे स्कूल और कालेज हमें बहादुर बनानेके बजाय खुशामदी, डरपोक, अनिश्चयी और अस्थिर बनाते हैं। मर्दानगी डाट-डपट करने या डींग हांकने या रोब गांठनेमें नहीं होती। वह तो सही कामके साहसमें और अुसका फल भुगतनेमें होती है, फिर भले ही वह काम सामाजिक, राजनीतिक या और किसी तरहका हो। वह बातोंमें नहीं, क्रियामें होती है। विद्यार्थियोंके सामने अब संभवतः प्रतीक्षाका अेक लम्बा समय रहेगा। यदि घटनाचक्र अैसा स्वरूप ग्रहण कर ले तो अुन्हें पस्तहिम्मत नहीं होना चाहिये। अुस समय दखल देना जनताका काम होगा। अुस समय भारत भरके विद्यार्थी-समाजका काम होगा कि वह अुस न्यायकी रक्षा करे जो सर्वथा विद्यार्थियोंके पक्षमें है। जो अिस सारे प्रश्नका अध्ययन करना चाहें, वे श्री मावलंकरसे तमाम सम्बन्धित पत्रोंकी नकलें प्राप्त कर सकते हैं। अहमदाबादके विद्यार्थियोंकी लड़ाअी अुनके निजी अधिकारोंकी लड़ाअी नहीं है, यह तमाम विद्यार्थियोंकी अिज्जतकी और अेक प्रकारसे राष्ट्रीय सम्मानकी लड़ाअी है। जो विद्यार्थी अिस तरह टक्कर ले रहे हैं, वे जनताकी सम्पूर्ण सहानुभूतिके हकदार हैं।

और यह सहानुभूति विद्यार्थियोंको अवश्य मिलेगी, यदि वे किसी रचनात्मक राष्ट्रीय प्रवृत्तिमें लग जायें। राष्ट्रीय काम करके वे कुछ

खोयेंगे नहीं। कांग्रेसका कार्यक्रम अुन्हें पसन्द न आता हो तो अुन्हें अुसी तक सीमित रहनेकी जरूरत नहीं है। मुख्य बात है अेकता कायम रखने और स्वतंत्र ठोस काम करनेकी शक्तिका प्रत्यक्ष प्रमाण देना। हमारे विरुद्ध बहुधा यह अभियोग लगाया जाता है कि हम बढ़िया भाषण झाड़ने और व्यर्थ क्षणिक प्रदर्शन करनेमें होशियार हैं, परन्तु जब हमसे अैसा काम करनेको कहा जाता है जिसमें अेकता, सहयोग, दृढ़ता और अटल निश्चयकी जरूरत होती है तो हम असफल होते हैं। अिस अिलजामको झूठा साबित करनेका विद्यार्थियोंके लिअे यह भव्य अवसर है। क्या वे समयानुकूल अूंचे अुठेंगे?

अुन्हें श्रद्धा तो किसी भी तरह नहीं छोड़नी चाहिये। कालेज राष्ट्रकी सम्पत्ति है। यदि हम पतित न हो गये होते तो विदेशी सरकार हमारी सम्पत्ति पर हरगिज कब्जा नहीं रख सकती थी और न राष्ट्रके स्वातंत्र्य-संग्राममें भाग लेना छात्रोंके लिअे व्यावहारिक रूपमें जुर्म ही बना सकती थी। अिस लड़ाअीके मुखिया बनना तो विद्यार्थियोंका धर्म और विशेषाधिकार होना चाहिये।

यंग अिंडिया, ३१-१-'२९

बंगलोरके अेक कालेज-छात्र लिखते हैं :

"मैंने 'हरिजन' में आपका लेख पढ़ा। आपसे मेरी प्रार्थना है कि अंदमान-दिवस, बूचड़खाना-विरोधी दिवस आदिकी हड़तालोंमें विद्यार्थियोंके भाग लेनेके बारेमें अपनी राय बतायें।"

मैंने विद्यार्थियोंकी वाणी और गति परसे पाबन्दियां हटा लेनेकी वकालत तो की है, लेकिन मैं राजनीतिक हड़तालों या प्रदर्शनोंका समर्थन नहीं कर सकता। विद्यार्थियोंको राय बनाने और प्रगट करनेकी अधिकसे अधिक आजादी होनी चाहिये। वे जिस राजनीतिक दलको पसन्द करते हों, अुसके साथ वे खुले तौर पर हमदर्दी रख सकते हैं। परन्तु मेरी रायमें वे जब तक पढ़ते हैं, तब तक अुन्हें कार्यकी आजादी नहीं हो सकती। विद्यार्थी राजनीतिमें सक्रिय भाग भी ले

और साथ ही अध्ययन भी जारी रखें, यह नहीं हो सकता। बड़ी राष्ट्रीय अुथल-पुथलके समय कड़े नियम बनाना कठिन होता है। अुस समय वे हड़ताल नहीं करते, या 'हड़ताल' शब्द अैसे हालातमें अिस्तेमाल किया जा सकता हो तो वह पूरी हड़ताल होती है, अुसमें अध्ययन स्थगित कर दिया जाता है। अिस प्रकार जो बात अपवाद मालूम होती है वह असलमें अपवाद नहीं है।

सच तो यह है कि पत्रलेखकने जो सवाल अुठाया है वह कांग्रेसी प्रान्तोंमें नहीं अुठना चाहिये। कारण वहां अैसा कोअी अवसर नहीं हो सकता, जिसे अुत्तम विचारवाले विद्यार्थी खुशीसे स्वीकार न कर लें। अुनमें से अधिकांश कांग्रेसी विचारके हैं, होने ही चाहियें। वे अैसा कोअी काम नहीं कर सकते जिससे मन्त्रियोंको परेशानी हो। अगर वे हड़ताल करेंगे तो अिसीलिअे करेंगे कि मन्त्री अैसा कराना चाहते हैं। मगर मैं यह कल्पना नहीं कर सकता कि कांग्रेसी मन्त्री अुनसे हड़ताल कराना चाहेंगे, सिवा अुस हालतके जब वे पदारूढ़ न रहें या जब कांग्रेस तत्कालीन सरकारके विरुद्ध निःशस्त्र अहिंसक युद्ध घोषित कर दे। और अुस सूरतमें भी मेरे खयालसे प्रारम्भमें ही विद्यार्थियोंको हड़तालोंके लिअे अपनी पढ़ाअी स्थगित कर देनेको कहना दिवालियापन घोषित कर देनेके बराबर होगा। यदि हड़तालोंके रूपमें कोअी प्रदर्शन करनेके लिअे आम लोग कांग्रेसके साथ हैं, तो विद्यार्थियोंको — बिलकुल आखिरी वक्तके सिवा — अछूता छोड़ दिया जायगा। जहां तक मुझे याद है पिछली लड़ाअीके दिनोंमें विद्यार्थियोंको शुरूमें नहीं, बल्कि आखिरमें बुलाया गया था। और अुस सूरतमें भी केवल कालेजके छात्रोंको ही।

हरिजन, २-१०-'३७

नीचेका अंश अन्नमलाअी विश्वविद्यालयके अेक शिक्षकके पत्रका है :

"पिछले नवम्बरमें किसी समय पचपन-साठ विद्यार्थियोंकी अेक टोलीने अेक विद्यार्थी भाअी पर, जो विश्वविद्यालय स्नातक

मत्री है, संगठित हमला किया। अुपकुलपति श्री श्रीनिवास शास्त्रीने अिस बातको गभीर माना और टोलीके मुखियाको विश्वविद्यालयसे निकालनेकी और बाकी लडकोंको अिस सालीमी वर्षके अन्त तक पढाअीमें शामिल न करनेकी सजा दी।

"अिन दंडित छात्रोंके कुछ हमदर्दों और दोस्तोंने कक्षाओसे गैरहाजिर होना और हड़ताल करना चाहा। दूसरे दिन अुन्होने दूसरे विद्यार्थियोमे परामर्श किया और अुन्हे भी विरोधस्वरूप हडताल करनेको राजी करनेकी कोशिश की। परन्तु अुन्हें सफलता नही मिली, क्योकि अधिकाश विद्यार्थियोंको लगा कि अुन पाच-छह् जनोको जो दण्ड दिया गया था अुसके वे अच्छी तरह् पात्र थे और अिसलिअे अुन्होने हडतालियोंका साथ देने या अुनके प्रति कोअी सहानुभूति दिखानेसे अिनकार कर दिया।

"दूसरे दिन लगभग २० प्रति सैकडा विद्यार्थी कक्षाओंमें अनुपस्थित रहे; बाकी ८० फीसदी सदाकी भाति कक्षाओंमें हाजिर हुअे। मैं अितना और कह् दू कि अिस विश्वविद्यालयकी छात्रसख्या ८०० के करीब है।

"अिसके बाद जो विद्यार्थी निकाला गया था वह हड़ताल चलानेके लिअे छात्रावासमें आया। हडतालको असफल देखकर अुसने शामको दूसरे तरीके अपनाये; अुदाहरणार्थ छात्रालयसे निकलनेके चार मुख्य रास्तो पर आडे लेट जाना, छात्रालयके कुछ फाटकोंके ताले लगा देना, कुछ छोटी अुम्रके लडकोको अुनके कमरोमें बन्द कर देना — खास तौर पर अुन छोटे लडकोको जिनसे डरा-धमकाकर अपनी बात मनवाअी जा सकती है। अिस प्रकार तीसरे पहर पचास-साठ लोगोने शेप विद्यार्थियोंको छात्रावासके फाटकोंसे बाहर आनेसे रोक दिया।

"अधिकारियोने अिस प्रकार फाटक बन्द देखकर चहारदीवारीमें रास्ता निकालना चाहा। परन्तु जब अुन्होंने विश्वविद्यालयके नौकरोंकी मददसे चहारदीवारीको गिराना

शुरू किया, तो हडतालियोने दूसरे विद्यार्थियोको टूटे हुअे रास्तेमें होकर कालेज जानेसे रोक दिया। अुन्होने धरना देनेवालोंको अुठाकर हटानेका प्रयत्न किया, परन्तु सफल नही हुअे। जब अधिकारियोंने स्थितिको काबूमें बाहर पाया, तो अुन्होने निकाले हुअे विद्यार्थीको छात्रावाससे हटा देनेका पुलिससे अनुरोध किया, क्योंकि वही सारे झगडेकी जड था। पुलिसने अुसे हटा दिया, अिससे स्वभावत कुछ और विद्यार्थी भडक अुठे और वे हडतालियोके साथ हमदर्दी दिखाने लगे। दूसरे दिन सुबह हडतालियोने देखा कि सारी चहारदीवारी हटा ली गअी है, तो वे कालेजके हातेमें घुसे और सीढियो और कक्षाओके दरवाजोके आगे लेटकर धरना देना शुरू कर दिया। तब श्री श्रीनिवास शास्त्रीने विश्वविद्यालयको बन्द करके २९ नवम्बरसे १६ जनवरी तक लम्बी छुट्टिया कर दी। अुन्होने अखबारोको बयान देकर विद्यार्थियोसे अपील की कि वे घरसे शुद्ध और अध्ययनके लिअे अधिक अच्छी मन स्थिति लेकर लौटें।

"परन्तु कालेज जब फिर खुला तो हडतालियोकी कारंवाअिया फिर शुरू हो गअी, क्योंकि अुन्हे छुट्टियोमें . . की सलाह और मिल गअी थी। अैसा मालूम होता है कि वे राजाजीके पास गये थे, परन्तु अुन्होने अुनसे अुपकुलपतिकी आज्ञा माननेको कहा और दखल देनेसे अिनकार कर दिया। अुन्होने अुपकुलपतिके मारफत हडतालियोको दो तार भी भेजे, जिनमें हडताल तोड देने और कालेज कक्षाओंमें जाकर शातिपूर्वक काममें लग जानेकी अपील की। यद्यपि अधिकाश अच्छे विद्यार्थियो पर अिन तारोका अच्छा असर हुआ, फिर भी हडताली विद्यार्थी अपनी बात पर डटे रहे।

"धरना अभी तक जारी है। यह तो अब लगभग मामूली बात बन गया है। हडतालियोकी सख्या लगभग ३५ से ४५ तक होगी। अुनके लगभग ५० हमदर्द है जो सामने आकर अुनके साथ हडताल करनेका साहस तो नही रखते, मगर भीतर

गड़बड़ पैदा करते हैं। वे रोज अिकट्ठे आते हैं और कक्षाओंके दरवाजोंके सामने और पहली मंजिल पर कक्षाओंकी सीढ़ियों पर लेटकर छात्रोंको कक्षाओंमें जानेसे रोकते हैं। परन्तु अध्यापक जगह बदलते रहते हैं और धरना देनेवालोंके पहुंचनेसे पहले कक्षायें ले लेते हैं। हर घंटेमें कक्षाओंका स्थान बदल दिया जाता है। कभी-कभी कक्षायें खुलेमें ली जाती हैं, ताकि धरना देनेवाले लेटकर रास्ता न रोक सकें। अिन अवसरों पर हड़ताली लोग चिल्ला-चिल्लाकर और अुन विद्यार्थियोंको, जो अपनी-अपनी कक्षाओंके अध्यापकोंके व्याख्यान सुननेको जमा होते हैं, भाषण देकर कक्षाओंमें खलल डालते हैं।

"कल अेक नअी बात हुअी। हड़ताली कक्षाओंमें आये, फर्श पर लेट गये और नारे लगाने लगे। मैंने सुना कि कुछ हड़तालियोंने अध्यापकोंके आ सकनेसे पहले काले तख्तों पर लिखना शुरू कर दिया। यदि कोअी अध्यापक दब्बू मालूम होते हैं, तो कुछ हड़ताली अुन्हें भी डराने-धमकानेका प्रयत्न करते हैं। सच तो यह है कि अुन्होंने अुपकुलपतिको भी धमकी दी कि अुन्होंने अुनकी मांगें स्वीकार नहीं की तो 'हिंसा और रक्तपात' किया जायगा।

"अेक और महत्त्वपूर्ण मुद्दा, जो मुझे आपको बताना चाहिये, यह है कि हड़तालियोंको कुछ बाहरवालोंसे सहायता मिलती है। वे विश्वविद्यालयके अहातेमें घुसनेके लिअे गुण्डोंको नौकर रखते हैं और वहां काममें खलल डालते हैं। सच तो यह है कि मैंने कअी अैसे गुण्डे देखे हैं — और अैसे लोग जो विद्यार्थी नहीं हैं, बरामदोंमें और कक्षाओंके आसपास भी अिधर-अुधर घूमते रहते हैं। अिसके अलावा छात्र अुपकुलपतिके विरुद्ध गाली-गलौजकी भाषाका प्रयोग भी करते हैं।

"जिस मुद्दे पर मैं जोर देना चाहता हूं वह यह है: हम सब अर्थात् कअी अध्यापक और बहुतसे विद्यार्थी यह महसूस

करते हैं कि ये कार्रवाअियां सत्य और अहिंसामय नहीं हैं और अिसलिअे सत्याग्रहकी भावनाके विरुद्ध हैं।

"मुझे विश्वस्त रूपमें मालूम हुआ है कि कुछ हड़ताली छात्र अिसे आग्रहपूर्वक अहिंसक बताते हैं। वे कहते हैं कि यदि महात्माजी अिसे हिंसक घोषित कर देंगे, तो वे अिन कार्रवाअियोंको बन्द कर देंगे।'

अिस पत्र पर १७ फरवरीकी तारीख है और यह बाबासाहब बालेश्वरके नाम है, जिन्हें ये अध्यापक बखूबी जानते हैं। जो अंश मैंने नहीं छापा है, अुसमें बाबासाहबका मत पूछा गया है कि क्या विद्यार्थियोंका यह आचरण अहिंसक कहला सकता है, और अुसमें अुद्दण्डताके अुस रवैये पर खेद प्रगट किया गया है जो भारतके अितने सारे विद्यार्थियोंमें फैल गया है।

पत्रमें अुन लोगोंके नाम दिये गये हैं जो हड़तालियोंको अपना ऐसा ही व्यवहार बनाये रखनेको भड़का रहे हैं। हड़ताल पर मेरी राय प्रकाशित होने पर विरोधमें, बहुत करके किसी विद्यार्थीने मुझे अेक रोषपूर्ण तार भेजा कि हड़तालियोंका व्यवहार सम्पूर्णतः अहिंसक है। मैंने जो बयान अुद्धृत किया है अुसे सही मान लिया जाय, तो मुझे यह कहनेमें कोअी संकोच नहीं कि छात्रोंका रवैया दरअसल हिंसक है। अवश्य ही, यदि कोअी मेरे घरका रास्ता रोकता है, तो अुसकी कार्रवाअी अुतनी ही हिंसक है जितनी मुझे अपने द्वारसे धक्का देकर हटानेकी होगी।

यदि छात्रोंको अपने अध्यापकोंके विरुद्ध कोअी वास्तविक शिकायत है, तो अुन्हें हड़ताल करने और अपने स्कूल या कॉलेज पर धरना लगाने तकका अधिकार हो सकता है। परन्तु अिसी हद तक कि अनजान छात्रोंको कक्षाओंमें जानेसे शिष्टतापूर्वक सचेत कर दिया जाय। यह काम वे भाषण देकर या पर्चे बांट कर भी कर सकते हैं। परन्तु वे रास्ता रोकने या जो लोग हड़ताल नहीं करना चाहते अुन पर कोअी दबाव डालनेकी हरकत नहीं कर सकते।

खडे रहना कठिन है और यदि वन्देमातरम् गानेका रिवाज पडने दिया जाय तो अिसका अर्थ होगा अुनके द्वारा अुसका राष्ट्रीय गीत मान लिया जाना। राष्ट्रीय गीत अिसे वे मानना नही चाहते। विद्यार्थियोकी तरफसे हजार दलीलें दी गअी, फिर भी कोअी समझौता नही हो सका। विद्यार्थियोने हडताल कर दी है। अिसी प्रकार कांग्रेसको भी सत्याग्रह और असहयोग करना चाहिये, क्योकि साम्राज्यवादी ब्रिटेन हमारे दृष्टिकोणको कभी नही समझेगा।"

पिछले दिनो मैंने विद्यार्थियोकी हडतालोके खिलाफ बहुत कुछ लिखा है। मैं अिस कालेजका नाम नही जानता। जानता होता तो अुसके अधिकारियोसे सचाअी जाननेकी कोशिश करता। अिसलिअे मैं अपनी राय अिस मान्यताके आधार पर बनाता हू कि मेरे सवाद-दाताने सच सच बातें बयान की है। यदि अैसा है तो मुझे यह कह सकनेमें खुशी है कि यह हडताल बिलकुल अुचित थी। और मुझे आशा है कि वह सर्वथा स्वयप्रेरित और सफल हुअी होगी। गीत सचमुच राष्ट्रीय है या नही, यह निश्चय करना सबन्धित मिशनरियोका काम नही है। अुनके लिअे नि सदेह अितना जान लेना काफी है कि अुनके विद्यार्थी अुसे राष्ट्रीय गीत मानते है। अध्यापको और शिक्षकोंको अपने शिष्योमें लोकप्रिय बनना है, तो अुन्हे अुस समय तक अुनकी प्रवृत्तियों और आकाक्षाओंके साथ सहानुभूति रखनी पडेगी जब तक वे हानिकारक या अनैतिक न हो।

हरिजन, ६–१०–'४०

(१)

पडित जवाहरलाल नेहरूकी गिरफ्तारी और कैद पर विद्यार्थियोने जो प्रदर्शन किये है और सम्बन्धित सरकारे जो जवाबी कार्रवाअिया करनेकी धमकी दे रही है, अुनके बारेमें मद्रास और युक्तप्रान्तके विद्यार्थियोकी ओरसे मुझे कअी पत्र मिले है। अब विद्यार्थियोकी अिच्छा है कि विरोधमें हडताल की जाय। वे मेरी सलाह चाहते है।

जब भारतके अेक निहायत शरीफ और बहादुर सपूतकी कैद पर सारी दुनियाका सिर शर्मके मारे झुक रहा है, तब कोअी आश्चर्य नही कि भारतका विद्यार्थी-जगत भी सिरसे पांव तक आन्दोलित हो अुठे। अिसलिअे जहा मेरी हमदर्दी पूरी तरह विद्यार्थियोके साथ है, मै अपने अिस खयाल पर दृढ हू कि जवाहरलाल नेहरूकी कैद पर रोषके चिह्नस्वरूप अुनका बाहर निकल आना बेजा था। बदला लेनेकी धमकिया देकर दोनो प्रातोंकी सरकारे और भी बेजा कर रही हैं।

लेकिन अच्छा हो यदि विद्यार्थी विरोधस्वरूप हड़तालका आश्रय लेनेका विचार छोड दें। यदि वे मेरी सलाह चाहते हों तो अुन्हें अपना अेक अधिकृत प्रतिनिधि भेजना चाहिये जिसके पास पूरे तथ्य हों, क्योंकि मुझे तो अुनकी बहुत ही अूपरी जानकारी है। जैसा भी कुछ पथप्रदर्शन मैं कर सकता हू खुशीसे करूगा। वे जानते हैं कि जिस सग्रामका नेतृत्व करनेका मै प्रयत्न कर रहा हूं अुसमें अुनके हार्दिक सहयोगकी मैं कितनी कद्र करूगा। कुछ भी हो, वे बिना विचारे या जल्दबाजीमें कोअी कार्रवाअी करेंगे तो अपना काम बिगाड लेंगे और राष्ट्रीय हितको हानि पहुचायेंगे।

(२)

अखबारोंमें प्रकाशित होनेवाले कुछ अैसे अंशोंकी ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया गया है, जिनमें विद्यार्थियोको अशात करनेवाले प्रश्नोंके बारेमें मेरी राय दी गयी बतायी गअी है। अखबारोंमें जो कुछ निकला है वह सब मैंने नही पढा है, यदि किसी और कारणसे नही तो सिर्फ अिसीलिअे कि मैं अपनी शक्ति बचाकर रखना चाहता हूं। क्योंकि पिछले दिनो मुझे अुस पर अनुचित रूपमें भारी दबाव डालना पडा। मेरा मत दृढ है। जब तक कि विद्यार्थी सदाके लिअे अपने स्कूल-कालेज छोड़ देनेका संकल्प न कर लें, तब तक अुनके लिअे कितनी ही अुत्तेजना मिलने पर भी राजनीतिक हडतालें करना अुचित नही होना चाहिये। हमारी स्थिति आजाद मुल्कोंसे भिन्न है; हमारी शिक्षा-सस्थाओं पर अुन्ही शासकोका काबू है, जिनसे

स्वतंत्र होनेके लिअे राष्ट्र संग्राम कर रहा है। अिसलिअे जिस शिक्षाका विधान अिन शासकोंने किया है और जिस पर अुन्हींका नियंत्रण है, अुसे प्राप्त करनेकी कीमतके तौर पर विद्यार्थियोंको आत्म-दमन करना पड़ेगा। वे दोनों हाथोंमें लड्डू नहीं रख सकते। यदि, जैसा कि मालूम होता है, वे अुस शिक्षाको चाहते हैं जो स्कूल-कालेजोंमें मिलती है, तो अुन्हें अिन संस्थाओंके लिअे बनाये गये नियम-अुपनियमोंका अनुसरण करना पड़ेगा। अिसलिअे जब तक अिन संस्थाओंके संचालक न चाहें, कोअी राजनीतिक हड़तालें नहीं होनी चाहिये। लेकिन मैंने अेक बीचका मार्ग सुझाया है। विद्यार्थियोंको स्कूल-कालेजके समयके अतिरिक्त पर्याप्त समय मिलता है जिसके वे स्वयं मालिक हैं। वे सभाअें कर सकते हैं। व्यवस्थित ढंगसे राष्ट्रीय कार्यके प्रति अपनी सहानुभूति प्रगट कर सकते हैं और चाहें तो जुलूस भी निकाल सकते हैं। जो सविनय आज्ञाभंगमें भाग लेना चाहते हों और सब [illegible] स्वीकार करते हों वे असा कर सकते हैं बशर्ते कि वे निश्चित अपनी पढ़ाअी मुलतवी कर दें, सविनय आज्ञाभंगके लिअे लगाअी गअी शर्तोंका पालन करें और मेरी अनुमति प्राप्त कर लें।

व्यक्तिगत रूपमें छात्रोंकी तरफसे मुझे जो पत्र मिल रहे हैं, अुनसे प्रगट होता है कि अुन्हें मेरे नेतृत्वमें बहुत कम विश्वास है। क्योंकि अुनका अुस रचनात्मक कार्यक्रममें भरोसा नहीं है जिसका केन्द्रीय और सबसे प्रत्यक्ष भाग खादी है। अुनका कातनेमें विश्वास नहीं है और यदि मेरे पत्रलेखकोंको विश्वस्त [illegible] माना जाय, तो अुनका अहिंसामें भी विश्वास संदिग्ध मात्रामें ही है।

विद्यार्थी यदि पूरे दिलसे अनुशासन मानने लगें, तो राष्ट्रीय संग्राममें शानदार भाग अदा कर सकते हैं। लेकिन यदि वे अपने ही [illegible] निष्फल प्रदर्शनोंसे अपनी शक्ति नष्ट करेंगे तो राष्ट्रीय कार्यमें बाधक होंगे। मुझे यह प्रमाण दे सकनेमें प्रसन्नता है कि कालेजवाले अपनी मात्रामें अनुशासनका परिचय दे रहे हैं कि अुसे देखकर मुझे आश्चर्य हुआ होता है। कारण, मैं अिसके लिअे तैयार नहीं था। विद्यार्थी-समाजके लिअे कोअी यह न कहने पाये कि अैन वक्त पर वे कसौटी

पर खरे नही अुतरे। वे याद रखें कि अनुशासनरहित और विचारहीन प्रदर्शनोंकी अपेक्षा मैं अधिक स्थिरता, अधिक साहस और अधिक त्यागकी माग कर रहा हू। विद्यार्थियोंको यह भी समझ लेना चाहिये कि राष्ट्रके ३३ करोड मनुष्योंकी तुलनामें सत्याग्रहियोंकी सख्या सदा मुट्ठीभर ही रहेगी। लेकिन रचनात्मक कार्यक्रमको पूरा करनेमें शरीक होनेवालोंकी सख्याकी कोअी सीमा नही है। मैं अिसे स्वाधीनताके आन्दोलनका सबसे कारगर और अुपयोगी अग मानता हूं, क्योंकि अिसके बिना सविनय विरोध सविनय नही रहेगा और अिस कारण सर्वथा मूल्यहीन होगा।

[अुपरोक्त दोनों बयान गाधीजीने अखबारोंको नवम्बर १९४० में दिये थे — सपा०]

१३
अहिंसा

हमारे शास्त्रोंने स्पष्ट कहा है कि सत्य, ब्रह्मचर्य, अहिंसा, अस्तेय और अपरिग्रहका सम्यक् पालन शुद्ध जीवनके लिअे अनिवार्य है और अुसके बिना आत्मज्ञान असभव है। हमारी सभ्यता हमें साहसपूर्ण विश्वासके साथ बताती है कि अहिंसाके गुणका ठीक और पूरी तरह विकास कर लेने पर सारी दुनिया हमारे पैरोंमें आ जाती है, क्योंकि अहिंसा क्रियात्मक रूपमें शुद्ध प्रेम और दया ही होती है। अिस आविष्कारके कर्ताने अितने अधिक दृष्टान्त दिये हैं कि अुनसे विश्वास जम जाता है।

राजनीतिक जीवनमें अिसके परिणामोंकी जाच कीजिये। जीवन-दानसे अधिक मूल्य हमारे शास्त्रोंमें और किसी दानका नही माना गया है। विचार कीजिये कि यदि हम अपने शासकोंको जीवनका अभयदान दे दें, तो अुनके साथ हमारे सम्बन्ध क्या होंगे। यदि अुन्हें मात्र यह अनुभव हो सके कि अुनके कृत्योंके बारेमें हमारी कुछ भी भावना क्यों न हो, हम अुनके शरीरोंको अुतना ही पवित्र समझेंगे

जितना अपने शरीरको समझने हैं, तो तुरन्त ही पारस्परिक विश्वासका वातावरण अुत्पन्न हो जायगा और दोनों ओर असी साफगोअी आ जायगी कि आज जो बहुतसी समस्याअें हमें चिंतित कर रही है अुनके सम्मानपूर्ण और न्यायपूर्ण हलका रास्ता साफ हो जायगा। यह याद रखना चाहिये कि अहिंसाका पालन करनेमें अनुकूल अुत्तर पानेकी भावना रखनेकी जरूरत नही है, यद्यपि यह सच है कि अतिम स्थितियोंमें असका अनुकूल अुत्तर मिलता ही है। हममें से बहुतोका विश्वास है, और मैं अुनमें से अेक हू, कि अपनी सभ्यता द्वारा ससारको देनेके लिअे हमारे पास अेक भव्य सदेश है।

स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गाधी

हमारा राष्ट्र वास्तवमें आध्यात्मिक राष्ट्र तभी बनेगा जब हम स्वर्णसे सत्यका, सत्ता और धनके दिखावेसे निर्भयताका और स्वार्थसे अुदारताका अधिक परिचय देंगे। यदि हम केवल अपने घरो, अपने महलो और मदिरोसे धनका वैभव प्रगट करनेवाले चिह्न साफ कर दें और अुनमें सदाचारकी महिमा बतानेवाले गुणोको प्रगट करें, तो हम भारी सैनिक खर्चका भार वहन किये बिना ही विरोधी शक्तियोके किसी भी गुटसे लोहा ले सकते है। पहले हमें अीश्वरीय राज्य और अुसकी पवित्रताकी खोज करनी चाहिये, फिर तो अुसका अटल वचन है कि और सब चीजें हमें मिल जायेंगी। यह सच्चा अर्थ-शास्त्र है। भगवान करे कि आप और मैं अुसकी कद्र करें और अुसे अपने दैनिक जीवनमें चरितार्थ करें।

स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गाधी

प्रश्न : जब आपका यह विश्वास है कि स्वतत्रता प्राप्त करनेका अेकमात्र साधन जनक्राति ही है, तो क्या आप असे व्यावहारिक बात मानते है कि असी क्रातिके दौरानमें मिलनेवाले सभी तरहके अुत्तेजनोंके बावजूद जनसाधारण मन और कर्मसे सर्वथा अहिंसक रहेंगे और रह सकते है? किसी व्यक्तिके लिअे अुस आदर्श तक पहुचना सभव हो सकता है, परन्तु क्या आपके खयालसे जनसाधारणके लिअे भी अहिंसाका यह आदर्श अमलमें लाना सभव है?

अुत्तर · अब अिस मंजिल पर पहुंचकर आपकी ओरसे यह प्रश्न अुठना अचम्भेकी बात है। क्योंकि जब कभी हिंसा हुअी है, तभी वह जनसाधारणकी तरफसे नहीं, बल्कि मैं कहूंगा कि विशेष वर्गोंकी तरफसे हुअी है — अर्थात् पढ़े-लिखे लोगोंकी प्रेरणासे हुअी है। हिंसक युद्धमें भी यद्यपि व्यक्ति कभी-कभी मनमानी कर बैठते हैं और सब कुछ भूल जाते हैं, परन्तु अधिकांश योद्धा न अैसा करनेका साहस करते हैं और न अैसा करते हैं। वे हुक्म मिलने पर ही हथियार चलाते हैं और आज्ञा पाने पर गोली चलाना बन्द कर देते हैं, भले ही व्यक्तिगत रूपमें बदले या प्रतिशोधकी भावना कितनी ही अधिक हो। प्रत्यक्ष तो कोअी कारण नहीं दीखता कि अहिंसक युद्धमें जनसाधारण, यदि अनुशासनकी तालीम पाये हुअे हों तो, अुतने ही अनुशासनका परिचय क्यों नहीं दे सकते, जितना संगठित युद्धमें सैनिक आम तौर पर देते हैं। अिसके सिवा, अहिंसक सेनापतिको यह विशेष सुविधा है अुसे अपने युद्धका संचालन करनेके लिअे हजारों सेनापतियोंकी जरूरत नहीं होती। अहिंसाके सन्देशको पहुंचानेके लिअे अितने सारे लोगोंकी आवश्यकता नहीं होती। थोड़ेसे ही सच्चे पुरुष या स्त्रियां हों और अुन्होंने अहिंसा-वृत्तिको पूरी तरह अपना लिया हो, तो अन्तमें अुनकी मिसालकी छूत सारे जनसाधारणको लगे बिना नहीं रहेगी। आन्दोलनके आरम्भमें मुझे ठीक यही अनुभव हुआ। मैंने देखा कि लोगोंका सचमुच यह विश्वास है कि मैं अहिंसाका अुपदेश देता हूं तो भी अपने दिलमें मैं हिंसाके ही पक्षमें हूं। अुन्हें नेताओंके भाषणोंका अिसी तरह अर्थ समझने और करनेकी तालीम मिली थी। परन्तु जब अुन्होंने समझ लिया कि मैं जो कहता हूं वही मेरा मतलब होता है, तब अुन्होंने अत्यन्त कठिन परिस्थितिमें भी आचरणमें अहिंसाका पालन अवश्य किया। चौरीचौरा काण्डकी पुनरावृत्ति कहीं नहीं हुअी है। मनमें अहिंसा रखनेके बारेमें तो केवल अीश्वर ही फैसला कर सकता है। परन्तु यह निश्चित है कि आचरणमें हिंसा तब तक कायम नहीं रह सकती, जब तक साथ ही साथ विचारमें अहिंसा न हो।

अमृतबाजार पत्रिका, ३-८-’३४

प्र०—हम ठीक-ठीक समझ लेना चाहते हैं कि अहिंसासे आपका क्या मतलब है। यदि आपका अहिंसाका अर्थ व्यक्तिगत द्वेषका अभाव है तो हमें कोअी आपत्ति नही। हमें आपत्ति अिस बात पर है कि आप अहिंसाको और न मारनेको अेक ही बात बताते हैं। लड़ाअियां व्यक्तिगत कारणोंसे नही, परन्तु राष्ट्रीय सम्मान या हितोंके रक्षार्थ लड़ी जाती हैं। विवादास्पद विषयों पर हमेशा नैतिक और शारीरिक दोनों ताकतें पूरी तरह लगाकर लड़ाअियां की गअी हैं। जब सब लोग हमारे राष्ट्रीय आदर्शोंकी विजयके लिअे सफलतापूर्वक शरीर-बल अिस्तेमाल कर सकते हैं और जब यह सबसे जल्दीका रास्ता है, तब आपको अिस पर अेतराज क्यों है? अिसके सिवा, संसार अब भी अितना आगे नही बढ़ा है कि नैतिक रूपमें समझाने-बुझानेकी कद्र कर सके।

उ०—मेरी अहिंसामें नैतिकके अतिरिक्त और किसी प्रकारके बल-प्रयोगकी गुंजाअिश नही। परन्तु यह कहना अेक बात है कि राष्ट्रीय झगड़े निपटानेके लिअे समाजमें शरीर-बल काममें लिया गया है या आजकल लिया जा रहा है, यह कहना बिल्कुल दूसरी बात है कि अुसका प्रयोग जारी रहना चाहिये।

यदि हम पश्चिमकी देखादेखी हिंसाको अपनायेंगे तो जैसे पश्चिम तेजीसे दिवालिया बनता जा रहा है, वैसे हम भी जल्दी ही दिवालिये हो जायंगे। अभी अुस दिनकी बात है। अेक यूरोपीय मित्रसे मेरी बातचीत हो रही थी। वे अिस बातसे बहुत खिन्न थे कि पश्चिमके बड़े-बड़े अुद्योगोंवाले राष्ट्र संसारकी रंगीन जातियोंका भरपूर शोषण कर रहे हैं। सभ्यताके सामने आज यह समस्या है। अहिंसाके सिद्धान्तकी अिस समय परीक्षा हो रही है। आत्मबलकी पशुबलके साथ जीवन-मरणकी बाजी लगी हुअी है। हमें अिस संकट-कालमें परीक्षासे बचनेकी कोशिश नही करनी चाहिये।

अमृतबाजार पत्रिका, ३-८-'३४

मैं आप (अीटनके विद्यार्थियों) से अीश्वरीय सत्य कह रहा हूं कि साम्प्रदायिक प्रश्नका कोअी महत्त्व नहीं और आपको अिसकी कुछ भी परवाह नहीं करनी चाहिये। परन्तु आप अितिहास पढ़ें तो अिस बहुत बड़े प्रश्नका अध्ययन करें — लाखों लोगोंने अहिंसाको अपनानेका निश्चय कैसे किया और वे अुस पर कैसे चले? मनुष्यका अध्ययन अुसके पशुस्वभावमें, जंगलका कानून माननेवालेके रूपमें, न करके अुसके गौरवपूर्ण रूपमें कीजिये। जो साम्प्रदायिक झगड़ोंमें फंसे हुअे हैं, वे पागलखानेके नमूनोंकी तरह हैं। परन्तु अुन मनुष्योंका अध्ययन कीजिये जो अपने देशकी आजादीके लिअे किसीको चोट पहुंचाये बिना अपने प्राण अर्पण कर रहे हैं। मनुष्यके गौरवमय चरित्रका अध्ययन कीजिये जिसमें वह अपने सत्स्वभावका और प्रेम-धर्मका पालन करते हुअे दिखाअी देता है, ताकि जब आप बड़े होकर मनुष्य बनें तब अपने अुत्तराधिकारको सुधारें और अुसमें वृद्धि करें। आपके लिअे यह गर्वकी बात नहीं हो सकती कि आपका राष्ट्र हमारे राष्ट्र पर शासन कर रहा है। अपने आपको जंजीरोंमें जकड़े बिना कोअी किसी गुलामको जकड़ कर नहीं रख सकता। और कोअी किसी दूसरे राष्ट्रको गुलामीमें रखकर स्वयं गुलाम राष्ट्र बने बिना नहीं रह सकता। अिंग्लैंड और भारतके बीच अिस समय जो सम्बन्ध है वह अत्यन्त पापपूर्ण है, अत्यन्त अस्वाभाविक है। और मैं चाहता हूं कि आप हमारे मिशनको आशीर्वाद दें, क्योंकि हमें अपनी आजादीका, जो हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, कुदरती हक है और हमारा तो दुगुना हक है, क्योंकि हमने अुसके लिअे बहुत प्रायश्चित्त और कष्ट सहन किया है। जब आप बड़े हों तब मैं चाहता हूं कि आप अपने राष्ट्रको शोषणके पापसे मुक्त करके अुसके गौरवमें अद्वितीय वृद्धि करें और अिस प्रकार मानव-जातिकी प्रगतिमें सहायक हों।

यंग अिंडिया, १२–११–'३१

जो अहिंसाका पालन करना चाहता है, अुसे फिलहाल सांपों वगैराके बारेमें सब कुछ भूल जाना चाहिये। यदि वह अुन्हें मारे

दिना नहीं रह सकता तो वह चिन्ता न करे, परन्तु अुसे अपनी सारी शक्ति लगाकर प्राणीमात्रसे प्रेम करनेके अभ्यासकी पहली सीढ़ीके रूपमें धीरजके साथ कोशिश करके मनुष्योंके प्रति क्रोध और द्वेष पर विजय प्राप्त करनी चाहिये।

आप चाहें तो बैंगन और आलू शौकसे छोड़ दीजिये, परन्तु अिससे औश्वरके लिअे अपने मनमें यह खयाल न लाअिये कि आप धर्मात्मा हो गये हैं और न यह मान बैठिये कि आप अहिंसाका पालन कर रहे हैं। अिसकी तो कल्पनासे ही लज्जा होनी चाहिये। अहिंसा केवल खाने-पीनेका विषय नहीं है, वह अिससे परे है। मनुष्य क्या खाता-पीता है, यह गौण वस्तु है, मुख्य वस्तु यह है कि अुसके पीछे त्याग और संयम कितना है। खानेकी चीजोंके चुनावमें आप जितना चाहें संयम रखिये। वह संयम प्रशंसनीय है, आवश्यक भी है। परन्तु वह अहिंसाके केवल किनारेको छूता है। अेक आदमी भोजनके मामलेमें लम्बी-चौड़ी छूट रख सकता है, फिर भी वह अहिंसाकी मूर्ति हो सकता है और हमसे जबरन् सम्मान प्राप्त कर सकता है, यदि अुसका हृदय प्रेमसे अुमड़ता हो, दूसरोंके दुःखसे पिघल जाता हो और सब विकारोंसे मुक्त हो गया हो। अिसके विपरीत, अेक मनुष्य जो खाने-पीनेमें सदा अत्यन्त परहेजगार रहा हो, मगर स्वार्थ और विकारोंका दास हो और हृदयका कठोर हो तो वह अहिंसाका ककहरा भी नहीं जानता।

यंग अिंडिया, ६-९-'२८

शिक्षामें अहिंसा हो तो अुसका विद्यार्थियोंके आपसी सम्बन्धों पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ना चाहिये। जहां सारा वायुमण्डल अहिंसाकी शुद्ध सुगंधसे महकता हो, वहां लड़के और लड़कियां भाअी-बहनोंकी तरह साथ साथ, आजादीसे किन्तु आत्म-संयमपूर्वक रहेंगे; शिक्षकों और विद्यार्थियोंमें पिता-पुत्रका सम्बन्ध होगा, अुनमें परस्पर प्रेम और विश्वास होगा। यह शुद्ध वातावरण स्वयं ही अहिंसाका अेक सतत पदार्थपाठ होगा। अैसे वातावरणमें पले हुअे विद्यार्थी अपने

विचारोंकी अुदारता और विशालतासे तथा सेवाकी विशेष प्रतिभासे अपना नाम रोशन करते रहेंगे। अुन्हें सामाजिक बुराअियोंकी कोअी कठिनाअी पेश नहीं आयेगी, क्योंकि अुनके प्रेमकी अुत्कटता अुन बुराअियोंको जलाकर खाक कर देनेके लिअे काफी होगी। मिसालके लिअे, बाल-विवाहका विचार तक अुन्हें नागवार मालूम होगा। वे दहेजकी माग करके वधूके माता-पिताको दड देनेकी कल्पना भी नहीं करेंगे। और विवाहके पश्चात् वे अपनी पत्नियोंको दासी या अपनी वासनाकी पूर्तिका साधनमात्र समझनेका साहस कैसे कर सकते हैं? अहिंसाके अैसे वातावरणमें पला हुआ नवयुवक अपने ही या दूसरे धर्मवाले किसी भाअीसे लडनेका कैसे कभी विचार कर सकता है? कुछ भी हो, कोअी अपनेको अहिंसाका पुजारी कहते हुअे ये सब या अिनमें से कोअी बात करनेका विचार नहीं करेगा।

सार यह है कि अहिंसा अद्वितीय सामर्थ्यवाला हथियार है। यह जीवनका परम पुरुषार्थ है। यह वीरोंका लक्षण है और सच पूछा जाय तो अुनका सर्वस्व है। कायरोंकी वहा तक पहुच नहीं होती। यह कोअी जड या निर्जीव सिद्धान्त नहीं है, परन्तु सजीव और जीवनप्रद शक्ति है। यह आत्माका विशेष लक्षण है। अिसीलिअे वह परमधर्म बताया गया है। अिस कारण शिक्षाशास्त्रीके हाथोंमें तो अुसका स्वरूप शुद्धतम प्रेमका होना चाहिये, जो सदा ताजा रहे और प्रत्येक कार्यमें प्रगट होनेवाला जीवनका निरतर अुछलता हुआ स्रोत बने। अहिंसाके सूर्यके सामने घृणा, क्रोध और द्वेषरूपी अधकारके बादल छिन्न-भिन्न हो जाते हैं। शिक्षामें अहिंसा साफ और दूर तक चमकती है और जैसे सूर्यको किसी भी तरह छुपाया नहीं जा सकता वैसे अहिंसा भी छुपाये नहीं छुपती।

यंग अिंडिया, ६–९–'२८

पांचवां विभाग : राजनीति

१४

छात्रोंको राजनीतिमें भाग लेना चाहिये?

"मैं अुनके आधुनिक राजनीति पढ़नेके विरुद्ध नहीं हूं। यह अच्छी बात होगी कि शिक्षक अखबारोंमें आनेवाले किसी भी प्रश्न पर प्रस्तुत पक्ष-विपक्षके भाषण अिकट्ठे करके विद्यार्थियोंको बतायें और अुनसे स्वयं निष्कर्ष निकालना सिखायें। मैंने अिस योजनाको सफलताके साथ आजमाया है। असलमें विद्यार्थियोंके लिअे कोअी विषय निषिद्ध नहीं है और जैसी बर्ट्रेण्ड रसल और दूसरे लोगोंकी राय है विद्यार्थियोंको स्त्री-पुरुष-सम्बन्धी प्रश्नोंकी भी शिक्षा दी जानी चाहिये। मैं तो अिस चीजके सख्त खिलाफ हूं कि विद्यार्थियोंको अुन कामोंके लिअे अस्त्र बनाया जाय, जिनमें न अुनकी शिक्षा होती है और न अुनका अुपयोग करनेवालोंकी होती है।"

पत्रलेखकने यह अिस आशासे लिखा है कि मैं क्रियात्मक राजनीतिमें विद्यार्थी-समाजके भाग लेनेकी निन्दा करूंगा। परन्तु मुझे दुःख है कि मुझे अुन्हें निराश करना पड़ रहा है। अुन्हें जानना चाहिये था कि १९२०-२१ में विद्यार्थियोंको स्कूल-कालेजोंसे निकालने और अुन्हें राजनीतिक कार्य हाथमें लेने और जेलकी जोखिम अुठानेकी प्रेरणा देनेमें मेरा कम हाथ नहीं था। मेरे खयालसे अपने देशके राजनीतिक आन्दोलनमें प्रमुख भाग लेना अुनका स्पष्ट कर्तव्य है। दुनियाभरमें वे अैसा कर रहे हैं। भारतमें, जहां पिछले दिनों सब राजनीतिक जागृति दुर्भाग्यवश ज्यादातर अंग्रेजी शिक्षित वर्ग तक सीमित रही है, अुनका कर्तव्य वास्तवमें और भी बड़ा है। चीन और

मिस्रमें राष्ट्रीय आन्दोलनको सभव ही विद्यार्थियोंने बनाया। भारतमें वे अिससे कम नही कर सकते।

आचार्य महोदय अिस बात पर जोर दे सकते थे कि विद्यार्थियोको अहिंसाके नियमोके पालनकी और हुल्लड़बाजोसे नियन्त्रित होनेके बजाय अुन पर नियंत्रण स्थापित करनेकी जरूरत है।

यग अिडिया, २९–३–'२८

यह निर्विवाद कहा जा सकता है कि चीनके विद्यार्थियोंने ही अपने महान देशके आजादीके आन्दोलनका नेतृत्व किया था और मिस्रमें वहाके विद्यार्थी ही वास्तविक स्वाधीनताके संग्राममें अग्रणी हैं। भारतके विद्यार्थियोसे भी आशा रखी जा सकती है कि ये अुनसे पीछे नही रहेंगे। वे स्कूल-कालेजोमें स्वार्थके लिअे नही, परन्तु सेवाके लिअे जाते है या अुन्हें जाना चाहिये। अुन्हे राष्ट्रका नमक — रक्षक तत्त्व — बनकर रहना चाहिये।

यंग अिडिया, १२–७–'२८

सरकारी कालेजोमें अुन लडकोके खिलाफ, जो तीव्र राजनीतिक विचार रखते है या जो सरकारको नापसन्द राजनीतिक सभाओंमें कुछ भी भाग लेते है, बहुत ज्यादा जासूसी की जाती है और अुन्हे बेहद सताया जाता है। अब समय आ गया है कि यह अनुचित हस्तक्षेप बन्द कर दिया जाय। भारत जैसे विदेशी हुकूमतके दर्दसे कराहनेवाले देशमें विद्यार्थियोको राष्ट्रीय स्वतन्त्रताके आन्दोलनोंमें भाग लेनेसे रोकना असंभव है। अधिकसे अधिक यह किया जा सकता है कि अुनके अुत्साहको अिस प्रकार नियमन किया जाय कि अुनकी पढ़ाअीमें खलल न पड़े। वे युद्ध करनेवाले दलोका पक्ष लेकर दलबन्दीमें न पड़ें। परन्तु अुन्हें जो भी राजनीतिक मत पसन्द हो अुसके रखने और क्रियात्मक रूपसे अुसकी हिमायत करनेका अुन्हें हक और आजादी है। शिक्षा-संस्थाओंका काम यह है कि जो लडके और लडकियां अुनमें भरती हों अुन्हें शिक्षा दें द्वारा अुनके चरित्र-निर्माणमें

सहायक हों। अुनका यह काम हरगिज नहीं है कि शालासे बाहरकी अुनकी राजनीतिक या नीतिसे सम्बन्ध न रखनेवाली दूसरी प्रवृत्तियोंमें हस्तक्षेप करें।

यंग अिंडिया, २४-१-'२९

मेरे पास कअी प्रांतोंसे पत्र आये हैं कि जिन विद्यार्थियोंने संग्रामके दिनोंमें अपने स्कूल-कालेज छोड दिये थे अुनके लौटने पर शिक्षाधिकारी शर्तें थोप रहे हैं। अेक पत्रलेखकने अेक गश्तीपत्रकी नकल भेजी है। अुसमें माता-पिताओंसे चाहा गया है कि वे लिखित वचन दें कि अुनके बच्चे राजनीतिमें भाग नहीं लेंगे। ये पत्रलेखक मुझसे पूछते हैं कि क्या ये शर्तें समझौते*के साथ संगत हैं।

फिलहाल अिस प्रश्नमें न जाकर मुझे यह कहनेमें कोअी संकोच नहीं कि न तो विद्यार्थियोंको और न माता-पिताओंको ही, यदि अुनमें कुछ भी स्वाभिमान रह गया हो, अैसी शर्तें स्वीकार करनी चाहिये। विद्यार्थियों या माता-पिताओंको क्या लाभ होगा यदि अुन्हें सरकारी शिक्षा और अेक प्रमाणपत्रके संदिग्ध लाभको प्राप्त करनेके लिअे अपनी आत्मायें गवा देनी पड़ें? विद्यार्थियोंके लिअे राष्ट्रीय संस्थायें खुली हुअी हैं। ये अुन्हें पसन्द न हों तो वे घर पर पढाअी कर सकते हैं। यह मान लेना घोर अंधविश्वास है कि ज्ञान स्कूल-कालेजोंमें जानेसे ही प्राप्त किया जा सकता है। स्कूल-कालेजोंके पैदा होनेसे पहले भी दुनियाने विचक्षण विद्यार्थी अुत्पन्न किये थे। स्वाध्यायके बराबर अुदात्त या स्थायी और कोअी वस्तु नहीं है। स्कूल-कालेज हममें से अधिकांशको फालतू ज्ञान रखनेके केवल पात्र बना देते हैं। गेहूं छूट जाता है और निरा भूसा हाथ पडता है। मैं स्कूल-कालेज मात्रकी निन्दा नहीं करना चाहता। अुनका अुपयोग तो है। परन्तु हम अुन्हें जरूरतसे ज्यादा महत्त्व देते हैं। वे ज्ञान-प्राप्तिके अनेक साधनोंमें से सिर्फ अेक हैं।

यंग अिंडिया, २५-६-'३१

* गांधी-अिर्विन समझौता।

जिन शासकोंने पुकार सुनकर हमें कालेजोंसे बनाया है। [illegible] कि हम [illegible] नहीं है। कृपा करके हमारी सहायता कीजिये।"

मैं छात्रोंके लिअे इससे अच्छा रास्ता नहीं बता सकता। अुन्हें अपनी कोशिशोंमें हाथ नहीं धोना है तो मैं मानता हूँ कि अुन्हें अनुशासनकी हद न छूते कार्रवाओ करनी ही पड़ेगी। जब तक शिक्षा-संस्थाअें सरकारी देखरेखमें रहेंगी तब तब अुनका अुपयोग, जैसा होना चाहिये, सरकारके स्वार्थके लिअे होगा, और जो विद्यार्थी या शिक्षक सरकार विरोधी जन-आन्दोलनका समर्थन करें अुन्हें अुसकी कीमतका हिसाब लगा लेना चाहिये और निकाल दिये जानेकी जोखिम अुठानी चाहिये। देशभक्तिके दृष्टिकोणसे, विद्यार्थियोंने जनताका साथ देकर अच्छा और बहादुरीका काम किया। यदि अुन्होंने देशकी पुकार न सुनी होती तो और कुछ नहीं होता तब भी देशभक्त न होनेका अिल्ज़ाम तो अुन पर लग ही सकता था। सरकारके खयालसे अुन्होंने बेशक बुरा काम किया और वे अुसके कोपभाजन बने। विद्यार्थी दोनों हाथोंमें लड्डू नहीं रख सकते। अगर अुन्हें जनताका साथ देना है, तो अुन्हें अपनी पढ़ाअीको अुसके सामने गौण रखना पड़ेगा और जब पढ़ाअीका देशके हितोंसे संघर्ष हो तो अुसे कुर्बान करना होगा। मैंने यह १९२० में साफ देख लिया था और बादके अनुभवने प्रथम विचारको पक्का कर दिया है। अिसमें कोओी शक नहीं कि छात्र-समाजके लिअे सबसे सुरक्षित और सम्मानपूर्ण मार्ग यही है कि भले ही कुछ भी हो, वे सरकारी स्कूल-कालेजोंको छोड़ दें। परन्तु दूसरे नम्बर पर अच्छा रास्ता अुनके लिअे यह है कि जब कभी सरकार और जनताके बीच संघर्ष हो तभी वे निकाल दिये जानेके लिअे तैयार रहें। और देशोंकी तरह वे यहां सरकारके विरुद्ध बगावतके स्वयं नेता न बनें, तो कमसे कम अुन्हें पक्के और सच्चे अनुयायी तो अवश्य बनना चाहिये। अुनको परिणाम भुगतनेमें भी अुतनी ही वीरता दिखानी चाहिये जितनी अुन्होंने राष्ट्रकी पुकार सुनकर दिखाअी है। जिन स्कूल-कालेजोंसे वे निकाल दिये गये हैं अुनमें फिर प्रवेश करनेका

प्रयत्न करके अुन्हें अपनेको जलील नही करना चाहिये। अुन्हें अपना स्वाभिमान नही छोडना चाहिये। यदि अुनकी वीरता पहली ही परीक्षामें काफूर हो जाती है, तो यह माना जायगा कि वे केवल मौजमें बाहर निकल आये थे।

यंग अिंडिया, १६–२–'२८

मुझे यकीन है कि हरअेक राष्ट्रीय शिक्षा-संस्था गुजरात विद्यापीठके अुदात्त अुदाहरणका अनुकरण करेगी। विद्यापीठ पहली संस्था थी जिसने १९२० में असहयोगकी पुकार पर जन्म लिया था। और मुझे आशा है कि अिस मिसालकी नकल सरकारी और सहायता-प्राप्त संस्थाअें भी करेगी। अर्वाचीन कालकी प्रत्येक क्रांतिमें विद्यार्थी सबसे आगे पाये गये हैं। यह क्रांति अहिंसक है, अिसी कारण विद्यार्थियोंको कम आकर्षक नहीं होनी चाहिये।

गुजरात विद्यापीठका आदर्श वाक्य है : सा विद्या या विमुक्तये। अिसका अर्थ यह है कि जो मुक्ति दिलाता है वही ज्ञान है। अिस सिद्धान्तके अनुसार कि बड़ेमें छोटा शामिल है, राष्ट्रीय स्वाधीनता या भौतिक स्वतंत्रता आध्यात्मिक स्वतंत्रतामें सम्मिलित है। अिसलिअे शिक्षा-संस्थाओंमें प्राप्त होनेवाले ज्ञानसे कमसे कम अुस स्वतंत्रताका रास्ता मालूम होना चाहिये और अुसका परिणाम वह स्वतंत्रता होनी चाहिये।

अत्यन्त अूपरी दृष्टिसे देखनेवालोंको भी यह मालूम हुअे बिना नहीं रहेगा कि सत्याग्रही यात्रियोंका दैनिक कार्यक्रम स्वयं ही अेक सम्पूर्ण शिक्षा है। वह कोअी हिंसक विद्रोहियोंकी जमात नहीं है, जो अिधर-अुधर बरबादी फैलाती और हर तरहके विचारोंको अुत्तेजन देती हुअी चल रही हो; यह अैसे संयमी पुरुषोंकी अेक टोली है, जिन्होंने सगठित अत्याचारके विरुद्ध अहिंसक विद्रोह घोषित किया है और जो कठोर कष्टसहन द्वारा अुससे मुक्ति प्राप्त करना

चाहते हैं। वे अपनी कूचके दौरानमें सत्य और अहिंसा द्वारा आजादीका सन्देश फैलाते हैं। अपने पुत्र या पुत्रीको अिस शिक्षाको समर्पित करनेके बारेमें किसी भी पिताको जरा भी चिन्ता अनुभव नहीं करनी चाहिये, क्योंकि आखिर तो अिस शिक्षासे अधिक सच्ची शिक्षाकी देशकी वर्तमान परिस्थितिमें कल्पना ही नहीं की जा सकती।

१९२० की पुकार और मौजूदा पुकारका भेद भी बता दूं। १९२० की पुकार सरकारी संस्थाओंको खाली कराने और राष्ट्रीय संस्थायें खड़ी करनेके लिअे थी। वह तैयारीका आवाहन था। आजकी पुकार अंतिम टक्कर लेनेके लिअे अर्थात् सामूहिक सविनय आज्ञाभंगके लिअे है। वह टक्कर हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती। जो लोग अभी तक आजादीके लिअे सबसे ज्यादा जोरसे चिल्लाते रहे हैं, अुनमें कुछ दम नहीं होगा तो यह टक्कर नहीं होगी। जब नमकमें ही सलोनापन नहीं रहेगा तो फिर और कहांसे आयेगा? विद्यार्थियोंसे आशा की जाती है कि लड़ाअीकी वह घड़ी वे थामें और व्यर्थके नारोंसे नहीं, बल्कि अैसे खूब, शानदार और अजेय कार्यों द्वारा अुपस्थित करेंगे जो विद्यार्थियोंके योग्य हों। लेकिन हो सकता है कि विद्यार्थियोंको आत्मत्याग करनेमें विश्वास न हो, और अहिंसामें अुनमें भी कम विश्वास हो। वैसी हालतमें फिर अुन्हें बाहर नहीं आना पड़ेगा, अुनकी जरूरत ही न होगी। तब वे क्रान्तिकारियोंकी भांति (जिनका पत्र अन्यत्र अुद्धृत किया गया है) देखते रह सकते हैं कि अहिंसा क्रियात्मक रूपमें क्या कर सकती है। अुन्हें खिलाड़ीकी वृत्ति दिखाना चाहिये — या तो वे अपनेको अिस अहिंसक विद्रोहमें जी-जानसे लगा दें या निष्पक्ष रहकर और (चाहे तो) सहानुभूति बनकर घटनाक्रमका अवलोकन करें। यदि वे मनमानी करेंगे और निर्माताओंकी योजनामें फिट हुअे बिना या अुनके विरुद्ध कार्रवाअी करेंगे, तो आन्दोलनमें खलल डालेंगे और अुसे हानि पहुंचायेंगे। मैं अितना जानता हूं कि अगर सविनय आज्ञाभंगका विकास पूरी तरह अभी नहीं हुआ, तो फिर अेक पीढ़ी तक शायद न हो सके। विद्यार्थियोंके सामने चुनाव स्पष्ट है। अुन्हें वह कर लेना चाहिये। पिछले

६. रोज नहीं तो हर सप्ताह वे कुछ निश्चित समय अपनी संस्थाओंके निकटतम ग्राम या ग्रामसमूहमें सेवाके कामके लिअे अलग रख सकते हैं। और छुट्टियोंमें कुछ निश्चित समय रोज राष्ट्रीय सेवामें लगा सकते हैं।

अवश्य ही अैसा समय आ सकता है जब पहलेकी तरह विद्यार्थियोंको बाहर बुलाना जरूरी हो जाय, यद्यपि यह स्थिति बहुत दूर मालूम होती है और मेरी चले तो कभी नहीं आयेगी। हां, अुपरोक्त ढंगसे विद्यार्थी अपनेको पहले ही योग्य बना लें तो बात दूसरी है।

हरिजन, १७-२-'४०

१६

विद्यार्थी और सत्याग्रह

प्र०—सत्याग्रह आन्दोलन छिड जाय तो आपको अुसमें विद्यार्थियोंके शरीक होने पर क्यों अेतराज है? और यदि अुन्हें अिजाजत मिल जाय तो अुन्हें हमेशाके लिअे स्कूल-कालेज क्यों छोड़ने चाहियें? अवश्य ही अिंग्लैंडके विद्यार्थी जब अुनका देश लड़ाअीमें जुटा होता है तो चुपचाप नहीं देखते रहते।

अु०—विद्यार्थियोंको स्कूल-कालेजोंसे हटा लेना असहयोगके कार्यक्रमको प्रोत्साहन देना है। आज हमारा यह कार्यक्रम नहीं है। यदि मेरे हाथमें सत्याग्रह आन्दोलनकी बागडोर हो, तो मैं विद्यार्थियोंको अपने स्कूल-कालेज छोड़नेके लिअे न तो निमंत्रण दूंगा और न प्रोत्साहन। हमने अनुभवसे देख लिया है कि विद्यार्थियोंने अभी तक सरकारी स्कूल-कालेजोंका मोह नहीं छोड़ा है। अब अिन संस्थाओंकी चमक जाती रही है। यह लाभ तो हुआ है, परन्तु मैं अिसको बहुत महत्त्व नहीं देता। और यदि ये संस्थायें बनी रहती हैं, तो सत्याग्रहके लिअे विद्यार्थियोंको अुनमें से हटा लेनेसे अुनका भला नहीं होगा और कामको भी कोअी मदद नहीं पहुंचेगी। अिस तरह हटा लेना

६. रोज नहीं तो हर सप्ताह वे कुछ निश्चित समय अपनी संस्थाओंके निकटतम ग्राम या ग्रामसमूहमें सेवाके कामके लिअे अलग रख सकते हैं। और छुट्टियोंमें कुछ निश्चित समय रोज राष्ट्रीय सेवामें लगा सकते हैं।

अवश्य ही अैसा समय आ सकता है जब पहलेकी तरह विद्यार्थियोंको बाहर बुलाना जरूरी हो जाय यद्यपि यह स्थिति बहुत दूर मालूम होती है और मेरी चले तो कभी नहीं आयेगी। हां, अपरोक्त ढंगसे विद्यार्थी अपनेको पहले ही योग्य बना लें तो बात दूसरी है।

हरिजन, १७-२-'४०

१६

विद्यार्थी और सत्याग्रह

प्र० — सत्याग्रह आन्दोलन छिड़ जाय तो आपको अुसमें विद्यार्थियोंके शरीक होने पर क्यों अेतराज है? और यदि अुन्हें अिजाजत मिल जाय तो अुन्हें हमेशाके लिअे स्कूल-कालेज क्यों छोड़ने चाहियें? अवश्य ही अिंग्लैंडके विद्यार्थी जब अुनका देश लड़ाअीमें जुटा होता है तो चुपचाप नहीं देखते रहते।

अु० — विद्यार्थियोंको स्कूल-कालेजोंसे हटा लेना असहयोगके कार्यक्रमको प्रोत्साहन देना है। आज हमारा यह कार्यक्रम नहीं है। यदि मेरे हाथमें सत्याग्रह आन्दोलनकी बागडोर हो, तो मैं विद्यार्थियोंको अपने स्कूल-कालेज छोड़नेके लिअे न तो निमंत्रण दूंगा और न प्रोत्साहन। हमने अनुभवसे देख लिया है कि विद्यार्थियोंने अभी तक सरकारी स्कूल-कालेजोंका मोह नहीं छोड़ा है। अब अिन संस्थाओंकी चमक जाती रही है। यह लाभ तो हुआ है, परन्तु मैं अिसको बहुत महत्त्व नहीं देता। और यदि ये संस्थायें बनी रहती हैं, तो संस्थाओंके लिअे विद्यार्थियोंको अुनमें से हटा लेनेसे अुनका भला नहीं होगा और कामको भी कोअी मदद नहीं पहुंचेगी। अिस तरह हटा लेना

अहिंसक नहीं होगा। मैंने कहा है कि जो आन्दोलनमें शरीक होनेका अिरादा रखते हों अुन्हें सदाके लिअे अपने स्कूल-कालेज छोड़ देने चाहियें और संग्राम समाप्त होनेके बाद भी राष्ट्रकी सेवामें ही लगे रहनेका संकल्प कर लेना चाहिये। यहांके और अिंग्लैंडके विद्यार्थियोंमें कोअी तुलना नहीं है। वहां सारा राष्ट्र युद्धमें लगा हुआ है। संस्थाओंको अुनके संचालकोंने बन्द कर दिया है। अिसके विपरीत यहां पर जो विद्यार्थी अपने स्कूल-कालेज छोड़ेंगे, वे अुन संस्थाओंके संचालकोंकी अिच्छाके विरुद्ध छोड़ेंगे।

हरिजन, १५–९–'४०

१७

त्याग

त्यागसे प्रसन्नता न हो तो वह किसी कामका नहीं। त्याग करने और मुंह फुलानेका मेल नहीं बैठता। वह मानवताका घटिया नमूना होगा, जिसे अपने त्यागके लिअे सहानुभूतिकी जरूरत हो। बुद्धने सर्वस्व अिसलिअे त्याग दिया कि अुनसे अुसके बिना रहा नहीं गया। कोअी चीज रखना अुनके लिअे आत्मपीड़ाकी बात थी। लोकमान्य अिसलिअे गरीब बने रहे कि अुन्हें सम्पत्ति रखना असह्य मालूम होता था। हम तो अभी तक त्यागके साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। असलियत तो अभी आनी बाकी है।

यंग अिंडिया, २५–६–'२५

जिस त्यागसे पीड़ा होती है अुसका पवित्र स्वरूप नष्ट हो जाता है और जोर पड़ने पर वह टूट जाता है। मनुष्य अुन चीजोंको छोड़ता है जिन्हें वह हानिकारक समझता है। अिसलिअे अुनके छोड़ने पर सुख मिलना चाहिये। यह बिलकुल दूसरी बात है कि अिसके जो चीज आती है वह कारगर है या नहीं। अगर कारगर बेशक अच्छी बात है, कारगर नहीं है तो भी अच्छा है। अिसमें चीज प्राप्त करनेकी कोशिश होगी। परन्तु निस्सन्देह

हम निर्णयों और मान्यताओंका दास न होना चाहिये जिसे हमने अुग... ऐतिहासिक स्वतन्त्र युगमें ज्ञान और लम्बे अरसे बाद छोड़ा है।

जबसे जब तक सब हमें स्पष्ट और कारगर चीज न मि... तब तक यह स्पष्ट है कि पहला कदम सरकारी संस्थाओंका त्याग होना चाहिये। अिसलिअे जिन विद्यार्थियोंने वह कद... अुन्होंने अच्छा किया, यदि अुन्होंने अैसा समझ-बूझकर किया था। और अैसे विद्यार्थियोंका त्याग ही समयके साथ-साथ देश... लिअे भी अधिकाधिक लाभदायक होगा। परन्तु जो अपनी स्थिति पर पश्चात्ताप कर रहे हैं या अपने असन्तुष्ट हैं अुन्हें सरकारी संस्थाओं... और जानेमें अेसा कोअी संकोच नहीं होना चाहिये। आखिर ह... यह आदर्शोंका संघर्ष है और यदि असहयोग जिस आदर्शका प्रतीक है वह आदर्श अच्छा है और [illegible] अनुकूल है, तो वह ह... बाधा पर विजय प्राप्त करेगा।

यंग अिंडिया, १५-७-'२१

१८

विद्यार्थी और दलबन्दीकी राजनीति

विद्यार्थियोंका दलगत राजनीतिमें पड़नेसे काम नहीं चल सकता। जैसे वे सब प्रकारकी पुस्तकें पढ़ते हैं, वैसे सब दलोंकी बात सुन सकते हैं। परन्तु अुनका काम यह है कि सबकी सचाअीको हजम करें और बाकीको फेंक दें। यही अेकमात्र अुचित रवैया है जिसे वे अपना सकते हैं।

सत्ताकी राजनीति विद्यार्थी-समाजके लिअे अपरिचित होनी चाहिये। वे ज्यों ही अिस तरहके काममें पड़ेंगे, त्यों ही वे विद्यार्थीके पदसे च्युत हो जायंगे और अिसलिअे देशके संकटकालमें अुसकी सेवा करनेमें असफल होंगे।

[अखिल भारतीय विद्यार्थी-संघके प्रधानमंत्रीके नाम लिखे अेक पत्रसे
२६ जनवरी, १९४१]

विद्यार्थी-संघ

"अिस समय यह प्रयत्न किया जा रहा है कि तमाम मौजूदा विद्यार्थी-सगठनोंको अेक राष्ट्रीय सम्मेलनमें अिकट्ठा किया जाय, विद्यार्थी-आन्दोलनका आधार बदला जाय और विद्यार्थियोके अेक राष्ट्रीय संगठनका विकास किया जाय। आपकी रायमें अिस नये संगठनका कार्यक्षेत्र क्या होना चाहिये? देशकी नअी परिस्थितिमें विद्यार्थियोंके अिस संगठनको क्या प्रवृत्तिया हाथमें लेनी चाहिये?"

अिसमें सन्देह नही कि हिन्दू, मुसलमान और अन्य सब विद्यार्थियोका मिलकर अेक राष्ट्रीय सगठन होना चाहिये। विद्यार्थी भविष्यके निर्माता है। अुनका विभाजन नही किया जा सकता। मुझे दु ख है कि न तो विद्यार्थियोने स्वयं अपने लिअे विचार किया और न नेताओने अुन्हे पढाअीके लिअे स्वतत्र छोड़ा, ताकि वे अच्छे नागरिक बन सकें। खराबी विदेशी हुकूमतसे शुरू हुअी। हम अुत्तराधिकारियोने भूतकालकी भूलोको ठीक करनेका कष्ट नहीं किया। और भिन्न-भिन्न राजनीतिक दलोने विद्यार्थियोंको अिस तरह पकड़ना चाहा मानो वे कोअी मछलियोके झुण्ड हो। और विद्यार्थी मूर्ख बनकर अपने लिअे फैलाये गये जालमें फंस गये।

अिसलिअे विद्यार्थियोके किसी भी संगठनके लिअे यह काम हाथमें लेना भगीरथ कार्य है। परन्तु अुनमें वीरताकी भावना होनी चाहिये, जिससे कि वे अिस कामसे पीछे नही हटें। अुसका कार्यक्षेत्र यह होगा कि सबको मिलाकर अेक कर दे। यह काम वे तभी कर सकते हैं जब वे क्रियात्मक राजनीतिमे दूर रहना सीख लें। विद्यार्थीका धर्म यह है कि जिन विविध समस्याओके हल होनेकी आवश्यकता है, अुनका अध्ययन

करे। कर्म करनेका समय असके लिअे तब आता है जब वह अपनी पढ़ाओ पूरी कर लेता है।

"आजकल विद्यार्थी-संगठनोंको राजनीतिक मामलों पर प्रस्ताव पास करनेकी अधिक चिन्ता है और राष्ट्रीय पुनर्निर्माणके काममें अपनी शक्ति लगानेकी कम। अिसका कुछ कारण यह है कि राजनीतिक दल अपने दलगत अुद्देश्योंकी पूर्तिके लिअे विद्यार्थी-संगठनों पर कब्जा करनेकी कोशिश कर रहे हैं। हमारी वर्तमान फूटकी जड भी यही दलगत राजनीति है। अिसलिअे हम कोओी अैसा तरीका निकालना चाहते हैं, जिससे हम प्रस्तावित राष्ट्रीय विद्यार्थी-संघमें अिस मार्गी दलगत राजनीति और फूटकी पुनरावृत्ति न होने दें। क्या आपके खयालसे विद्यार्थी-संगठनोंके लिअे राजनीतिसे पूरी तरह बचना संभव है? यदि यह संभव नहीं है, तो आपकी रायमें विद्यार्थी-संगठनोंको राजनीतिमें कहां तक दिलचस्पी लेनी चाहिये?"

अिस प्रश्नका कुछ अुत्तर अूपर आ जाता है। अुन्हें नियामक राजनीतिसे अलग रहना ही चाहिये। यह देशके अिकतरफा विकासकी निशानी है कि सब दलोंने विद्यार्थी-जगतका अपने-अपने मतलबसे अुपयोग किया है। यह शायद अुस सूरतमें अनिवार्य था जब शिक्षाका मकसद अैसे गुलामोंकी नस्ल पैदा करना था जो अपनी दासतासे चिपटे रहना चाहे। आशा है वह काम खत्म हो गया। विद्यार्थियोंका पहला काम है विचार करके यह मालूम करना कि स्वतंत्र राष्ट्रके बच्चोंको कैसी शिक्षा मिलनी चाहिये। आजकलकी शिक्षा तो प्रत्यक्ष ही वैसी शिक्षा नहीं है। मुझे अिस प्रश्नकी चर्चा नहीं करनी है कि वह शिक्षा कैसी हो। जितनी ही बात है कि अुन्हें यह विश्वास करके अपनेको धोखा नहीं देना चाहिये कि यह काम शिक्षाविभागकी प्रबन्धकारिणीके बुजुर्गोंका ही है। अुन्हें विचार करनेकी शक्तिको अुत्तेजन देना चाहिये। मेरा यह जरा भी सुझाव नहीं है कि विद्यार्थी हड़तालें वगैरा करके जबरदस्ती अैसी स्थिति ला सकते हैं। अुन्हें रचनात्मक और ज्ञानपूर्ण आलोचना करके लोकमत पैदा करना होगा।

प्रबन्ध-सभाके सदस्य पुरानी विचारधारामें पले होनेके कारण ध
चलते हैं। पर सही जागृति की जाय तो अुन पर जरूर अ
सकता है।

"आजकल अधिकांश विद्यार्थी राष्ट्रीय सेवामें
चस्पी नहीं ले रहे हैं। अुनमें बहुतसे अैसी आदतें सीख
जिन्हें वे पश्चिमकी फैशन समझते हैं और अधिकाधिक
शराबखोरी वगैराकी कुटेवोंके शिकार हो रहे हैं। का
बहुत कम है और स्वतंत्र विचार करनेकी अिच्छा भी
ही है। हम अिन सब समस्याओंको हल करना चाहते हैं
युवकोंमें चरित्र, अनुशासन और कार्यदक्षता पैदा करना
हैं। आपके खयालमें हम यह कैसे कर सकते हैं?"

अिन सब बातोंका सम्बन्ध मौजूदा बीमारीसे है। जब
वातावरण पैदा हो जायगा और विद्यार्थी आन्दोलनकारी न
गंभीरतापूर्वक अध्ययनमें लग जायेंगे तब यह बीमारी मिट ज
विद्यार्थी-जीवनकी अुपमा संन्यासी जीवनसे ठीक ही दी गई
विद्यार्थीको सादा जीवन और अुच्च विचारोंकी मूर्ति बनना ही चा
अुसे अनुशासनका अवतार होना चाहिये। अुसे अपने अध्ययन
सुख मिलना चाहिये। जब अध्ययन विद्यार्थियोंके लिअे जब
लादा गया बोझ नहीं रहता, तब अुससे अवश्य सच्चा सुख मि
। विद्यार्थी तेजीसे अधिकाधिक ज्ञानप्राप्ति करता चला जाय,
धिक सुख और क्या हो सकता है?

हरिजन, १७–८–'४७

अेक भाअी लिखते हैं:

"आपने भारतके विद्यार्थी-जगतके बारेमें ठीक
पर लिखना शुरू किया है। आपकी सदकी बड़ी जरूरत
स्व० अेच० जी० वेल्सने किसी स्थान पर विद्यार्थियोंको '
बुद्धिवाले' बताया है। अपनी बुद्धिवाले विद्यार्थियोंका दु

अध्ययन करने और अुन्हें चलानेके अपने कामसे अलग हो जाते हैं। अिस नाजुक ज़मानेमें 'कच्ची बुद्धिवालों' के दुरुपयोगसे होनेवाली हानिका असर दुरुपयोग करनेवालोंके ही सिर पर पड़ता है। आपके अुपरोक्त लिखसे अेक प्रश्न अुत्पन्न होता है क्या गांधीजीने ही विद्यार्थियोंको पहले-पहल राजनीतिमें नहीं खींचा था? मैं जानता हूँ कि यह सच नहीं है। परन्तु आपके लिअे अपनी स्थिति फिरसे स्पष्ट कर देना आवश्यक है।

"दूसरी बात यह है कि विद्यार्थी-संघोंको क्या करना चाहिये? अुनका अुद्देश्य क्या होना चाहिये? आप जानते हैं कि आजकल विद्यार्थी-संघ राजनीतिक जीवनमें प्रवेश करनेकी सीढ़ी समझे जाते हैं। कुछ लोग अिस कामके लिअे अुनका दुरुपयोग करते हैं।"

यदि विद्यार्थियोंका केवल अेक संयुक्त संघ हो, तो वह सेवाका अेक ज़बरदस्त साधन बन सकता है। अुनका लक्ष्य अेक ही हो सकता है: अच्छी कमाओीका धंधा हरगिज न ढूंढकर अपनेको मातृभूमिकी सेवाके लिअे अुपयुक्त बनाना। यदि वे अैसा करें तो अुनका ज्ञान खूब बढ़ेगा। आन्दोलन केवल अुन्हींके लिअे है, जो अपनी पढ़ाओी पूरी कर चुके हों। पढ़ाओी करते हुअे तो विद्यार्थियोंका अेकमात्र काम यही है कि वे अपने ज्ञानकी वृद्धि करें। भारतके जनसाधारणकी दृष्टिसे देखा जाय तो आजकी शिक्षा-प्रणाली बहुत हानिकारक है। यह दिखाया जा सकता है कि वर्तमान शिक्षासे देशका कुछ लाभ हुआ है। लेकिन मैं अुसे नगण्य मानता हूं। अिससे किसीको धोखेमें नहीं आना चाहिये। अुसकी अुपयोगिताकी सबसे बड़ी कसौटी यह है: क्या यह शिक्षा अन्न-वस्त्रके अुत्पादनमें कारगर मदद करती है, जैसा कि अुसे करना चाहिये? वर्तमान विवेकहीन मारकाटको शांत करनेमें विद्यार्थी-जगत क्या हिस्सा अदा करता है? किसी भी देशमें दी जानेवाली सारी शिक्षासे अुस देशकी प्रगति प्रत्यक्ष रूपमें सिद्ध होनी ही चाहिये। अिससे कौन अिनकार करेगा कि भारतमें दी जानेवाली

स्वीकार कर लिया गया। अिसलिअे बातों और सवालोंके अलावा दिलचस्प कार्यकर्ता कहीं मिल न सकते थे।

हरिजन, ७-१-'४७

२०

विद्यार्थी-सम्मेलन

छठे सिन्ध-विद्यार्थी-सम्मेलनके मंत्रीने मेरे पास अेक छपा हुआ परिपत्र भेजकर मुझसे सन्देश मांगा है। अुसी चीजकी मांग करनेवाला अेक तार भी मुझे मिला है। परन्तु अेक दुर्गम स्थान पर होनेके कारण मुझे परिपत्र और तार दोनों अितनी देरसे मिले कि मैं सन्देश नहीं भेज सकता था। मेरी अैसी स्थिति भी नहीं है कि मैं सन्देशों, लेखों और दूसरी बेशुमार मांगोंकी पूर्ति कर सकूं। परन्तु चूंकि मैं विद्यार्थियोंसे सम्बन्धी हर बातमें दिलचस्पी लेनेका दावा करता हूं और भारतभरमें विद्यार्थी-जगतसे कुछ सम्पर्क रखता हूं, अिसलिअे परिपत्रमें दिये गये कार्यक्रमकी मन ही मन आलोचना किये बिना मुझसे नहीं रहा गया। यह सोचकर कि शायद वह सहायक होगी, अुस आलोचनाका कुछ भाग लेखबद्ध करके विद्यार्थी-जगतके सामने रखता हूं। हां, अुस परिपत्रकी छपाअी खराब है और अुसमें अैसी गलतियां हैं, जो अेक विद्यार्थी-संस्थाके लिअे क्षम्य नहीं हो सकतीं। अुस परिपत्रसे निम्न अंश लिया गया है:

"अिस सम्मेलनके संचालक अुसे अधिकसे अधिक दिलचस्प और शिक्षाप्रद बनानेकी भरसक कोशिश कर रहे हैं। . . .हमारा अिरादा अेक शिक्षात्मक व्याख्यान-मालाका आयोजन करनेका है और हमारी आपसे प्रार्थना है कि आप अपने प्रवचनका लाभ हमें दें। . . .यहां सिन्धमें स्त्री-शिक्षाकी समस्या विशेष रूपसे विचारणीय है। . . .हमने विद्यार्थियोंकी

साथी बना लिया गया। अिसलिअे कालेजों और स्कूलोंके अलावा दूसरे कार्यकर्ता वहाँ मिल न सकते थे।

हरिजन, ७-१-'४०

२०

विद्यार्थी-सम्मेलन

छठे सिन्ध-विद्यार्थी-सम्मेलनके मंत्रीने मेरे पास अेक छपा हुआ परिपत्र भेजकर मुझसे सन्देश मांगा है। अुसी चीजकी मांग करनेवाला अेक तार भी मुझे मिला है। परन्तु अेक दुर्गम स्थान पर होनेके कारण मुझे परिपत्र और तार दोनों अितनी देरसे मिले कि मैं सन्देश नहीं भेज सकता था। मेरी अैसी स्थिति भी नहीं है कि मैं सन्देशों, लेखों और दूसरी बेशुमार मांगोंकी पूर्ति कर सकूं। परन्तु चूंकि मैं विद्यार्थियों सम्बन्धी हर बातमें दिलचस्पी लेनेका दावा करता हूं और भारतभरमें विद्यार्थी-जगतसे कुछ सम्पर्क रखता हूं, अिसलिअे परिपत्रमें दिये गये कार्यक्रमकी मन ही मन आलोचना किये बिना मुझसे नहीं रहा गया। यह सोचकर कि शायद वह सहायक होगी, अुस आलोचनाका कुछ भाग लेखबद्ध करके विद्यार्थी-जगतके सामने रखता हूं। हां, अुस परिपत्रकी छपाअी खराब है और अुसमें अैसी गलतियां हैं, जो अेक विद्यार्थी-संस्थाके लिअे क्षम्य नहीं हो सकती। अुस परिपत्रसे निम्न अंश लिया गया है :

> "अिस सम्मेलनके संचालक अुसे अधिकसे अधिक दिलचस्प और शिक्षाप्रद बनानेकी भरसक कोशिश कर रहे हैं। . . . हमारा अिरादा अेक शिक्षात्मक व्याख्यान-मालाका आयोजन करनेका है और हमारी आपसे प्रार्थना है कि आप अपने प्रवचनका लाभ हमें दें। . . . यहां सिन्धमें स्त्री-शिक्षाकी समस्या विशेष रूपसे विचारणीय है। . . . हमने विद्यार्थियोंकी

शिक्षासे पर अुद्देश्य पूरा नहीं हुआ है? अिसलिअे विद्यार्थी-जगतका अेकमात्र ध्येय यह होना चाहिये कि विद्यार्थी मौजूदा शिक्षाके दोषोंका पता लगाकर यथाशक्ति अपने भीतरसे दोषोंको दूर करें। अपने नहीं आचरणसे वे शिक्षा-संचालकोंको अपने विचारका बना सकेंगे। यदि वे अैसा करेंगे तो कभी दलगत राजनीतिमें नहीं फंसेंगे। सुधरी हुअी योजनामें रचनात्मक और अुत्पादक कार्यक्रमको स्वाभाविक रूपमें अुसका अुचित स्थान मिलेगा। अवश्य रूपमें अुनकी कार्रवाअीसे देशकी राजनीति लोगोंका दुरुपयोग करनेकी वृत्तिसे मुक्त होगी।

अब पहले प्रश्नको लें। मैंने देशके स्वातंत्र्य संग्रामके समय विद्या-र्थियोंकी शिक्षाके बारेमें जो कुछ कहा था, वह मालूम होता है भुला दिया गया। मैंने विद्यार्थियोंसे यह अनुरोध नहीं किया था कि वे स्कूल-कालेजोंमें शिक्षा ग्रहण करते हुअे राजनीतिमें प्रवृत्त हों। मैंने अहिंसात्मक असहयोगका आदेश दिया था। मैंने सुझाया था कि वे अिन शिक्षा-संस्थाओंको छोड़ दें और आजादीकी लड़ाअीमें कूद पड़ें। मैंने राष्ट्रीय विद्यापीठों और राष्ट्रीय पाठशालाओं और विद्यालयोंको प्रोत्साहन दिया था। दुर्भाग्यसे हमारे स्कूल-कालेजोंमें दी जानेवाली शिक्षाका जाल अितना मजबूत था कि विद्यार्थी अुसे तोड़ नहीं सके। केवल मुट्ठीभर विद्यार्थी ही अुसके घपलेसे निकल सके। अिस प्रकार यह कहना ठीक नहीं कि मैंने विद्यार्थियोंको देशकी राजनीतिमें खींचा। अिसके सिवा, जब दक्षिण अफ्रीकामें बीस वर्ष रहनेके बाद मैं १९१५ में भारत लौटा, तब विद्यार्थी अपनी पढ़ाअी करते हुअे भी पहले ही राजनीतिक जीवनकी ओर आकर्षित हो चुके थे। शायद और कोअी मार्ग ही नहीं था। हमारे विदेशी शासकोंने देशके सारे जीवनकी रचना अिस प्रकार कर दी थी कि कोअी भी आदमी अिस प्रकारकी राजनीतिमें प्रवृत्त न हो सके, जो दासतासे देशका अुद्धार करनेके लिअे अनुकूल हो। विदेशी शासकोंने देशके नौजवानोंकी शिक्षाका ढांचा अिस तरह खड़ा किया था और अुस पर अैसा नियंत्रण रखा था कि वे अुनके काबूमें रहें और लाखों लोग अज्ञानके अंधकारमें डूबे रहें। अिसी प्रकारसे विदेशी नियंत्रण भरसक

सदस्य बना लिया गया। अिसलिअे कांग्रेस और सभाके अलावा दूसरा कार्यकर्ता यहाँ मिल न सकते थे।

हरिजन, ७-९-'४७

२०

विद्यार्थी-सम्मेलन

छठे सिन्ध-विद्यार्थी-सम्मेलनके मंत्रीने मेरे पास अेक छपा हुआ परिपत्र भेजकर मुझसे सन्देश मांगा है। अुसी चीजकी मांग करनेवाला अेक तार भी मुझे मिला है। परन्तु अेक दुर्गम स्थान पर होनेके कारण मुझे परिपत्र और तार दोनों अितनी देरसे मिले कि मैं सन्देश नहीं भेज सकता था। मेरी अैसी स्थिति भी नहीं है कि मैं सन्देशों, लेखों और दूसरी वेतुमार मांगोंकी पूर्ति कर सकूं। परन्तु चूंकि मैं विद्यार्थियोंसे सम्बन्धी हर बातमें दिलचस्पी लेनेका दावा करता हूं और भारतभरमें विद्यार्थी-जगतसे कुछ सम्पर्क रखता हूं, अिसलिअे परिपत्रमें दिये गये कार्यक्रमकी मन ही मन आलोचना किये बिना मुझसे नहीं रहा गया। यह सोचकर कि शायद वह सहायक होगी, अुस आलोचनाका कुछ भाग लिपिबद्ध करके विद्यार्थी-जगतके सामने रखता हूं। हां, अुस परिपत्रकी छपाअी खराब है और अुसमें अैसी गलतियां हैं, जो अेक विद्यार्थी-संस्थाके लिअे क्षम्य नहीं हो सकतीं। अुस परिपत्रसे निम्न अंश लिया गया है :

> "अिस सम्मेलनके संचालक अुसे अधिकसे अधिक दिलचस्प और शिक्षाप्रद बनानेकी भरसक कोशिश कर रहे हैं। . . . हमारा अिरादा अेक शिक्षात्मक व्याख्यान-मालाका आयोजन करनेका है और हमारी आपसे प्रार्थना है कि आप अपने प्रवचनका लाभ हमें दें। . . . यहां सिन्धमें स्त्री-शिक्षाकी समस्या विशेष रूपसे विचारणीय है। . . . हमने विद्यार्थियोंकी

अिज्जत करते थे। राष्ट्र खुशी-खुशी अुनका खर्चा बरदाश्त करता था और बदलेमें वे राष्ट्रको सौगुनी बलवान आत्मायें, सौ गुने बलवान मस्तिष्क और सौगुनी बलिष्ठ भुजायें देते थे। आधुनिक संसारमें गिरे हुअे राष्ट्रोंके विद्यार्थी अुन राष्ट्रोंके आशादीप समझे जाते हैं और जीवनके हर क्षेत्रमें सुधारोंके त्यागी नेता बन गये हैं। भारतमें भी अैसे विद्यार्थियोंके अुदाहरण मौजूद हैं। परन्तु वे अिने-गिने हैं। मेरा कहना अितना ही है कि विद्यार्थी-सम्मेलनोंको अिस प्रकारके संगठित कार्योंकी हिमायत करनी चाहिये, जो ब्रह्मचारियोंकी प्रतिष्ठाके योग्य हैं।

यंग अिंडिया, ९-६-'२७

२१

विज्ञान और पशुओंकी चीरफाड़

मैं विज्ञानमात्रकी प्रगतिके विरुद्ध नहीं हूँ। अिसके विपरीत, पश्चिमकी वैज्ञानिक भावनाका मैं प्रशंसक हूँ और यदि अुस प्रशंसामें कोअी मर्यादा है तो अिस कारण कि पश्चिमी विज्ञान अीश्वरकी निम्न सृष्टिका कोअी खयाल नहीं करता। मैं जीवित प्राणियोंकी चीरफाड़से हार्दिक घृणा करता हूँ। मैं विज्ञान और तथाकथित मानवताके नाम पर निर्दोष जीवोंकी अक्षम्य हत्याको घृणित समझता हूँ और निर्दोष रक्तसे कलंकित तमाम वैज्ञानिक खोजोंको किसी भी कामकी नहीं मानता। यदि रक्त-संचारका सिद्धान्त जीवित प्राणियोंकी चीरफाड़के बिना नहीं खोजा जा सकता था, तो मानव-जाति अुसके बिना भलीभांति अपना काम चला लेती। और मुझे वह दिन स्पष्ट तौर पर आता दिखाअी दे रहा है, जब पश्चिमके अीमानदार वैज्ञानिक ज्ञानको आगे बढ़ानेके मौजूदा तरीकों पर मर्यादायें लगायेंगे। भावी मूल्यांकनमें केवल मानव-परिवारका ही नहीं, बल्कि सभी प्राणियोंका खयाल रखा जायगा। और जिस प्रकार हमें धीरे-धीरे किन्तु निश्चित रूपमें पता चल रहा है कि यह मान लेना भूल है कि हिन्दू अपने ही समाजके भागको पतित दशामें रखकर समृद्ध बन सकते हैं या पश्चिमके लोग पूर्वी और अफ्रीकी राष्ट्रोंके शोषण और पतनके आधार पर अूंचे अुठ सकते या टिक सकते हैं, वैसे ही समय पाकर हम यह भी समझ जायेंगे कि निचली श्रेणीके जीवों पर हमारा प्रभुत्व अुनकी हत्याके लिअे नहीं, बल्कि हमारे ही समान अुनके

भी भले और कल्याणके लिअे है। कारण मुझे विश्वास है कि मेरी तरह अुनकी भी आत्मा है।

यंग अिंडिया, १७–१२–'२५

२२

अंग्रेजी द्वारा शिक्षा

हमारे लिअे यह गहरे अपमान और शर्मकी बात है कि मुझे आज अिस पवित्र नगरके अिस महाविद्यालयकी छायामें अपने देश-वासियोंके सामने अैसी भाषामें बोलना पड रहा है जो मेरे लिअे विदेशी है। मैं जानता हू कि यदि मुझे अुन सब लोगोंकी परीक्षा लेनेको परीक्षक बनाया जाय, जो अिन दो दिनोंमें अिस व्याख्यान-मालाको सुनते रहे हैं, तो अुनमें से ज्यादातर फेल होंगे। यह क्यों? अिसीलिअे कि अुनके हृदयोंको स्पर्श नहीं किया गया है। दिसम्बरमें हुअे महान काग्रेस अधिवेशनमें मैं अुपस्थित था। वहाकी श्रोता-मंडली यहासे बहुत विशाल थी। और क्या आप मेरी अिस बात पर विश्वास करेंगे कि बम्बअीमें श्रोताओंके विशाल समूह पर अगर किन्हीं भाषणोंका प्रभाव पड़ा तो वह हिन्दुस्तानीमें होनेवाले भाषणोंका ही पड़ा? याद रखिये यह बम्बअीमें हुआ, बनारसमें नहीं, जहा सभी हिन्दीमें बोलते हैं। परन्तु अेक तरफ बम्बअी प्रातकी प्रादेशिक भाषाओंमें और दूसरी तरफ हिन्दीमें अितनी बड़ी विभाजक रेखा नहीं है, जितनी कि अंग्रेजी और भारतकी अेक-दूसरेसे सम्बन्ध रखनेवाली भाषाओंके बीच है। अिसीलिअे काग्रेसके श्रोतागण हिन्दीमें बोलनेवालोंको ज्यादा अच्छी तरह समझ सके। मैं आशा रखता हू कि यह विश्वविद्यालय अैसा प्रबन्ध करेगा, जिससे यहा आनेवाले युवक अपनी मातृभाषाओंके माध्यम द्वारा शिक्षा प्राप्त कर सकें। हमारी भाषा हमारा अपना प्रतिबिम्ब है। और यदि आप मुझसे यह कहें कि हमारी भाषायें अितनी कंगाल हैं कि

अुनके द्वारा अुत्तम विचार प्रगट नहीं किये जा सकते, तो मैं कहूंगा कि हमारा अस्तित्व जितना जल्दी मिट जाय अुतना हमारे लिअे अच्छा है। क्या कोअी अैसा आदमी है, जो सपनेमें भी यह खयाल करता हो कि अंग्रेजी कभी भारतकी राष्ट्रभाषा हो सकती है? ('कभी नहीं' की आवाजें)। देशके मत्थे पर यह आफत और बोझ किसलिअे? क्षण भरके लिअे सोचिये तो कि हमारे लड़कोंको हर अंग्रेज लड़केके साथ कितनी विषम दौड़ लगानी पड़ती है? मुझे पूनाके कुछ प्राध्यापकोंसे घनिष्ठ बातचीतका सुअवसर मिला था। अुन्होंने मुझे यकीन दिलाया कि प्रत्येक भारतीय युवक अपने जीवनके कमसे कम ६ कीमती साल गवा देता है, क्योंकि वह अंग्रेजी भाषा द्वारा अपना ज्ञान प्राप्त करता है। अिसका हमारे स्कूल-कालेजोंसे निकलनेवाले छात्रोंकी संख्यासे गुणा कीजिये और फिर खुद ही देख लीजिये कि देशको कितने हजार वर्षकी हानि हुअी है। हमारे विरुद्ध आरोप यह है कि हममें स्वय-प्रेरणासे कुछ करनेकी शक्ति नहीं है। वह कैसे हो सकती है, यदि हम अपने जीवनके मूल्यवान वर्ष अेक विदेशी भाषा पर प्रभुत्व प्राप्त करनेमें लगा दें? और हम अिस प्रयत्नमें भी असफल रहते हैं। क्या कल और आजके किसी भी वक्ताके लिअे अपने श्रोताओं पर वही प्रभाव डालना संभव था, जो मिस्टर हिगिनबॉथमने डाला? पहलेके वक्ता अपने श्रोताओंका ध्यान नहीं खींच सके, अिसमें अुनका अपना दोष नहीं था। अुनके भाषणोंमें हमारे लिअे काफी सामग्री थी। वे महत्त्वपूर्ण थे। परन्तु वे हमारे भीतर घर न कर सके। मैंने लोगोंको कहते हुअे सुना है कि आखिर तो अंग्रेजी पढ़े-लिखे भारतीय ही देशका नेतृत्व कर रहे हैं, और राष्ट्रके लिअे सब कुछ कर रहे हैं। अिसके सिवा और हो ही क्या सकता था? हमें अेकमात्र अंग्रेजी शिक्षा ही मिल रही है। अवश्य ही हमें अिसके बदलेमें कुछ न कुछ करके दिखाना चाहिये। परन्तु मान लीजिये कि पिछले ५० सालमें हमें अपनी मातृभाषाओं द्वारा शिक्षा मिली होती, तो आज हम क्या होते? हमारा भारत आज स्वतंत्र होता, हमारे शिक्षित लोग अपने ही देशमें विदेशी बनकर न रहते; परन्तु अुनकी वाणी राष्ट्रके हृदयको छूती,

वे गरीबसे गरीब लोगोंके बीच काम करते होते और पिछले ५० वर्षके दौरानमें अुन्होंने जो कुछ प्राप्त किया वह राष्ट्रके लिअे अेक कीमती विरासत होती (तालियां)। आज तो हमारे अुत्तम विचारोंमें हमारी पत्नियां तक हिस्सा नहीं ले सकतीं। प्राध्यापक बोस और प्राध्यापक रायको तथा अुनकी प्रतिभाशाली खोजोंको देखिये। क्या यह लज्जाकी बात नहीं है कि अुनकी खोजें जनसाधारणकी समान सम्पत्ति नहीं हैं?

स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी

हिन्दुस्तानीके बारेमें मेरे सुझावके साथ ही साथ मेरी यह सलाह रही है कि विद्यार्थियोंको हीनताके दर्जेसे समानताके दर्जे पर पहुंचने — विदेशी हुकूमतसे स्वराज्य तक और नि.सहाय अवस्थासे स्वावलंबनकी स्थिति तक पहुंचने — के बीचके समयमें अंग्रेजी पढ़ना स्थगित कर देना चाहिये। अगर हम अगली कांग्रेससे पहले स्वराज्य ले लेना चाहते हैं, तो हमें अिसकी संभावनामें विश्वास रखना चाहिये, अिस कामको आगे बढानेके लिअे हमें यथाशक्ति हर प्रयत्न कर गुजरना चाहिये और कोअी बात अैसी नहीं करनी चाहिये जिससे वह आगे न बढे या दरअसल पीछे हटे। बात यह है कि हमारे अंग्रेजीके ज्ञानकी वृद्धिसे हमारे ध्येयकी ओर हमारी प्रगति तेज नहीं हो सकती, बल्कि संभव है अिससे वह और पीछे चली जाय। बहुतसे मामलोंमें सचमुच अिसी विपत्तिका सामना हमें करना पड़ता है। क्योंकि कअी लोग अैसा मानते हैं कि जब तक हमारे कानोंमें अंग्रेजीके शब्दोंका संगीत न सुनाअी दे और हमारे ओठोंसे अुसका अुच्चार न हो, तब तक हममें स्वतंत्रताकी भावना पैदा नहीं हो सकती। यह हमारा मोह है। अगर यह सच हो तो स्वराज्य हमसे अुतना ही दूर होगा, जितना कि कयामतका दिन। अंग्रेजी आन्तरराष्ट्रीय व्यापार-व्यवसायकी भाषा है, कूटनीतिकी भाषा है और अुसका साहित्य-भंडार अनेक प्रकारके ग्रंथरत्नोंसे भरपूर है। अुसके द्वारा पाश्चात्य विचारों और संस्कृतिकी [illegible] हमारा प्रवेश होता है। अिसलिअे हममें से थोडेसे आदमियोंके अंग्रेजीका ज्ञान आवश्यक है। वे राष्ट्रीय व्यापार-वाणिज्य और

आन्तरराष्ट्रीय कूटनीतिके विभागोका सचालन कर सकते हैं औ राष्ट्रको पश्चिमका अुत्तम साहित्य, विचार और विज्ञान दे सकते हैं अंग्रेजीका यह अुचित अुपयोग होगा। मगर आजकल तो अुसने जबर हमारे हृदयोमें प्रियतम स्थान ले लिया है और हमारी मातृभाषाओंक पदच्युत कर दिया है। यह अेक अस्वाभाविक स्थान है, जो अु अंग्रेजोंके साथ हमारे असमान सबधोंके कारण मिल गया है। अंग्रेजीके ज्ञानके बिना भारतीय मस्तिष्कका सर्वोच्च विकास सभव होना चाहिये हमारे लडके और लडकियोको यह सोचनेका प्रोत्साहन देना कि अंग्रेजीके ज्ञानके बिना अुत्तम समाजमें प्रवेश करना असभव है, भारतके पुरुषत्व और खास तौर पर स्त्रीत्वके प्रति हिंसा करना है। यह विचार अितना अपमानजनक है कि सहन नही किया जा सकता अंग्रेजीके मोहसे छुटकारा पाना स्वराज्य-प्राप्तिकी अेक अत्यन्त आवश्यक शर्त है।

यग अिंडिया, २-२-'२१

आपने, मैंने और हम सभीने अुस सच्ची शिक्षाकी अवहेलना की है, जो हमें अपनी राष्ट्रीय पाठशालाओंमें मिलनी चाहिये थी। गुजरातके नौजवानोंके लिअे और दक्षिणके युवकोके लिअे मध्यप्रान्तमें, युक्तप्रातमें, पजाबमें और भारतके अुन तमाम विशाल प्रदेशोंमें जाना असभव है, जहा हिन्दुस्तानीके सिवा और कोअी भाषा बोली नही जाती। अिसलिअे मैं आपसे कहता हू कि अपने अवकाशके समयमें आप हिन्दुस्तानी सीखें।

अैसा करेंगे तो आप अपने देहातमें जानेके लिअे स्वतत्र हैं — मद्रासके सिवा भारतके प्रत्येक भागमें आजादीसे जा सकते हैं और अपने मनकी बात आम लोगोको समझा सकते हैं। कभी क्षणभरके लिअे भी यह न सोचिये कि आप आम लोगोंके बीच अपने विचार प्रगट करनेका सामान्य माध्यम अंग्रेजीको बना सकते हैं। २२ करोड भारतीय केवल हिन्दुस्तानी जानते हैं — अुन्हे और कोअी भाषा नही आती। और यदि आप २२ करोड़ भारतीयोके हृदयोंमें स्थान प्राप्त करना

चाहते हैं, तो अुसके लिअे आपके पास हिन्दुस्तानीका ही अेकमात्र जरिया है।

मैं अैसे हजारों विद्यार्थियोको जानता हूं, जिन्हे यदि यह कह दिया जाय कि तुम्हें सरकारी नौकरी नही मिल सकती, तो अुनके चेहरो पर घोर निराशा छा जाती है। लेकिन अगर आप अिस सरकारको खतम करने या सुधारने पर तुले हुअे है, तो आप सरकारी नौकरी कैसे मांग सकते है? यदि आप सरकारका आसरा नही लेना चाहते, तो आपकी अंग्रेजीका मूल्य ही क्या रह जाता है? मैं अंग्रेजी भाषाका साहित्यिक महत्त्व भी कम नही आंकना चाहता। मैं अंग्रेजी *ग्रन्थोंमें छिपे हुअे अुसके विशाल साहित्यिक भण्डारकी कीमत भी कम* नही आंकना चाहता। मैं आपसे यह नहीं कहना चाहता कि हमने अंग्रेजी भाषाके महत्त्वको बहुत बढा-चढाकर माना है। मगर मैं आपसे यह जरूर कहनेकी हिम्मत करूंगा कि स्वराज्यके अर्थतंत्रमें अंग्रेजी भाषाका स्थान बहुत ही थोडा है।

यंग अिंडिया, २-२-'२१

शिक्षाका माध्यम अंग्रेजी भाषा होनेके कारण हमारी सारी मौलिकता नष्ट हो गअी है। हम बिना पंखके पक्षी बन गये हैं। हमारी बडीसे बड़ी महत्त्वाकांक्षा क्लार्क बनने या सम्पादक बनने तक ही पहुंचती है।

यंग अिंडिया, १०-२-'२७

मेरा यह निश्चित मत है कि राष्ट्रके जो बालक अपनी ही भाषाके सिवा किसी और भाषामें शिक्षा पाते हैं वे आत्महत्या करते हैं। अिससे अुनका जन्मसिद्ध अधिकार छिन जाता है। विदेशी माध्यमका परिणाम यह होता है कि बालको पर बेजा जोर पडता है और अुनकी सारी मौलिकता नष्ट हो जाती है। अुनका विकास रुक जाता है और वे अपने घरोंसे अलग पड जाते हैं। अिसलिअे मैं अैसी चीजको राष्ट्रका सबसे बड़ा दुर्भाग्य मानता हूं।

वि‍थ गांधीजी अिन सीलोन, पृ० १०६

गांधीजीने अुन (विद्यार्थियों) से कहा कि अगर आपको अपनी मातृभाषासे या राष्ट्रभाषासे, जो हिन्दुस्तानी है, प्रेम नहीं है, तो आप यह आशा नहीं रख सकते कि आपको भारतकी स्वराज्यकी लड़ाअीके सिपाहियोंमें भरती किया जायगा। जो आदमी अपनी मातृभाषाके प्रति अुदासीन है, वह स्वदेश-प्रेमी होनेका दावा नहीं कर सकता। यहां मैं आपको याद दिलाता हूं कि जनरल बोथा यद्यपि अंग्रेजी जानते थे, फिर भी जब कभी वे लन्दन जाते थे तब राजासे दुभाषियेके द्वारा डच भाषामें ही बात करनेका आग्रह रखते थे। राजा अिस आग्रहसे नाराज होनेके बजाय अुनकी कद्र करते थे, क्योंकि वे मानते थे कि अैसा करना अेक डच भाषाभाषी राष्ट्रके राजदूतके लिअे स्वाभाविक बात है। अिसी तरह आपको अपनी मातृभाषा पर गर्व होना चाहिये।

यंग अिंडिया, १०–१०–'२९

जब कभी मैंने विद्यार्थी श्रोताओंमें भाषण दिया है, तभी अंग्रेजीमें बोलनेकी मांग पर मुझे अचंभा हुआ है। आप जानते हैं या आपको जानना चाहिये कि मैं अंग्रेजी भाषाका प्रेमी हूं। परन्तु मेरा यह विश्वास अवश्य है कि अगर भारतके विद्यार्थी, जिनसे यह आशा रखी जाती है कि वे लाखों गरीबोंका जीवन अपनाकर अुनकी सेवा करेंगे, अंग्रेजीके बजाय हिन्दुस्तानी पर ज्यादा ध्यान दें, तो अुनकी योग्यता ज्यादा बढ़ेगी। मैं यह नहीं कहता कि आपको अंग्रेजी नहीं सीखनी चाहिये; शौकसे सीखिये। परन्तु जहां तक मुझे दिखाअी देता है, वह लाखों हिन्दुस्तानी घरोंकी भाषा नहीं हो सकती। वह हजारों या लाखों आदमियों तक सीमित रहेगी, परन्तु वह करोड़ोंकी भाषा नहीं बन सकती। अिसलिअे जब विद्यार्थी मुझसे हिन्दीमें बोलनेको कहते हैं तो मुझे हर्ष होता है।

हरिजन, १७–११–'३३

गांधीजीने कहा, "अैसा भय प्रगट किया गया है कि राष्ट्रभाषाका प्रचार प्रांतीय भाषाओंको नुकसान पहुंचानेवाला साबित होगा। लेकिन अिस डरका कारण अज्ञान है। सच पूछा जाय तो प्रांतीय भाषाओंकी

पक्की बुनियाद पर ही राष्ट्रभाषाकी भव्य अिमारत खड़ी होगी। दोनों अेक-दूसरेकी पूरक हैं, अेक-दूसरेकी जगह लेनेवाली नहीं।

"मैं अिस बातको नहीं मानता कि मातृभाषाके माध्यम द्वारा टेकनिकल शिक्षा दे सकनेके लिअे बड़ी खोज और तैयारीकी जरूरत होगी। जो अिस तरहकी दलीलें देते हैं अुन्हें पता नहीं कि हमारे देहातकी बोलियोंमें मुहावरों और शब्दोंका कितना सम्पन्न भण्डार छिपा पड़ा है। मेरी रायमें नये शब्दोंकी तलाशके लिअे हमें संस्कृत या फारसीकी शरण लेनेकी आवश्यकता नहीं है। मैं चम्पारनमें रहा हूं और मैंने देखा है कि वहांके देहाती लोग अेक भी विदेशी शब्द या मुहावरेकी मददके बिना आसानीसे अपनी बात पूरी तरह समझा सकते हैं। अुनकी सूझबूझके नमूनेके तौर पर मैं आपको 'हवा-गाड़ी' शब्द बताता हूं, जो अुन्होंने मोटरके लिअे गढ़ लिया है। मैं विश्वविद्यालयके विद्वानोंको मोटरगाड़ीके लिअे अिससे अधिक कवित्व-पूर्ण नाम गढ़नेकी चुनौती देता हूं।

'वक्ताओंमें से अेकने कहा है कि अिस सुधारसे कालेजमें पढ़ने-वालोंके कमसे कम तीन साल बच जायंगे। मगर मेरी राय है कि समय और श्रमकी बचत अिससे भी ज्यादा होगी। अिसके सिवा, वे मातृभाषा द्वारा जो कुछ सीखेंगे, अुसे घर पर अपनी माताओं और बहनोंको आसानीसे समझा सकेंगे और अिस प्रकार अुन्हें अपनी पंक्तिमें ला सकेंगे। स्त्रीको मनुष्यकी अर्धांगिनी कहा गया है। आज-कल भारतकी स्त्रियों और पुरुषोंके विचारोंमें जमीन-आसमानका फर्क है। यह विदेशी माध्यमके अनुचित हस्तक्षेपका फल है। हमारी स्त्रियां पिछड़ी हुअी और जाहिल हैं। नतीजा यह है कि भारत आज अैसा मरीज बना हुआ है, जिसके आधे अंगको लकवा मार गया है। जब तक यह बुराअी दूर नहीं होगी, तब तक भारत पूरी तरक्की नहीं कर सकता।"

हरिजन, १८-८-'४६

२३

---व शिक्षा और हमारी गरीबी

रि लिअे बेहद महगी है। जब लाखोके लिअे अपना
ा कठिन है, जब लाखो लोग भूखो मर रहे हैं, तब
ो खर्चीली शिक्षा देनेका विचार करना भी भयंकर
का विस्तार कठोर अनुभवसे होता है, अुसके लिअे
की कक्षामें ही पढना जरूरी नहीं है। जब हममें से
ने-आपको और अपने लोगोंको तथाकथित अुच्च
रेंगे, तब हमें पता चलेगा कि वास्तविक अुच्च शिक्षा
। सच्चा साधन क्या है। क्या कोअी अैसा तरीका
सकता, जिससे प्रत्येक लडका अपनी शिक्षाका खर्च
? संभव है अैसा कोअी अुपाय न हो। अैसा अुपाय
ह अप्रस्तुत प्रश्न है। परन्तु अिसमें सन्देह नहीं कि
ने हुअे भी कि अुच्च शिक्षाकी आकाक्षा प्रशसनीय ध्येय
लेनेसे अिनकार कर देंगे, तब हम अपनी परिस्थितिके
की पूर्तिका रास्ता खोज निकालेंगे। अैसे सब मामलोंमें
म तो यह है कि जो चीज लाखो लोगोको प्राप्त नही
पे हम दृढतापूर्वक अिनकार कर दें। अिनकार करनेकी
ामें अचानक कहीसे नहीं पैदा हो जायगी। पहली
र अैसी मनोवृत्ति पैदा करना है, जो लाखों लोगोंको
म्पत्ति या सुविधाको लेनेसे अिनकार करे और दूसरी
यह है कि हम अुस मनोवृत्तिके अनुरूप अपने
जल्दी फिरसे ढाल लें।

: और दृढनिश्चयी कार्यकर्ताओंकी अेक बडी, बहुत
ा में जनसाधारणकी सच्ची प्रगतिको असभव मानता
प्रगतिके बिना स्वराज्य जैसी कोअी चीज सभव

नहीं हो सकती। अैसे कार्यकर्ताओंकी, जो गरीबोंके खातिर स्वेच्छ बलिदान करनेका साहस करें, संख्या जितनी बढ़ेगी ठीक अुतनी ही स्वराज्यकी दिशामें हमारी प्रगति होगी।

यंग अिंडिया, २८–६–'२६

मुझे अलाहाबादकी अिकोनामिक अिन्स्टिट्यूट देखनेका अवसर मिला था। जब मुझे प्रो० जेवन्सने अिन्स्टिट्यूट दिखाओ और यह बताया कि अुस पर ३० लाख रुपये खर्च हुअे हैं (यदि मेरी याद ठीक है) तो मैं कांप अुठा। अैसे महल लाखों आदमियोंको भूखा रखे बिना खड़े नहीं किये जा सकते। नअी दिल्लीको देखिये। वह भी यही कहानी कह रही है। रेलके पहले और दूसरे दर्जेके डिब्बोंमें जो शानदार सुधार हुअे हैं अुन्हें देख लीजिये। आज सारा झुकाव ही अिस तरफ है कि थोड़ेसे अमीरोंका खयाल रखा जाय और गरीबोंकी अवहेलना की जाय। यह शैतानियत नहीं तो और क्या है? मुझे सच ही बोलना हो तो अिससे कम मैं नहीं कह सकता। जिन्होंने अिस प्रणालीकी कल्पना की अुनसे मेरा कोअी झगड़ा नहीं। वे और कुछ कर ही नहीं सकते थे। हाथी चींटीका खयाल कैसे रखेगा? जैसा कि सर लीपल ग्रिफनने दक्षिण अफ्रीकाके शिष्टमंडलके सदस्यकी हैसियतसे अपने भाषणमें अेक बार कहा था, जिसके पैरमें बिवाओ फटती है वही अुसका कष्ट जानता है। हमारे कामकाजकी व्यवस्था अैसे लोगोंके हाथमें है, और अुनकी पूरी नेकनीयती हो तो भी अुनके अच्छेसे अच्छे आदमी भी हमारे कामकाजकी व्यवस्था अितनी अच्छी तरह नहीं कर सकते जितनी कि हम कर सकते हैं। कारण, अुनकी और हमारी कल्पनाओंमें आकाश-पातालका अन्तर है। वे मुट्ठीभर अमीरोंकी दृष्टिसे सोचते हैं। हमें करोड़ों गरीबोंकी दृष्टिसे होगा।

अिंडिया, १०–२–'२७

आज विद्यार्थियोंका कर्तव्य कैसे समझ सकते हैं? हम बहुत नीचे गिर गये हैं। आज तो माता-पिता गलत दिशामें

हमारा नेतृत्व करते हैं। वे समझते हैं कि हमारे बच्चोंकी शिक्षा सिर्फ अिस हेतुसे होनी चाहिये कि वे जीवनमें धन और प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकें। अिस प्रकार शिक्षा और ज्ञानके साथ व्यभिचार हो रहा है और विद्यार्थी-जीवनमें जो शान्ति, निर्दोषता और आनन्द होना चाहिये अुसकी हम व्यर्थ आशा रखते हैं। जब हमारे विद्यार्थियोंको वास्तवमें किसी बातकी चिन्ता न होनी चाहिये, अुस समय वे चिन्ता और फिक्रके बोझसे दबे रहते हैं। अुनका काम केवल ग्रहण करना और अुसे पचाना है। हां, अुन्हें यह भेद करते आना चाहिये कि कौनसी चीज ग्रहण करनी चाहिये और कौनसी फेंक देनी चाहिये। शिक्षकका कर्तव्य है कि वह अपने शिष्योंको विवेक करना सिखाये। यदि हम विवेकके बिना ग्रहण करते चले जायंगे तो हम मशीनों जैसे बन जायंगे। हम विचारशील, ज्ञानशील प्राणी हैं और हमें अिस कालमें सत्य और असत्य, मीठी और कड़वी वाणी, साफ और गंदी चीजों आदिका भेद करना चाहिये। परन्तु आजकल विद्यार्थीका मार्ग अच्छे-बुरेके विवेकके अलावा कअी और कठिनाअियोंसे भरा है। अुसे अपने चारों ओरके विरोधी वातावरणसे लड़ना पड़ता है। किसी ऋषिके आश्रम और अुसके वात्सल्यसे पवित्र वायुमंडलके स्थान पर अुसे आज जर्जर घरके वातावरण और वर्तमान शिक्षा-प्रणाली द्वारा अुत्पन्न कृत्रिम परिस्थितिमें जीना पड़ता है। ऋषि अपने शिष्योंको पुस्तकोंके बिना पढ़ाते थे। वे अुन्हें थोड़ेसे मंत्र सिखा देते थे, जिन्हें शिष्य खजाना समझकर स्मृतिमें अंकित कर लेते थे और व्यावहारिक जीवनमें चरितार्थ करते थे। आजकलके विद्यार्थियोंको किताबोंके ढेरके बीच रहना पड़ता है, जो अुनका गला घोंट देनेके लिअे काफी होता है। मेरे अपने जमानेमें विद्यार्थियोंमें रेनाल्ड्सके अुपन्यासोंका बड़ा प्रचार था और मैं अुनसे केवल अिस कारण बच गया कि मैं प्रतिभा-शाली छात्र नहीं था और स्कूलकी पाठ्यपुस्तकोंके बाहरकी पुस्तकोंकी तरफ आंख अुठाकर भी नहीं देखता था। परन्तु जब मैं अिंग्लैंड गया तो मैंने देखा कि सभ्य देशोंमें अिन अुपन्यासोंका निषेध था और अुन्हें न पढ़कर मैंने कुछ भी नहीं खोया। अिसी तरह और बहुतसी

बातें हैं, जिन्हे विद्यार्थी पूरी तरह छोड़ सकता है। अैसी छोडने योग्य अेक चीज है अच्छी आजीविकाकी लालसा। केवल गृहस्थको ही अुसका विचार करना चाहिये। ब्रह्मचारी विद्यार्थीका वह धर्म नही है। अुसे अपने देशकी परिस्थितियोसे परिचित होना चाहिये और देशके सामने खड़े सकट तथा अुससे अपेक्षित कामकी व्यापकताको समझ लेनेका प्रयत्न करना चाहिये। मैं कह सकता हू कि तुममे से ज्यादातर विद्यार्थी अखबार पढते होगे। मैं नही समझता कि मैं तुम्हे अुनसे बिलकुल बचे रहनेको कह सकता हूं। परन्तु मैं तुमसे यह जरूर कहूगा कि अुनमें छपे क्षणिक दिलचस्पीके साहित्यसे बचना। और मैं यह भी कह सकता हूं कि अखबारोसे कोअी स्थायी हितकी वस्तु नही मिलती। वे चरित्र-निर्माणमें सहायक होनेवाली कोअी चीज नही देते। फिर भी मुझे मालूम है कि अखबारोंकी लालसा हरअेकको रहती है। वह दयाजनक है, भयंकर है। मैं अिस ढंगसे अिसी कारण बातें कर रहा हूं कि मैंने खुद शिक्षाके विषयमें कुछ प्रयोग किये हैं। अुन प्रयोगोंसे मैंने शिक्षाका अर्थ समझा, सत्याग्रह और असहयोगका आविष्कार किया और ये नये प्रयोग शुरू कर दिये। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि मुझे प्रयोग करनेका मुझे कभी अफसोस नही हुआ है। मैंने अुन्हे केवल राजनीतिक स्वराज्य हासिल करनेके अुद्देश्यसे हाथमें नही लिया है।

यंग अिंडिया, २९–१–'२५

प्र० — शिक्षितोंकी बेकारीकी समस्या भयंकर रूप धारण कर रही है। आप बेशक अुच्च शिक्षाकी निन्दा करते हैं, परन्तु हममें से जो विश्वविद्यालयकी शिक्षा ले चुके हैं वे समझते है कि वहां हमारा मानसिक विकास जरूर होता है। विद्या प्राप्त करनेसे आप किसीको हतोत्साह क्यों करें? क्या बेहतर हल यह न होगा कि बेकार स्नातक जनसाधारणकी शिक्षामें लग जायं और बदलेमें ग्रामवासी अुन्हे भोजन दें? क्या प्रांतीय सरकारें अुन्हे थोड़ासा रुपया और कपड़ा देकर अुनकी सहायता नही कर सकतीं?

अु० — मैं अुच्च शिक्षाके विरुद्ध नहीं हूं। परन्तु मैं अिस बातके विरुद्ध हूं कि वह शिक्षा कुछ लाख लडके-लडकियोंको गरीब करदाताओंके खर्च पर दी जाय। अिसके अलावा आज जिस ढंगकी अुच्च शिक्षा दी जाती है अुसके भी मैं विरुद्ध हूं। यह तो अूंची दुकान और फीके पकवान है। अुच्च शिक्षा ही क्यों, सारी शिक्षा-पद्धतिमें ही जडमूलसे सुधार होनेकी जरूरत है। परन्तु आपकी कठिनाओी ना बेकारीसे सम्बन्ध रखती है। अिसमें मेरी आपके साथ सहानुभूति और सहयोग है। अिस सिद्धान्त पर कि हर मजदूरको अुसके परिश्रमका फल मिलना ही चाहिये, गावकी सेवाके लिअे जानेवाला हरअेक स्नातक ग्रामवासियोंकी तरफसे मकान, अन्न और वस्त्र पानेका हकदार है। और वे देंगे भी हैं। परन्तु जब स्नातक 'साहब लोगों' की तरह रहे और अुनके बूतेसे दस गुना खर्च करे तब वे नहीं देंगे। अुसका जीवन यथाशक्ति ग्रामवासियोंके जीवनसे मिलता-जुलता होना चाहिये और अुसका मिशन अैसा होना चाहिये जिसकी वे कद्र कर सकें।

हरिजन, ९–३–'४०

प्र० — अेक विद्यार्थीने गभीरतापूर्वक यह प्रश्न पूछा है "अपनी पढ़ाअी समाप्त करके मैं क्या करूं?"

अु० — आज हम अेक पराधीन राष्ट्र है और हमारी शिक्षा-प्रणाली हमारे शासकोंके हित-साधनके लिअे तैयार की गअी है। परन्तु जैसे किसी अत्यन्त स्वार्थी मनुष्यको भी, जिसका शोषण करने पर वह तुला हुआ होता है अुनके सामने कोअी लालच रखना पड़ता है, वैसे ही हमारे शासकोंने अुनकी संस्थाओंमें पढ़नेके लिअे हमारे सामने बहुतसे प्रलोभन रख दिये हैं। अिसके अलावा, सरकारके सभी सदस्य अेकसे नहीं है। अुनमें कुछ लोग अुदार मनवाले है, जो शिक्षाकी समस्या पर अुचित-अनुचितकी दृष्टिसे विचार करते हैं। अिसलिअे निःसन्देह वर्तमान शिक्षा-पद्धतिमें भी कुछ अच्छाअी है। परन्तु प्रचलित शिक्षाका, हम चाहे या न चाहे, दुरुपयोग किया जाता है — अर्थात् अुसे रुपया और प्रतिष्ठा कमानेका साधन समझा जाता है।

'सा विद्या या विमुक्तये'— यह प्राचीन सूत्र आज भी अुतना ही सही है जितना पहले था। विद्याका अर्थ यहां केवल आध्यात्मिक ज्ञान नहीं है, न मुक्तिसे यह मतलब है कि मृत्युके बाद आध्यात्मिक मोक्ष मिल जाय। ज्ञानमें वह सारी शिक्षा शामिल है, जो मानव-जातिकी सेवाके लिअे अुपयोगी हो। और मुक्तिका अर्थ वर्तमान जीवनमें भी सब प्रकारकी गुलामीसे छुटकारा पाना है। गुलामी दो तरहकी होती है: किसी दूसरेका दास होना और अपनी ही कृत्रिम आवश्यकताओंका दास होना। अिस आदर्शकी प्राप्तिके लिअे प्राप्त किया हुआ ज्ञान ही सच्ची शिक्षा है।

यह अनुभव करके कि विदेशी शासकों द्वारा गढा हुआ शिक्षाका स्वरूप मुख्यत अुन्हींके हितोंकी सेवा कर सकता है, कांग्रेसने १९२० में और बातोंके साथ-साथ तमाम सरकारी शिक्षा-संस्थाओंके बहिष्कारका सिद्धान्त भी मंजूर कर लिया। परन्तु वह युग अब समाप्त हो गया दीखता है। सरकारी संस्थाओंमें और अुसी ढंगकी शिक्षा देनेवाली दूसरी संस्थाओंमें भरती होनेकी मांग अैसे स्कूल-कालेजोंकी संख्याकी अपेक्षा ज्यादा तेजीसे बढ़ रही है। परीक्षार्थियोंकी तादाद दिनोदिन ज्यादा होती जा रही है। परन्तु अिस जादूके असरके बावजूद मेरी रायमें सच्ची शिक्षा वही है जिसकी मैंने अूपर *व्याख्या* की है।

जो विद्यार्थी मेरे बताये हुअे शिक्षाके आदर्शसे अूपरी तौर पर आकर्षित होकर अपनी पढ़ाओ छोड़ देता है, संभव है अुसे आगे चलकर अपने किये पर पश्चात्ताप करना पड़े। अिसलिअे मैंने अेक अधिक सुरक्षित मार्ग सुझाया है। जिस संस्थामें वह भरती हो गया है, अुसमें अपनी पढ़ाओ जारी रखते हुअे अुसे मेरे बताये हुअे सेवाके आदर्शको सदा सामने रखना चाहिये और अपनी पढ़ाओका अुपयोग अुस आदर्शकी पूर्तिके लिअे करना चाहिये, रुपया कमानेके लिअे कभी नहीं। अिसके सिवा, अुसे वर्तमान शिक्षाकी कमीको अपना अवकाशका समय अुस आदर्शकी सिद्धिमें लगाकर पूरा करना चाहिये। अिसलिअे रचना-

त्मक कार्यक्रममें भाग लेनेका अुसे जो भी अवसर मिलेगा, अुससे वह अधिकसे अधिक लाभ अुठायेगा।

हरिजन, १०-३-'४६

अिन सभोमें यह सुझाव अक्सर दिया गया है कि शिक्षाको अनिवार्य बनाने या शिक्षा प्राप्त करनेके अिच्छुक प्रत्येक लडके-लडकीके लिअे सुलभ बनानेके लिअे भी, हमारे स्कूल-कालेजोको पूरे नही तो लगभग स्वावलम्बी बन जाना चाहिये। अैसा अुन्हे दान या सरकारी सहायता या विद्यार्थियोसे अैठी हुअी फीसके बल पर नही, बल्कि स्वय विद्यार्थियोके किये हुअे परिश्रमके बल पर करना चाहिये। और यह अुद्योगकी तालीम लाजिमी कर देनेसे ही हो सकता है। अिस आवश्यकताको तो दिनोदिन अधिकाधिक स्वीकार किया जा रहा है कि विद्यार्थियोको साहित्यिक शिक्षाके साथ-साथ अुद्योगकी शिक्षा भी दी जाय। अिसके साथ ही हमारे देशमें अिस बातकी भी जरूरत है कि शिक्षाको सीधे स्वावलम्बी बनानेके लिअे औद्योगिक शिक्षा भी ग्रहण की जाय। यह तभी हो सकता है जब हमारे विद्यार्थी श्रमके गौरवको स्वीकार करने लगें और जब यह रिवाज कायम हो जाय कि दस्तकारीका अज्ञान अप्रतिष्ठाका चिह्न है। अमरीकामें, जो ससारका सबसे धनवान मुल्क है और अिसलिअे जहा शायद शिक्षाको स्वावलम्बी बनानेकी कमसे कम जरूरत है, विद्यार्थियोंके लिअे अपनी पढाअीका सारा या थोडा खर्च निकाल लेना बहुत मामूली बात है। 'हिन्दुस्तानी स्टूडेण्ट', जो हिन्दुस्तानी अेसोसियेशन ऑफ अमेरिका (५०० रिवर साअिड ड्राअिव, न्यूयार्क सिटी) का अधिकृत बुलेटिन है, कहता है:

> "लगभग ५० फीसदी अमरीकी विद्यार्थी गरमियोंकी छुट्टियोका और अपनी पढाअीके समयके थोडे भागका अुपयोग रुपया कमानेमें करते है। कैलीफोर्निया विश्वविद्यालयका बुलेटिन लिखता है कि 'स्वावलम्बी विद्यार्थियोंका आदर किया जाता है।' (पढाअीके दिनोमें) विद्यार्थी अुचित परिश्रम करके

प्रति सप्ताह १२ से २५ घंटे बाहरके काममें लगा सकता है। अिससे अुसके कालेजके काममें बहुत बाधा नहीं पड़ती, क्योंकि यह काम १२ से १६ अिकाअियोंका अर्थात् हफ्तेभरमें ३६ से ४८ घंटेका होता है। . . . विद्यार्थीको अिन चीजोंका थोड़ा बहुत व्यावहारिक ज्ञान होना चाहिये: बढ़अीगिरी, पैमायश, *नक्शे बनाना, राज-मेमारका काम, मोटर चलाना,* फोटोग्राफी, मशीनोंका ज्ञान, रंगाअी, सामान्य कृषिकार्य, वाद्य बजाना, वगैरा। दो घंटे लोगोंको खाना परोसने वगैराका काम पढ़ाअीके दिनोंमें मिल जाता है, जिससे विद्यार्थीका भोजन-खर्च निकल आता है। गरमीकी छुट्टियोंमें काम करके आधा स्वावलम्बी विद्यार्थी १५० से २०० डालर तक बचा सकता है। मनसाम, न्यूयार्क विश्वविद्यालय, पिट्सबर्ग, यूनियन विश्वविद्यालय तथा अेण्टियाक कालेजमें औद्योगिक अिंजीनियरीके 'सहकारी' अभ्यासक्रम रखे जाते हैं, जिनसे विद्यार्थी कारखानोंमें काम करके अेक सालकी फीस कमा लेता है और वह काम अुसके व्यावहारिक अनुभवमें भी शुमार कर लिया जाता है।

"मिशिगन विश्वविद्यालय भी सिविल और अिलेक्ट्रिकल अिंजीनियरीके अैसे ही सहकारी अभ्यासक्रम जारी *करनेका विचार कर रहा है। सहकारी अभ्यासक्रम द्वारा* अिंजीनियरीमें स्नातक बननेके लिअे अेक साल अधिक चाहिये।"

यदि अमरीकाको अपने स्कूल-कालेजोंका पाठ्यक्रम अपने *विद्यार्थियोंकी पढ़ाअीका खर्चा निकालने योग्य बनाना* पड़ता है, तो हमारे स्कूल-कालेजोंके लिअे वह कितना अधिक आवश्यक है? क्या यह कहीं अच्छा नहीं होगा कि हम गरीब विद्यार्थियोंकी फीस माफ करके अुन्हें भिखमंगे बनानेके बजाय अुनके लिअे काम जुटा दें? भारतीय युवकोंके दिमागोंमें यह झूठा खयाल भरकर कि अपनी जीविका या पढ़ाअीके लिअे हाथ-पैरोंसे मेहनत करना अभद्रता है, हम अुनकी जो हानि करते हैं, अुसे बढ़ा-चढ़ाकर बताना असंभव है। अिससे नैतिक और भौतिक दोनों प्रकारकी हानि होती है और

सच पूछा जाय तो भौतिकसे नैतिक हानि कहीं अधिक होती है। फीस माफ होनेकी बात जाग्रत लड़केके मन पर जीवनभर बोझा बनकर रहती है और रहनी चाहिये। बादके जीवनमें कोअी यह याद दिलाया जाना पसन्द नहीं करता कि अुसे अपनी शिक्षाके लिअे दान पर आश्रित रहना पड़ा था। अिसके विपरीत अैसा कौन आदमी होगा जिसे अपनी शिक्षाके लिअे — अपने मन, शरीर और आत्माकी शिक्षाके लिअे किसी बढ़अी, लुहार आदिकी दुकान पर काम करनेका सौभाग्य मिला हो और वह अुन दिनोंको गर्वके साथ याद न करे?

यंग अिंडिया, २–८–'२८

अेक विद्यार्थी पूछता है:

"कोअी मैट्रिक पास या कालेजमें पढ़नेवाला युवक दुर्भाग्यवश दो-तीन बच्चोंका बाप हो गया हो, तो अुसे आजीविका प्राप्त करनेके लिअे क्या करना चाहिये?"

विद्यार्थीने यह नहीं बताया कि अुसकी आवश्यकताअें कितनी हैं। यदि अुसने मैट्रिक पास होनेके कारण अपनी आवश्यकताओंका पैमाना बहुत अूंचा नहीं रखा है और अगर वह अपनेको मामूली मजदूरके बराबर समझता है, तो अुसे गुजरके लायक कमानेमें कोअी कठिनाअी नहीं होनी चाहिये। अुसकी बुद्धि अुसके हाथ-पैरोंकी मदद करेगी और जिस मजदूरको अपनी बुद्धिका विकास करनेका अवसर नहीं मिला है अुससे अुसका काम ज्यादा अच्छा होगा। अिसका यह मतलब नहीं है कि जो मजदूर कभी अंग्रेजी नहीं पढ़ता अुसमें बुद्धि नहीं होती। दुर्भाग्यवश हमारे मजदूरोंको मस्तिष्कका विकास करनेमें कभी सहायता नहीं दी गअी। और जो लोग स्कूलोंसे निकलते हैं अुनकी बुद्धि बेशक कुछ तो विकसित होती है, परन्तु अुनके सामने अैसी बाधायें होती हैं जो दुनियामें और कहीं नहीं पाअी जातीं। लेकिन स्कूल और कालेजकी शिक्षाके दिनोंमें पैदा हुअे झूठी प्रतिष्ठाके विचारोंके कारण अिस मानसिक विकाससे भी वे कोअी लाभ नहीं अुठा पाते। अिस कारण विद्यार्थी समझते हैं कि वे कुर्सी-टेबल पर बैठकर ही अपनी

आजीविका कमा सकते हैं। अिसलिअे प्रश्नकर्ताको शरीर-श्रमका गौरव समझ लेना चाहिये और अुस क्षेत्रमें अपने और अपने परिवारके गुजारेका साधन ढूंढना चाहिये।

और फिर अुनकी स्त्रीको भी फालतू समयका सदुपयोग करके परिवारकी आय क्यों नही बढानी चाहिये? अिसी प्रकार यदि बच्चे भी कोअी काम करने योग्य हो, तो अुन्हे भी अुत्पादक कार्यमें लगाना चाहिये। बुद्धिका विकास किताबें पढनेसे ही हो सकता है, यह गलत खयाल है। अिसका स्थान अिस सत्यको दिया जाना चाहिये कि वैज्ञानिक ढगसे दस्तकारी सीखनेसे मस्तिष्कका जल्दीसे जल्दी विकास हो सकता है। मनका सच्चा विकास अुसी वक्तसे शुरू हो जाता है, जब सीखनेवालेको हर कदम पर यह बताया जाता है कि हाथ या औजारकी कोअी भी विशेष क्रिया क्यो की जानी चाहिये। विद्यार्थी अगर अपनेको साधारण मजदूरोंमें गिनने लगें, तो अुनकी बेकारीकी समस्या बिना किसी कठिनाअीके हल की जा सकती है।

हरिजन, ९-१-'३७

"मै लखनअू विश्वविद्यालयमें अेम० अे० (प्राचीन भारतीय अितिहास) का विद्यार्थी हूं। मेरी अुम्र लगभग २१ वर्षकी है। मुझे विद्यासे प्रेम है और अपने जीवनमें जितनी भी प्राप्त कर सकू अुतनी विद्या मैं प्राप्त कर लेना चाहता हूं। आपकी जीवन-सम्बन्धी विचारधारासे भी मुझे प्रेरणा मिलती है। लगभग अेक मासमें मैं अेम० अे० की अंतिम परीक्षा देकर अपनी शिक्षा समाप्त कर लूगा और प्रचलित अर्थमें जीवनमें प्रवेश करूंगा।

"पत्नीके अलावा, मेरे चार भाअी (सब मुझसे छोटे और अेक विवाहित), दो बहनें (दोनो बारह बरसकी), और माता-पिता है, जिनका भरण-पोषण मुझे करना होगा। आश्रयके लिअे कोअी पूंजी नही है। जमीन-जायदाद बहुत थोडी है।

"भाअी-बहनोंकी शिक्षाके लिअे मुझे क्या करना चाहिये? सबसे बडी बात तो यह है कि अन्न-वस्त्र कहांसे जुटाये जाय?

"मेरी शिक्षा नामधारी ढंगसे विलायती और खयाली हुअी है। मैं कभी-कभी आपके प्रिय रामबाण अुपाय, कताअीका विचार करता हू। परन्तु मैं नही जानता कि यह कैसे सीखू और खाते हुअे सूतका क्या करूं? आदि।"

अिस विद्यार्थीने जो कठिनाअियां बताअी है वे देखनेमें गभीर तो है, परन्तु अुसीकी पैदा की हुअी है। अुनके अुल्लेखमात्रसे यह स्पष्ट हो जाना चाहिये कि अुसकी स्थिति और हमारे देशकी शिक्षा-प्रणाली कितनी गलत है। अिस पद्धतिसे शिक्षा रुपया पैदा करनेकी निरी व्यापारिक वस्तु बन जाती है। मेरी दृष्टिमें शिक्षाका अिससे कही अुदात्त हेतु है। यह विद्यार्थी अपनेको देशके करोडो लोगोंमें से अेक समझे, तो अुसे पता चल जायगा कि अुसकी आयुके लाखो युवक-युवतियां अुन शर्तोंको पूरा नही कर सकते, जिन्हे वह अपनी डिग्रीके बल पर पूरा करनेकी आशा रखता है। अुन सबके भरण-पोषणके लिअे अुसे क्यो जिम्मेदार बनना चाहिये? जो बड़े हो गये हैं वे यदि स्वस्थ और मजबूत शरीरवाले है, तो अुन्हें अपने गुजारेके लिअे परिश्रम क्यों नही करना चाहिये? अेक ही मधुमक्खी पर — भले ही वह नर हो — बहुतसी आलसी मधुमक्खियोंका निर्भर रहना बेजा है।

अुसकी समस्याका अुपाय यह है कि वह बहुतसी सीखी हुअी चीजोंको भूल जाय। अुसे शिक्षण-सम्बन्धी अपने विचारोंको बदल देना चाहिये। जो महंगी शिक्षा अुसे मिली है, वही अुसकी बहनोंको न दी जाय। वे कुछ दस्तकारिया वैज्ञानिक ढंगसे सीखकर अपनी बुद्धिका विकास कर सकती है। जिस क्षण वे अैसा करेंगी अुसी क्षण अुनके शरीरके साथ-साथ मनका विकास भी हो जायगा। और यदि वे अपनेको मानव-जातिका शोषण करनेवाली नही, बल्कि सेवक समझना सीख लेंगी, तो अुनके हृदय अर्थात् आत्माका भी

विकास हो जायगा। और वे अपने भाअीके साथ आजीविका कमानेमें बराबरकी हिस्सेदार बन जायगी।

यह देखकर दया आती है कि यह विद्यार्थी अितना लाचार है। अुसे यह भी पता नही कि कताअीका पाठ कैसे और कहा सीखे। वह स्वतनअमें प्रयत्नपूर्वक तलाश करेगा तो अुसे पता लग जायगा कि वहां काफी युवक अैसे है, जो अुसे कताअी सिखा देंगे। परन्तु अुसे कताअी तक ही सीमित रहनेकी आवश्यकता नही, यद्यपि यह धंधा अितनी तेजीसे पूरे समयका होता जा रहा है कि अेक ग्रामवृत्तिके पुरुष या स्त्रीकी आजीविका अुससे चल सकती है। मेरे खयालसे मैंने यहा अितनी बातें बता दी है कि अब यह विद्यार्थी रही-सही बातें खुद समझ और कर लेगा।

हरिजन, १७–४–'३७

"अिस वर्ष मेरे तीसरे लड़केने, जिसकी अुम्र २१ वर्ष की है, जबरदस्त खर्चा करके ऑनर्सके साथ बी० अे० पास कर लिया है। वह सरकारी नौकरी नही करना चाहता। वह राष्ट्रीय सेवामें ही लगनेका अिच्छुक है। मेरे परिवारमें १२ आदमी हैं। अभी मुझे ५ और लडकोको शिक्षा देनी है। मेरे पास अेक जायदाद थी, जो २००० रुपयेका ॠण चुका देनेके लिअे बेच दी गअी है। अपने तीन लडकोको शिक्षा देनेमें मैंने अपनी सारी कमाअी खर्च कर दी है और यह सब अिस आशामें कि मेरा तीसरा लडका विश्वविद्यालयमें सर्वोच्च डिग्री प्राप्त कर लेगा और जो प्रतिष्ठा मैं लगभग खो चुका हू अुसे फिरसे बना लेगा। मैंने आशा की थी कि वह मेरे कुटुम्बका तमाम भार अुठा सकेगा। परन्तु अब तो मुझे लगभग अैसा मालूम होता है कि अपने परिवारको विनाशके लिअे छोड देना होगा। अेक ओर कर्तव्य और दूसरी ओर हेतुओके बीच सघर्ष है। मै चाहता हूं कि आप ध्यानपूर्वक विचार करके मुझे सलाह दें।"

यह अेक नमूनेका पत्र है। और अिस रवैयेके लगभग सार्वत्रिक होनेसे ही मैं वर्षों पहले मौजूदा शिक्षा-प्रणालीका विरोधी बन गया और मैंने अपने सब लड़कों और दूसरे बच्चोंकी शिक्षाका मार्ग बदल दिया। मेरी रायमें अुसका बढ़िया परिणाम निकला। पद और प्रतिष्ठाके पीछे दौड़नेमें अनेक परिवार बरबाद हो गये हैं और बहुतोंको प्रामाणिकताके रास्तेसे हट जाना पड़ा है। कौन नहीं जानता कि परिवारोंके पिताओंने अपने बच्चोंकी शिक्षाके लिअे रुपयेकी जरूरत होनेके कारण कैसी-कैसी बुरी बातें करना अपना कर्तव्य नहीं समझा है? मुझे पक्का विश्वास हो गया है कि यदि हम अपनी सारी शिक्षा-प्रणालीको नहीं बदलेंगे तो हमारे लिअे आगे और भी बुरे दिन आनेवाले हैं। हमने तो अभी तक बच्चोंके महासमुद्रका किनारा ही छुआ है, अुनकी विशाल संख्या अभी तक शिक्षासे वंचित है। अिसलिअे नहीं कि माता-पिता अुन्हें पढ़ाना नहीं चाहते, बल्कि अुनकी असमर्थता और अज्ञानके कारण। हमारे माता-पिताको बड़ी अुमरके अितने अधिक बच्चोंका पालन करना पड़े, अुन्हें अत्यन्त महंगी शिक्षा देनी पड़े और बदलेमें बच्चे तत्काल अुनके लिअे किसी रूपमें अुपयोगी न हो सकें, अिसमें खास करके हमारे जैसे गरीब राष्ट्रके लिअे कोअी बुनियादी गलती होनी चाहिये। मुझे अिसमें कुछ बेजा नहीं दिखाअी देता कि बच्चे अपनी शिक्षाके प्रारम्भसे ही कामके रूपमें अुसकी कीमत चुकायें। सारे भारतके लिअे जरूरी और सबके लिअे अनुकूल और सीधी दस्तकारी निःसन्देह कताअी और अुसके पहलेकी क्रियाअें ही हैं। यदि हम अिसे अपनी शिक्षा-संस्थाओंमें जारी कर दें, तो हमारे तीन मतलब पूरे हो सकते हैं. शिक्षा स्वावलम्बी हो जाती है, बच्चोंके मनकी तरह ही अुनके शरीर भी तालीम पाते हैं और विदेशी सूत और कपड़ेके सम्पूर्ण बहिष्कारका रास्ता साफ हो जाता है। अिसके सिवा, अिस तरह तैयार होनेवाले बच्चे स्वावलम्बी और स्वतंत्र बनेंगे। मैं पत्रलेखकको सुझाता हूं कि वह अपने सारे घरवालोंसे कहे कि वे कताअी या बुनाअी करके परिवारके पालनमें हाथ बटायें। मेरी योजनामें किसी अैसे बच्चेको शिक्षा पानेका हक न होगा, जो

सूतकी अेक न्यूनतम मात्रा कात कर न दे। अैसे परिवारोंको स्वाभिमान और स्वाधीनताकी अैसी प्रतिष्ठा प्राप्त होगी, जिसका पहले कभी सपनेमें भी खयाल नही किया गया होगा। अिस योजनामें सामान्य सांस्कृतिक शिक्षाका बहिष्कार नही है, बल्कि यह अुसे प्रत्येक लडके या लडकीके लिअे सुलभ बनाती है और साहित्यिक शिक्षाको अुसके मूल गौरवके स्थान पर पुनः स्थापित कर देती है। क्योंकि मेरी योजनामें साहित्यिक शिक्षा मुख्यतः तो मानसिक और नैतिक संस्कृतिका ही साधन बनती है; जीविकाका साधन तो वह गौण रूपमें ही बनती है।

यंग अिंडिया, १५–६–'२१

२४

रचनात्मक कार्यके कुछ रूप

लाहौरसे अेक पत्रलेखक पांडित्यपूर्ण हिन्दीमें अेक हृदयस्पर्शी पत्र लिखते हैं। अुसके मुख्य भाग ही मैं यहां देता हूं :

> "हिन्दू-मुसलमानोंके झगड़ों और कौंसिलोंके चुनावकी गरमागरम हलचलोंने असहयोगी विद्यार्थियोंका मन डावांडोल कर दिया है। अुन्होंने देशके लिअे बहुत त्याग किया है। अुसकी सेवा ही अुनका जीवनमंत्र है। अिस समय अुनकी नैयाका खेवनहार कोअी नहीं है। अुन्हें कौंसिलोंके लिअे अुत्साह नहीं हो सकता। हिन्दू-मुसलमानोंके झगड़ोंमें वे भाग नहीं लेना चाहते। अिसलिअे वे अुद्देश्यहीन बनकर अिससे भी बुरी दिशामें बहे जा रहे हैं। क्या अुन्हें अिस तरह बहने देना चाहिये? याद रखिये कि अन्तमें अिस परिणामके लिअे आप ही जिम्मेदार होंगे। क्योंकि नामको भले ही अुन्होंने कांग्रेसकी पुकार सुनी हो, परन्तु वास्तवमें अुन्होंने आपकी ही आज्ञा मानी है। क्या अब अुनका पथप्रदर्शन करना आपका काम नहीं है?"

आदमी पानी पीनेका हौज बना सकता है, परन्तु क्या वह पानी न पीना चाहनेवाले घोड़ेको वहां ले जा सकता है? मैं अिन भले नौजवानोंके साथ हमदर्दी रखता हूं, परन्तु अुनके गलत दिशामें बह जानेके लिअे अपनेको दोषी नहीं मान सकता। यदि अुन्होंने पहले मेरी पुकारको माना था, तो अब वैसा ही करनेसे अुन्हें कौन रोकता है? जो सुनना चाहते हों अुन्हें मैं निश्चित रूपमें कहता हूं

कि वे चरखेका सन्देश अपनायें। परन्तु असल बात यह है कि १९२० में अुन्होंने मेरी पुकार नहीं सुनी (और वह बहुत ठीक था), बल्कि कांग्रेसकी पुकार सुनी थी। शायद ज्यादा सही यह है कि अुन्होंने अपने ही अन्तःकरणकी आवाज सुनी थी। कांग्रेसकी पुकार अुनकी अपनी ही आकांक्षाओंकी गूंज थी। वे नकारात्मक भागके लिअे तैयार थे। चरखेकी पुकारका, जो कांग्रेसके कार्यक्रमका रचनात्मक भाग है — और यह याद रखना चाहिये कि वह अब भी कांग्रेसकी पुकार है — अब अुन पर कोअी असर नहीं होता दिखाअी देता। यदि अैसा है तो अेक और अत्यावश्यक कार्य भी है। वह भी कांग्रेसके रचनात्मक कार्यक्रमका ही अंग है। और वह है 'अछूतों' की सेवाका। अिस क्षेत्रमें भी अुन विद्यार्थियोंके लिअे, जो राष्ट्रीय सेवाके लिअे तड़प रहे हैं, काफीसे अधिक कार्य है। अुन्हें समझना चाहिये कि जो लोग सारे समाजका नैतिक स्तर अूंचा अुठाते हैं, जो लाखों बेकारोंके लिअे काम जुटाते हैं, वे सब स्वराज्यके सच्चे निर्माता हैं। वे खालिस राजनीतिक कार्यको भी आसान बना देंगे। अिस रचनात्मक कामसे विद्यार्थियोंके अुत्तम गुण प्रगट होंगे। यह स्नातकों और अुपस्नातकों दोनोंके लिअे अुपयुक्त काम है। यही स्नातककी सच्ची अुपाधि है।

परन्तु यह हो सकता है कि अुनके लिअे न चरखेका काम और न अस्पृश्यता-निवारणका काम ही काफी अुत्तेजक हो। तब अुन्हें जान लेना चाहिये कि मैं निकम्मा वैद्य हूं। मेरे पास नुस्खोंका भंडार सीमित ही है। मैं मानता हूं कि सब रोग अेक ही हैं और अिसलिअे अुनका अिलाज भी अेक ही है। परन्तु क्या किसी वैद्यको अुसकी मर्यादाओंके लिअे दोष देना चाहिये, खास तौर पर जब वह चिल्ला-चिल्लाकर अुनकी घोषणा करता है?

जिन विद्यार्थियोंकी तरफसे पत्रलेखकने लिखा है, अुनमें अितनी सूझबूझ अवश्य होनी चाहिये कि वे अपना जीवन-मार्ग स्वयं ढूंढ लें। स्वावलम्बन ही स्वराज्य है।

यंग अिंडिया, १६-९-'२६

अगर आपको अीश्वरमें सच्ची श्रद्धा हो, तो आपको अुसकी छोटीसे छोटी सृष्टिके लिअे भी सहानुभूति और प्रेम हुअे बिना नहीं रह सकता। और चरखा और खादी हो, अस्पृश्यता-निवारण हो, सम्पूर्ण मद्य-निषेध हो या बाल-विधवाओं और बाल-पत्नियों तथा अन्य अैसी अनेक बातों सम्बन्धी समाज-सुधार हो, आप देखेंगे कि अिन सारी प्रवृत्तियोंका अुद्गम अेक ही है। अिसलिअे मुझे यह देखकर खुशी हुअी कि आपको कताअी और अस्पृश्यता-निवारण आन्दोलन तथा दूसरी चीजोंके साथ, जिनमें मेरा तादात्म्य है, सहानुभूति है और आप अुन्हें पसन्द करते हैं। मुझे आपका यह आश्वासन स्वीकार है कि आयदा आप खादीके बारेमें पहलेसे अच्छा काम करेंगे।

सचमुच यह आपके लिअे दुनियामें सबसे आसान बात है कि आप सदाके लिअे अपना चुनाव कर लें और अपने दिलसे कह दें कि आप भविष्यमें खादीके अलावा कोअी कपड़ा काममें नहीं लेंगे, क्योंकि अिससे अुन लोगोंकी जेबमें कुछ पैसे जाते हैं, जिन्हें अुनकी सबसे ज्यादा जरूरत है। मैं समझता हूं कि अिस अेक ही संस्थामें आप लोग १४०० से अधिक संख्यामें हैं। जरा सोचिये तो कि १४०० आदमी केवल आध घंटा कताअी करके देशके धनमें कितनी ठोस वृद्धि कर सकते हैं? यह भी सोचिये कि १४०० व्यक्ति तथाकथित अछूतोंके लिअे कितना काम कर सकते हैं। और यदि ये सारे १४०० नौजवान शपथपूर्वक निश्चय कर लें, और वे कर सकते हैं, कि अुनका बाल-विवाहोंसे कोअी वास्ता नहीं होगा, तो कल्पना कीजिये कि आप अपने आसपासके समाजमें कितना बड़ा सुधार कर देंगे? यदि आपमें से १४०० या काफी संख्या अपना अिस्तवारका समय या रविवारका कुछ हिस्सा भी शराबके आदी बने हुअे लोगोंमें जाकर अत्यन्त प्रेम-पूर्वक अुनके हृदयोंमें प्रवेश करनेमें लगाये, तो कल्पना कीजिये कि आप अुनकी और देशकी कितनी सेवा करेंगे? ये तमाम बातें आप मौजूदा दोषपूर्ण शिक्षाके होते हुअे भी कर सकते हैं। और अिन बातोंको करनेके लिअे आपको बहुत प्रयत्नकी भी आवश्यकता नहीं। आपको केवल अपना हृदय-परिवर्तन कर लेना होगा और राजनीतिक

दुनियाका अेक चलता हुआ शब्द अिस्तेमाल करें तो अपना दृष्टिकोण बदलना पड़ेगा।

यंग अिंडिया, ८-९-'२०

कांग्रेसने स्वराज्यके बारेमें अेक प्रस्ताव पास किया है और मुझे कोअी सन्देह नहीं कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी और मुस्लिम लीग अपना फर्ज अदा करेंगी और कोअी ठोस सुझाव पेश करेंगी। परन्तु मैं यह तो साफ साफ स्वीकार करता हूं कि अिस बातमें मेरी दिलचस्पी अुतनी नहीं है कि वे क्या पेश कर सकेंगी, जितनी अिस बातमें है कि विद्यार्थी-जगत क्या करेगा या आम जनता क्या करने-वाली है। कागजी घोड़े चाहे कितने ही क्यों न दौड़ाये जायं, अुनसे हमें स्वराज्य हरगिज नहीं मिलेगा। कितने ही भाषण क्यों न दिये जायं, वे हमें स्वराज्यके योग्य नहीं बनायेंगे। हम अपने आचरणसे ही स्वराज्यके लायक बनेंगे (तालियां)। और हम अपना शासन कैसे कर रहे हैं? मैं आज प्रगट चिन्तन करना चाहता हूं। मैं भाषण नहीं देना चाहता और यदि आप यह देखें कि आज मैं मनमें कुछ भी छुपाकर रखे बिना बोल रहा हूं, तो सोचिये कि आप अेक अैसे आदमीके विचारोंमें हिस्सेदार बन रहे हैं, जो गुना-गुनाकर विचार करता है, और अगर आपका यह खयाल हो कि मैं शिष्टाचारकी मर्यादाओंका अुल्लंघन कर रहा हूं, तो अिसके लिअे आप मुझे क्षमा कर दें। मैं कल शामको विश्वनाथका मन्दिर देखने गया था और जब मैं अुन गलियोंमें होकर पैदल जा रहा था तब मुझे यही विचार आये थे। यदि कोअी अजनबी आदमी आकाशसे अिस महान मंदिर पर अुतर पड़े और वह यह विचार करे कि हिन्दुओंके नाते हम क्या हैं, तो क्या अुसका हमारी निन्दा करना अुचित नहीं होगा? क्या यह महान मन्दिर हमारे अपने ही चरित्रका प्रतिबिम्ब नहीं है? मैं हिन्दू होनेके नाते बहुत दुःखसे ये सब बातें कह रहा हूं। क्या यह ठीक है कि हमारे पवित्र मंदिरकी गलियां अितनी गंदी रहें जितनी वे हैं? आसपासके घर आड़े-टेढ़े, बेतरतीब बने हुअे हैं। गलियां

चक्करदार और तंग है। यदि हमारे मंदिर भी विशालता और स्वच्छताके नमूने न हों, तो हमारा स्वराज्य कैसा हो सकता है? क्या अंग्रेजोंके भारतसे हटते ही, भले ही वे बोरिया-बधना समेटकर अपनी खुशीसे चले जाय या मजबूर होकर जाय, हमारे मंदिर पवित्रता, स्वच्छता और शान्तिके धाम बन जायगे?

मैं काग्रेसके अध्यक्षके अिस विचारसे पूरी तरह सहमत हू कि स्वराज्यका विचार करनेसे पहले हमें काफी मेहनत करनी पड़ेगी। हर शहरमें दो विभाग होते हैं, छावनी और खास शहर। शहर ज्यादातर बदबूका घर होता है। परन्तु हम लोग शहरी जीवनके आदी नहीं हैं। फिर भी अगर हमें शहरी जीवनकी अिच्छा है, तो हम देहाती जीवनकी आरामतलबीकी नकल नहीं कर सकते। यह कहते हुअे दुख होता है कि बम्बअीके हिन्दुस्तानी भागकी गलियोंमें चलने-फिरनेवाले लोगोंको सदा यह डर बना रहता है कि कहीं अूचे मकानोंमें रहनेवाले लोग अुन पर थूक न दें। मैं काफी रेलयात्रा करता हू। यात्रामें तीसरे दर्जेके मुसाफिरोंकी कठिनाअी देखता हू। परन्तु अुनकी दुर्दशाकी सारी जिम्मेदारी रेलवेका प्रबन्ध करनेवाले लोगों पर नहीं है। हम स्वच्छताके प्रारम्भिक नियम भी नहीं जानते। हम गाडीके फर्श पर हर जगह थूक देते हैं और यह विचार नहीं करते कि फर्शको अक्सर सोनेके काममें लिया जाता है। हम यह सोचनेका कष्ट ही नहीं अुठाते कि हम अुसका कैसा दुरुपयोग करते हैं। नतीजा यह होता है कि डिब्बेमें भयकर गन्दगी फैल जाती है। तथाकथित अूचे दर्जेके यात्री अपनेसे कम भाग्यशाली भाअियों पर रोब गाठते हैं। मैंने विद्यार्थियोंको भी अुन पर रोब जमाते देखा है। कभी-कभी अुनका बरताव भी दूसरोंके साथ अिससे बेहतर नहीं होता। चूकि वे अंग्रेजी बोल सकते हैं और विलायती पोशाक पहने होते हैं, अिसलिअे वे यह दावा करते हैं कि जबरदस्ती डिब्बेमें घुसकर बैठनेकी जगह पाना अुनका हक है। मैंने अिन सब बातोंका गहराअीसे अध्ययन किया है। और चूकि आपने मुझे आपके सामने बोलनेका विशेष अधिकार दे रखा है, अिसलिअे मैं अपना दिल खोलकर आपके सामने रख रहा हू।

अवश्य ही हमें स्वराज्यकी ओर प्रगति करते हुअे अिन बातोंको सुधारना होगा।

अब मैं आपके सामने दूसरा दृश्य रखता हूं। श्रीमान महाराजा साहब हमारी कलकी चर्चाओंमें सभापतिके स्थान पर थे। अुन्होंने भारतकी दरिद्रताके बारेमें कहा था। दूसरे वक्ताओंने भी अुसी बात पर जोर दिया था। परन्तु अुस बड़े सभा-मंडपमें हमने क्या देखा, जहां वाअिसरॉय द्वारा शिलान्यासकी विधि पूरी की गअी थी? बेशक, वहां तड़क-भड़कका बोलबाला था, हीरे-जवाहिरातके आभूषणोंका प्रदर्शन ही था। पेरिससे आनेवाले बड़ेसे बड़े जौहरीकी भी आंखें अुसे देखकर चौंधियाये बिना नहीं रह सकती थीं। अुन रत्नालंकृत राजा-महाराजाओंकी तुलना मैं लाखों गरीबोंसे करता हूं, तो अिन लोगोंसे यह कहनेकी अिच्छा होती है कि, 'जब तक आप ये आभूषण अुतार नहीं देंगे और अिन्हें अपने देशवासियोंकी धरोहर समझकर अपने पास नहीं रखेंगे तब तक भारतका अुद्धार नहीं होगा।' (तालियां)। मुझे विश्वास है कि सम्राट् महोदय अथवा लार्ड हार्डिंज यह नहीं चाहते कि सम्राट्के प्रति सच्ची राजभक्ति दिखानेके लिअे हम लोग आभूषणोंकी पेटियां अुलट डालें और सिरसे पैर तक गहनोंसे सज-धजकर यहां आयें। मैं जानको जोखिममें डालकर भी आपको स्वयं सम्राट् जॉर्जसे यह सन्देश लानेका बीड़ा अुठा लूंगा कि वे आपसे अैसी कोअी आशा नहीं रखते। जब मैं सुनता हूं कि भारतके किसी बड़े शहरमें — फिर वह ब्रिटिश भारतमें हो या हमारे महान राजाओं द्वारा शासित भारतमें हो — कोअी बड़ा महल खड़ा किया जा रहा है, तो मुझे तुरन्त ओर्ष्या होने लगती है और मैं कहता हूं, 'अरे, यह रुपया तो किसानोंकी गाढ़ी कमाअीका है।' हिन्दुस्तानमें ७५ फी सदीसे अधिक आबादी किसानोंकी है और मि० हिगिनबॉथमने कल रातको हमें अपनी मजेदार भाषामें बताया था कि ये लोग अैसे हैं, जो घासकी अेक पत्तीके स्थान पर दो अुगाते हैं। परन्तु यदि हम अुनके परिश्रमका लगभग सारा फल अुनसे छीन लें या दूसरोंको

छीन लेने दें, तो हममें स्वराज्यकी भावना है अैसा नहीं कहा जा सकता। हमारा अुद्धार किसानोंके द्वारा ही हो सकता है।

स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्ज ऑफ महात्मा गांधी

यदि आप अपने पड़ोसियोंके लिअे परिश्रम नहीं करेंगे, तो आप राजा महेन्द्रप्रतापके महान दानके पात्र सिद्ध नहीं होंगे। आपकी शिक्षा प्राणवान होगी तो वह चारों ओर अवश्य अपनी सुगंध फैलायेगी। आपको अपने समयका कुछ भाग अवश्य ही रोज आसपासके लोगोंकी सक्रिय सेवा करनेमें लगाना चाहिये। अिसलिअे आपको फावड़ा, झाड़ू और टोकरी लेनेको तैयार रहना चाहिये। आपको स्वेच्छासे अिस स्थानके मेहतर बन जाना चाहिये। आपकी शिक्षाका सबसे कीमती भाग यह होगा, न कि साहित्यिक निबंधोंकी रटाअी।

यंग अिंडिया, १४–२–'२९

विश्वविद्यालयके अेक छात्रने अपनी पढ़ाअीको हानि पहुंचाये बिना फालतू समयमें सेवा करनेकी अुत्सुकता प्रगट की थी। अुसे पत्र लिखते हुअे गांधीजीने ये विस्तृत सुझाव दिये।

"तुम देशसेवा अिस तरह कर सकते हो

(१) दरिद्रनारायणके खातिर रोज अेकसा और मजबूत सूत कातो, सूत काननेके समय, सूतके तार, वजन और नम्बरका हिसाब रखो और हर महीने मुझे अपने कामकी रिपोर्ट भेजो। काता हुआ सूत सावधानीसे जमा करके रखो और बादमें मेरे पास भेज दो।

(२) स्थानीय प्रमाणित भंडारकी ओरसे रोज कुछ खादी बेचो और अपनी रोजकी बिक्रीका ठीक-ठीक हिसाब रखो।

(३) कमसे कम अेक पैसा रोज बचाओ।

(४) जो रुपया जमा हो वह मेरे पास भेज दो। 'कमसे कम' विशेषणका गूढ़ार्थ समझ लेना चाहिये। वह यह है कि यदि अधिक बचत कर सको तो तुम्हें दरिद्रनारायणके कोषमें अधिक देना चाहिये।

जो सरकारी कोषसे तुम्हारी शिक्षा पर खर्च की जाती है। मेरे बढ़िया नौजवानो! क्या तुम्हें कभी यह भी सूझा है कि बाकीका रुपया कहांसे आता है? वह गरीबोंकी जेबसे आता है, अुडीसाके अुन जीवित नरकंकालोंके पाससे आता है, जिनकी आंखोंका तेज मर गया है, जिनके चेहरों पर निराशा छाओी रहती है, जिनके पेट सालमें ३६५ दिन भूखसे जलते रहते हैं और जो धनी गुजरातियों और मारवाड़ियोंके अपमानपूर्ण दान द्वारा अुनकी ओर फेंके गये मुट्ठीभर सड़े चावलों और चुटकी भर गन्दे नमक पर अपना गुजारा चलाते हैं। तुमने अपने अिन अभागे भाअियोंके लिअे क्या किया? अपनी बहनोंके पवित्र हाथोंसे तैयार की हुआी हाथकते सूतकी खादी पहननेके बजाय, जिससे अुनकी कमाअीमें और पैसे जुड़ जाते हैं, तुम विदेशी माल खरीदते हो, और अिस तरह हर साल देशसे साठ करोड़ रुपया बाहर भेज देने और भारतके गरीबोंके मुंहका कौर छीन लेनेमें सहायक होते हो। नतीजा यह होता है कि देशका कचूमर निकल रहा है। हमारा व्यापार हमारे देशको सम्पन्न बनानेके बदले हमारे शोषणका साधन बन गया है और हमारे व्यापारी वर्गकी स्थिति लंकाशायर और मैनचेस्टरके कमीशन अेजेंटोंकी हो गअी है। अुन्हें अुस व्यापारके लाभमें से, जिससे हमारे बड़े-बड़े शहरोंकी सारी दिखावटी शान खड़ी हुआी है, मुश्किलसे पांच फी सदी हिस्सा मिलता है।" गांधीजीने आगे चलकर कहा, "किसी अैतिहासिक अवसर पर लॉर्ड सैलिसबरीने कहा था कि चूंकि भारतका खून निकालना है, अिसलिअे नश्तर अुन भागोंमें लगाना चाहिये जहां खून जमा हुआ है। और यदि लॉर्ड सैलिसबरीके जमानेमें आमदनी खून निकालनेकी क्रियासे करनी पड़ती थी, तो आजकल यह स्थिति कितनी अधिक बढ़ गअी होगी, जब कि भारत अिन तमाम वर्षोंके शोषणके परिणामस्वरूप और भी गरीब हो गया है? तुम्हें यह नहीं भूलना चाहिये कि अिसी आमदनीमें से, जो भारतके गरीबोंका जीवनरक्त चूसनेसे होती है, तुम्हारी शिक्षाका खर्च चलाया जाता है। और क्या तुमने यह भी समझ लिया है कि तुम्हें जो शिक्षा मिलती है वह तुम्हारे देशवासियोंको

(५) दूसरे विद्यार्थियोंको साथ लेकर हरिजन मुहल्लोंमें जाओ, और अपने साथियो सहित अुन मुहल्लोंको साफ करो, अुनके बच्चोंसे दोस्ती करो और अुन्हे सफाअी, स्वास्थ्य-विज्ञान आदिकी अुपयोगी शिक्षा दो।

अिस सब कामके बाद कुछ और समय बचा सको तो पढाअी खत्म करनेके बाद देहातकी सेवा करनेके लिअे अेकाध ग्राम-अुद्योग सीख लो। अभी अितना करो। अितने पर भी पढ़ाअीके बाद काम करनेके लिअे समय और महत्त्वाकाक्षा हो तो मुझसे पूछ लेना। मैं तुम्हे और अधिक सूचनायें लिख भेजूगा।

हरिजन, १९–१०–'३५

प्र० — मेरे पिताजी साअुथ अिडिया रेलवेमें मुलाजिम हैं। अुनके चार बच्चे हैं। सब मुझसे छोटे हैं। वे चाहते है कि मैं अप्रेन्टिस (अुम्मीदवार) का कोर्स ले लू। अगर मैं भावी सविनय-भंगकी लडाअीमें भाग लेता हूं, तो वे बरखास्त किये जा सकते है और परिवारको भूखों मरना पड़ सकता है। वे कहते हैं कि मैं रचनात्मक कार्यमें भाग लेकर भी राष्ट्रकी सेवा कर सकता हू। आपकी क्या सलाह है?

अु० — तुम्हारे पिताजीका कहना ठीक है। अगर तुम अपने घरमें अकेले कमानेवाले हो, तो तुम सविनय-भगमें भाग लेनेके लिअे परिवारको अुसके भाग्य पर नही छोड सकते। अगर तुम रचनात्मक कार्यक्रममें अुत्साहपूर्वक भाग लोगे, तो सत्याग्रहियोंके बराबर ही नि.सन्देह राष्ट्रकी कारगर सेवा करोगे।

हरिजन, ६–४–'४०

विद्यार्थियों द्वारा विदेशोंकी छोडी हुअी चीजोंको अपनाने और फिजूलखर्चीका जीवन बितानेका जिक्र करते हुअे गाधीजीने कहा, "अर्थशास्त्रके विद्यार्थियोंके नाते तुम्हें जानना चाहिये कि तुम जो फीस देते हो वह अुस बड़ी रकमका छोटासा हिस्सा भी नही है,

जो सरकारी कोषसे तुम्हारी शिक्षा पर खर्च की जाती है। मेरे बढ़िया नौजवानो! क्या तुम्हें कभी यह भी सूझा है कि बाकीका रुपया कहांसे आता है? वह गरीबोंकी जेबसे आता है, अुडीसाके अुन जीवित नर-कंकालोंके पाससे आता है, जिनकी आंखोंका तेज मर गया है, जिनके चेहरों पर निराशा छाओ रहती है, जिनके पेट सालमें ३६५ दिन भूखसे जलते रहते हैं और जो धनी गुजरातियों और मारवाड़ियोंके अपमानपूर्ण दान द्वारा अुनकी ओर फेंके गये मुट्ठीभर सड़े चावलों और चुटकी भर गन्दे नमक पर अपना गुजारा चलाते हैं। तुमने अपने अिन अभागे भाअियोंके लिअे क्या किया? अपनी बहनोंके पवित्र हाथोंसे तैयार की हुअी हाथकते सूतकी खादी पहननेके बजाय, जिससे अुनकी कमाअीमें और पैसे जुड़ जाते हैं, तुम विदेशी माल खरीदते हो, और अिस तरह हर साल देशसे साठ करोड़ रुपया बाहर भेज देने और भारतके गरीबोंके मुंहका कौर छीन लेनेमें सहायक होते हो। नतीजा यह होता है कि देशका कचूमर निकल रहा है। हमारा व्यापार हमारे देशको सम्पन्न बनानेके बदले हमारे शोषणका साधन बन गया है और हमारे व्यापारी वर्गकी स्थिति लंकाशायर और मैनचेस्टरके कमीशन अेजेंटोंकी हो गअी है। अुन्हें अुस व्यापारके लाभमें से, जिससे हमारे बड़े-बड़े शहरोंकी सारी दिखावटी शान खड़ी हुअी है, मुश्किलसे पांच फी सदी हिस्सा मिलता है।" गांधीजीने आगे चलकर कहा, "किसी अैतिहासिक अवसर पर लॉर्ड सैलिसबरीने कहा था कि चूंकि भारतका खून निकालना है, अिसलिअे नश्तर अुन भागोंमें लगाना चाहिये जहां खून जमा हुआ है। और यदि लॉर्ड सैलिसबरीके जमानेमें आमदनी खून निकालनेकी क्रियासे करनी पड़ती थी, तो आजकल यह स्थिति कितनी अधिक बढ़ गअी होगी जब कि भारत अिन तमाम वर्षोंके शोषणके परिणामस्वरूप और भी गरीब हो गया है? तुम्हें यह नहीं भूलना चाहिये कि अैसी आमदनी से, जो भारतके गरीबोंका जीवनरक्त चूसनेसे होती है, तुम्हारी शिक्षाका खर्च चलाया जाता है। और क्या तुमने यह भी समझ लिया है कि तुम्हें जो शिक्षा मिलती है वह तुम्हारे देशवासियों

पतित बनाकर मिलती है, क्योंकि अुस पर खर्च किया जानेवाला रुपया शराबकी बदनाम आमदनीसे आता है? अिसलिअे तुम्हें भगवानके न्यायासनके सामने अिस भयंकर प्रश्नका अुत्तर देना पड़ेगा कि तुमने अपने भाअियोंके साथ क्या किया? मैं तुमसे पूछता हूं कि अुस समय तुम अिस प्रश्नका क्या जवाब दोगे?"

यंग अिंडिया, १४-९-'२९

२५

कताओ और खादी

मैं स्वराज्यकी दृष्टिसे ही राष्ट्रीय शिक्षाका विचार कर सकता हूं। अिसलिअे मैं चाहूंगा कि कालेजके विद्यार्थी भी कताओकी कला और अुससे सम्बन्ध रखनेवाली सब बातोंका सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करनेमें अपना सारा ध्यान लगायें। मैं चाहूंगा कि वे खादीके अर्थशास्त्र और गुढार्थोंका अध्ययन करें। अुनको जानना चाहिये कि अेक मिलको खड़ा करनेमें कितना समय लगता है और कितनी पूंजीकी जरूरत होती है। अुन्हें जानना चाहिये कि मिलोंका अनिश्चित विस्तार होनेकी सम्भावना पर कितनी मर्यादायें लगी हुआी हैं। अुन्हें यह भी जानना चाहिये कि मिलोंके जरिये और हाथ-कताओ तथा हाथ-बुनाओके जरिये धन-वितरण करनेका क्या तरीका है। अुन्हें मालूम होना चाहिये कि हाथ-कताओ और हाथ-बुनाओकी कला और भारतीय वस्त्रोद्योग किस तरह नष्ट किये गये थे।

अुन्हें समझना चाहिये और अिस बातका प्रत्यक्ष प्रमाण दे सकना चाहिये कि भारतके लाखों किसानोंकी झोपडियोंमें हाथ-कताओके अपनानेका क्या असर होगा। अुन्हें जानना चाहिये कि अिस गृह-अुद्योगके पूरे पुनरुद्धारसे किस प्रकार हिन्दू और मुसलमानोंके टूटे हुअे दिल फिरसे अेक हो जायंगे। परन्तु आज ये विचार या तो समयसे

पीछे है या आगे। वे आगे हों या पीछे, मुझे अिसकी बहुत परवाह नहीं है। मैं अितना जानता हूं कि किसी न किसी दिन सारा शिक्षित भारत अिसे अपनायेगा।

यंग अिंडिया, ११-१२-'२४

मैं हर अवसर पर, हर घड़ी, चरखेका सन्देश सुनानेमें नहीं थकता। क्योंकि यह अितना निर्दोष होते हुअे भी भलाओकी बहुत बड़ी शक्ति रखता है। यह स्वादिष्ट भले न हो, परन्तु किसी स्वास्थ्यप्रद भोजनमें तन्दुरुस्तीको भारी नुकसान पहुंचानेवाले मसालेदार भोजनका जायका कभी नहीं होता। और अिसीलिअे गीताने अेक स्मरणीय श्लोकमें सभी विचारशील लोगोंसे अैसे पदार्थ ग्रहण करनेका कहा है, जिनका स्वाद शुरूमें कड़ुआ होता है, परन्तु जो अन्तमें अमरत्व प्रदान करनेवाले होते हैं। आज अैसी चीज यह चरखा और अुससे पैदा हुआी वस्तु है। कातनेसे बड़ा और कोओी यज्ञ नहीं है। यह दुःखित आत्माको शांति प्रदान करता है, विद्यार्थियोंके बेचैन मनको तसल्ली देता है और अुनके जीवनको आध्यात्मिक बनाता है। मेरे पास तात्कालिक परिणाम ढूंढ़नेवाले आजके व्यावहारिक युगमें भारतके लिअे अिससे अच्छा और कोओी नुसखा नहीं है। गायत्री मैं खुशीसे देशके सामने रख सकता हूं, लेकिन अुसके बारेमें मैं तात्कालिक परिणामका वचन नहीं दे सकता। लेकिन चरखा अैसी चीज है। अुसे आप ओीश्वरका नाम लेकर ग्रहण कर सकते हैं और तात्कालिक फलकी आशा रख सकते हैं। अेक अंग्रेज मित्रने लिखा कि अुनकी अंग्रेज बुद्धि अुनसे कहती है कि कातना अेक अच्छा शौक है। मैंने अुनसे कहा, "आपके लिअे वह शौककी चीज हो सकता है, पर हमारे लिअे वह कल्पवृक्ष है।"

अिसलिअे मुझे आपके सामने चरखा रखते हुअे खुशी होती है — आप चाहे तो अुसे शौक ही समझें — ताकि अुससे आपके जीवनमें अुत्साह और सुगन्ध पैदा हो, आपको शान्ति और आनन्द प्राप्त हो। अिससे आपको ब्रह्मचर्यका जीवन बितानेमें सहायता

मिल सकती, त्याग करनेकी शिक्षा दी जानी चाहिये। तब कताओका महत्व अुनकी समझमें आयेगा। तब अुनकी श्रद्धा किसी भी आघातको, जिसमें मेरे बारेमें भ्रम-निवारणकी बात भी शामिल है, अच्छी तरह सह सकेगी। चरखेका ध्येय अितना बड़ा और अितना अच्छा है कि अुसका आधार केवल वीर-पूजा पर नहीं हो सकता। वह वैज्ञानिक पद्धतिकी आर्थिक परीक्षामें भी पास हो सकता है।

मुझे ज्ञात है कि हम लोगोंमें, जैसा अिस पत्रलेखकने वर्णन किया है, अंधी वीर-पूजा बहुत प्रचलित है। मुझे आशा है कि राष्ट्रीय पाठशालाओंके शिक्षक मेरी दी हुआी चेतावनी पर ध्यान देंगे और अपने शिष्योंको बड़े आदमीकी बातों पर, अुनकी जांच किये बिना, आलस्यपूर्वक अपने कामोंका दारमदार रखनेसे रोकेंगे।

यंग अिंडिया, २४-६-'२६

१८ वर्षसे कम अुम्रके नौजवान मित्रोंके बार-बार चरखा संघके सदस्य बननेका अनुरोध करनेके कारण संघने पिछली बैठकमें अेक प्रस्ताव पास किया है, जिसमें १८ वर्षसे कम अुम्रके अैसे लड़के-लड़कियोंको, जो आदतन् खादी पहननेवाले हैं, अपना ही काता हुआ १००० गज सूत प्रति मास भेजने पर सदस्य बननेकी अिजाजत दे दी है। अिसके पीछे विचार यह है कि लड़के-लड़कियोंको नियमितता सीखनेके लिअे प्रोत्साहन दिया जाय और अुनके तथा देशके गरीबसे गरीब लोगोंके बीच अेक नैतिक सम्बन्ध कायम किया जाय। और यह अमूल्य लाभ बनाओकी कलासे आंखों और अुंगलियोंको तालीम मिलनेके अलावा प्राप्त होता है।

जो युवक-युवतियां सदस्य बनना चाहते हों, अुनसे आशा रखी जायगी कि वे रोज कमसे कम आध घंटा कातें; अगर वे अिस कामके लिअे कोअी आधे घंटेका समय अलग रख देंगे, तो अुन्हें मालूम हो जायगा कि अिससे अुनकी दूसरी सारी पढ़ाओी और काममें, जो वे हाथमें लेंगे, नियमितता आ जायगी। अुनसे यह आशा रखी जायगी कि वे अपने चरखोंको बिलकुल ठीक हालतमें रखेंगे, अुनकी मरम्मत

होता है, परन्तु वही खतम नहीं हो जाता। चरखा अुस सेवाका केन्द्र है। अगर तुम अपनी अगली छुट्टिया दूरके किसी भीतरी गावमें बिताओ तो तुम्हें मेरी बातकी सचाओी मालूम हो जायगी। तुम वहा लोगोंको अुदास और भयग्रस्त पाओगे। अुनके घर टूटी-फूटी हालतमें होंगे। वहा तुम्हें सफाओीका नाम भी नहीं मिलेगा। वहाके पशुओंकी हालत बहुत ही बुरी होगी और फिर भी वहा आलस्यका साम्राज्य फैला होगा। लोग तुमसे कहेंगे कि बहुत समय पहले चरखा अनके घरोंमें था। परन्तु आज चरखे या किसी और गृह-अुद्योगमें अुनकी थोड़ी दिलचस्पी नहीं होगी।

अुनमें घोर निराशा छाओी रहती है। वे जिन्दा अिसलिअे हैं कि वे चाहने पर भी मर नहीं सकते। वे तभी कातेंगे जब तुम कातोगे। अगर किसी गावकी तीन सौकी आबादीमें से सौ भी कातने लगें, तो तुम अुन्हें अठारह सौ रुपयेकी अतिरिक्त वार्षिक आयका विश्वास दिला सकते हो। अिस आमदनीके आधार पर तुम प्रत्येक गावमें ठोस सुधारकी बुनियाद डाल सकते हो। मैं जानता हू कि यह कहना आसान है, किन्तु करना कठिन है। लेकिन श्रद्धासे वह भी आसान हो सकता है। मैं अकेला हू, सात लाख गावोंमें कैसे पहुच सकता हू? अहंकार हमारे कानोंमें चुपकेसे यही दलील देता है। तुम अिस श्रद्धाके साथ कार्य आरम्भ करो कि यदि तुमने किसी अेक गावमें अपनेको जमा लिया और सफलता प्राप्त कर ली, तो बाकीके गाव तुम्हारा अनुकरण करेंगे। फिर तो प्रगति निश्चित है।

यंग अिंडिया, १७–६–’२६

चूकि मुझे चरखेमें अीश्वरका हाथ काम करता दिखाओी देता है, और चूंकि चरखेमें मुझे छोटेसे छोटे मनुष्यकी आवश्यकताओंकी पूर्ति दिखाओी देती है, अिसीलिअे मैं समय-असमय अुसके बारेमें विचार करता हू, अुस पर काम करता हू, अुसके बारेमें प्रार्थना करता हूं और अुसके बारेमें बात करता हूं। यदि कोओी दूसरी चीज अैसी हो, जो हमें ससारके भूखों मरनेवाले लोगोंके अधिक नजदीक लाती हो — फिलहाल

भारतको छोड़ दें — जो आपको तुरन्त भंगीकी बराबरीमें रख देती हो, तो मैं चरखेको छोड़ दूंगा और अुस चीजको गले लगा लूंगा।

यिथ गांधीजी अिन सीलोन, पृ० १३३

मैं चाहता हूं कि आप गरीबोंके लिअे थोड़ासा यज्ञ करके अुन्हें जरासा बदला दे दीजिये, क्योंकि गीता कहती है कि जो यज्ञ किये बिना खाता है, वह चोरी करता है। लड़ाअीके दिनोंमें ब्रिटेनके नागरिकोंसे अिस यज्ञकी मांग की गअी थी कि हरअेक घर अपने आंगनमें आलू अुगाये और हर परिवार थोड़ासा मामूली सिलाअीका काम करे। हमारे समयका और हमारे लिअे चरखा ही यज्ञ है।

यंग अिंडिया, २०-१-'२७

सांस्कृतिक शिक्षा और गरीबसे गरीबके साथ अेकरूप होनेके प्रतीकके रूपमें, जहां तक मैं जानता हूं, हाथ-कताअीके समान दूसरी कोअी अुदात्त वस्तु नहीं है। सीधी-सादी होनेके कारण यह आसानीसे सीखी जा सकती है। जब आप हाथ-कताअीके साथ-साथ अिस विचारको भी मिला देते हैं कि आप अुसे अपने ही लिअे नहीं परन्तु राष्ट्रके गरीबोंके लिअे सीख रहे हैं, तो वह अेक अुदात्त धार्मिक विधि बन जाती है।

यिथ गांधीजी अिन सीलोन, पृ० १०८

मेरे बच्चो, मुझे यह देखकर दुःख हुआ कि तुम अपनी सादी आदतें भूलते जा रहे हो और अपने भाअियोंकी खातिर अपना जेब खर्च देनेको तैयार नहीं हो। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि मेरे पिताजी मुझे कोअी जेबखर्च नहीं देते थे और भारतके अन्य किसी भागमें मध्यम श्रेणीके लड़कोंके साथ तुम्हारे जैसा बरताव नहीं किया जाता। परन्तु राज्य तुम्हें मकान, भोजन और शिक्षा अिसलिअे नहीं देता कि तुम आलस्य सीखो और सादगी तथा स्वावलम्बनको भूल जाओ। तुमको अपने कपड़े आप धोना, अपना खाना आप बनाना और अपना सारा काम अपने हाथों करना सीखना चाहिये। और

र बात कहूं? जब मैं तुम्हारी तरफ देखता हूं तो मुझे अैसा लगता
. तुम सब विदेशी हो। क्या तुम मुझे अिसका कारण बता सकते
? [अुनमें से 'अुत्तम' विद्यार्थीने तुरन्त अुत्तर दिया — "क्योंकि
म विलायती कपड़े पहने हुअे हैं।"] बिलकुल ठीक। लेकिन अिसका
भी कारण नहीं कि तुम सब खादी क्यों न पहनो। मैं तुमसे कहता
कि अिस समय तुमने जैसी टोपियां पहन रखी हैं, अुनसे बढ़ी
टोपिया मैं चौथाअी कीमतमें दे सकता हूं। अिस बातसे कि
तुम्हारे बड़े या शिक्षक लोग खादी नहीं पहनते, तुम्हारे खादी पहननेमें
कोअी बाधा नहीं होनी चाहिये। चूंकि तुम्हारे माता-पिता या दूसरे
अादि बर्जुर्ग लोग शराब पीते हैं, गोमास या मुर्दार मासका सेवन
करते हैं, अिसीलिअे तुम अैसा मत करो। अिसके विपरीत तुम ये
सब चीजें छोड़ देना और यह आग्रह करना कि तुम्हारे सुपरिन्टे-
डेन्ट तुम्हें खादीके कपड़े दें। तुम अुनसे कहना कि यदि खादीके कपड़े
महंगे हैं तो हम अपने कपड़ोंकी मात्रा खुशीसे कम कर देंगे। तुम्हें
जानना चाहिये कि देशमें अैसे लाखों बच्चे हैं, जिन्हें तुम्हारे जैसी
शिक्षा नहीं मिलती, जिन्हें न केवल तुम्हारे जैसा जेबखर्च नहीं
मिलता, बल्कि अितना भोजन भी नहीं मिलता जितना तुम्हारे जेब-
खर्चसे खरीदा जा सके। मैं चाहता हूं कि तुम अुनकी खातिर खादी
पहनो और कातना सीखो।

यंग अिंडिया, १४-७-'२७

साधारण रास्ते चलते आदमीकी अपेक्षा मुझे तुमसे कहीं ज्यादा
आशायें हैं। जो थोड़ासा तुमने दिया है अुससे सन्तोष करके यह न
कहो कि, 'हमसे जो बन पड़ा हमने कर दिया। अब चलो टेनिस
और बिलियर्ड खेलें।' मैं कहता हूं कि बिलियर्डके कमरे और टेनिसके
मैदानमें अुस महान अुणका विचार करो, जो दिन-दिन तुम्हारे सिर
चढ़ रहा है।

जो कपड़ा तुम्हारे लिअे गरीब स्त्रियां बनाती हैं अुसे पहननेसे
मत डरो; अगर तुम्हारे खादी पहननेसे तुम्हारे मालिक तुम्हें नौकरीसे

अलग कर दें तो भी मत डरो। मैं चाहता हूं कि तुम बहादुर बनो और अपने विश्वासों पर दृढ़ रहकर संसारके सामने खड़े रहो। धनकी खोजमें तुम करोड़ो बेजबानोंके लिअे अपने अुत्साहको दबने न दो। मैं कहता हूं कि तुम कहीं बड़ा बेतारका यंत्र तैयार कर सकते हो, जिसके लिअे किसी बाहरी खोजकी नहीं परन्तु भीतरी खोजकी आवश्यकता है — और सारी खोज बेकार है यदि अुसका भीतरी खोजसे मेल नहीं बैठता — जो देशके करोड़ों लोगोंके हृदयोंके साथ तुम्हारे हृदयोंको जोड सकती है। जब तक तुम्हारे सारे आविष्कारोंका अुद्देश्य गरीबोंकी भलाअी नहीं होगा, तब तक सचमुच तुम्हारे तमाम कारखाने शैतानके कारखानोंसे बेहतर नहीं होंगे।

यंग अिंडिया, २१–७–'२७

चरखेमें शाब्दिक श्रद्धा प्रगट कर देने और कृपा करके कुछ रुपये मेरे सामने फेंक देनेसे स्वराज्य निकट नहीं आ जायगा और लाखों कड़ी मेहनत करने और भूखों मरनेवालोंकी सतत बढ़नेवाली दरिद्रताकी समस्या हल नहीं हो जायगी। मैं अपने बयानको सुधार लेना चाहता हूं। मैंने लाखों कड़ी मेहनत करनेवाले कहा है। क्या ही अच्छा होता यदि यह वर्णन सही होता। दुर्भाग्यवश, चूंकि हमने पोशाकके बारेमें अपनी रुचियोंमें परिवर्तन नहीं किया है, अिसलिअे हमने अिन लाखों भूखों मरनेवालोंके लिअे बारहो महीने मेहनत करना असंभव बना दिया है। हमने अुन पर जबरन् सालमें चार मासकी छुट्टी लाद दी है, जिसकी अुन्हें जरूरत नहीं है। यह मेरी कल्पनासे निकली हुअी वस्तु नहीं है, परन्तु अैसी सचाअी है जिसे अनेक अंग्रेज शासकोंने भी दोहराया है। अिस विषयमें आम जनतामें घूमनेवाले अपने ही देशवासियोंकी गवाहीको तुम न मानो, तो अुस पर तो तुम्हें विश्वास करना चाहिये। हां, तो मैं यदि यह थैली ले जाकर भूखों मरनेवाली बहनोंको बांट दूं, तो अुससे प्रश्न हल नहीं होता। अिसके विपरीत अुनकी आत्माका हनन होगा। वे भिखमंगी बन जायंगी और दान पर जीनेकी आदी हो जायंगी। जो पुरुष, स्त्री, या राष्ट्र दान

पर गुजर करना सीख लेता है, अुसका भगवान् ही मालिक है। तुम्हे और मुझे तो यह चाहिये कि हमारी अिन बहनोंके लिअे अैसा काम जुटायें, जिसे वे अपने ही घरोंमें सुरक्षित रहकर कर सकें; और तुम अुन्हें यही अेक काम दे सकते हो। यह गौरवपूर्ण और प्रामाणिक काम है और काफी अच्छा काम है। अेक आनेकी तुम्हारे लिअे भले ही कोअी कीमत न हो। तुम ट्रामगाडीमें बैठकर आलस्यपूर्वक समय बिता देनेमें अेक आना खर्च कर डालोगे और दो-चार मील पैदल चलकर व्यायाम नहीं करोगे। लेकिन जब वह किसी गरीब बहनकी जेबमें चला जाता है, तो वह सोनेके फल देता है। वह अिसके लिअे परिश्रम करती है और अपने पवित्र हाथोंसे काता हुआ सुन्दर सूत मुझे देती है — अैसा सूत जिसके पीछे अेक अितिहास है। यह सूत राजा-महाराजाओंके लिअे वस्त्र बुननेके योग्य है। किसी मिलकी बनी छींटके कपड़ेके पीछे अैसा कोअी अितिहास नहीं होता। यद्यपि यह विषय मेरे लिअे महान है, और मैं दिनरात अिसीमें डूबा रहता हूं, परन्तु अिसके लिअे मैं तुम्हारा समय नहीं लूंगा। सम्भव है तुमने पहलेसे ही यह निश्चय न किया हो, परन्तु यदि अब भी तुम्हारा यह संकल्प न हो कि भविष्यमें तुम खादीके सिवा और कुछ नहीं पहनोगे, तो तुम्हारी यह थैली मेरे लिअे सहायताके बजाय बाधा हो जायगी।

मुझे यह मान लेनेके भ्रममें नहीं फसना चाहिये कि चूंकि तुम मुझे थैली दे रहे हो और मेरी बातों पर तालियां बजाते हो, अिसलिअे खादीके सन्देशमें तुम्हारा विश्वास है। मैं चाहता हूं कि तुम अपने वचन पर अमल करो। मैं नहीं चाहता कि तुम्हारे लिअे — जो भारतकी नाक हो — यह कहा जाय कि तुमने मुझे यह रकम धोखा देनेको ही दिया, तुम खादी पहनना नहीं चाहते और तुम्हारा श्रममें विश्वास नहीं है। अुस भविष्यवाणीको चरितार्थ मत करना, जो तामिलनाडके अेक प्रसिद्ध सपूत और मेरे मित्रने की थी। अुन्होंने कहा था कि जब मैं मरूंगा तब मेरी लाशको जलानेके लिअे और किसी अीधनकी जरूरत नहीं होगी; मैं जो चरखे अिस समय बांट रहा हूं, वे ही जला करके मेरी चिता पर जलाये जायंगे। अुनका

.मुग करता हूँ कि हममें से छोटेंसे छोटे आदमीके
मैं भुगो नहीं हो सकता। मैं अिसी अर्थमें
चरखेको अपने अध्ययनका केन्द्र बनाओ। जैसे
म दिखाओ देते थे और तुलसीदासको कृष्णकी मूर्तिमें
जी देते थे, ठीक अिसी तरह तुम्हारी सारी विद्या
नानेमें लगनी चाहिये। हमारे विज्ञान, हमारी बढ़औ-
ास्त्र — सबका अुपयोग चरखेको हमारे गरीबसे गरीब
न और मुख्य सहारा बनानेमें होना चाहिये।

१०-२-'२७

ागेमें मैंने अकसर यह बताया है कि जब तक वह
साथ भंडारकी व्यवस्थाका थोड़ा खर्च जोड़कर बेची
क वह किसी भी मूल्यमें सस्ती है। यह ध्यानमें रहे
जीवनके ७ वर्षोमें ५० फीसदी सस्ती हो गओ है।
आश्रय दिया जाय तो वह और भी सस्ती हो जायगी।
ड़कोंको स्वावलम्बी बनना क्यों न सिखाया जाय?
अुन्हें यह आशा रखना क्यों सिखाया जाय कि खादी
सस्ती मिले और अुनसे भी ज्यादा गरीब लोग अुन्हें दान
ार लड़कियोंको फालतू समयमें अपना सूत आप कात लेना
ये। मैंने रोज कमसे कम आध घंटा कताओ करनेकी
है। वे अुस सूतको बुन भी सकते हैं, यदि अैसा
हो, जैसा कि हो सकता है, तो वे सूतको चरखा-संघके
धिके पास भेजकर अुतने ही तौलकी और अुसी नंबरके
ले सकते हैं। अुन्हें सिर्फ बुनाओका खर्च देना पड़ेगा।
ाया, १४-३-'२९

ात जितने स्पष्ट शब्दोंमें कही जाय या अिस पर जितना
जाय अुतना थोड़ा है कि कताओ, धुनाओ और दूसरी
जानकारीमें ही सच्ची खादी-विद्या नहीं आ जाती। अुसे

चरखेमें विश्वास नहीं है और अुनका खयाल है कि जो चरखेका नाम लेते हैं, वे केवल मेरे प्रति आदर होनेके कारण अैसा करते हैं। यह अेक प्रामाणिक मत है। खादी-आन्दोलनका यही हश्र हुआ तो यह अेक बड़ी राष्ट्रीय आपत्ति होगी और तुम अुस आपत्तिके लिअे जिम्मेदार और अुस अपराधमें हिस्सेदार होगे। यह राष्ट्रीय आत्महत्या होगी। यदि तुम्हें चरखेमें सजीव श्रद्धा न हो तो अुसे अस्वीकार कर दो। यह तुम्हारे प्रेमका सच्चा प्रदर्शन होगा, तुम मेरी आखें खोल दोगे और मैं अपना रास्ता नापूगा और गला फाड़कर चिल्लाता फिरूगा, "तुमने चरखेको अस्वीकार करके दरिद्रनारायणको ठुकरा दिया है।" लेकिन यदि अिस मामलेमें कोअी भ्रम या धोखा-धड़ी हो तो मुझे और अपने-आपको अुस पीड़ा, अध पतन और अपमानसे बचा लो, जो हमारे भाग्यमें बदा है।

यंग अिंडिया, १५-९-'२७

चरखेको तुम किसी कोनेमें न डाल देना। चरखा हमारी प्रवृत्तियोंके सौरमंडलका सूर्य है।

अिसमें मेरे समझनेकी भूल हो सकती है। परन्तु जब तक मुझे अुस भूलका विश्वास न हो जाय, तब तक मैं अुसे बहुमूल्य समझूगा। कुछ भी हो, चरखेसे किसीकी हानि नहीं हो सकती। और अुसके बिना हम, और मैं तो यहा तक कह सकता हू कि, दुनिया भी बरबाद हो जायगी।

ससार युद्धके बादके परिणामोंसे थक गया है और जैसे आज चरखेसे भारतको शाति प्राप्त होती है, वैसे ही कल दुनियाको हो सकती है। क्योंकि वह अधिकसे अधिक लोगोंकी अधिकसे अधिक भलाअीका प्रतीक नहीं, बल्कि सबकी अधिकसे अधिक भलाअीका प्रतीक है। जब कभी मैं किसी मनुष्यको भूल करते देखता हू, तो अपने मनमें कहता हूं कि मैंने भी भूल की है; जब मैं किसी कामी पुरुषको देखता हू तो अपने आपसे कहता हूं कि किसी समय मैं भी अैसा ही था। अिस प्रकार मैं ससारमें हरअेकके साथ सम्बन्ध अनुभव

करता हूं और महसूस करता हूं कि हममें से छोटेसे छोटे आदमीके सुखी हुओ बिना मैं सुखी नहीं हो सकता। मैं अिसी अर्थमें चाहता हूं कि तुम चरखेको अपने अध्ययनका केन्द्र बनाओ। जैसे प्रह्लादको सर्वत्र राम दिखाओी देते थे और तुलसीदासको कृष्णकी मूर्तिमें भी राम ही दिखाओी देते थे, ठीक अिसी तरह तुम्हारी सारी विद्या चरखेका गूढ़ार्थ समझनेमें लगनी चाहिये। हमारे विज्ञान, हमारी बढ़ओीगिरी, हमारे अर्थशास्त्र — सबका अुपयोग चरखेको हमारे गरीबसे गरीब लोगोंका अवलम्बन और मुख्य सहारा बनानेमें होना चाहिये।

यंग अिंडिया, १०–२–'२७

खादीके बारेमें मैंने अकसर यह बताया है कि जब तक यह लागत कीमतके साथ भंडारकी व्यवस्थाका थोड़ा खर्च जोड़कर बेची जाती है, तब तक वह किसी भी मूल्यमें सस्ती है। यह ध्यानमें रहे कि खादी अपने जीवनके ७ वर्षोंमें ५० फीसदी सस्ती हो गओी है। यदि अुसे और आश्रय दिया जाय तो वह और भी सस्ती हो जायगी। और गरीब लड़कोंको स्वावलम्बी बनना क्यों न सिखाया जाय? अिसके बजाय अुन्हें यह आशा रखना क्यों सिखाया जाय कि खादी लागत कीमतसे सस्ती मिले और अुनसे भी ज्यादा गरीब लोग अुन्हें दान दें? लड़कों और लड़कियोंको फालतू समयमें अपना सूत आप कात लेना सिखाना चाहिये। मैंने रोज कमसे कम आध घंटा कताओी करनेकी बात सुझायी है। वे अुस सूतको बुन भी सकते हैं, यदि अैसा करना कठिन हो, जैसा कि हो सकता है, तो वे सूतको चरखा-संघके किसी प्रतिनिधिके पास भेजकर अुतने ही तौलकी और अुसी नंबरके सूतकी खादी ले सकते हैं। अुन्हें सिर्फ बुनाओीका खर्च देना पड़ेगा।

यंग अिंडिया, १४–३–'२९

यह बात जितने स्पष्ट शब्दोंमें कही जाय या अिस पर जितना जोर दिया जाय अुतना थोड़ा है कि कताओी, धुनाओी और दूसरी क्रियाओंकी जानकारीमें ही सच्ची खादी-विद्या नहीं आ जाती। अुसे

खादीका शिल्पशास्त्र कह सकते हैं। खादीका भीतरी अर्थ समझने
लिअे हमें यह जानना पड़ेगा कि वह हाथसे ही क्यों तैयार की जा
है, मशीनसे क्यों नहीं। जब अकेला आदमी शुग अॅन्जिनको होशियारी
चला सकता है, जो अुतना ही कपड़ा कहीं कम समयमें पैदा क
सकता है, तो अुसे बनानेके लिअे असंख्य हाथोंको क्यों काममें लगा
जाय? यदि खादीको हाथसे ही अुत्पन्न करना हो, तो फिर केवल तक
द्वारा ही क्यों नहीं? और तकलीसे ही करना है तो बांसकी तकली
क्यों नहीं? और यदि यही काम हम पत्थरमें सूत लटका
ले सकते हैं तो फिर तकली भी क्यों चाहिये? अैसे प्रश्न सर्वथ
स्वाभाविक हैं। अैसे तमाम प्रश्नोंके अुचित अुत्तर मालूम करना खादी
शोधका आवश्यक अंग है। मैं अिन सवालोंकी यहां चर्चा करना नह
चाहता। केवल अितना ही कहना चाहता हूं कि खादीका सच्चा ज्ञा
यान्त्रिक क्रियाओंसे कहीं आगे जाता है; अिसके लिअे धैर्यपूर्व
खोज करनेकी जरूरत है। आज हमारे पास अैसा ज्ञान देनेके साध
नहीं हैं। अिसलिअे खादी-शिक्षकोंको सिखाते हुअे भी अपने ज्ञान
वृद्धि करनी चाहिये। और विद्यार्थियोंको अपने ही परिश्रम द्वार
ज्ञान प्राप्त करना चाहिये। प्राचीन कालमें जब कोअी वैज्ञानि
जानकारी प्राप्त नहीं हो सकती थी, तब विद्यार्थी खुद अपने शिक्ष
हुआ करते थे और प्रथम श्रेणीके विद्वान् और विशेषज्ञ बन जा
थे। आज हमारी भी थोड़ी-बहुत यही स्थिति है।

हरिजन, १–३–'४२

२६

ग्रामसेवा

हम अेक ग्रामीण सभ्यताके अुत्तराधिकारी हैं। हमारे देशकी विशालता, हमारी जनसंख्याकी विशालता और देशकी जलवायु अेवं स्थितिने मेरी रायमें हमारे भाग्यमें ग्रामीण सभ्यता ही लिख दी है। अुसके दोष सबके जाने हुअे हैं, मगर अुनमें से अेक भी लाअिलाज नहीं है। अुसे अुखाड़कर अुसके स्थान पर शहरी सभ्यता स्थापित करना मुझे असंभव प्रतीत होता है, सिवा अिसके कि हम किसी कठोर अुपाय द्वारा आबादीको तीस करोड़से घटाकर तीस लाख या तीन करोड़ कर देनेको तैयार हों। अिसलिअे मैं यह मानकर अुपाय सुझा सकता हूं कि हमें सदा वर्तमान ग्रामीण सभ्यता ही कायम रखनी है और अुसके माने हुअे दोष दूर करने हैं। यह तभी हो सकता है जब देशके नौजवान देहाती जीवन अपनाकर गांवोंमें बस जायं। और यदि वे यह करना चाहते हों, तो अुन्हें अपने जीवनका पुनर्गठन करना होगा और अपनी छुट्टियोंका प्रत्येक दिन अपने कालेज या हाअीस्कूलके आसपासके देहातमें बिताना होगा, और जिन्होंने अपनी शिक्षा पूरी कर ली है या जो कोअी शिक्षा नहीं पा रहे हैं, अुन्हें देहातमें बस जानेका विचार करना चाहिये। चरखा-संघकी अपनी विविध शाखाअें और संस्थाअें पैदा हो गअी हैं। अुनके द्वारा छात्रोंको सेवाकी योग्यता प्राप्त करने और अिज्जतके साथ अपनी आजीविका चलानेका आसानीसे मौका मिलता है, बशर्ते वे देहातके सादे जीवनसे सन्तुष्ट हों। वह १५ रुपयेसे १५० रुपये वेतन पानेवाले देशके लगभग १५०० नौजवानोंको रोजी देता है और जो लगनवाले, अीमानदार और मेहनती युवक हाथसे काम करनेमें शर्म नहीं मानते, अुन्हें वह लगभग असीमित संख्यामें काम दे सकता है। अिसके सिवा राष्ट्रीय शिक्षा-संस्थाअें भी हैं, जो

खादीका शिल्पशास्त्र पढ़ सकते हैं। खादीका भीतरी अर्थ समझनेके लिअे हमें यह जानना पड़ेगा कि यह हाथसे ही क्यों तैयार की जाती है, मशीनसे क्यों नहीं। जब अकेला आदमी अुस अेंजिनको होशियारीसे चला सकता है, जो अुतना ही कपड़ा कहीं कम समयमें पैदा कर सकता है, तो अुसे बनानेके लिअे असंख्य हाथोंको क्यों काममें लगाया जाय ? यदि खादीको हाथसे ही अुत्पन्न करना हो, तो फिर केवल तकली द्वारा ही क्यों नहीं ? और तकलीसे ही करना है तो चरखेको तकलीमें क्यों नहीं ? और यदि यही काम हम पत्थरसे सूत लटकाकर ले सकते हैं तो फिर तकली भी क्यों चाहिये ? अैसे प्रश्न सर्वथा स्वाभाविक हैं। अैसे तमाम प्रश्नोंके अुचित अुत्तर मालूम करना खादीकी शोधका आवश्यक अंग है। मैं अिन सवालोंकी यहां चर्चा करना नहीं चाहता। केवल अितना ही कहना चाहता हूं कि खादीका सच्चा ज्ञान यांत्रिक क्रियाओंसे कहीं आगे जाता है; अिसके लिअे धैर्यपूर्वक खोज करनेकी जरूरत है। आज हमारे पास अैसा ज्ञान देनेके साधन नहीं हैं। अिसलिअे खादी-शिक्षकोंको सिखाते हुअे भी अपने ज्ञानमें वृद्धि करनी चाहिये। और विद्यार्थियोंको अपने ही परिश्रम द्वारा ज्ञान प्राप्त करना चाहिये। प्राचीन कालमें जब कोअी वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त नहीं हो सकती थी, तब विद्यार्थी खुद अपने शिक्षक हुआ करते थे और प्रथम श्रेणीके विद्वान् और विशेषज्ञ बन जाते थे। आज हमारी भी थोड़ी-बहुत यही स्थिति है।

हरिजन, १–३–'४२

२६

ग्रामसेवा

हम अेक ग्रामीण सभ्यताके अुत्तराधिकारी हैं। हमारे देशकी विशालता, हमारी जनसंख्याकी विशालता और देशकी जलवायु अेवं स्थितिने मेरी रायमें हमारे भाग्यमें ग्रामीण सभ्यता ही लिख दी है। अुसके दोष सबके जाने हुअे हैं, मगर अुनमें से अेक भी लाअिलाज नहीं है। अुसे अुखाड़कर अुसके स्थान पर शहरी सभ्यता स्थापित करना मुझे असंभव प्रतीत होता है, सिवा अिसके कि हम किसी कठोर अुपाय द्वारा आबादीको तीस करोड़से घटाकर तीस लाख या तीन करोड़ कर देनेको तैयार हों। अिसलिअे मैं यह मानकर अुपाय सुझा सकता हूं कि हमें सदा वर्तमान ग्रामीण सभ्यता ही कायम रखनी है और अुसके माने हुअे दोष दूर करने हैं। यह तभी हो सकता है जब देशके नौजवान देहाती जीवन अपनाकर गांवोंमें बस जायं। और यदि वे यह करना चाहते हों, तो अुन्हें अपने जीवनका पुनर्गठन करना होगा और अपनी छुट्टियोंका प्रत्येक दिन अपने कालेज या हाअीस्कूलके आसपासके देहातमें बिताना होगा, और जिन्होंने अपनी शिक्षा पूरी कर ली है या जो कोअी शिक्षा नहीं पा रहे हैं, अुन्हें देहातमें बस जानेका विचार करना चाहिये। चरखा-संघकी अपनी विविध शाखाअें और संस्थाअें पैदा हो गअी हैं। अुनके द्वारा छात्रोंको सेवाकी योग्यता प्राप्त करने और अिज्जतके साथ अपनी आजीविका कमानेका आसानीसे मौका मिलता है, बशर्ते वे देहातके सादे जीवनसे सन्तुष्ट हों। यह १५ रुपयेसे १५० रुपये वेतन पानेवाले देशके लगभग १५०० नौजवानोंको रोजी देता है और जो लगनवाले, अीमानदार और मेहनती युवक हाथसे काम करनेमें शर्म नहीं मानते, अुन्हें यह लगभग असीमित संख्यामें काम दे सकता है। अिसके सिवा राष्ट्रीय शिक्षा-संस्थाअें भी हैं जो

अैसा ही किन्तु सर्वांगीण अवसर देती है, क्योंकि सिर्फ अिसलिये कि राष्ट्रीय शिक्षाका अभी संगठन नहीं हुआ है। अिसलिये जो स्नातक नौजवान अपने वर्तमान वातावरण और दृष्टिकोणसे असन्तुष्ट हैं अुन सबसे मैं सिफारिश करता हूं कि वे अिन दो बड़ी राष्ट्रीय संस्थाओंका अध्ययन करें, जो चुपचाप किन्तु बहुत कारगर ढंगसे रचनात्मक कार्य कर रही हैं और देशके नौजवानोंके लिये सेवा और प्रतिष्ठित आजीविका दोनोंका अवसर प्रदान करती हैं। परन्तु वे अिन दो बड़े राष्ट्रनिर्माणके साधनोंसे लाभ अुठायें या न अुठायें, अुन्हें देहातमें घुसना चाहिये और सेवा, खोज तथा सच्चे ज्ञानका असीम क्षेत्र अुपलब्ध करना चाहिये। अच्छा हो कि अध्यापकगण लड़के-लड़कियों पर छुट्टियोंमें साहित्यके अध्ययनका बोझा न लादकर अुनके लिये देहातमें शिक्षात्मक प्रवासोंका कार्यक्रम नियत करें।

यंग अिंडिया, ७-११-'२९

अुत्तर प्रदेशके दौरेमें मुझे अिलाहाबादके विद्यार्थियोंका यह पत्र मिला :

"'यंग अिंडिया'के अेक हालके ही अंकमें ग्रामीण सभ्यता सम्बन्धी आपके अेक लेखके विषयमें हम निवेदन करना चाहते हैं कि अपनी शिक्षा समाप्त करनेके बाद देहातमें चले जानेके आपके सुझावकी हम कद्र करते हैं। परन्तु अिस बयानसे हमें काफी पथप्रदर्शन नहीं मिलता। हम अपने लिये कोअी निश्चित और साफ तौर पर तैयार की गअी रूपरेखा चाहते हैं और यह जानना चाहते हैं कि हमसे क्या करनेकी आशा रखी जाती है। अनिश्चित और अस्पष्ट सूचनाअें सुनते-सुनते हम थक गये हैं। अपने देशवासियोंके लिये सब कुछ करनेकी हमारी तीव्र अुत्कंठा है, परन्तु हमें यह पता नहीं कि निश्चित रूपमें हम कहांसे प्रारम्भ करें और अपने परिश्रमके संभव परिणामों और लाभोंके बारेमें क्या आशाअें रखें। जैसा आपने सूचित किया है, १५ से १५० रुपयेकी आय प्राप्त करनेके साधन क्या

होंगे ? हमें अुम्मीद है कि आप अिन मुद्दों पर विद्यार्थी-सम्मेलनके अपने भाषणमें या अपने मूल्यवान पत्रके किसी अंकमें कृपया कुछ प्रकाश डालेंगे।"

यद्यपि मैंने विद्यार्थियोंके सामने अपने अेक भाषणमें अिस विषय पर चर्चा की थी और अिन पृष्ठोंमें विद्यार्थियोंके सामने अेक निश्चित कार्यक्रम रखा जा चुका है, फिर भी पहले बताओी हुआी योजनाकी रूपरेखा ज्यादा स्पष्टतासे बता देना ठीक होगा।

पत्रके लिखनेवाले जानना चाहते है कि पढाओी समाप्त करनेके बाद वे क्या करें। मैं अुन्हें बताना चाहता हूं कि बडी अुम्रके विद्यार्थियोंको और अिसलिअे कालेजके तमाम विद्यार्थियोंको तो पढाओी करते हुअे भी ग्रामसेवाका कार्य आरंभ कर देना चाहिये। अैसे थोडा समय देकर काम करनेवालोंके लिअे यह योजना है

विद्यार्थियोंको अपनी सारी छुट्टियां ग्रामसेवामें लगानी चाहिये। अिसके लिअे अुन्हें मामूली रास्तों पर घूमने जानेके बजाय अुन गांवोंमें जाना चाहिये, जो अुनकी संस्थाओंके पास हों। वहां जाकर अुन्हें गांवके लोगोंकी हालतका अध्ययन करना चाहिये और अुनसे दोस्ती करनी चाहिये। अिस आदतसे वे देहातवालोंके सम्पर्कमें आयेंगे। और जब विद्यार्थी सचमुच अुनमें जाकर रहेंगे तब पहलेके कभी-कभीके सम्पर्कके कारण गांववाले अुन्हें अपना हितैषी समझकर अुनका स्वागत करेंगे, न कि अजनबी मानकर अुन पर सन्देह करेंगे। लम्बी छुट्टियोंमें विद्यार्थी देहातमें ठहरें, प्रौढशिक्षाके वर्ग चलायें, ग्रामवासियोंको सफाओीके नियम सिखायें और मामूली बीमारियोंके बीमारोंकी दवा-दारू और देखभाल करें। वे अुनमें चरखा भी जारी करें और अुन्हें अपने हर फालतू समयका अुपयोग करना सिखायें। यह काम कर सकनेके लिअे विद्यार्थियों और शिक्षकोंको छुट्टियोंके अुपयोगके बारेमें अपने विचार बदलने होंगे। अक्सर विचारहीन शिक्षक छुट्टियोंमें घर करनेके लिअे पढाओीका काम दे देते हैं। मेरी रायमें यह आदत हर तरहसे बुरी है। छुट्टियोंका समय ही तो अैसा होता है, जब

शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षाक्रमका ही अेक भाग है और अुपर्युक्त बड़े अुद्देश्यकी पूर्तिका अेक साधनमात्र है।

मेरा दावा है कि अिस सेवाके लिअे दो जरूरी शर्तें हैं, विशाल हृदय और असदिग्ध चरित्र। ये दो चीजें हों तो और सब आवश्यक योग्यतायें अपने-आप आ जायगी।

आखिरी सवाल दाल-रोटीका है। मेहनत-मजदूरी करनेवालेको पूरी मजदूरी मिलनी ही चाहिये। कांग्रेसके भावी अध्यक्ष राष्ट्रीय प्रान्तीय सेवकोका अेक सगठन बना रहे हैं। चरखा-संघ अेक बढता हुआ और स्थिर सगठन है। वह चरित्रवान युवकोको सेवाका असीम क्षेत्र प्रदान करता है। जीवन-वेतन अवश्य मिलता है। अिससे अधिक रुपया अुसके पास नही है। हम अपनी और देशकी सेवा अेक साथ नही कर सकते। अपनी सेवा देशकी सेवासे पूरी तरह मर्यादित है और अिसलिअे अिस अत्यन्त गरीब देशके खूनेसे बाहरकी आजीविकाके लिअे अुसमें गुजाअिश नही है। हमारे ग्रामवासियोकी सेवा ही स्वराज्य-स्थापनाका अेकमात्र मार्ग है। और सब बातें खाली सपने हैं।

यग अिडिया, २६-१२-'२९

"हमारा वहा कुछ डॉक्टरी-मददका काम करनेका अिरादा है। महात्माजी, हम अपना काम किस तरह करे? क्या आप हमें कुछ सूचनायें दे सकते है?"

गाधीजीने कहा "मुझे अपने दक्षिण अफ्रीकाके शुरूके दिनोमे ही अिस कामका अनुभव है। अिसलिअे मैं पहले अेक चेतावनी दे दू। अुनको थोडीसी डॉक्टरी मदद पहुचाकर तुम वास्तवमें अुनकी सहायता नही करते। तुम्हे अुन्हे सफाअी और स्वास्थ्य-विज्ञान सिखाना चाहिये। अिसीसे मलेरिया रुक सकता है। कुनैनसे मलेरिया दब जाता दीखता है, मगर अिससे अुसकी जड नही कटती। जरूरत अिस बातकी है कि अिलाज बीमारीको रोकनेवाला हो और बीमारोकी बादमें सार-सभाल रखी जाय। अुन बेचारोको यह पता नही है कि लापरवाहीका भोजन बहुधा मलेरियाके कीटाणु पैदा होनेके लिअे

और अुन्हें समझा-बुझाकर हाथकुटा बिना पालिशवाला चावल, अनछना आटा, गुड़ या हाथकी शक्कर अपनी ही जमीन पर अुगाअी हुअी भाजी और गावकी घानीका ताजा तेल खानेको राजी करना चाहिये। आजकल हर डॉक्टर आग्रहपूर्वक कुछ हरी पत्तिया कच्ची खानेके लिअे बताता है। प्रत्येक किसान हर तरहकी भाजी मुफ्तमें पैदा करके अुसे अपनी साधारण खुराकका अग बनाकर खा सकता है। लडाअीके जमानेमें यह पता लगा कि दवाअी या सुखाअी हुअी तरकारिया हानिकारक है और बोतलोमें बन्द 'लाअिम जूस' नही परन्तु ताजे नीबूसे निकाला हुआ रस ही 'स्कर्वी' नामकी रक्तकी अशुद्धिसे पैदा होनेवाली बीमारीको रोकता है।"

"हम बहुत कृतज्ञ है। क्या आप हमें बता सकते है कि हम जो छोटीसी हरिजन-पाठशाला चला रहे है, अुसमें हमें क्या सिखाना चाहिये?"

"यह सब कुछ मैं तुम्हे बता चुका हू। मैं बता दू कि लिखने-पढने तथा गणितकी शिक्षा प्रारभिक स्वास्थ्य और सफाअीकी अच्छी शिक्षाकी तुलनामें कुछ भी नही है। मैंने सयोगवश दरियागजकी अेक पाठशालामें पढनेवाली चन्द हरिजन बालिकाओको देखा। ज्यों ही मैंने अुन्हे देखा, मेरी नजर अुनके मैले नखो पर, अुनके भी मैली नाको पर और मैल अिकट्ठा करनेवाले नाक और कानके छोटे-छोटे गहनो पर पडी। मालूम होता है जिस भली औरतके सुपुर्द ये लड़किया थीं, अुसे यह बात कभी नहीं सूझी थी। पहले अुन्हे सफाअीका पाठ पढ़ाओ। लिखने-पढने और गणितकी शिक्षा स्वय बहुत कामकी चीज नही है। जो जरूरी चीजें मैंने तुम्हे बताअी है अुनकी चिन्ता करो। याद रखो कि निरक्षर व्यक्तियोको बडे-बडे राज्योका शासन करनेमें कोअी कठिनाअी नहीं हुअी। राष्ट्रपति क्रूगर मुश्किलसे अपने नामके हस्ताक्षर कर सकते थे। अुन्हें लिखने-पढने और गणितकी शिक्षा शौकसे दो, परन्तु मोहमें पडकर अुसे अपना आराध्य मत बना डालो।"

विद्यार्थी जो चाहते थे अुससे ज्यादा मिल जानेके कारण और भी लालचमें आ गये। अुन्होने कहा, "अेक सवाल और। हमारे पास

थोड़ासा जाड़ेकी ॠतुका फंड है। अिसके लिअे हमें सबसे अच्छे पात्र कैसे मिलें?"

"लाओ, हरिजन-सेवक-संघके लिअे मुझे दे दो।"

"जी नही, अिसकी व्यवस्था हम स्वयं करेंगे।"

"तो शहरकी गरीब बस्तियोंमें चले जाओ और वहा सबसे गरीब आदमी तलाश करके अुन्हे दे डालो।"

"गरीबोंकी बस्तियोंमें जायं?"

"अवश्य। वाअिसरॉयके महल पर तो जाना ही नही है, क्योंकि वहा तो तुम्हें अस्तबल भी हमारे झोपड़ोंसे गरम, साफ और आराम-देह मिलेंगे। नही, तुम्हे बहुत दूर जानेकी आवश्यकता नही। आसपास ही तुम्हें अैसे लोग मिल जायगे, जिनके पास वे चीजें नही हैं, जो तुम बचा सकते हो और जिनकी अुन्हे अत्यन्त आवश्यकता है। मिसालके लिअे, मीराबहनने देख लिया कि यहाका चौकीदार ठंडके मारे ठिठुर रहा है। अुन्होंने अुसे अपना कंबल दे दिया, जैसे डॉक्टर अंसारीने अुन्हे (मीराबहनको) अपनी शाल दे दी थी।"

"परन्तु महात्माजी, कभी-कभी ये लोग गरीब होते तो नही, लेकिन गरीब होनेका ढोंग करते हैं। अिसलिअे अैसे मामलोंमें सचाअी कैसे मालूम करें?"

"तो तुम्हें अीश्वर बनना पड़ेगा! यह मत सोचो कि तुम्हींने अीमानदारीका ठेका ले लिया है।"

जब वे अुठकर जा रहे थे तो गांधीजीने अुनसे कहा, "अेक गाव पर — वजीराबाद पर ही शक्ति केन्द्रित करो, अुसे आदर्श गाव बनाओ और फिर मुझसे तुम्हारा काम आकर देखनेको कहो। मेरा आशीर्वाद लेते जाओ और बादमें मेरा प्रमाणपत्र लेनेके लिअे आ जाना।"

हरिजन, ८-२-'३५

हमें देशके कामके लिअे आदर्श मजदूर चाहिये। अुन्हे अिस बातकी चिन्ता नही होगी कि अुन्हे कैसी खुराक मिलती है या जिन गाववालोंकी सेवा वे करते हैं, अुन लोगोंकी तरफसे अुन्हे क्या क्या आराम मिलते

है। अुन्हें जो भी जरूरत होगी अुसके लिये वे अीश्वर पर भरोसा रखेंगे और जो कष्ट और तकलीफें अुन्हें भुगतनी पड़ेंगी अुनमें आनन्द मानेंगे। हमारे देशमें यह अनिवार्य है, क्योंकि हमें ७ लाख गांवोंका विचार करना पड़ेगा। हम अैसे वैतनिक कार्यकर्ता नहीं रख सकते, जिनकी नजर निश्चित वेतन-वृद्धि, प्रोविडेन्ट फण्ड और पेन्शनों पर लगी रहती है। ग्रामीणोंकी सच्ची सेवा ही अुनका सन्तोष है।

तुममें से कुछको यह पूछनेका लोभ होगा कि क्या देहातियोंके लिये भी यही आदर्श होगा। हरगिज नहीं। ये बातें हम सेवकोंके लिये हैं न कि हमारे स्वामी ग्रामवासियोंके लिये। हम अितने दिन अुनकी पीठ पर सवार रहे हैं और अब हम स्वेच्छापूर्वक बढ़ती हुअी दरिद्रता स्वीकार करना चाहते हैं, ताकि हमारे मालिकोंकी हालत आजकी अपेक्षा बहुत अच्छी हो जाय। हमें अुन्हें आजकी अपेक्षा अधिक सम्पन्न बनाना होगा। ग्रामोद्योग-संघका यही ध्येय है। वह तब तक अुन्नति नहीं कर सकता जब तक अुसमें अैसे सेवकोंकी संख्या दिन-दिन बढ़ती न जाय, जिनका वर्णन मैंने किया है। परमात्मा करे तुम अैसे सेवक बनो।

हरिजन, २१–५–'३६

पूनासे अेक भाअी लिखते हैं

"विद्यार्थी अब अपनी गर्मीकी लम्बी छुट्टियों पर जा रहे हैं। अधिकतर शहरोंको छोड़कर अपने-अपने गांवोंको चले जायंगे। युद्धकी स्थितिके कारण देशमें सम्पूर्ण अव्यवस्था और अुसके फलस्वरूप भारतवासियों पर आनेवाली विपत्तियोंको देखते हुअे क्या यह अुपयोगी न होगा कि विद्यार्थी-जगतको अेक सन्देश देकर अुसे यह सिखाया जाय कि अिस संकटके मौके पर अुसका क्या कर्तव्य और धर्म है? मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि अब स्कूलोंके बन्द होनेके पहले विद्यार्थियोंके नाम अेक अपील निकालें और अुन्हें समझावें कि वे छुट्टियोंमें और सम्भवतः बादमें भी कुछ न कुछ काम जरूर करें। मेरी कुछ सूचनायें अिस प्रकार हैं:

फसलें और मवेशियोंके लिअे चारा अुगाया जाय। अैसा न हुआ तो भुखमरी होगी। और स्वावलम्बनका अर्थ यह है कि आपसमें सगठन हो, गावके समझदार आदमियोंकी पचायत द्वारा भीतरी मतभेद दूर किये जाय और सब लोग मिलकर सफाओी और साधारण बीमारियोंकी तरफ ध्यान देकर स्वच्छता रखें। महज व्यक्तिगत प्रयत्नसे काम नही चलेगा। सबसे बडी बात यह है कि देहातियोंको चोर-डाकुओंसे गावोंकी रक्षाका मिल-जुलकर प्रयत्न करनेके लिअे प्रेरित किया जाय और अिस तरह अुन्हे अपनी ताकत महसूस करना सिखाया जाय। अिसका अुत्तम अुपाय सगठित अहिंसा है। परन्तु यदि अहिंसाका मार्ग कार्य-कर्ताओंको स्पष्ट दिखाओी न देता हो, तो अुन्हे हिंसा द्वारा सामूहिक रक्षाका कार्य सगठित करनेमें सकोच नही करना चाहिये। अिस समय मेरे ध्यानमें वे काग्रेसी नही है, जिन्होने अहिंसाको अपना अन्तिम धर्म मान लिया है और अिसलिअे जिनके सामने और कोओी विकल्प नही है।

जिस तरह विद्यार्थी चाहे तो वे अपनी छुट्टिया परिश्रमपूर्वक बिता सकते हैं। कौन जानता है कि छुट्टिया अनिश्चित समयके लिअे ही न हो जाय? परन्तु अनिश्चित समयके लिअे न हो, तो भी दो महीनेका समय आत्म-निर्भरता और स्वावलम्बनकी अच्छी बुनियाद डालनेके लिअे काफी है।

मेरा पत्रलेखक भीरु है। साम्प्रदायिक झगडोंके भयके लिअे कोओी कारण नही। जो विद्यार्थी ग्रामोंके पुनर्गठनका काम हाथमें लेंगे, वे साम्प्रदायिक नही हो सकते। साम्प्रदायिकता शहरोंकी पैदाअिश है और वह शहरी भूमि पर ही पनप सकती है। देहाती अिलाकोंमें लोग अितने गरीब और अेक-दूसरे पर निर्भर रहनेवाले होते हैं कि अुनको साम्प्रदायिक झगडोंके लिअे समय नहीं मिल सकता। कुछ भी हो, अिस टिप्पणीकी दृष्टिसे यह मान लिया गया है कि विद्यार्थी कार्यकर्ता अिस जहरसे बचे हुअे हैं।

हरिजन, ५-४-'४२

२७

अस्पृश्यता-निवारण

देहरादूनसे अेक विद्यार्थीका हिन्दी पत्र मिला है। अुसका सार अिस प्रकार है

> "हमारे कालेजके छात्रावासमें अब तक भंगी हमारी जूठन खाते रहे हैं। परन्तु जबसे जागृति हुअी है, हमने यह रिवाज बन्द कर दिया है और हम अुन्हें स्वच्छ चपातियां और दाल देते हैं। अिससे हरिजन असन्तुष्ट हैं। जूठनमें अुन्हें कुछ घी और व्यंजन मिल जाते थे। विद्यार्थी ये चीजें हरिजनोंके लिअे अलग नहीं रख सकते। और यह कठिनाअी भी है कि हमने जो नया रिवाज अपनाया है अुस पर हम दृढ़ रह सकते हैं, मगर हरिजन जाति-भोजों वगैराकी जूठन लेना जारी रखेंगे। अब क्या किया जाय? और जब आप अिस प्रश्नका अुत्तर दें तो साथ ही मैं आपसे यह भी जानना चाहूंगा कि हमारी छुट्टियां जो जल्दी ही आनेवाली हैं, अुनका हम अुत्तम अुपयोग कैसे करें?"

पत्रलेखकने जो कठिनाअी बताअी है वह वास्तविक है। हरिजनोंको जूठनकी अैसी आदत पड़ गअी है कि वे न केवल अुसमें कोअी असम्मान नहीं मानते, बल्कि अुसकी आशा लगाये रहते हैं। अुन्हें जूठन न मिले तो अिसे वे निश्चित हकतलफी समझेंगे। परन्तु अिस दुःखद सत्यसे यही प्रगट होता है कि हरिजन और सवर्ण हिन्दू दोनोंका कितना पतन हो गया है। विद्यार्थियोंको अिस बातकी चिन्ता करनेकी जरूरत नहीं कि दूसरे स्थानों पर क्या होता है। अुनके लिअे पहली चीज सही रास्ते पर होना है और मेरी अुन्हें सूचना है कि अुनके लिअे जो खाना आम तौर पर बनता है अुसमें से अेक अुदार भाग वे निश्चयपूर्वक मेहतरोंके लिअे अलग रख दिया करें। देहरादूनके विद्यार्थियोंने खर्चेका प्रश्न अुठाया है। मुझे भारत भरके छात्रावास-जीवनका कुछ ज्ञान है। मेरा

दृढ़ विश्वास है कि विद्यार्थी आम तौर पर व्यंजनों और विलासकी वस्तुओं पर जितना चाहिये अुससे कहीं अधिक व्यय करते हैं। मुझे यह भी मालूम है कि बहुतसे विद्यार्थी अपनी थालीमें बहुतसी जूठन न छोड़ना शानके खिलाफ समझते हैं। मेरा अुनसे यह कहना है कि अपनी थालीमें कुछ भी जूठन छोड़ना ही शानके खिलाफ बात है और गरीबोंकी अवहेलनाका चिह्न है। किसीको भी — खास तौर पर विद्यार्थियोंको, यह हक नहीं है कि वे जितना आसानीसे खाया जा सके अुससे ज्यादा थालीमें लें। अेक विद्यार्थीका यह काम नहीं है कि वह व्यंजनों और विलासकी वस्तुओंकी संख्या बढ़ाये। विद्यार्थी-जीवन हर बातमें संयमका अभ्यास करनेके लिअे है और यदि वे संयमका तरीका अपनायें और अपनी थालियोंमें कुछ जूठा न छोड़नेकी स्वच्छ आदत डाल लें, तो वे देखेंगे कि अपने लिअे बने हुअे मामूली खानेमें से अपने मेहतरोंके लिअे अुदारतापूर्वक अेक भाग अलग रख देनेके बावजूद अुनके खर्चमें कुछ बचत हो जायगी।

और फिर अितना करनेके बाद मैं अुनसे आशा रखूंगा कि वे हरिजनोंके साथ अपने सगे भाअियों जैसा बरताव रखें, अुनसे प्रेमपूर्वक बोलें और बतायें कि दूसरोंकी थालीकी जूठन खानेकी गंदी आदत छोड़ देना और अपने जीवनमें दूसरे सुधार करना अुनके लिअे क्यों जरूरी है। रही बात विद्यार्थियोंके छुट्टियोंका अुपयोग करनेकी, सो यदि वे अुत्साहसे काम हाथमें लें तो बेशक बहुतसी बातें कर सकते हैं। अुनमें से कुछ मैं गिना देता हूं:

१ छुट्टियों तकके लिअे छोटासा सुकल्पित शिक्षाक्रम बनाकर रात और दिनकी पाठशालाअें चलाना।

२ हरिजन-मुहल्लोंमें जाकर अुनकी सफाअी करना और हरिजन लोग मदद दें तो ले लेना।

३ हरिजन-बालकोंको सैरके लिअे ले जाना, अुन्हें अपने गांवोंके नजदीकके दृश्य दिखाना, अुन्हें प्रकृतिका अध्ययन करना सिखाना, आसपासकी चीजोंमें आम तौर पर अुनकी

दिलचस्पी पैदा करना और बातों ही बातोंमें अुन्हें भूगोल-अिति-हासकी कामचलाअू जानकारी देना।

४ रामायण और महाभारतकी सरल कथायें पढ़कर सुनाना।

५ सरल भजन सिखाना।

६ हरिजन लड़कोंके शरीर पर जहां भी मैल पाया जाय, वह सब साफ कर देना और बड़ों तथा बच्चों, दोनोंको स्वास्थ्य-विज्ञानके सरल पाठ सिखाना।

७ चुने हुअे क्षेत्रोंमें हरिजनोंकी जनगणना करना और अुनकी स्थितिकी विस्तृत जानकारी अिकट्ठी करना।

८ बीमार हरिजनोंको डॉक्टरी सहायता पहुंचाना।

हरिजनोंमें क्या क्या किया जा सकता है, अुसका यह अेक नमूना है। यह जल्दी जल्दीमें बनाअी हुअी सूची है, परन्तु मुझे सन्देह नहीं कि विचारशील विद्यार्थी अिसमें बहुतसी बातें बढ़ा लेगा।

मैंने अभी तक अपना ध्यान हरिजनोंकी सेवा तक सीमित रखा है, परन्तु सवर्णोंकी भी अेक सेवा करनी है, जो कम जरूरी नहीं है। सवर्ण कैसे भी हों, अिसकी परवाह न करके विद्यार्थी अक्सर अत्यन्त कोमल ढंगसे अुनमें अस्पृश्यता-निवारणका सन्देश पहुंचा सकते हैं। अितना अधिक अज्ञान फैला हुआ है जिसे प्रामाणिक सत्साहित्य विवेकपूर्वक वितरण करके आसानीसे दूर किया जा सकता है। विद्यार्थी अछूतपन मिटाने और न मिटानेके पक्षवालोंकी सूची तैयार कर सकते हैं और अुसे तैयार करते समय वे अैसे कुओं, पाठशालाओं, ताल-तलैयों और मन्दिरोंको नोट कर सकते हैं, जो हरिजनोंके लिअे खुले हैं और जो नहीं खुले हैं।

यदि ये सब काम वे ढंगसे और लगातार करेंगे, तो अुन्हें आश्चर्य-जनक परिणाम दिखाअी देंगे। हरअेक विद्यार्थीको अेक नोटबुक रखनी चाहिये, जिसमें अुसे अपना काम ब्यौरेवार दर्ज करना चाहिये। और छुट्टियोंके अन्तमें अपने कामकी अेक सर्वग्राही किन्तु संक्षिप्त रिपोर्ट

तैयार करके प्रान्तके हरिजन-सेवक-संघको भेजी जा सकती है। यहा दी गभी सूचनाओंमें से कुछ या तमामको दूसरे विद्यार्थी ग्रहण करें या नहीं करें, मैं आपके पत्रलेखकसे यह आशा रखूंगा कि जो कुछ अुनने और अुनके साथियोंने किया हो अुसकी रिपोर्ट मुझे भेज दें।

हरिजन, १-४-'३३

मैंने अनेक बार कहा है कि यदि अस्पृश्यता हिन्दू हृदयसे सर्वथा मिट जाय तो असके दूरवर्ती परिणाम होंगे। क्योंकि असका सम्बन्ध लाखों मनुष्योंसे है। जैसा मैंने कल रातको नागपुरकी बडी सभामें कहा था, यदि हिन्दुओंके दिलोंसे अछूतपन सचमुच निकल जाय अर्थात् अुच्च जातिके हिन्दू अपनेको अिस भयंकर कलंकसे मुक्त कर लें, तो हमें जल्दी ही पता चल जायगा कि हम सब अेक हैं और हिन्दू, मुसलमान, अीसाअी, पारसी या किसी भी नामवाली अलग-अलग जातियां नहीं हैं। अेक बार अस्पृश्यताकी दीवार टूट जाय, तो हम सब अेकता अनुभव करने लगेंगे। जैसा मैंने अक्सर कहा है, अस्पृश्यता कअी सिरोंवाली राक्षसी है, जो नाना रूपोंमें प्रगट होती है। अुनमें से कुछ रूप बडे सूक्ष्म हैं। यदि मुझे किसी मनुष्यसे अीर्ष्या है तो वह भी अेक प्रकारकी अस्पृश्यता ही है। पता नहीं मेरे जीते-जी अस्पृश्यता-निवारणका मेरा सपना पूरी तरह सच्चा साबित होगा या नहीं। जो धर्मकी रुचि रखते हैं, जो धर्मके बाहरी रूपमें नहीं, अुसके तत्त्वोंमें विश्वास रखते हैं, अुनके लिअे विशाल मानव-समूहके जीवन पर असर डालनेवाली सूक्ष्म ढंगकी अस्पृश्यताके अुन्मूलनमें विश्वास रखनेके सिवा दूसरा मार्ग ही नहीं हो सकता। यदि हिन्दुओंके हृदयोंसे यह बुराअी निकल जाय, तो हमारे ज्ञानचक्षु अधिकाधिक खुलते चले जायंगे। अस्पृश्यताके सचमुच मिट जानेसे मानवताको कितना लाभ होगा, अुसका अनुमान लगाना असंभव है। अब तुम्हें यह समझनेमें कठिनाअी नहीं होगी कि मैंने अिस अेक ही चीज पर क्यों अपनी जानकी बाजी लगा दी है।

यदि तुमने, यानी जो विद्यार्थी यहां अिकट्ठे हुअे हैं अुन्होंने अब तक मेरी बात सुनी है और मेरे अिस मिशनके फलितार्थ

हुवे नही होते और न अैसे गन्दे वातावरणमें रहते हैं। वैतनिक कार्यकर्ताओं द्वारा अिस समस्याका निपटारा नही हो सकता। कितना ही रुपया हो तो भी अुसके द्वारा मैं यह काम नही कर सकता। यह तो तुम्हारा ही विशेषाधिकार होना चाहिये। स्कूल-कालेजोंमें मिलनेवाली तुम्हारी शिक्षाकी यह बडी कसौटी है। तुम्हारी कीमत अिस बातसे नही आकी जायगी कि तुम निर्दोष अंग्रेजीमें कैसे भाषण दे सकते हो। तुम्हारी योग्यताका माप तुम्हारी गरीबोंकी सेवासे होगा, न कि तुम्हे मिलनेवाले ६०) से ६००) तककी सरकारी नौकरियोंसे। मैं चाहता हू कि तुम मेरी बताअी हुअी वृत्तिसे अिस कामको करो। मुझे अेक भी विद्यार्थी अैसा नही मिला, जिसने यह कहा हो कि वह रोज अेक घटा नही बचा सकता। यदि तुम रोजाना अपना रोजनामचा लिखो, तो तुम देखोगे कि वर्षके ३६५ दिनोंमें तुम अनेक मूल्यवान घण्टे बरबाद कर देते हो। यदि तुम अपनी शिक्षासे लाभ अुठाना चाहते हो, तो जब तक यह तूफानी आन्दोलन चल रहा है, तब तक तुम अिस कामकी ओर ध्यान दो। अपने विद्यालयोंसे हालमें ही निकले हुअे विद्यार्थी वर्धाके चारों ओर पाच-पाच मीलकी परिधिमें हरिजनोंकी सेवा कर रहे हैं। वे चुपचाप अच्छा काम कर रहे हैं, अिसलिअे तुम अुन्हे नही जानते। मैं तुम्हे अुनका कार्य देखनेको निमंत्रित करता हू। वह सख्त है, मगर आनन्ददायक है। वह तुम्हे अपने क्रिकेट और टैनिससे भी अधिक आनन्द देगा। मैंने बार-बार कहा है कि मेरे पास सच्चे, बुद्धिशाली और प्रामाणिक कार्यकर्ता होंगे तो रुपया आ जायगा। मैंने १८ वर्षकी अुम्रसे ही भिक्षा मागनेकी शिक्षा आरम्भ की थी। मैंने देख लिया कि हमारे पास ठीक किस्मके कार्यकर्ता होंगे तो रुपया आसानीसे मिल सकता है। केवल रुपयेसे मुझे कभी सन्तोष नही होगा। मैं तुमसे कहता हू कि तुम हरिजनोंकी सेवाके लिअे कुछ फालतू घंटे निश्चित रूपमें देनेकी प्रतिज्ञा कर लो। अध्यक्ष महोदय, जैसा आपने कहा, मैं अेक स्वप्नद्रष्टा हूं। असलमें मैं अेक व्यावहारिक स्वप्नद्रष्टा हू। मेरे

सपने खयाली पुलाव नही है। मैं यथाशक्ति अपने सपनोंको यथार्थताओंमें बदल देना चाहता हूं।

हरिजन, १७–११–'३३

गाधीजीका मद्रासके विद्यार्थियोसे १८९६ का पुराना परिचय है और तभीसे विद्यार्थियोने अुनसे अपना सम्बन्ध कायम रखा है। अुन्होंने कहा, "पुरानी पीढीके लोग अिस अभिशापको मिटानेमें कितना ही हिचकिचायें, विद्यार्थियोंको अिस सुधारके लिअे काम करने और हरिजनोंकी ठोस रूपमें सेवा करनेकी अपनी तैयारी दिखानी चाहिये। मैं कहता हूं कि तुम झाड़ू, बाल्टी लेकर मद्रासके तमाम हरिजन-मुहल्ले साफ कर डालो और विविध प्रकारसे हरिजनोंकी सेवा करो। यदि तुम हिन्दू समाजको पक्का विश्वास करा देना चाहते हो कि अस्पृश्यता धर्मका अग नही हो सकती और वह अेक भयंकर भूल है, तो तुम्हें चरित्रका विकास करना होगा और अपने जीवनसे दिखा देना पडेगा कि यह मानना कि कुछ लोग स्पृश्य हैं और कुछ अस्पृश्य हैं धर्म नही, अुसका विपर्यास है। यदि तुममें चरित्र नही होगा तो लोगोंकी तुममें श्रद्धा नही होगी। तुम्हे आम जनतामें जाना-आना होगा, तुम्हें अुनका हृदय-परिवर्तन करना होगा। कथित कट्टर लोग जनसाधारणके प्रतिनिधि नही है और न वे शास्त्रोंके सही अर्थको ही प्रकट करते है। जनसाधारण पर अुनका कोअी सीधा असर नही हो सकता। जनता पर सच्चा प्रभाव केवल चरित्रका ही पडेगा। आम लोग तर्क नही करते। वे सिर्फ यह जानना चाहते है कि जो लोग अुनमें जाते है वे कौन है? यदि अुनके पास सचाअीकी योग्यता होगी तो जनसाधारण अुनकी बात सुनेंगे। यह योग्यता नही होगी तो आम लोग अुनकी बात पर ध्यान नही देंगे।" अिसके बाद गाधीजीने वर्णन किया कि विद्यार्थी लोग हरिजनोंकी सेवा कैसे कर सकते है और कहा, "ये लोग हैं जिनके बीचमें तुम्हे जाना होगा और प्रकाश और आशाकी किरण [illegible] होगी। तुम्हे अुनके बीचमें मेहनतसे काम करना

होगा और अुन्हें विश्वास दिलाना होगा कि तुम अुनके पास अपने मनमें कोअी बात छिपी रखकर या कोअी हीन अुद्देश्य लेकर नहीं आये हो, बल्कि अुनकी सेवा करनेके शुद्ध हेतुसे और प्रेम तथा शान्तिका सन्देश लेकर अुनके बीचमें आये हो। तुम अैसा करोगे तो अुनकी तरफसे तुम्हें तुरन्त अुत्तर मिलेगा।"

हरिजन, २९-१२-'३३

मेरा संदेश अत्यन्त सरल है। मुझमें आज ही यह कोअी नया सत्योदय नहीं हुआ है। मैंने यथाशक्ति पिछले पचास वर्षसे अिसके अनुसार जीवन व्यतीत करनेका प्रयत्न किया है। और अिसमें मुझे जितनी अधिक सफलता मिली है अुतना ही अधिक मुझे भीतरी आनन्द प्राप्त हुआ है। यह बात भी नहीं है कि मैं भारतको यह सन्देश पहली ही बार दे रहा हूं। परन्तु हाल ही में कुछ घटनाअें अैसी हो गअी हैं, जिनसे लोगोंको यह नअी चीज मालूम होती है। मेरा सीधासादा पैगाम यह है कि जो सवर्ण हिन्दू अपनेको अुन लोगोंसे अूंचा मानते रहे हैं, जिन्हें वे अछूत कहते हैं, नजदीक नहीं आने देते, देखना भी पाप समझते हैं या अवर्ण मानते हैं, अुनको समझ लेना चाहिये कि अुच्चताके अिस अहंकारके लिअे शास्त्रोंकी कुछ भी मंजूरी नहीं है। यदि मुझे यह पता लग जाय कि जो धर्मशास्त्र वेद, अुपनिषद्, भगवद्गीता, स्मृति आदिके नामसे प्रसिद्ध हैं, अुनमें स्पष्टतापूर्वक अैसी अस्पृश्यताके लिअे दैवी स्वीकृतिका विधान है, तो दुनियामें अैसी कोअी चीज नहीं है जो मुझे हिन्दू बनाये रख सके। मैं हिन्दुत्वको अुसी तरह फेंक दूंगा, जैसे किसी सड़े हुअे सेबको फेंक दिया जाता है। अिस विचारमात्रसे मेरी बुद्धिका अपमान होता है और मेरे हृदयको आघात लगता है कि जिस परमात्माने सवर्ण हिन्दू और अवर्ण हिन्दू दोनोंको पैदा किया है, वह खुद अपनी सन्तानोंके बीचमें यह अपवित्र दीवार खड़ी करेगा। यह कल्पना ही हरअेक समझदार आदमीके लिअे अरुचिकर होनी चाहिये कि जिन ऋषियोंने वेद और अुपनिषद्

दिये हैं और जिन्होंने अपने हरअेक मंत्रमें अीश्वरकी अेकताकी शिक्षा दी है, वे कभी अैसी किसी चीजकी कल्पना कर सकते थे जैसी आजकल हिन्दू धर्ममें प्रचलित अस्पृश्यता है। परन्तु पूर्वग्रह और अन्धविश्वास मुश्किलसे मिटते हैं। वे बुद्धि पर छा जाते हैं, तर्कको कुंठित कर देते हैं और हृदयको कठोर बना देते हैं। अिसीलिअे तो तुम देखते हो कि विद्वान लोग अिस अस्पृश्यताका समर्थन कर रहे हैं।

परन्तु तुम विद्यार्थियोंको जानना चाहिये कि अिस सन्देशके पीछे अेक बहुत बड़ा सन्देश और भी है। अस्पृश्यताके अिस राक्षसने भारतमें समाजके हर अंग पर आक्रमण किया है; और अिस संदेशकी जड़में यह विचार है कि केवल हिन्दुओं और हिन्दुओंके बीच ही अस्पृश्यता न रहे बल्कि हिन्दू, अीसाअी, मुसलमान, पारसी और अन्य लोगोंमें भी कोअी छुआछूत न रहे। मुझे पक्का विश्वास है कि यदि लाखों सवर्ण हिन्दुओंमें यह महान हृदय-परिवर्तन किया जा सके और अुनके हृदय शुद्ध कर दिये जाय — और वे अवश्य शुद्ध होंगे — तो हम भारतमें अेक राष्ट्र बनकर रहेंगे, अेक-दूसरेका विश्वास करेंगे और आपसमें कोअी अविश्वास या सन्देह नहीं होगा। यह अनेक सूक्ष्म रूपोंवाली अस्पृश्यता ही है जो हमें अेक-दूसरेसे अलग रखती है और स्वयं जीवनको भद्दा और कठिन बनाती है।

अिसलिअे अब तुम समझ सकते हो कि मैं सारे भारतवासियोंकी, भले वे किसी भी धर्मके हों, सहानुभूति क्यों जुटा रहा हूं? सच तो यह है कि मैंने सारी दुनियाका समर्थन मांगनेमें संकोच नहीं किया है। मैंने समर्थन आर्थिक सहायताके रूपमें नहीं मांगा है, बल्कि अुनकी सहानुभूति, प्रार्थना और तमाम गूढ़ार्थों सहित अिस प्रश्नके अध्ययनके रूपमें मांगा है। मैं अुनकी दिली हमदर्दी चाहता हूं, जो किसी भी आर्थिक सहायतासे अनन्त गुनी बड़ी है। मैं अुनके सामने रुपयेके लिअे अपना हाथ नहीं फैलाता, क्योंकि वे हरिजनोंके ऋणी नहीं हैं। यह ऋण तो सवर्ण हिन्दुओंको चुकाना है।

अन्तमें, गैरहिन्दुओंसे यह प्रार्थनापूर्ण समर्थन और सहानुभूति तभी मिल सकती है, जब अुन्हें अिस आन्दोलनके प्रति अविश्वास

न हो, और अुन्हें सन्तोष हो जाय कि यह भीतरी शुद्धिका और गहरा धार्मिक आन्दोलन है। याद रखो, यह सदेश मैंने यों ही नहीं दे दिया है। वह सीधा मेरे हृदयसे निकला है। मैंने तुम्हारी थैली खुशीसे ले ली है, क्योंकि वह तुम्हारी तरफसे अेक स्वयंप्रेरित भेंट है। परन्तु मैंने अुसे यह समझकर स्वीकार किया है कि वह तुम्हारे और मेरे बीच अेक स्नेह-बंधन है और अिस बातकी निशानी है कि तुमने मेरा पूरा साथ देनेका निश्चय कर लिया है। और चूंकि मैं अेक अच्छा हिसाबी हूं, अिसलिअे मैं तुमसे हिसाब मागूंगा और समय-समय पर जानना चाहूंगा कि तुमने अिस आन्दोलनमें क्या भाग लिया है?

हरिजन, २६-१-'३४

यदि तुम, तुममें जो विश्वास रखा गया है अुसका पालन नहीं करोगे तो मेरे आशीर्वादसे कुछ लाभ न होगा। तुम्हारी जिम्मेदारी अिस बातसे बढ जाती है कि तुम हरिजनोंके प्रतिनिधि बनकर निकलोगे और तुम्हें वहां अपने जीवनमें अुस जीवनकी झलक दिखानी होगी जो तुमने यहां व्यतीत किया है। तुम जितना पवित्र और शुद्ध जीवन व्यतीत करोगे और अपनी जातिकी जितनी सेवा करोगे, अुतने ही अस्पृश्यताके विनाशमें सहायक होगे। याद रखना, अस्पृश्यता रहेगी तो हिन्दू धर्म नहीं रहेगा, और तुम्हें अिस पवित्र कार्यके लिअे अपने-आपको स्वेच्छा-सेवक बना लेना पड़ेगा।

हरिजन, ५-८-'३९

मैं चाहता हूं कि यहांकी हरिजन लड़कियां अपनी अुच्च संस्कृतिका परिचय दें कि हरअेक आदमीको अुन्हें अछूत माननेमें लज्जा अनुभव हो। हरिजन-सेवक-संघकी प्रवृत्तियोंका यही लक्ष्य है। अिस संस्थाको सारे संसार पर यह प्रत्यक्ष रूपमें प्रमाणित कर देना चाहिये कि यदि हरिजन अस्पृश्यता-राक्षसीके चंगुलसे छूट जाय तो वे कितने अूंचे अुठ सकते हैं और अिसके विपरीत, स्वयं अस्पृश्यताकी संस्था कितनी अरक्षित और अमानुषी है।

हरिजन, ५-५-'४६

२८

हिन्दू-मुस्लिम अकता

प्र० — कांग्रेसमें कुछ दिखावटी राष्ट्रीय मुसलमानोंको अनुचित और तर्कहीन रियायतें देकर रखनेकी कोशिश करनेसे क्या फायदा, जब अिससे अुनकी न मिटनेवाली भूख केवल बढ़ती ही जा रही है?

अु० — यदि राष्ट्रीय मुसलमान 'दिखावटी राष्ट्रवादी' हैं तो हम भी हैं। अिसलिअे अुस शब्दको हमें अपने कोपसे निकाल देना चाहिये। मैं नहीं जानता कि 'तर्कहीन रियायतों' का क्या अर्थ है, परन्तु आप मुझे किसी अनुचित रियायतका समर्थन करते नहीं पायेंगे। यह आपके और मेरे बीचमें समान वस्तु है।

प्र० — जब कांग्रेस अपने मंच पर खिलाफतके प्रश्नको ले आअी, तो क्या वह साम्प्रदायिक संबंधोंकी कटुताके लिअे जिम्मेदार नहीं है?

अु० — अितिहासकी दृष्टिसे यह सच नहीं है कि कांग्रेसके खिलाफत आन्दोलनमें भाग लेनेसे साम्प्रदायिक सम्बन्धोंमें कटुता आअी है। हकीकत ठीक अिससे अुलटी है, और मेरी हमेशा यह राय रही कि कांग्रेसने खिलाफतकी लड़ाअीमें अपने मुसलमान देशबांधवोंका साथ देकर अच्छा किया।

अमृतबाजार पत्रिका, ३-८-'३४

प्र० — मैं अेक हिन्दू विद्यार्थी हूं। मेरी अेक मुसलमानसे बड़ी दोस्ती थी, लेकिन मूर्तिपूजाके प्रश्न पर हममें झगडा हो गया है। मुझे मूर्तिपूजासे सान्त्वना मिलती है, परन्तु मैं अपने मुसलमान मित्रको अैसा जवाब नहीं दे सकता जिससे अुसे मेरी बातका निश्चय हो जाय। क्या आप 'हरिजन' में मूर्तिपूजा पर कुछ कहेंगे?

अु० — मेरी सहानुभूति तुम्हारे और तुम्हारे मुस्लिम मित्र दोनोंके साथ है। मेरा सुझाव है कि अिस प्रश्न पर 'यंग अिंडिया' में मेरे लेखोंको तुम पढ़ो और यदि तुम्हें कुछ भी सन्तोष अनुभव होता हो तो तुम्हारा मुसलमान दोस्त भी अुन्हें पढ़ ले। यदि तुम्हारे मित्रको तुम्हारे लिअे

परिणाम निकलता है। अिससे मनुष्यका जीवन बदल जाता है। मेरी राय है कि मैंने जो भेद किया है, वह न माना जाय तो हम अिस बातको मानें या न मानें हम सब मूर्तिपूजक या बुतपरस्त हैं। अेक पुस्तक, अेक अिमारत, अेक चित्र, अेक प्रतिमा, सब बेशक मूर्तियां हैं, जिनमें अीश्वर अवश्य निवास करता है। परन्तु वे अीश्वर नहीं हैं। जो यह कहता है कि वे अीश्वर हैं, वह भूल करता है।

हरिजन, ९-३-'४०

स्कूलों और कालेजोंमें झंडा फहरानेके बारेमें मेरे पास दो नमूनेके पत्र हैं। चूंकि कुछ लड़के कांग्रेसका झंडा फहराते हैं, अिसलिअे दूसरे लड़के लीगका झंडा फहराते हैं। दोनों बेजा करते हैं। मेरे पत्रलेखक समाचार देते हैं कि झगड़ा कांग्रेसका झंडा फहरानेसे शुरू हुआ। दोनों झंडे सहन

कर लिये जाते तो शायद फिलहाल कोओी झंझट न हुओी होती। ठीक बात यह थी और है कि लडकोको अैसे मामलोमें कोओी शुरुआत नही करनी चाहिये। अिमारतें अधिकारियोकी है और अुन्हे यह फैसला करना चाहिये कि अुनकी अिमारतो पर झंडा फहराया जाय या न फहराया जाय, और फहराया जाय तो कौनसा? यदि लड़के कानून अपने ही हाथमें ले लें, तो परिणाम अव्यवस्था और गड़बड़के साथ-साथ सिर-फुटव्वल ही होगा। यह बिलकुल भद्दी बात होगी और अिससे किसीका भला नही होगा। स्कूल-कालेजोंको तो साम्प्रदायिक घाव भरनेवाली संस्थाअें बनना चाहिये न कि फूट बढ़ानेवाली। यदि लडके और लड़किया पढाओीके दिनोमें अनुशासन नही सीखें, तो अुनकी शिक्षा पर खर्च किया गया रुपया और समय राष्ट्रीय हानि ही माना जायगा।

हरिजन, १७–२–'४६

अेक विद्यार्थीने पूछा, "हिन्दू-मुस्लिम अेकता करानेके लिअे विद्यार्थी क्या कर सकते है?" यह प्रश्न गाधीजीको प्रिय था। अुन्होने अुत्तर दिया, "अुपाय सरल है। यदि सारे हिन्दू हुल्लडबाज होकर तुम्हे गालिया देने लगें तो भी तुम अुन्हे सगे भाओी समझना मत छोड़ो और यही बात अिसकी अुलटी स्थितिमें भी सही है। क्या यह असंभव है? नही, अिससे अुलटी बात असंभव है। और जो व्यक्तिके लिअे संभव है, वह समूहके लिअे भी संभव है।

"आजकल सारा वातावरण विषाक्त हो गया है। अखबारों द्वारा तरह-तरहकी बेबुनियाद अफवाहें फैलाओी जाती हैं और लोग अुन्हें बिना समझे-बुझे मान लेते हैं। नतीजा यह होता है कि घबराहट फैल जाती है और हिन्दू और मुसलमान दोनों अपनी अिन्सानियतको भूलकर अेक-दूसरेके साथ जगली जानवरोंका-सा बर्ताव करते हैं। मनुष्यको चाहिये कि वह भद्रताका व्यवहार करे, भले ही दूसरा पक्ष करे या न करे। भद्रताके बदलेमें भद्रता की जाय तो सौदा होता है। वह तो चोर-डाकू भी करते हैं। अुसमें कोओी तारीफकी बात नहीं है। मानवता हानि-लाभका हिसाब लगानेका

तुच्छ समझती है। अुसका तकाजा तो यही है कि भद्र व्यवहार करनेका अकतरफा धर्मपालन किया जाय। यदि तमाम हिन्दू मेरी सलाह पर ध्यान दें या वे न दें तो मुसलमान ध्यान दें, तो भारतमें अैसी शांति हो जाय जिसे न तो खंजर और न लाठियां ही भंग कर सकेंगी। यदि बदलेमें कोअी कार्रवाअी न की जाय और अुत्तेजना मिलने पर भी अुत्तेजना न दिलाअी जाय, तो गुंडे छुरा भोंकनेके बुरे काममें जल्दी ही थक जायंगे। कोअी अदृश्य शक्ति अुनकी अुठी हुअी भुजाको पकड़ लेगी और अुनके दुष्ट अिरादे पर अमल करनेमें वह भुजा अिनकार कर देगी। सूर्य पर धूल फेंकी जा सकती है, पर अिससे अुसका प्रकाश धुंधला नहीं होता। जरूरत अिस बातकी है कि हम अपनी आत्मामें श्रद्धा और धैर्य बनाये रखें। भगवान भले हैं और वे दुष्टताको अेक हदसे आगे नहीं बढ़ने देते।

हरिजन, २८-४-'४६

२९

पूंजी और श्रम

प्र० — क्या आपके खयालमें आपके आदर्शोंकी प्राप्तिके लिअे शोषकों और शोषितोंमें कुछ भी सहयोग संभव है? क्या आप समझते हैं कि वह समय आ गया है जब कांग्रेसको पूंजीपतियों और जमींदारोंके हितोंकी परवाह न करके जनसाधारणके अधिकारोंके लिअे कोअी निश्चित रवैया अख्तियार कर लेना चाहिये? क्या आपका यह विचार नहीं है कि किसी राष्ट्रवादी कार्यक्रमके आधार पर जनसाधारणको कारगर रूपमें संगठित करना संभव नहीं है और कार्यकर्ताओंको हर हालतमें शोषित किसानों और मजदूरोंके पक्षमें पूंजीपतियों और जमींदारोंके विरुद्ध खड़े हो जाना चाहिये? क्या

कर लिये जाते तो शायद फिलहाल कोओी झंझट न हुओी होती। ठीक बात यह थी और है कि लडकोंको अैसे मामलोंमें कोओी शुरुआत नहीं करनी चाहिये। अिमारतें अधिकारियोंकी है और अुन्हें यह फैसला करना चाहिये कि अुनकी अिमारतों पर झंडा फहराया जाय या न फहराया जाय, और फहराया जाय तो कौनसा? यदि लड़के कानून अपने हाथमें ले लें, तो परिणाम अव्यवस्था और गड़बड़के साथ-साथ सिर फुटव्वल ही होगा। यह बिलकुल भद्दी बात होगी और अिससे किसीका भला नहीं होगा। स्कूल-कालेजोंको तो साम्प्रदायिक घाव भरनेवाली संस्थाअें बनना चाहिये न कि फूट बढानेवाली। यदि लडके और लड़कियां पढ़ाओीके दिनोंमें अनुशासन नहीं सीखें, तो अुनकी शिक्षा पर खर्च किया गया रुपया और समय राष्ट्रीय हानि ही माना जायगा।

हरिजन, १७–२–'४६

अेक विद्यार्थीने पूछा, "हिन्दू-मुस्लिम अेकता करानेके लिअे विद्यार्थी क्या कर सकते हैं?" यह प्रश्न गांधीजीको प्रिय था। अुन्होंने अुत्तर दिया, "अुपाय सरल है। यदि सारे हिन्दू हुल्लड़बाज होकर तुम्हें गालियां देने लगें तो भी तुम अुन्हें सगे भाओी समझना मत छोडो और यही बात अिसकी अुलटी स्थितिमें भी सही है। क्या यह असंभव है? नहीं, अिससे अुलटी बात असंभव है। और जो व्यक्तिके लिअे संभव है, वह समूहके लिअे भी संभव है।

"आजकल सारा वातावरण विषाक्त हो गया है। अखबारों द्वारा तरह-तरहकी बेबुनियाद अफवाहें फैलाओी जाती हैं और लोग अुन्हें बिना समझे-बूझे मान लेते हैं। नतीजा यह होता है कि घबराहट फैल जाती है और हिन्दू और मुसलमान दोनों अपनी अिन्सानियतको भूलकर अेक-दूसरेके साथ जंगली जानवरोंका-सा बर्ताव करते हैं। मनुष्यको चाहिये कि वह भद्रताका व्यवहार करे, भले ही दूसरा पक्ष करे या न करे। भद्रताके बदलेमें भद्रता की जाय तो सौदा होता है। वह तो चोर-डाकू भी करते हैं। अुसमें कोओी तारीफकी बात नहीं है। मानवता हानि-लाभका हिसाब लगानेको

तुच्छ समझती है। अुसका तकाजा तो यही है कि भद्र व्यवहार करनेका अिकतरफा धर्मपालन किया जाय। यदि तमाम हिन्दू मेरी सलाह पर ध्यान दें या वे न दें तो मुसलमान ध्यान दें, तो भारतमें अैसी शांति हो जाय जिसे न तो खंजर और न लाठियां ही भंग कर सकेंगी। यदि बदलेमें कोअी कार्रवाअी न की जाय और अुत्तेजना मिलने पर भी अुत्तेजना न दिलाअी जाय, तो गुंडे छुरा भोंकनेके बुरे कामसे जल्दी ही थक जायंगे। कोअी अदृश्य शक्ति अुनकी अुठी हुअी भुजाको पकड़ लेगी और अुनके दुष्ट अिरादे पर अमल करनेसे वह भुजा अिनकार कर देगी। सूर्य पर धूल फेंकी जा सकती है, पर अिससे अुसका प्रकाश धुंधला नहीं होता। जरूरत अिस बातकी है कि हम अपनी आत्मामें श्रद्धा और धैर्य बनाये रखें। भगवान भले हैं और वे दुष्टताको अेक हदसे आगे नहीं बढ़ने देते।

हरिजन, २८-४-'४६

२९

पूंजी और श्रम

प्र० — क्या आपके खयालसे आपके आदर्शोंकी प्राप्तिके लिअे शोषकों और शोषितोंमें कुछ भी सहयोग संभव है? क्या आप समझते हैं कि वह समय आ गया है जब कांग्रेसको पूंजीपतियों और जमींदारोंके हितोंकी परवाह न करके जनसाधारणके अधिकारोंके लिअे कोअी निश्चित रवैया अख्तियार कर लेना चाहिये? क्या आपका यह विचार नहीं है कि किसी राष्ट्रवादी कार्यक्रमके आधार पर जनसाधारणको कारगर रूपमें संगठित करना सम्भव नहीं है और कार्यकर्ताओंको हर हालतमें शोषित किसानों और मजदूरोंके पक्षमें पूंजीपतियों और जमींदारोंके विरुद्ध खड़े हो जाना चाहिये? क्या

भारतके समाजमें बदतर अधिकारोंकी जगह नहीं है और जमींदारोंके खिलाफ मालगुजार मालिक नष्ट नहीं हो जाना चाहिये?

अु० — मैंने कभी नहीं कहा कि जब तक शोषण और शोषण करनेकी स्थिति बनी हुई है, तब तक शोषकों और शोषितोंमें सहयोग होना चाहिये। सिर्फ़ इतनी ही बात है कि मैं यह नहीं मानता कि तमाम पूंजीपति और जमींदार जन्मजात आवश्यकतावश शोषक ही हैं या अुनमें और जनसाधारणके हितोंमें कोअी बुनियादी या अमिट विरोध है। शोषणमात्रका आधार शोषितोंका सहयोग है, भले वह खुशीसे दिया गया हो या मजबूरीसे। हमें यह स्वीकार करना कितना ही बुरा लगता हो, परन्तु यह सत्य है कि यदि लोग शोषकोंकी आज्ञाका पालन करनेसे अिनकार कर दें तो शोषण नहीं होगा। परन्तु स्वार्थ बीचमें आ जाता है और जो जंजीरें हमें बांध रखती हैं अुनसे हम चिपटे रहते हैं। यह बन्द होना चाहिये। जरूरत अिस बातकी नहीं है कि जमींदारों और पूंजीपतियोंको मिटा दिया जाय, बल्कि यह है कि अुनके और जनसाधारणके मौजूदा सम्बन्धोंका रूप बिलकुल बदलकर अधिक स्वास्थ्यकारी और शुद्ध बना दिया जाय। तुम पूछते हो कि 'क्या यह समय नहीं आ गया है कि जब कांग्रेसको पूंजीपतियों और जमींदारोंके हितोंके विरुद्ध जनसाधारणके अधिकारोंके लिये खड़े हो जाना चाहिये?' मेरा अुत्तर यह है कि जबसे कांग्रेस मैदानमें आयी है, तबसे भले ही अुसमें नरम दलवालोंका बोलबाला रहा हो या गरम दलवालोंका, अुसने अिसके सिवा और कुछ नहीं किया है। श्री अे० ओ० ह्यूमके नेतृत्वमें अपने जन्मसे ही अुसने आम जनताका प्रतिनिधित्व करनेकी कोशिश की है। सच तो यह है कि अुसकी शुरुआत ही अिस तरहसे हुअी, और अुसके लगभग आधी शताब्दीके अितिहासका अध्ययन करनेसे पूरी तरह साबित हो जाता है कि कांग्रेस बराबर आम जनताका प्रतिनिधित्व करनेमें प्रगतिशील रही है।

क्या मेरे खयालसे यह समय नहीं आ गया है जब कांग्रेसको पूंजीपतियों और जमींदारोंके हितोंकी परवाह न करके जनसाधारणके

ग़रीबोंके पक्षमें कोओ निश्चित रवैया ग्रहण कर लेना चाहिये? मेरा अुत्तर है, नहीं। यदि हम जनसाधारणके वंचित हिस्सेमें अैसा रवैया ग्रहण करेंगे, तो केवल अपनी और अुनकी कब्र ही खोदेंगे। स्व० सर सुरेन्द्रनाथकी तरह मैं तो जमींदारों और पूंजीपतियोंका जनसाधारणकी सेवाके लिअे अुपयोग करना पसन्द करूंगा। हमें पूंजीपतियोंके लिअे ग़रीबोंके हितोंका बलिदान नहीं करना चाहिये। हमें अुनके हाथोंमें नहीं खेलना चाहिये। हमें अुस हद तक अुन पर भरोसा रखना चाहिये, जिस हद तक वे जनसाधारणकी सेवाके लिअे अपना लाभ छोड़ सकें। क्या तुम्हारे विचारसे अधिक भाग्यशाली वर्ग राष्ट्रीय भावनाओंसे सर्वथा विहीन हैं? अगर तुम्हारा यह खयाल हो तो तुम अुनके साथ घोर अन्याय और जनसाधारणकी कुसेवा करोगे। क्या शासक अुनका शोषण नहीं करते? वे अुच्च भावनाओंसे अछूते नहीं हैं। यह मेरा हमेशाका अनुभव है कि प्रेमपूर्ण बातका अुन पर जरूर असर होता है। यदि हम अुनका विश्वास सम्पादन कर लें और अुन्हें निश्चिन्त कर दें तो हम देखेंगे कि वे क्रमशः जनसाधारणको अपनी दौलतमें हिस्सेदार बनानेके विरुद्ध नहीं हैं। अिसके सिवा, हम जनसाधारणके साथ-साथ अपने-आपसे भी तो पूछें कि क्या हमने अपने और करोड़ों लोगोंके बीचकी खाओी पाट दी है? हम कांचके घरमें रहनेवालोंको पत्थर तो नहीं फेंकने चाहिये। हम कहां तक ग़रीबोंके जीवनमें शरीक होते हैं? मैं अपने लिअे तो स्वीकार करता हूं कि यह अभी तक अेक आकांक्षा ही है। हमने खुद रहन-सहनकी वे आदतें पूरी तरह नहीं छोड़ी हैं, जिनके लिअे हम कहते हैं कि पूंजीपति बदनाम हैं। वर्गयुद्धका विचार मुझे नहीं जंचता। भारतमें वर्गयुद्ध न केवल अनिवार्य नहीं है, बल्कि अुससे हम बच सकते हैं, यदि हमने अहिंसाका सन्देश समझ लिया हो। जो वर्गयुद्धके अनिवार्य होनेकी बातें करते हैं, अुन्होंने या तो अहिंसाके फलितार्थ समझे ही नहीं हैं या केवल अूपर अूपरसे समझे हैं।

प्र० — धनवान स्वयं ग़रीब हुअे बिना ग़रीबोंकी सहायता कैसे कर सकते हैं? धन या पूंजीवाद अैसी प्रणाली है जो अपनी स्थिति और

दरिद्रता बनाये रखनेके लिअे पूंजी और श्रमके बीच बराबरीका अन्तर कायम रखनेकी कोशिश करती है। अिसलिअे क्या अिन दोनोंमें किसी अेकके लिअे यहीं हानि पहुंचाये बिना कोई समझौता कराना संभव है?

अु० — बलवान धनी धनका अुपयोग स्वार्थपूर्ण हेतुओंके लिअे न करके गरीबोंके हितसाधनके लिअे कर सकते हैं। यदि वे अैसा करें तो गरीबों और अमीरोंमें आज जो भीषण खाअी पड़ी हुअी है वह नहीं रहेगी। वर्ग-विभाजन तो रहेगा, मगर वह साधारण होगा, बहुत भारी नहीं होगा। हमें पश्चिमसे आये हुअे पथभ्रष्ट करनेवाले शब्दों और नारोंके वशीभूत नहीं हो जाना चाहिये। क्या हमारी अपनी विशिष्ट पूर्वीय परम्परायें नहीं हैं? क्या पूंजी और श्रमके प्रश्नका हम अपना हल निकालनेमें समर्थ नहीं हैं? वर्णाश्रम धर्मकी प्रणाली यदि अूंचनीच और पूंजी व श्रमके अन्तरको दूर करके अुनका सुमेल साधनेका साधन नहीं है तो और क्या है? अिस विषयमें पश्चिमसे आनेवाली हर चीज पर हिंसाका रंग चढ़ा होता है। मुझे अुस पर अिसलिअे आपत्ति होती है कि अिस मार्गके अन्तमें जो सर्वनाश है, अुसे मैं देख चुका हूं। आजकल पश्चिममें भी अधिक विचारशील लोगोंको अुस अंधकूपको देखकर चिन्ता हो गयी है, जिसकी ओर अुनकी प्रणाली दौड़ी चली जा रही है। और मेरा पश्चिममें जो भी प्रभाव है, वह मेरे अैसा हल निकालनेके सतत प्रयत्नोंके कारण है, जिससे हिंसा और शोषणके कुचक्रसे निकलनेकी आशा होती है। मैंने पाश्चात्य समाज-व्यवस्थाका सहानुभूति-पूर्वक अध्ययन किया है और मुझे पता चला है कि पश्चिमकी आत्मामें जो बेचैनी भरी है, अुसकी जड़में सत्यकी अविश्रांत खोज है। मैं अिस वृत्तिकी कद्र करता हूं। हम वैज्ञानिक अनुसंधानकी अुस वृत्तिसे अपनी पूर्वीय संस्थाओंका अध्ययन करें, तो संसारने जिस समाजवाद और साम्यवादके सपने अभी तक देखे हैं, अुससे अधिक सच्चे समाजवाद और साम्यवादका हम विकास कर लेंगे। यह मान बैठना बेशक गलत है कि जनसाधारणकी दरिद्रताके प्रश्नके बारेमें पाश्चात्य समाजवाद या साम्यवाद अन्तिम हल है।

अमृतबाजार पत्रिका, ३-८-'३४

समाज-सुधार

सत्याग्रहकी सार्वभौमिकताका जिक्र करते हुअे मैंने समय-समय पर जिन स्तंभोंमें कहा है कि अुसका प्रयोग जितना राजनीतिक क्षेत्रमें किया जा सकता है अुतना ही सामाजिक क्षेत्रमें भी किया जा सकता है। वह सरकार, समाज, अपने ही परिवार, पिता, माता, पति या पत्नी, जो भी हों, सभीके खिलाफ समान रूपसे अिस्तेमाल किया जा सकता है। कारण, अिस आध्यात्मिक हथियारकी यह खूबी है कि जब वह हिंसाके रंगसे पूरी तरह अछूता होता है और अुसका प्रयोग केवल शुद्ध प्रेमके हेतुसे होता है, तब वह किसीके भी प्रति और किसी भी स्थितिमें सर्वथा निर्भय होकर काममें लिया जा सकता है। बुराअीके विरुद्ध अुसके प्रयोगका अेक ठोस अुदाहरण धर्मज (खेडा जिला) के प्राणवान विद्यार्थियोंने कुछ ही दिन पहले पेश किया था। अुस घटनाके बारेमें मुझे जो भिन्न-भिन्न पत्र मिले हैं, अुनसे जो तथ्य मालूम हुअे वे ये हैं।

कुछ दिन हुअे धर्मजके अेक सज्जनने अपनी माताके बारहवेंके दिन अेक जातिभोज दिया। अुससे पहले अिस विषय पर वहांके नौजवानोंमें तीव्र विवाद हुआ। वे अन्य कअी स्थानीय निवासियोंकी तरह अिस रिवाजको बहुत नापसन्द करते थे। अुन्हें लगा कि अिस अवसर पर कुछ न कुछ करना चाहिये। अिसलिअे अधिकांशने ये तीनों या अिनमें से कुछ प्रतिज्ञाअें लीं:

१. भोजमें अपने बडोंके साथ शरीक न होना, न अुस अवसर पर परोसे जानेवाले भोजनमें भाग लेना।

२. अिस रिवाजके जोरदार विरोधके रूपमें भोजके दिन अुपवास करना।

३. अिस कार्रवाअीके कारण अुनके बुजुर्ग कोअी कठोर व्यवहार करें, तो अुसे धीरज और खुशीसे सहन करना।

अिस निश्चयके अनुसार जिस दिन भोज दिया गया अुस दिन विद्यार्थी, जिनमें छोटी अुम्रके कुछ बच्चे भी थे, अुपवास पर रहे और

अुन्होंने अपने कथित बुज़ुर्गोंका कोप अपने पर ओढ़ लिया। यह इन
विद्यार्थियोंके लिअे गंभीर आर्थिक परिणामोंके खतरेसे भी खाली न
था। 'बुज़ुर्गों'ने अपने लड़कोंका खर्चा बन्द करनेकी और जो अन्य
सहायता वे स्थानीय संस्थाओंको देते थे वह भी रोक देनेकी धमकी दी;
परन्तु लड़के डटे रहे। अिस प्रकार कोअी २८५ विद्यार्थियोंने जातिभोजमें
शरीक होनेसे अिनकार कर दिया और अधिकांशने अुपवास रखा।

मैं अिन लड़कोंको बधाअी देता हूं और आशा रखता हूं कि हर
जगह विद्यार्थी समाज-सुधार करानेमें प्रमुख भाग लेंगे। भले ही अुन्हें
अपनी गफलत या लापरवाहीके कारण यह बात मालूम न हो, परन्तु जैसे
स्वराज्यकी कुंजी अुनके पास है, ठीक अुसी तरह समाज-सुधार और
अपने धर्मकी रक्षाकी कुंजी भी अुनकी जेबमें ही है। परन्तु मुझे आशा
है कि धर्मजके विद्यार्थियों द्वारा पेश की गअी मिसालसे अुन्हें अपनी
ताकतका भान हो जायगा। मेरी रायमें स्वर्गीय महिलाका सच्चा श्राद्ध
तो अिन युवकोंने अुस दिन अुपवास रखकर किया, और जिन लोगोंने
भोज दिया अुन्होंने अच्छा रुपया बरबाद किया और गरीबोंके सामने
बुरा अुदाहरण रखा। धनवान और रुपयेवाले वर्गको औश्वरकी दी हुअी
दौलतको परोपकारके कामोंमें लगाना चाहिये। अुन्हें समझना चाहिये
कि गरीब लोगोंका बूता शादी या गमीके मौकों पर जातिभोज देनेका
नहीं होता। अिन कुरीतियोंसे बहुतसे गरीब आदमी बरबाद हो चुके हैं।
यदि धर्मजमें जातिभोज पर खर्च किया गया रुपया गरीब विद्यार्थियों
या निर्धन विधवाओंकी सहायतामें या खादी या गोसेवा या 'अछूतों'की
बेहतरीके लिअे खर्च किया जाता, तो वह सफल होता और अुससे स्वर्गीय
आत्माको शांति मिलती। परन्तु जो हुआ अुससे किसीका लाभ नहीं
हुआ। भोजको सब लोग भूल गये और विद्यार्थियों और धर्मजकी
जनताके समझदार व्यक्तियोंको दुःख हुआ।

कोअी यह कल्पना न कर ले कि सत्याग्रह अुस भोजको होनेसे
नहीं रोक सका, अिसलिअे वह व्यर्थ गया। विद्यार्थी स्वयं जानते थे कि
अुनके सत्याग्रहसे तत्काल कोअी ठोस परिणाम निकलनेकी सम्भावना
लगभग नहीं है। परन्तु हम यह जरूर मान सकते हैं कि यदि अुन्होंने

अपनी जागरूकता नहीं छोडी तो कोओी सेठ फिर मृत्युभोज देनेक साहस नहीं करेगा। कोओी भी पुरानी और दीर्घकालीन सामाजिक बुराअ अेक झटकेसे नहीं मिटाओी जा सकती अुसके लिअे सदा धीरज औ दीर्घ अुद्योगकी जरूरत रहती है।

हमारे समाजके 'बुजुर्ग' समयका संकेत पहचानना कब सीखेंगे समाज और देशकी भलाओीके साधनके तौर पर रिवाजोंका अुपयो करनेके बजाय वे कब तक अुनके दास बने रहेंगे? वे अपने बच्चोंक जो ज्ञान प्राप्त करा रहे हैं अुसके व्यावहारिक प्रयोगसे अुन्हें वे कब त अलग रखेंगे? वे अपनी विवेक-शक्तिको वर्तमान मूर्च्छाकी अवस्था मुक्त करके कब जागेंगे और सच्चे अर्थमें 'महाजन' कब बनेंगे?

यंग अिंडिया, १-३-'२८

प्र० — क्या अिस बातका अनुकूल अवसर आ गया है कि भारती युवक समाजको पुनर्निर्माणके लिअे विवश कर दें? यह काम स्वराज्य दिशामें किसी और राजनीतिक प्रयत्नसे पहले हो या पीछे?

अु० — सामाजिक पुनर्रचना और राजनीतिक स्वराज्यकी लड़ा — दोनों बातें साथ-साथ चलनी चाहिये। अिसमें पहले-पीछेका या बटो विभाजनका प्रश्न नहीं हो सकता। परन्तु नअी समाज-व्यवस्था 'विवश करके नहीं लाओी जा सकती, यह अिलाज तो रोगसे भी बदतर होगा मैं अेक अधीर सुधारक हूं। मैं समाजकी सम्पूर्ण और मूलगामी पुनर्रचना पक्षमें हूं; परन्तु अुसका विकास भीतरसे होना चाहिये। वह बाहर हिंसापूर्वक नहीं लादी जानी चाहिये।

अमृतबाजार पत्रिका, ३-८-'३४

प्र० — हम पूनाके विद्यार्थी हैं। हम निरक्षरता-निवार आन्दोलनमें भाग ले रहे हैं। मगर जिन भागोंमें हम जा रहे हैं व शराबी भी हैं, और हम लोगोंको पढ़ाने जाते हैं तो वे हमें धमकि देते हैं। हम जिनमें काम कर रहे हैं वे हरिजन हैं। वे डर जाते है कुछ लोगोंका सुझाव है कि अिन शराबियोंके खिलाफ कानूनी कार्रवा

की जाय। कुछका कहना है कि समझा-बुझाकर अपनानेका आपका तरीका आजमाया जाय। क्या आप हमें सलाह देंगे?

अु० — तुम अच्छा काम कर रहे हो। साक्षरता-आन्दोलन और अैसी अनेक बातें अुस बड़े सुधारकी शाखायें हैं जो शायद वर्तमान युगका सबसे बडा सुधार है। रही बात शराबियोंकी, सो अुनके साथ बीमार आदमियोंका-सा बरताव होना चाहिये। ये हमारी सहानुभूति और सेवाके पात्र हैं। अिसलिअे जब वे नशेमें न हों, तब अुन्हें समझाओ-बुझाओ; और यदि वे कोअी मारपीट भी करे, तो खुशी-खुशी सहन कर लो। मैं अदालती कार्रवाअीको विचारसे बाहर नही समझता। परन्तु वह अिस बातका सबूत होगा कि तुममें पर्याप्त अहिंसा नही है। परन्तु तुम अपने स्वभावके विरुद्ध नही जा सकते। यदि तुम्हारे समझाने-बुझानेका अुन पर असर न हो, तो अुपरोक्त बाधाके कारण तुम्हारा काम रुकना नही चाहिये। अुस समय कानूनी कार्रवाअीका आश्रय लिया जा सकता है। परन्तु कानूनकी शरण जानेसे पहले तुम्हे पूरी अीमानदारीके साथ कोशिश कर लेनी चाहिये।

हरिजन, ८–६–'४०

अेक पत्रलेखकने मुझसे अनुरोध किया है कि जो लोग मेरी बात पर ध्यान देते हैं अुन्हें मैं सावधान कर दू कि वे आगामी दीवालीकी छुट्टियोंमें अपनी खरी कमाअीका रुपया आतिशबाजी, खराब मिठाअियों और स्वास्थ्यके लिअे हानिकारक रोशनी करनेमें न लगायें। मैं अिस सुझावका हृदयसे समर्थन करता हू। अगर मेरी चले तो मैं चाहूंगा कि लोग घरोंको साफ करे और दिलोंको साफ करे और अुन दिनोंमें बच्चोंके लिअे निर्दोष और शिक्षाप्रद मनोरंजनका प्रबन्ध करे। मैं जानता हूं कि आतिशबाजीसे बच्चे बड़े खुश होते हैं। परन्तु अुसका कारण यह है कि बडोंने अुन्हे आतिशबाजीका आदी बना दिया है। मैंने अनभ्यस्त अफ्रीकी बच्चोंको आतिशबाजी चाहते या पसन्द करते नही देखा। अिसके बजाय अुनके यहा नाच होते हैं। बच्चोंके लिअे अिससे ज्यादा अच्छी या स्वास्थ्य-प्रद वस्तु और क्या हो सकती है कि वे खेलकूद और वनभोजनका आयोजन

करे और वहां बाजारकी बनी हुई हानिकर मिठाअियां न ले जाकर ताजे और सूखे फल ले जायं ? अमीर और गरीब दोनों तरहके बच्चोंको अपने हाथों घरकी सफाअी और सफेदी करनेकी तालीम भी दी जा सकती है। शुरूमें छुट्टियोंमें ही सही, यदि अुन्हें समझा-बुझाकर श्रमका गौरव अनुभव करा दिया जाय तो यह अेक अच्छा काम होगा। परन्तु जिस बात पर मैं जोर देना चाहता हूं, वह यह है कि आतिशबाजीका बहिष्कार करके बचाया हुआ सारा नहीं तो कमसे कम कुछ पैसा खादीके काममें दिया जाय, और वह नापसन्द हो तो किसी और काममें दिया जाय, जिसमें गरीबसे गरीब लोगोंकी सेवा होती हो। स्त्री-पुरुष, जवान और बूढ़े सभीको जिससे ज्यादा खुशी और नहीं हो सकती कि वे अपने छुट्टीके दिनोंमें देशके अत्यन्त गरीब लोगोंका स्मरण करते हैं और अुन्हें अपनी खुशीमें शरीक करते हैं।

यंग अिंडिया, २५-१०-'२८

३१

सार्वजनिक कार्यकी आवश्यकता

यदि यह संस्था भारतको कुछ वीरांगनायें, कुछ सच्ची कार्यकर्त्रिया भेंट कर दे, जो समाजके लिअे बेकार न होकर अुसकी सेवामें अपनेको समर्पण कर दें, तो मुझे खुशी होगी। यदि यह महंगी शिक्षा प्राप्त करनेके बाद तुम मुझे चकमा देकर सीधे विवाह कर डालो और क्षितिजसे ओझल हो जाओ, तो तुम देशको धोखा दोगी। मैं यह नहीं कहता कि तुम शादी न करो। परन्तु विवाह करो या अविवाहित रहो, तुम गुलाम मत बनो और देश तुमसे जो चाहता है वह करो। तुमको दया और वीरताका अवतार बनना चाहिये और संसारमें, अपनी रक्षाके लिअे शुद्धताकी अचूक ढाल लेकर, सदा प्रलोभनसे अूपर और निर्भय होकर विचरना चाहिये।

यंग अिंडिया, ११-८-'२७

तुम्हारे माता-पिता तुम्हें गुडिया बननेके लिअे स्कूल नहीं भेजते है। अिसके विपरीत तुमसे दयाकी देविया बननेकी आशा रखी जाती है। तुम यह सोचनेकी भूल न करना कि जो अेक खास तरहकी पोशाक पहनती हैं वे ही दयाकी देविया (Sisters of mercy) कहला सकती हैं। ज्यों ही कोओी स्त्री अपना विचार कम और जो लोग अुससे गरीब और अभागे हैं अुनका विचार अधिक करने लगती है, त्यों ही वह दयाकी देवी बन जाती है। और मुझे जो थैली भेंट की गअी है अुसमें यथाशक्ति दान देकर तुमने दयाकी देवियोका ही काम किया है। क्योंकि यह थैली अुन लोगोंके लिअे भेंट की गअी है, जो दुर्भाग्यवश तुमसे अधिक गरीब हैं।

थोडा-सा रुपया दे देना बहुत आसान है, कोअी छोटी-सी चीज स्वय करना अधिक कठिन है। जिन लोगोके लिअे तुम रुपया दे रही हो, अुनके लिअे तुम्हे सचमुच दर्द हो, तो तुम्हे अेक कदम और आगे बढकर अुन लोगोकी बनाअी हुअी खादी पहननी चाहिये। अगर खादी तुम्हारे सामने लाअी जाय और तुम यह कहो कि 'खादी जरा मोटी है अिसलिअे हम पहन नही सकती', तो मै जान लूगा कि तुममें त्यागवृत्ति नही है।

यह बहुत ही बढिया बात है कि यहा पर अूच-नीच, स्पृश्य-अस्पृश्यका कोअी भेद नही है; और यदि तुम्हारे हृदय भी अिसी दिशामें काम कर रहे है और तुम दूसरी लडकियोसे अपनेको श्रेष्ठ नही समझती, तो सचमुच बहुत अच्छी बात है।

भगवान तुम्हारा भला करे।

विथ गाधीजी अिन सीलोन, पृ० १४५–४६

अिस सस्थामें तुम्हें धार्मिक शिक्षा मिलती है यह बहुत ठीक है। तुम्हारे यहा अेक सुन्दर मन्दिर भी है। तुम्हारे समय-विभागमे मै देखता हू कि तुम अपनी दिनचर्या पूजासे आरम्भ करती हो। ये सब बातें अच्छी और अूचा अुठानेवाली है; परन्तु यह सब आसानीसे अेक सुन्दर विधि बनकर ही रह जायगा, यदि अिस पूजाको नित्य किसी व्यावहारिक कार्यके रूपमें परिणत न किया जाय। अिसलिअे मै कहता हू कि पूजाके कार्य पर दृढतासे डटे रहनेके लिअे तुम चरखा अपनाओ, अुस पर आधा घटा कातो और जिन लाखो लोगोकी हालतका मैंने तुम्हारे सामने वर्णन किया है, अुनका खयाल करो और अीश्वरका नाम लेकर कहो, "मै अुनके खातिर कातती हू।" यदि तुम सच्चे दिलसे और अिस ज्ञानके साथ कातो कि तुम भक्तिका यह सच्चा काम करके अधिक नम्र और अधिक सम्पन्न बन रही हो, अगर तुम दिखावेके लिअे नही, परन्तु अपने अग ढंकनेके लिअे कपडा पहनो, तो तुम्हे खादी पहननेमें अवश्य ही कोअी सकोच नही होगा और तुम अपने और लाखो लोगोके बीच स्नेह-सम्बन्ध स्थापित कर सकोगी।

मैंने तुम्हारी पत्रिकाओंमें, थोड़े क्षम्य गर्वके साथ यह अुल्लेख किया हुआ पाया कि स्कूलकी भूतपूर्व लड़कियां क्या क्या करती रही हैं। मैंने कुछ अिस ढंगकी सूचनायें देखी कि अमुक अमुकने अमुक अमुकके साथ विवाह कर लिया। अैसी चार-पांच सूचनायें थीं। मैं जानता हूं कि जो लड़की सयानी हो जाय अर्थात् २२ या २५ सालकी भी हो जाय और वह शादी कर ले, तो कोअी बेजा बात नहीं है। लेकिन अिन सूचनाओंमें अैसी अेक भी लड़कीका नाम मैंने नहीं देखा, जिसने अपनेको सिर्फ देश और समाजकी सेवाके लिअे समर्पित कर दिया हो। अिसलिअे मैं तुमसे वही बात कहना चाहता हूं, जो मैंने बंगलोरमें लड़कियोंके महाराजा कालेजकी विद्यार्थिनियोंसे कही थी। यानी यह कि यदि तुम सब अिन संस्थाओंसे बाहर निकलते ही निरी गुड़िया बन जाओ और जीवनसे ओझल हो जाओ, तो यह अुन महान प्रयत्नोंका सन्तोषप्रद फल नहीं है, जो शिक्षा-शास्त्रियों और अुदार दानियों द्वारा किये जा रहे हैं।

ज्यादातर लड़कियां स्कूल-कालेजोंसे छूटते ही सार्वजनिक जीवनमें गायब हो जाती हैं। अिस संस्थावाली तुम लोगोंका यह काम नहीं है। तुम्हारे सामने कुमारी अेमरी और दूसरी स्त्रियोंके अुदाहरण मौजूद हैं, जो निरीक्षकका काम करती रही हैं और अगर मैं गलती नहीं कर रहा हूं तो अविवाहिता हैं।

हरअेक लड़की, हरअेक हिन्दुस्तानी लड़की, विवाहके लिअे पैदा नहीं हुअी है। मैं अैसी बहुतसी लड़कियां बता सकता हूं, जो आजकल अेक आदमीकी सेवा करनेके बजाय अपनेको देशसेवामें समर्पित कर रही हैं। वह समय आ गया है जबकि हिन्दू लड़कियां पार्वती और सीताका अुदाहरण, और संभव हो तो अुनसे भी बढ़िया अुदाहरण पेश करें।

तुम शैव होनेका दावा करती हो। तुम जानती हो पार्वतीने क्या किया था? अुसने पतिके लिअे रुपया खर्च नहीं किया, न वह किसीके हाथ बिकना चाहती थी। अिसलिअे आज वह हिन्दू धर्मके आकाशमें सात सतियोंमें से अेक बनकर अुसे सुशोभित कर रही है। अिसका

कारण यह नहीं है कि अुसने किसी शिक्षा-संस्थामें कोअी डिग्री प्राप्त की थी, बल्कि अिसका कारण अुसकी अपूर्व तपस्या है।

मुझे मालूम हुआ है कि यहां दहेजकी घृणित प्रथा है और अुसके कारण युवतियोंको योग्य वर मिलना बहुत ही कठिन हो जाता है। सयानी लड़कियोंसे — तुममें से कुछ सयानी हो गअी हैं — आशा रखी जाती है कि वे अिन सब प्रलोभनोंका प्रतिकार करेंगी। यदि तुम अिन कुरीतियोंका विरोध करना चाहती हो, तो तुममें से कुछको जीवनभर या कमसे कम कुछ वर्ष तक अविवाहित रहकर कार्यारम्भ करना होगा। फिर जब शादी करनेका समय आये और तुम महसूस करो कि तुम्हें कोअी जीवन-साथी चाहिये, तब तुम्हें अैसे आदमीकी लालसा नहीं होगी, जिसके पास रुपया, ख्याति या शरीर-सौंदर्य है, बल्कि तुम्हें अैसे आदमीकी तलाश होगी — जैसे पार्वतीको थी — जिसमें अच्छे चरित्रके लिअे आवश्यक सारे अद्वितीय गुण भरे हों। तुम्हें मालूम है नारदजीने पार्वतीके सामने शिवका कैसा वर्णन किया था — वह दरिद्र है, शरीर पर भस्म लगाये रहते हैं, रूपवान भी नहीं और ब्रह्मचारी हैं। और पार्वतीने कहा, 'हां, वही मेरे पति होंगे।' पार्वतीकी भांति जब तक तुममें से कुछ तपस्या — हजारों वर्ष तक नहीं — करके सन्तोष नहीं मानेंगी, तब तक तुम्हें शिवजीके अनेक संस्करण नहीं मिलेंगे। हम पामर प्राणी अुतनी तपस्या तो नहीं कर सकते, परन्तु कमसे कम अपने जीवन-कालमें तो तुम तपस्या कर ही सकती हो।

यदि तुम्हें ये शर्तें स्वीकार होंगी तो तुम गुड़ियोंके देशमें विलीन हो जानेसे अिनकार कर दोगी और पार्वती, दमयंती, सीता और सावित्रीकी तरह सतियां होनेकी आकांक्षा रखोगी। तभी — अुससे पहले नहीं — तुम, मेरी रायमें, अिस प्रकारकी संस्थामें पढ़नेकी हकदार बनोगी।

भगवान तुममें अिस महत्त्वाकांक्षाकी आग पैदा करे; और यदि वह प्रेरणा तुममें जागृत हो जाय, तो वह तुम्हें अिस महत्त्वाकांक्षाकी पूर्तिमें सहायक हो।

विथ गांधीजी अिन सीलोन, पृ० १४७–४९

ठन भर जायगी, अुसका स्थायी अिलाज नहीं होगा। जहां बदमाशी करनेवालोंको हम जानते हैं वहां तो मुझे यकीन है कि अगर अुन्हें समझाया जाय तो आपकी प्रेम और नम्रताकी बात पर वे ध्यान देंगे। परन्तु अुस आदमीका क्या किया जाय, जो पाससे साअिकल पर निकलता हुआ किसी लड़की या स्त्रीके साथ किसी मर्दको न देखकर गंदी जबान अिस्तेमाल करे? अुसे समझाने-बुझानेका आपको कोअी मौका नहीं मिलता। अुससे दुबारा मिलनेकी कोअी संभावना नहीं होती। अुसे पहचाना भी नहीं जा सकता। आप अुसका पता भी नहीं जानते। अैसे मामलोंमें बेचारी लड़की या स्त्री क्या करे? अुदाहरणार्थ मैं आपको कल (२६ अक्तूबरकी) रातका खुद अपना अनुभव बताती हू। मैं शामको साढ़े सात बजेके करीब अेक खास कामसे अपनी अेक सहेलीके साथ जा रही थी। अुस समय कोअी पुरुष साथी मिलना असंभव था और काम अितना जरूरी था कि टाला नहीं जा सकता था। रास्तेमें अेक सिक्ख युवक अपनी साअिकल पर जा रहा था। वह कुछ बडबडाता रहा और अितना पास आ गया कि हम अुसकी बात सुन सकें। हम जानती थी कि अुसने हमें निशाना बनाया है। हमारे हृदयको ठेस पहुची और बेचैनी हुअी। सडक पर भीड नही थी। हम कुछ ही कदम गअी होंगी कि साअिकलवाला लौट आया। वह काफी दूर था तभी हमने अुसे तुरन्त पहचान लिया। वह घूमकर हमारी तरफ आया। राम जाने अुसका अिरादा अुतर पडनेका था या वह केवल हमारे पाससे गुजरना चाहता था। हमें अपने शरीरबल पर विश्वास नही था। मैं अेक साधारण लडकीसे भी दुर्बल हू। परन्तु मेरे हाथमें अेक बडी पुस्तक थी। किसी तरह अचानक मुझमें साहसका संचार हुआ। मैंने साअिकल पर भारी पुस्तक फेंकी और गरजकर बोली, 'फिरसे करेगा शरारत?' वह मुश्किलसे अपना संतुलन रख सका, अुसने साअिकल तेज की और भाग खडा हुआ। अब अगर मैं किताब साअिकल पर न दे मारती तो शायद हमें वह अखीर

कभी-कभी कोअी नेता विद्यार्थियोंके अैसे आचरणके विरुद्ध ज़ोरदार व्याख्यान देते पाये जाते हैं। परन्तु अिस गम्भीर समस्याको हल करनेके लिये स्पष्ट निश्चय कोअी नहीं करता। आपको यह जानकर गहरा आश्चर्य होगा कि दीवाली और अैसी ही दूसरी छुट्टियोंके दिनोंमें अखबारोंमें अैसी सूचनायें निकलती हैं कि स्त्रियां रोशनी तक देखनेको घरसे बाहर न निकलें। अिस अेक ही दृष्टान्तसे आप मालूम कर सकेंगे कि हमारे अिस भागमें हमारी क्या दशा हो रही है। अैसी चेतावनियोंके लिखने और पढ़नेवाले दोनोंको ही शर्म नहीं आती कि अैसी चेतावनियां निकालनी पड़ती हैं।"

अेक और पंजाबी लड़की, जिसे मैंने यह पत्र पढ़नेको दिया, अपने खुदके कॉलेजके दिनोंके अनुभवसे अिस वर्णनका समर्थन करती है

और मुझे बताती है कि जो कुछ मेरी पत्रलेखिकाने बयान किया है, वह अधिकांश लड़कियोंका समान अनुभव है।

अेक अनुभवी महिलाके पत्रमें लखनअूकी अुसकी मित्र लड़कियोंके अनुभवोंका वर्णन है। अुन्हें सिनेमा-घरोंमें अनके पीछेकी लाअिनमें बैठे हुअे लड़के छेड़ते हैं और तरह-तरहकी भाषा काममें लेते हैं जिसे मैं तो अश्लील ही कह सकता हूं। कहा जाता है कि वे भद्दे मजाक तक कर बैठते हैं, जिनका वर्णन मेरी पत्रलेखिकाने तो किया है, परन्तु मुझे यहां नहीं करना चाहिये।

यदि तात्कालिक और व्यक्तिगत राहतकी ही जरूरत हो, तो [illegible] जो अुपाय अपनेको शरीरसे दुर्बल बतानेवाली अुस लड़कीने काममें लिया अर्थात् सािअकलवाले पर पुस्तक दे मारी, वह बिलकुल ठीक था। यह बहुत पुराना अुपाय है। और मैं अिन लेखोंमें कह चुका हूं कि जब कोअी आदमी हिंसक बनना चाहता है तो शारीरिक दुर्बलता अुस हिंसाके कारगर अिस्तेमालमें बाधक नहीं बनती भले ही विरोधी शरीरसे कितना ही बलवान हो। और हम जानते हैं कि वर्तमान युगमें शरीर-बल काममें लेनेके अितने तरीके अीजाद हो चुके हैं कि काफी बुद्धिवाली छोटीसी लड़की भी मृत्यु और संहार तकका विधान कर सकती है। आजकल अैसी स्थितिमें, जैसी मेरी पत्रलेखिकाने बयान की है लड़कियोंको अपनी रक्षा करनेकी तालीम देनेका फैशन बढ़ रहा है। परन्तु वह अितनी समझदार है कि वह जानती है कि यद्यपि वह अपने हाथकी पुस्तकको आत्मरक्षाका हथियार बनाकर [illegible] अुसका कारगर अिस्तेमाल करके बच गयी, परन्तु अिस बढ़ती हुअी बुराअीका वह सच्चा और स्थायी अिलाज नहीं है। असभ्य और अश्लील शब्दोंसे [illegible] घबरानेकी तो जरूरत नहीं है, परन्तु अुदासीनता भी नहीं होनी चाहिये। अैसी सब घटनायें अखबारोंमें प्रकाशित होनी चाहियें। अपराधियोंके नामोंका पता लग जाय तो अुन्हें छपवा देना चाहिये। अिस बुराअीका भंडाफोड़ करनेमें कोअी झूठी लज्जा या संकोच नहीं होना चाहिये। सार्वजनिक दुराचरणका दण्ड देनेके लिअे लोकमतके बराबर कोअी [illegible]

तक अपनी गंदी भाषासे तंग करता रहता। यह अेक साधारण, शायद तुच्छ, घटना थी। परन्तु कभी आप लाहौर आकर हम अभागी लड़कियोंकी मुसीबतोंकी कहानी सुनें। आप अवश्य अिस समस्याका कोअी अुचित हल खोज सकते हैं। सबसे पहले तो मुझे यह बताअिये कि अूपरोक्त परिस्थितिमें लड़कियां अहिंसाका सिद्धान्त लागू करके कैसे अपनी रक्षा कर सकती हैं? दूसरे, स्त्री-जातिका अपमान करनेकी दुष्टोंकी घृणित आदतका अिलाज क्या है? आप यह तो नहीं कहेंगे कि जब तक बचपनसे स्त्री-जातिके साथ सम्मानका व्यवहार करनेकी शिक्षा पाकर नयी पीढ़ी तैयार न हो जाय, तब तक हम ठहरें और अिस अपमानका कड़ुआ घूंट चुपचाप पीती रहें। सरकार अिस सामाजिक बुराअीको दूर करनेकी या तो अिच्छा नहीं रखती या अैसा करनेमें वह असमर्थ है। बड़े नेताओंके पास अैसे प्रश्नोंके लिअे समय नहीं है। कुछ नेता जब सुनते हैं कि किसी लड़कीने वीरतापूर्वक किसी बदमाश लड़केको दंड दिया, तब कहते हैं, 'शाबाश! लड़कियोंको अैसा ही व्यवहार करना चाहिये।' कभी-कभी कोअी नेता विद्यार्थियोंके अैसे आचरणके विरुद्ध जोरदार व्याख्यान देते पाये जाते हैं। परन्तु अिस गम्भीर समस्याको हल करनेके लिअे सतत परिश्रम कोअी नहीं करता। आपको यह जानकर सखेद आश्चर्य होगा कि दीवाली और अैसी ही दूसरी छुट्टीके दिनोंमें अखबारोंमें अैसी सूचनायें निकलती हैं कि स्त्रियां रोशनी तक देखनेको घरसे बाहर न निकलें। अिस अेक ही हकीकतसे आप मालूम कर सकेंगे कि संसारके अिस भागमें हमारी क्या दशा हो गअी है! अैसी चेतावनियोंके लिखने और पढ़नेवाले दोनोंको ही शर्म नहीं आती कि अैसी चेतावनियां निकालनी पड़ती हैं।"

अेक और पंजाबी लड़की, जिसे मैंने यह पत्र पढ़नेको दिया, अपने खुदके कालेजके दिनोंके अनुभवसे अिस वर्णनका समर्थन करती है

और मुझे बताती है कि जो कुछ मेरी पत्रलेखिकाने बयान किया है, वह अधिकांश लडकियोंका समान अनुभव है।

अेक अनुभवी महिलाके पत्रमें लखनअूकी अुसकी मित्र लडकियोंके अनुभवोंका वर्णन है। अुन्हें सिनेमा-घरोंमें अुनके पीछेकी लाअिनमें बैठे हुअे लडके छेडते हैं और तरह-तरहकी भाषा काममें लेते हैं, जिसे मैं तो अश्लील ही कह सकता हू। कहा जाता है कि वे भद्दे मजाक तक कर बैठते हैं, जिनका वर्णन मेरी पत्रलेखिकाने तो किया है, परन्तु मुझे यहा नही करना चाहिये।

यदि तात्कालिक और व्यक्तिगत राहतकी ही जरूरत थी, तो बेशक जो अुपाय अपनेको शरीरसे दुर्बल बतानेवाली अुस लडकीने काममें लिया, अर्थात् साअिकलवाले पर पुस्तक दे मारी, वह बिलकुल ठीक था। यह बहुत पुराना अुपाय है। और मैं अिन स्तभोंमें कह चुका हू कि जब कोअी आदमी हिंसक बनना चाहता है, तो शारीरिक दुर्बलता अुस हिंसाके कारगर अिस्तेमालमें बाधक नही बनती, भले ही विरोधी शरीरसे कितना ही बलवान हो। और हम जानते हैं कि वर्तमान युगमें शरीर-बल काममें लेनेके अितने तरीके अीजाद हो चुके हैं कि काफी बुद्धिवाली छोटीसी लडकी भी मृत्यु और सहार तकका विधान कर सकती है। आजकल अैसी स्थितिमें, जैसी मेरी पत्रलेखिकाने बयान की है, लडकियोंको अपनी रक्षा करनेकी तालीम देनेका फैशन बढ रहा है। परन्तु वह अितनी समझदार है कि वह जानती है कि यद्यपि वह अपने हाथकी पुस्तकको आत्मरक्षाका हथियार बनाकर फिलहाल अुसका कारगर अिस्तेमाल करके बच सकी, परन्तु अिस बढती हुअी बुराअीका यह सच्चा और स्थायी अिलाज नही है। असभ्य और अश्लील शब्दोंके मामलेमें घबरानेकी तो जरूरत नही है, परन्तु अुदासीनता भी नहीं होनी चाहिये। अैसी सब घटनायें अखबारोंमें प्रकाशित होनी चाहिये। अपराधियोंके नामोंका पता लग जाय तो अुन्हें छपवा देना चाहिये। अिस बुराअीका भंडाफोड़ करनेमें कोअी झूठी लज्जा या सकोच नही होना चाहिये। सार्वजनिक दुराचरणका दण्ड देनेके लिअे लोकमतसे बढकर कोअी चीज

नहीं है। असमें सन्देह नहीं कि, जैसा पत्रलेखिका कहती है, अैसे मामलात लोग वहीं अुदासीनतासे देखते हैं। परन्तु दोष अैसी जनताका ही नहीं है। असभ्यताके अुदाहरण अुनके सामने आने चाहिये। जैसे चोरीका मुकदमा अुस वक्त तक नहीं किया जा सकता, जब तक चोरोंके सामने प्रकाशित करके अुनकी तलाशी न की जाय, वैसे ही असभ्य व्यवहारकी घटनाओंका अिलाज भी तब तक असंभव होगा, जब तक अुन्हें दबाया जाता रहेगा। अपराध और पापको घात लगानेके लिअे आम तौर पर अंधेरेकी जरूरत होती है। जब अुन पर प्रकाश पड़ता है, तब वे गायब हो जाते हैं।

लेकिन मेरा खयाल है कि आधुनिक लड़कियोंको भी अनेकोंकी दृष्टिमें आकर्षक बनना प्रिय है। अुन्हें साहसमें प्रेम होता है। मेरी पत्र-लेखिका तो असाधारण मालूम होती है। आधुनिक लड़कियां हवा, मेह और धूपसे बचनेके लिअे कपड़े नहीं पहनती, परन्तु लोगोंका ध्यान आकर्षित करनेके लिअे पहनती हैं। वे अपनेको रंगकर कुदरतको मात करना और असाधारण सुन्दर दिखना चाहती हैं। अहिंसाका मार्ग अैसी लड़कियोंके लिअे नहीं है। मैंने अिन स्तंभोंमें कअी बार कहा है कि हमारे भीतर अहिंसक वृत्तिका विकास होनेके लिअे अमुक निश्चित नियम होते हैं। वह परिश्रमपूर्ण प्रयत्न है। सोचने और रहनेके तरीकेमें क्रांति करनी पड़ती है। यदि मेरी पत्रलेखिका और अुसीकी भांति सोचने-वाली लड़कियां बताये हुअे ढंग पर अपने जीवनमें क्रांति कर लें, तो अुन्हें जल्दी ही पता लग जायगा कि जो युवक अुनके कुछ भी सम्पर्कमें आते हैं, वे अुनका आदर करना और अुनकी अुपस्थितिमें अुत्तम व्यवहार करना सीख जायेंगे। परन्तु यदि संयोगवश अुन्हें मालूम हो, जैसा कभी हो सकता है, कि अुनकी अिज्जत पर हमला होनेका खतरा है, तो अुन्हें अपने भीतर अितना साहस पैदा कर लेना चाहिये कि मर जायं, मगर अिन्सानकी हैवानियतके सामने न झुकें। यह कहा जाता है कि कभी-कभी लड़कीके मुहमें कपड़ा ठूसकर या हाथ-पैर बांधकर अुसे अितना बेबस बना दिया जाता है कि वह अुतनी आसानीसे नहीं मर सकती जितना मेरा खयाल है। मैं दावेसे कह सकता हू कि जिस लड़कीका मुकाबला

करनेका दृढ संकल्प होगा, वह अुसे सारे बन्धनोंको तोड सकती है दृढ अिच्छाशक्ति भरनेका बल दे देती है।

परन्तु यह शौर्य और दिलेरी अुन्हींके लिअे संभव है जिन्हों[illegible] अिसका अभ्यास कर लिया हो। जिनका अहिंसामें सजीव विश्वास न हो वे साधारण आत्मरक्षाकी कला सीख लें और शौर्यहीन [illegible] व्यवहारमें अपनी रक्षा कर लें। परन्तु बड़ा सवाल यह है कि [illegible] साधारण सभ्यतासे भी अितना विहीन क्या होना चाहिये कि [illegible] बालिकाओंको सदा अुनकी छेड़छाड़का डर बना रहे? [illegible] दुख होता है कि अधिकांश नवयुवकोंमें शौर्यका बिलकुल [illegible] रहा। परन्तु अेक वर्गके नाते सामूहिक रूपमें अुन्हें अपनी [illegible] बहुत ध्यान रखना चाहिये और अपने साथियोंमें [illegible] अनुचित घटनाका अुन्हें अुपाय करना चाहिये। [illegible] अिज्जतको अुतनी ही प्यारी समझना सीखना चाहिये जितनी कि [illegible] अपनी मा-बहनोंकी अिज्जत है। यदि वे शिष्टता और [illegible] सीखेंगे, तो अुन्हें मिलनेवाली सारी शिक्षा व्यर्थ [illegible]

और क्या प्रोफेसरों और शिक्षकोंका भी यह काम [illegible] है कि व[illegible] अपने विद्यार्थियोंमें शराफत लानेकी अुतनी ही चिन्ता [illegible] जितनी कि अु[illegible] पाठ्यक्रमके विषयोंमें अुन्हें तैयार करनेकी रहती है?

हरिजन, ३१-१२-'३८

मुझे ११ लड़कियोंकी तरफसे लिखा हुआ अेक पत्र मिला है। अुनके नाम और पते मेरे पास भेजे गये हैं। मैं अुस पत्रको [illegible] अितना परिवर्तन करके नीचे दे रहा हूं, जिससे वह अधिक पढ़ने लायक बन जाय, लेकिन अुसके अर्थको किसी तरह [illegible] बदल [illegible] हूं।

> "मालूम होता है आधुनिक लड़कोंने अपना [illegible] बना लिया है कि आपने अुन्हें बारेमें [illegible] कहा कि अुसे भी अनेकोंकी दृष्टिमें आपत्तिजनक [illegible] दिया है। आपका यह वचन, जिसमें आम तौर पर लड़कोंके बारेमें [illegible] विचार प्रगट होता है बहुत प्रेरणादायक नहीं है।

वे न तो स्त्रियोंके प्रति विशेष सुविधाके नियमोंकी शरण लेना चाहती हैं और न यह चाहती हैं कि वे चुपचाप खड़ी रहें और न्यायाधीश मनमाने तौर पर अुनको दोषी ठहरा दे। सचाअी सामने आनी ही चाहिये, और आधुनिक लड़की सचाअीका सामना करनेका काफी साहस रखती है।"

मेरी पत्रलेखिकाओंको शायद यह पता नहीं है कि मैंने ४० वर्षसे भी पहले दक्षिण अफ्रीकामें भारतीय स्त्रियोंकी सेवा आरम्भ की थी, जब शायद अुनमें से किसीका जन्म भी न हुआ होगा। मेरा यह विश्वास है कि मैं *स्त्री-जातिके लिअे कोअी अपमानजनक बात लिख* ही नहीं सकता। स्त्री-जातिके लिअे मेरा आदर अितना अधिक है कि वह मुझे अुनका बुरा सोचने ही नहीं दे सकता। जैसा कि अंग्रेजीमें कहा गया है, स्त्री पुरुषका अुत्तम अर्धांग है। और मेरा लेख विद्यार्थियोंकी बेहयाअीकी कलअी खोलनेके लिअे लिखा गया था, न कि लड़कियोंकी दुर्बलताका विज्ञापन करनेके लिअे। परन्तु रोगका निदान करते समय मेरा यह धर्म था कि सही अिलाज बतानेके खयालसे बीमारी पैदा करनेवाले सभी कारणोंका अुल्लेख करूं।

'आधुनिक लड़की' शब्दका विशेष अर्थ है। अिसलिअे अपनी बातका क्षेत्र कुछ लड़कियों तक सीमित रखनेका कोअी सवाल नहीं था। परन्तु जो लड़कियां अंग्रेजी शिक्षा पाती हैं, वे सब आधुनिक लड़कियां नहीं हैं। मैं बहुतसी अैसी लड़कियोंको जानता हूं, जिन्हें 'आधुनिक लड़की'की वृत्तिने छुआ तक नहीं है; परन्तु कुछ लड़कियां हैं, जो आधुनिक लड़कियां बन गअी हैं। मेरे शब्दोंका अर्थ भारतीय विद्यार्थिनियोंको यह चेतावनी देनेका था कि वे आधुनिक लड़कीकी नकल करके अुस समस्याको, जो गंभीर खतरा बन गअी है, पेचीदा न बनावें। कारण, जिस समय मुझे अुपरोक्त पत्र मिला, अुसी समय अेक आन्ध्रकी विद्यार्थिनीका पत्र भी मिला, जिसमें आन्ध्रके विद्यार्थियोंके व्यवहारकी सख्त शिकायत की गअी थी। अुसमें जो वर्णन दिया गया है, वह लाहौरवाली लड़कीके वर्णनसे भी खराब है। अिस आन्ध्रपुत्रीका कहना है कि अुसकी सहेलियोंके सादे वेशसे अुनकी रक्षा नहीं होती। परन्तु

"अिन दिनों जब स्त्रियां चहारदीवारीसे निकलकर पुरुषोंकी सहायताके लिअे आगे आ रही हैं और जीवनका भार सहन करनेमें समान भाग ले रही हैं, यह सचमुच आश्चर्यकी बात है कि अुनके साथ पुरुषोंका दुर्व्यवहार होने पर भी दोष स्त्रियोंको ही दिया जाता है। अिससे अिनकार नहीं किया जाता कि असे दृष्टांत दिये जा सकते हैं, जिनमें दोनों ही पक्षोंका अेकसा अपराध सिद्ध किया जा सके। कुछ लड़कियां असी हो सकती हैं, जिन्हें अनेकों भ्रमरोंकी दृष्टिमें आकर्षक बनना प्रिय हो। परन्तु असी घटनाओंसे यह तो साबित होता ही है कि फूलोंकी खोजमें सड़कों पर मंडरानेवाले अनेक भ्रमर भी मौजूद हैं। और यह तो कभी नहीं माना जा सकता और न माना जाना चाहिये कि सभी आधुनिक लड़कियां असी होती हैं और सभी आधुनिक नौजवान भ्रमर होते हैं। आप खुद बहुतसी आधुनिक लड़कियोंके सम्पर्कमें आये हैं और आपको अुनके दृढ़ निश्चय, त्याग और अैसी अुत्तम स्त्रियोचित गुणोंका परिचय मिला होगा।

"जहां तक आपकी पत्रलेखिकाके बताये हुअे दुर्व्यवहारोंके खिलाफ लोकमत तैयार करनेका सवाल है, यह काम लड़कियोंके करनेका नहीं है। अिसका कारण झूठी शर्म नहीं, बल्कि असमर्थता है।

"परन्तु आप जैसे जगद्-वंद्य पुरुषका अैसा कथन यह सिद्ध करता है कि आप भी अिस दकियानूसी और अशोभनीय कहावतका समर्थन करते हैं कि 'नारी नरककी खान' है।

"परन्तु अुपरोक्त बातोंसे यह निष्कर्ष न निकालिये कि आजकलकी लड़कियोंमें आपके लिअे आदर नहीं है। वे आपकी अुतनी ही अिज्जत करती हैं, जितनी हरअेक नौजवान करता है। लेकिन अुन्हें यह बहुत बुरा लगता है कि कोअी अुनसे घृणा करे या अुन पर दया करे। अगर वे सचमुच दोषी हों तो वे अपना तौर-तरीका सुधारनेको तैयार हैं। अुन्हें दोष देनेसे पहले अुनका कोअी दोष हो तो वह पूरी तरह साबित करना चाहिये। अिस बारेमें

वे न तो स्त्रियोंके प्रति विशेष सुविधाके नियमोंकी शरण लेना चाहती हैं और न यह चाहती हैं कि वे चुपचाप खड़ी रहें और न्यायाधीश मनमाने तौर पर अनको दोषी ठहरा दे। मचाओी सामने आनी ही चाहिये, और आधुनिक लड़की मचाओीका सामना करनेका काफी साहस रखती है।"

मेरी पत्रलेखिकाओंको शायद यह पता नहीं है कि मैंने ४० वर्षसे भी पहले दक्षिण अफ्रीकामें भारतीय स्त्रियोंकी सेवा आरम्भ की थी, जब शायद अनमें से किसीका जन्म भी न हुआ होगा। मेरा यह विश्वास है कि मैं स्त्री-जातिके लिअे कोअी अपमानजनक बात लिख ही नहीं सकता। स्त्री-जातिके लिअे मेरा आदर अितना अधिक है कि वह मुझे अनका बुरा सोचने ही नहीं दे सकता। जैसा कि अंग्रेजीमें कहा गया है, स्त्री पुरुषका अुत्तम अर्धांग है। और मेरा लेख विद्यार्थियोंकी बेहयाअीकी कलअी खोलनेके लिअे लिखा गया था, न कि लड़कियोंकी दुर्बलताका विज्ञापन करनेके लिअे। परन्तु रोगका निदान करते समय मेरा यह धर्म था कि सही अिलाज बतानेके खयालसे बीमारी पैदा करनेवाले सभी कारणोंका अुल्लेख करूं।

'आधुनिक लड़की' शब्दका विशेष अर्थ है। अिसलिअे अपनी बातका क्षेत्र कुछ लड़कियों तक सीमित रखनेका कोअी सवाल नहीं था। परन्तु जो लड़कियां अंग्रेजी शिक्षा पाती हैं, वे सब आधुनिक लड़कियां नहीं हैं। मैं बहुतसी अैसी लड़कियोंको जानता हूं, जिन्हें 'आधुनिक लड़की' की वृत्तिने छुआ तक नहीं है, परन्तु कुछ लड़कियां हैं, जो आधुनिक लड़कियां बन गअी हैं। मेरे शब्दोंका अर्थ भारतीय विद्यार्थिनियोंको यह चेतावनी देनेका था कि वे आधुनिक लड़कीकी नकल करके अुस समस्याको, जो गंभीर खतरा बन गअी है, पेचीदा न बनावें। कारण, जिस समय मुझे अुपरोक्त पत्र मिला, अुसी समय अेक आन्ध्रकी विद्यार्थिनीका पत्र भी मिला, जिसमें आन्ध्रके विद्यार्थियोंके व्यवहारकी सख्त शिकायत की गअी थी। अुसमें जो वर्णन दिया गया है, वह लाहौरवाली लड़कीके वर्णनसे भी खराब है। अिस आन्ध्रपुत्रीका कहना है कि अुसकी सहेलियोंके सादे वेशसे अुनकी रक्षा नहीं होती। परन्तु

अुनमें अितना साहस नहीं है कि जो लड़के अपनी संस्थाके लिअे कलंक हैं, अुनके अुपद्रवोंका भण्डाफोड़ कर सकें। मैं आन्ध्र-विश्वविद्यालयके अधिकारियोंसे अिस शिकायत पर ध्यान देनेकी सिफारिश करता हूं।

अिन ११ लड़कियोंसे मेरा अनुरोध है कि वे विद्यार्थियोंके असभ्य व्यवहारके खिलाफ अेक जिहाद शुरू कर दें। अीश्वर अुन्हींकी मदद करता है, जो अपनी मदद आप करते हैं। लड़कियोंको पुरुषोंकी गुण्डागिरीसे अपनी रक्षा करनेकी कला सीख लेनी चाहिये।

हरिजन, ८-२-'३९

मैं शिक्षाके साहित्यिक पहलूसे सांस्कृतिक पहलूको अधिक महत्व देता हू। संस्कृति नींव है, यह पहली चीज है, जो लड़कियोंको यहासे मिलनी चाहिये। यह तुम्हारे चरित्र और व्यक्तिगत व्यवहारकी छोटीसे छोटी बातमें भी प्रगट होनी चाहिये। तुम्हारे बैठने, अुठने, चलने, कपड़े पहनने वगैराके ढगसे अेक ही नजरमें हर किसीको यह लगना चाहिये कि तुम अिस संस्थासे निकली हो। तुम्हारी बोलीमें, आनेवालों और अतिथियोंके साथ व्यवहार करनेके तुम्हारे तरीकेमें और आपसमें तथा अपने शिक्षकों और बुजुर्गोंके प्रति तुम्हारे बरतावमें भीतरी संस्कृतिका प्रतिबिम्ब पडना चाहिये।

मुझे अिस बातसे भी खुशी हुअी कि जब तुम मुझसे मिलने आअी, तब भंगी-निवासके सारे रास्ते पैदल आअी और गअी। परन्तु यदि तुम मुझे खुश करनेको ही पैदल चली हो, तो तुम्हारे कष्ट-सहनमें कोअी तारीफकी बात नही थी। अिससे तुम्हे कोअी लाभ नही होगा। तुम्हें सवारी काममें लेनेके बजाय पैदल चलनेका नियम बना लेना चाहिये। लाखों लाखोंके लिअे मोटरगाडी नही है। अिसलिअे तुम अुसे छोड दो। लाखो तो रेलयात्रा भी नही कर सकते। अुनका गाव ही अुनकी दुनिया है। यह बहुत छोटी बात है। परन्तु यदि तुम अिस नियमका सवाअीसे पालन करोगी, तो अिससे तुम्हारा सारा जीवन बदल जायगा और अुस माधुर्यसे भर जायगा, जो स्वाभाविक सादगीमें होता है।

हरिजन, ५-५-'४६

३३

दहेजकी कुप्रथा

अेक पत्रलेखकने मुझे अेक अखबारकी कतरन भेजी है, जिसमे प्रगट होता है कि हाल ही में हैदराबाद (सिन्ध) में वरोकी माग भयकर रूपमे बढ रही है। अिम्पीरियल टेलीग्राफ अिंजीनियरिंग सर्विसके अेक कर्मचारीने सगाओीमें २०,००० रु० नकद दहेजके तौर पर कन्याके माता-पितासे अैठ लिये और विवाहके दिन और बादमें विशेष अवसरो पर भारी रकमें देनेके वचन लिये। कोअी भी नौजवान, जो दहेजको विवाहकी शर्त बनाता है, अपनी शिक्षा और अपने देशको कलंकित करता है और स्त्री-जातिका अपमान करता है। देशमें कअी युवक-आन्दोलन चल रहे हैं। काश ये आन्दोलन अिस प्रकारके प्रश्नोको हल करनेका प्रयत्न करें। अैसे मडल भीतरसे ठोस सुधार करनेवाली सस्थायें बननेके बजाय, जैसा कि अुन्हें होना चाहिये, अकसर आत्मप्रशसाके साधन बन जाते हैं। कभी-कभी ये सस्थायें सार्वजनिक आन्दोलनोको सहायता देनेका अच्छा काम जरूर करती है। परन्तु यह याद रखना चाहिये कि देशके युवकोको सार्वजनिक प्रशसाके रूपमें पुरस्कार मिल जाता है। अैसे कामके पीछे भीतरी सुधारका प्रयत्न न हो, तो नौजवानोमें नैतिक कमजोरी आ जानेकी सभावना रहती है। क्योकि अुनमें अनुचित आत्मसन्तोषकी भावना पैदा हो जाती है। दहेजकी पतनकारी प्रथाकी निंदा करनेके लिअे सबल लोकमत पैदा किया जाना चाहिये और जो युवक अिस तरहके पापके पैसेसे अपने हाथ गदे करते हैं, अुनका मामाजिक बहिष्कार होना चाहिये। लडकियोंके माता-पिताको अंग्रेजीकी डिग्रियोंकी चकाचौंधमें फंसना बन्द कर देना चाहिये और अपनी छोटी [illegible] और

प्रान्तोंके दायरेसे बाहर निकलकर अपनी लड़कियोंके लिअे सच्चे और बहादुर नौजवान तलाश करनेमें सकोच नही करना चाहिये।

यंग अिंडिया, २१-६-'२८

मत्री श्री मीरचदानी मुझसे सुझाव मांगते है। अभी तो अेक ही सुझाव मेरे खयालमें आता है और वह यह कि अिस संस्थाको 'देती-लेती' की प्रथाके विरुद्ध अैसा लोकमत तैयार करना चाहिये, जिसका सामना न किया जा सके। शिक्षित 'आमिल' युवक विवाह योग्य लड़कियोंके गरीब माता-पिताको चूस लेनेमें अिसीलिअे समर्थ होते हैं कि अिस रिवाजके विरुद्ध सक्रिय लोकमत तैयार नही है। स्कूलों और कालेजोंमें तथा लड़कियोंके माता-पिताओंमें अिस सम्बन्धमें काम होना चाहिये। माता-पिताको अपनी पुत्रियोंको अैसी शिक्षा देनी चाहिये कि जो नौजवान शादीकी कीमत मागे अुससे विवाह करनेसे वे अिनकार कर दें और अैसी अपमान भरी शर्तें स्वीकार करनेके बजाय कुंवारी रहना पसन्द करें। विवाहका सम्मानपूर्ण आधार परस्पर प्रेम और दोनो पक्षोंकी स्वीकृति ही हो सकती है।

यंग अिंडिया, २७-१२-'२८

'देती-लेती' की निन्दनीय प्रथाके बारेमें तुम्हारा क्या कहना है? अपनी पत्नियोंको अपने घरों और दिलोंकी रानिया बनानेके बजाय तुमने अुन्हें खरीद और बिक्रीका सामान बना रखा है! क्या अंग्रेजी साहित्यको पढकर तुमने यही सबक सीखा है? स्त्रीको पुरुषकी अर्धांगिनी बताया गया है। परन्तु तुमने अुसका दर्जा घटा कर अुसे दासी बना दिया है। नतीजा यह है कि तुम्हारा देश अिस समय लकवेकी हालतमें पड़ा हुआ है। अन्तमें गाधीजीने कहा: "स्वराज्य कायरोंके लिअे नही परन्तु अुनके लिअे है, जो हसते हुअे फांसीके तख्ते पर चढ़ जायं और अपनी आखों पर पट्टी भी न बाधने दें। प्रतिज्ञा करो कि तुम 'देती-लेती' का कलंक मिटा दोगे, और अपनी बहनों और पत्नियोंको फिरसे अुनकी पूरी प्रतिष्ठा और स्वातंत्र्य प्राप्त करानेमें मर मिटोगे।

तब मैं समझूगा कि तुम अपने देशकी स्वतन्त्रताके लिअे तैयार हो।" अिसके बाद वहा अुपस्थित छात्राओको सबोधन करके अुन्होने कहा "जहा तक तुम नौजवान लडकियोका सम्बन्ध है, मैं तुमसे अितना ही कहूगा कि अगर मेरी देखरेखमें कोअी लडकी हो तो अुसे मैं जीवन भर कुवारी रखना मंजूर करूगा, परन्तु किसी अैसे आदमीको नही दूगा, जो अुसे पत्नी बनानेके बदलेमें अेक पैसेकी भी आशा रखता हो।"

यंग अिंडिया, १४–२–'२९

'स्टेट्समैन' ने अिस रिवाज (दहेज) के विरुद्ध आम तौर पर जिहाद छेड़ रखा है। अिसमें सन्देह नही कि यह प्रथा अमानुषिक और कठोर है। परन्तु जहा तक मुझे मालूम है, लाखो गरीबोसे अिसका सम्बन्ध नही है। यह रिवाज मध्यम श्रेणीके लोगो तक सीमित है, जो भारतीय मानवताके महासागरमें अेक बूद मात्र है। जब कभी हम रीति-रिवाजकी बात करते है, तब सामान्यत मध्यम श्रेणीका ही विचार करते है। देहातमें रहनेवाले करोडो लोगोके भी अपने रीति-रिवाज और दुख-दर्द होते है, जिनका हमें अभी तक बहुत थोडा ज्ञान है।

किन्तु अिसका यह अर्थ नही कि दहेजकी कुप्रथाकी अिसीलिअे अुपेक्षा की जाय कि वह अिस देशके बहुत थोडे लोगो तक सीमित है। यह प्रथा मिटनी ही चाहिये। विवाह माता-पिताओं द्वारा किया जानेवाला रुपये-पैसेका सौदा नही रहना चाहिये। अिस प्रथाका जाति-प्रथासे गहरा सम्बन्ध है। जब तक किसी विशेष जातिके दो-चार सौ युवक-युवतियों तक ही वर या वधूका चुनाव सीमित रहेगा, तब तक यह प्रथा बनी ही रहेगी, भले अुसके विरोधमें कुछ भी कहा जाय। अगर अिस बुराअीको जडसे मिटाना है, तो लडके-लडकियो या अुनके माता-पिताओंको जातिके बन्धन तोडने होंगे। फिर विवाहकी अुम्र भी बढानी होगी। और यदि जरूरत हो, अर्थात् योग्य वर न मिले, तो लडकियोंको कुवारी रहनेका भी साहस करना होगा। अिन सारी बातोका मतलब यह हुआ कि शिक्षा अिस ढगकी दी जाय, जिससे राष्ट्रके नौजवानोकी मनोवृत्तिमें क्राति पैदा हो जाय। दुर्भाग्यसे

आजकी शिक्षा-प्रणालीका हमारी परिस्थितियोंके साथ कोअी सम्बन्ध नहीं है और अिसलिअे राष्ट्रके बहुत ही थोड़े लड़कों और लड़कियोंको जो शिक्षा मिलती है, अुसका अुन परिस्थितियों पर लगभग कुछ भी असर नहीं होता। अिसलिअे अिस बुराअीको कम करनेके लिअे जो कुछ किया जा सकता हो जरूर करना चाहिये। परन्तु मेरे लिअे यह स्पष्ट है कि यह बुराअी और दूसरी अनेक बुराअियां तभी दूर होंगी, जब शिक्षा देशकी तेजीसे बदलती हुअी परिस्थितियोंके अनुरूप हो। अैसा क्यों है कि जितने लड़के और लड़कियां कालेजोंकी शिक्षा ग्रहण करके भी अेक अैसी प्रत्यक्ष कुरीतिका विरोध करनेमें असमर्थ या अनिच्छुक पाये जाते हैं, जिसका असर अुनके भविष्य पर विवाहके जितना ही गहरा होता है? शिक्षित लड़कियां वर न मिलनेके कारण आत्महत्या क्यों करें? अुनकी शिक्षा किस कामकी, यदि अुससे अुनमें अेक अैसे रिवाजका विरोध करनेकी शक्ति नहीं आती, जिसका किसी तरह समर्थन नहीं किया जा सकता और जो मनुष्यकी नैतिक भावनाओंके विरुद्ध है? अुत्तर स्पष्ट है। शिक्षा-प्रणालीकी जड़में ही अैसी कोअी खराबी है, जिससे लड़कियों और लड़कोंमें सामाजिक या दूसरी बुराअियोंसे लड़नेकी शक्ति पैदा नहीं होती। महत्व अुसी शिक्षाका होता है, जो विद्यार्थीकी शक्तियोंका अिस तरह विकास करे कि वह जीवनके प्रत्येक विभागकी समस्याओंको ठीक तरहसे हल करनेमें समर्थ हो।

हरिजन, २३-५-'३६

अेक पत्रलेखकके दर्दभरे लम्बे पत्रमें से नीचेका अंश देता हूं:

"मैं ६७ वर्षका बूढ़ा स्कूल-मास्टर हूं। शिक्षाके क्षेत्रमें मेरी सारी अुम्र (४६ वर्ष) बीती है। मेरा जन्म बंगालके अेक गरीब किन्तु अत्यन्त प्रतिष्ठित कायस्थ कुलमें हुआ। पहले तो अुसके अच्छे दिन थे, लेकिन अब वह दरिद्र हो गया है। सौभाग्यसे(?)* मेरी सात लड़कियां और दो लड़के हैं; सबसे

* प्रश्नचिह्न पत्रलेखकका है।

बड़ा लडका २० वर्षका होकर पिछले अक्तूबरमें चल बसा और अपने दुखी और असहाय माता-पिताको वियोगका दुखड़ा रोनेके लिअे छोड़ गया। वह होनहार युवक था — वही मेरे जीवनकी अकमात्र आशा था। लड़कियोंमें से ५ का विवाह हो चुका है। मेरी छठी और सातवी लड़किया (१८ और १६ सालकी) अभी तक कुआरी है। मेरा छोटा बेटा ११ वर्षका नाबालिग है। मेरा वेतन केवल ६० रुपया है। जिसमें मुश्किलसे मेरा गुजर होता है। कोअी बचत नहीं होती। बल्कि कर्जदार होनेके कारण मैं अकिंचनसे भी गया बीता हूं। मेरी छठी लड़कीके लिअे वर तो तय हो चुका है। विवाहका खर्च ९०० रुपयेसे कम नही होगा, जिसमें से ३०० रुपये तो जेवर और दान-दहेजमें ही चले जायगे। कनाडाकी सनलाअिफ अेश्योरन्स कपनीमें मेरा २००० रुपयेका जीवन-बीमा है। बीमा १९१४ में कराया था। कपनीने मुझे केवल ४०० रुपयेका ऋण देना मजूर किया है। यह आवश्यक रकमका आधा ही हिस्सा है। दूसरा आधा हिस्सा जुटानेके लिअे मेरे पास कोअी अुपाय नही है। क्या आप यह आधी रकम देकर लड़कीके अिस गरीब पिताकी मदद नही कर सकते?"

यह पत्र अिस प्रकारके बहुतसे पत्रोंमें से अेक है। अधिकाश पत्र हिन्दीमें लिखे होते है। परन्तु हम जानते है कि अंग्रेजी शिक्षासे पुत्रियोंके माता-पिताकी हालत सुधरी नहीं है। कुछ मामलोंमें हालत और भी खराब हो गअी है। क्योंकि जो नौजवान किसी अंग्रेजी शिक्षा-प्राप्त पिताकी अंग्रेजी पढ़ी-लिखी लड़कीका वर बनता है, अुसका बाजार-भाव भी काफी बढ़ जाता है।

अिन बगाली पिताके जैसे मामलोंमें सबसे अच्छी सहायता जो दी जा सकती है, वह वाछित रकमका कर्ज या दान नहीं है, परन्तु यह है कि पिताको समझा-बुझाकर अिस बात पर राजी किया जाय कि वह अपनी लड़कीके लिअे वरका सौदा न करे, परन्तु अैसा वर चुन ले या अपनी पुत्रीको पसन्द कर लेनेका मौका दे जो प्रेमके खातिर, न कि

करनेके खातिर विवाह करे। अिसका अर्थ चुनावका क्षेत्र स्वेच्छा-पूर्वक बढ़ाना है। जाति और प्रान्तकी दोहरी दीवार टूटनी ही चाहिये। यदि भारत अेक और अविभाज्य है, तो अुसके अैसे कृत्रिम विभाजन नहीं होने चाहियें जिनसे आपसमें रोटी-बेटीका व्यवहार न करनेवाले असंख्य छोटे-छोटे गुट पैदा हो जायं। अिस निर्दय प्रथामें कोअी धर्म नहीं है। यह दलील देनेसे काम नहीं चलेगा कि व्यक्ति अिसका प्रारम्भ नहीं कर सकते और जब तक सारा समाज परिवर्तनके लिअे तैयार न हो जाय, तब तक अुन्हें प्रतीक्षा करनी चाहिये। कोअी सुधार तब तक कभी नहीं हुआ है, जब तक निर्भय व्यक्तियोंने समाजमें प्रचलित अमानुषिक प्रथाओं या रिवाजोंको तोड़ा न हो। और आखिर अिस शिक्षकको क्या कष्ट हो सकता है, यदि वह और अुसकी लड़कियां विवाहको कोअी बाजारू सौदा न समझकर अेक पवित्र धार्मिक संस्कार समझ लें, जैसा कि वह निःसन्देह है। अिसलिअे मैं अपने पत्रलेखकको सलाह दूंगा कि वे ऋण लेने या भिक्षा मांगनेका विचार साहसपूर्वक छोड़ दें, अपने जीवन-बीमे पर मिलनेवाले ४०० रुपये बचा लें और अपनी पुत्रीसे सलाह करके कोअी योग्य वर चुन लें, भले वह किसी भी जाति या प्रान्तका क्यों न हो।

हरिजन, २५-७-'३६

"माता-पिताको अपनी लड़कियोंके विवाहका आग्रह क्यों होना चाहिये और अुस कारण बेशुमार कठिनाअियां क्यों भुगतनी चाहिये? अगर माता-पिता अपनी लड़कियोंको अुसी तरहकी शिक्षा दें जैसी वे अपने लड़कोंको देते हैं, ताकि वे स्वतंत्रता-पूर्वक आजीविका कमा सकें, तो अुन्हें अपनी लड़कियोंके लिअे वरके चुनावकी चिन्ता न करनी पड़े। मेरा अपना अनुभव यह है कि जब लड़कियोंको अपने मस्तिष्कका अच्छी तरह विकास करनेका मौका मिल जाता है और वे अपना भरण-पोषण गौरव-पूर्ण ढंगसे कर सकती हैं, तब अुन्हें विवाहकी अिच्छा होने पर योग्य वर मिलनेमें कठिनाअी नहीं होती। यह नहीं समझना

चाहिये कि मैं लड़कियोंके लिअे अुच्च कहलानेवाली शिक्षाका समर्थन कर रही हूं। मैं जानती हूं कि हजारों लड़कियोंके लिअे यह संभव नहीं है। मैं तो अिस बातकी वकालत कर रही हूं कि लड़कियोंको अुपयोगी ज्ञानके साथ किसी अैसे धन्धेकी तालीम दी जाय, जिससे अुन्हें संसारका सामना करनेके अपने सामर्थ्य पर पूरा भरोसा हो जाय और वे अपने-आपको माता-पिता या भावी पति पर आश्रित महसूस न करें। सच तो यह है कि मैं कुछ अैसी लड़कियोंको जानती हूं, जिन्हें अुनके पतियोंने छोड़ दिया था, परन्तु आज वे अपने पतियोंके साथ गौरवपूर्ण जीवन व्यतीत कर रही हैं, क्योंकि परित्यक्ताकी दशामें सौभाग्यसे वे आत्म-निर्भर हो गअी थीं और अुन्होंने सामान्य अुपयोगी तालीम प्राप्त कर ली थी। मैं चाहती हूं कि विवाह-योग्य लड़कियोंके माता-पिताकी कठिनाअियों पर विचार करते समय आप प्रश्नके अिस पहलू पर जोर दें।"

अपनी पत्रलेखिका द्वारा प्रगट की हुअी अिन भावनाओंका मैं हृदयसे समर्थन करता हूं। बात यह है कि मुझे अेक अैसे पिताके मामले पर विचार करना था, जिसने अपने-आपको अिसलिअे दुःखी नहीं बना लिया था कि अुसकी लड़की अयोग्य थी, परन्तु अिसलिअे कि वह और शायद अुसकी लड़की भी वरका चुनाव अपनी छोटीसी जाति तक ही सीमित रखना चाहते थे। अिस मामलेमें तो लड़कीकी योग्यता स्वयं अेक बाधा थी। यदि लड़की निरक्षर होती तो अुसका मेल किसी भी नौजवानके साथ बैठ सकता था। परन्तु शिक्षित लड़की होनेके कारण स्वभावतः अुसे अुतने ही 'शिक्षित और योग्य' पतिकी जरूरत थी। यह हमारा दुर्भाग्य है कि किसी लड़कीसे विवाह करनेकी कीमत अैंठनेकी नीचताको हमारे समाजमें निश्चित अयोग्यता नहीं माना जाता। कालेजोंकी *अंग्रेजी शिक्षाको बिलकुल कृत्रिम मूल्य दे दिया गया है।* अिसकी आड़में अनेक पाप होते हैं। जिन वर्गोंके शिक्षित युवक लड़कियोंसे विवाह करनेके प्रस्ताव स्वीकार करनेके लिअे कीमतें अैंठते हैं, अुन वर्गोंमें यदि 'योग्यता'की व्याख्या आजकी प्रचलित व्याख्यासे ज्यादा समझ-

दारीगे की जाती, तो लड़कियोंके लिअे योग्य वरोका चुनाव करनेकी कठिनाअी अगर सर्वथा दूर न होती तो भी बहुत हद तक कम जरूर हो जाती। अिसलिअे जहा मैं सिफारिश करता हूं कि माता-पिता मेरी पत्रलेखिकाके प्रस्ताव पर ध्यान दें, वहा मैं जाति-पातिकी अत्यन्त हानिकारक बाधाओंको तोड डालनेकी आवश्यकता पर भी जोर दूगा। अिन बाधाओंको तोड डालनेसे चुनावका दायरा विस्तृत हो जायगा और अिस प्रकार रुपया अैंठनेकी बुराअी बहुत कुछ अपने-आप रुक जायगी।

हरिजन, ५–९–'३६

जहा तक अपनी अिच्छाके विरुद्ध विवाह करनेकी बातका सम्बन्ध है, मैं अितना ही कह सकता हू कि विद्यार्थियोंको जबरन् लादी जानेवाली किसी शादीका विरोध करनेके लिअे अपने भीतर काफी संकल्प-बल पैदा कर लेना चाहिये। विद्यार्थियोंको अकेले खडे रहनेकी कला सीख लेनी चाहिये और अुनकी अिच्छाके विरुद्ध जबरन् कुछ भी करानेके प्रयत्नका हर अुचित ढगसे मुकाबला करना चाहिये। अुनकी अिच्छाके विरुद्ध विवाह करनेके मामलेमें तो यह और भी जरूरी है।

हरिजन, ९–१–'३७

३४

विवाहका खर्च

अवश्य ही तुम्हे मालूम होना चाहिये कि विवाह अेक धार्मिक संस्कार है और अुसके लिअे कोअी खर्च नही होना चाहिये। जिनके पास रुपया है वे खाने-पीने और आमोद-प्रमोद पर खर्च करनेकी अिच्छाको दबायेंगे नही, तो गरीब लोगोंको अुनकी नकल करनेकी अिच्छा होगी और अुसके लिअे वे कर्ज कर लेंगे। अिसलिअे यदि तुम बहादुर हो तो जब तुम्हारी विवाहकी तैयारी हो तब फिजूलखर्चीके विरुद्ध विद्रोह करोगे।

यंग अिडिया, १९–९–'२९

मैं यहां पर पत्रलेखककी बहनोंके विवाहकी भी चर्चा कर लूं, जिसका पत्रमें जिक्र किया गया है। मैं नहीं जानता कि 'देरकी अपेक्षा जल्दी' विवाह हो जानेका क्या मतलब है? किसी भी हालतमें विवाह २० वर्षकी अुम्रसे पहले नहीं होना चाहिये। बरसों आगेकी बात सोचना बेकार है। और यदि वह अपने जीवनकी सारी पद्धति बदल दे, तो वह चाहेगा कि अुसकी बहनें अपने साथी आप चुन लें, और अगर अिस संस्कार पर कुछ खर्च करना भी हो, तो वह हर शादी पर पांच रुपयेसे ज्यादा हरगिज नहीं होना चाहिये। अैसे कअी विवाह-संस्कारोंके समय मैं अुपस्थित रहा हूं। और अुनमें पति या अुनके परिवारके दूसरे बुजुर्ग सारी अच्छी स्थितिके ग्रेज्युअेट थे।

हरिजन, १७-४-'३७

३५
बाल-विवाह

अवश्य ही तुममें अपनी कामवासना पर अितना काबू तो होना ही चाहिये कि तुम १६ वर्षसे कम आयुकी लडकीसे विवाह नहीं करो। अगर मेरी चले तो मैं विवाहकी अुम्र कमसे कम २० वर्ष रखूं। भारतमें भी २० वर्षकी अुम्र काफी जल्दी मानी जायगी। लडकियोंकी बाल-प्रौढ़ताके लिअे हम खुद ही जिम्मेदार हैं, भारतका जलवायु नहीं, क्योंकि मैं २० वर्षकी अैसी लडकियोंको जानता हूं, जो शुद्ध और अछूती हैं और अपने चारों ओर गरजते हुअे तूफानका सामना कर सकती हैं। हमें अिस बाल-प्रौढ़तासे चिपटे न रहना चाहिये। कुछ ब्राह्मण विद्यार्थी मुझसे कहते हैं कि वे अिस सिद्धान्त पर अमल नहीं कर सकते, अुन्हें सोलह वर्षकी ब्राह्मण लडकियां नहीं मिल सकती, बहुत थोड़े ब्राह्मण अपनी लडकियोंको अुस अुम्र तक कुआरी रखते हैं और ब्राह्मण कन्यायें ज्यादातर १०, १२ और १३ वर्षसे पहले ही ब्याह दी जाती हैं। तब मैं ब्राह्मण युवकोंसे कहूंगा, 'यदि तुम संयम नहीं रख सकते तो ब्राह्मण मत रहो। १६ वर्षकी किसी अैसी प्रौढ़ लडकीको चुन लो,

जो बचपनमें विधवा हो गओी हो। यदि अुस आयुकी ब्राह्मण विधवा न मिले तो जाकर अपनी पसन्दकी कोओी भी लड़की ले आओ। और मैं तुमसे कहता हूं कि हिन्दुओंका ओीश्वर अुस लडकेको क्षमा कर देगा, जिसने १२ वर्षकी लड़कीके साथ बलात्कार करनेके बजाय अपनी जातिसे बाहर विवाह करना अधिक पसन्द किया है। जब तुम्हारा हृदय शुद्ध नही है और तुम अपने विकारो पर काबू नही रख सकते, तब तुम शिक्षित मनुष्य नही रह जाते। तुमने अपनी संस्थाको अेक प्रमुख सस्था बताया है। मैं चाहता हू कि तुम्हारा जीवन अिस प्रमुख सस्थाके नामके अनुसार रहे। अिस संस्थाको अैसे लड़के पैदा करने चाहिये, जो चरित्रमें अव्वल दर्जेके हो। चरित्रके बिना शिक्षा कैसी और प्रारम्भिक व्यक्तिगत शुद्धताके बिना चरित्र कैसा? मैं ब्राह्मणत्वकी पूजा करता हूं। मैंने वर्णाश्रम धर्मका समर्थन किया है। जो ब्राह्मणत्व अस्पृश्यता, अक्षत-योनि वैधव्य, और कुमारिकाओंका बलात्कार सहन कर सकता है, अुससे मुझे सख्त नफरत है। यह ब्राह्मणत्वका मजाक है। अिसमें कोओी ब्रह्मज्ञान नही है। धर्मशास्त्रोंका सच्चा अर्थ नही है। यह शुद्ध पाशविकता है। ब्राह्मण-धर्म अिससे कही बड़ी चीज है। मैं चाहता हू कि मेरे ये थोडेसे वचन तुम्हारे हृदयोमें गहरे पैठें।

यंग अिंडिया, १५–९–'२७

३६
विधवा-विवाह

अेक विद्वान तामिल मित्रने मुझे लिखा है कि मैं विद्यार्थी लोगोंको बाल-विधवाओके बारेमें कहू। अुन्होने कहा है कि अिस प्रदेशकी बाल-विधवाओके कष्ट भारतके अन्य भागोकी बाल-विधवाओंके कष्टोंसे कही अधिक हैं। मैं अिस बयानकी सचाओीकी जांच नही कर पाया हू। मेरी अपेक्षा अिसकी जानकारी तुम्हे अधिक होगी। परन्तु मेरे आसपासके नौजवानोंसे मैं यह अवश्य चाहूगा कि वे अपनेमें थोडा वीरताका गुण बढ़ावें। वह हो तो मुझे अेक बड़ा सुझाव देना है। मुझे आशा है

कि तुममें से अधिकांश अविवाहित हैं और खासी संख्या ब्रह्मचारियोंकी भी है। मुझे 'खासी संख्या' कहना पड़ता है, क्योंकि मैं विद्यार्थियोंको जानता हू, जो विद्यार्थी अपनी बहनको वासनापूर्ण दृष्टिसे देखता है, वह ब्रह्मचारी नही है। मैं चाहता हू कि तुम यह पवित्र प्रतिज्ञा कर लो कि जो लडकी विधवा नही है अुससे तुम शादी नही करोगे, तुम किसी विधवा लडकीको खोज निकालोगे, और यदि तुम्हे विधवा लडकी न मिल सके तो तुम शादी ही नही करोगे। यह संकल्प कर लो, दुनियामें अिसकी घोषणा कर दो, और मा-बाप और बहनें हो तो अुन पर भी प्रगट कर दो। मैं गलतीको सुधारनेकी दृष्टिसे विधवा लडकिया कहता हू, क्योंकि मेरा विश्वास है कि दस-पद्रह वर्षकी बच्ची, जिसने तथाकथित विवाहकी अनुमति नही दी हो, जो विवाहके बाद तथाकथित पतिके साथ कभी रही न हो और जो अचानक विधवा घोषित कर दी जाती हो, विधवा नही है। यह अुस शब्दका और भाषाका दुरुपयोग है और बडा पाप है। हिन्दू धर्ममें विधवा शब्द पवित्र माना जाता है। मैं स्व० श्रीमती रमाबाअी रानडे जैसी सच्ची विधवाका पुजारी हू। वे जानती थी कि विधवा होना क्या चीज है। परन्तु नौ वर्षकी बच्ची कुछ नहीं जानती कि पति कैसा होना चाहिये। यदि यह सच न हो कि अिस प्रान्तमें अैसी बाल-विधवायें है, तो मेरी बात ही खतम हो जाती है। परन्तु अैसी बाल-विधवायें हो, तो तुम्हारा यह पवित्र कर्तव्य हो जाता है कि अिस अभिशापसे मुक्त होनेके लिअे तुम किसी बाल-विधवासे विवाह करनेका दृढ निश्चय करो। मैं यह माननेे जितना अन्ध-विश्वासी हू कि कोअी देश अिस तरहके पाप करता है, तो अुसे अिन पापोंका दण्ड भुगतना पडता है। मैं मानता हू कि हमारे अिन सारे पापोंने ही हमें गुलामीकी हालतमें डाल दिया है। ब्रिटेनकी लोकसभा भले तुम्हारे लिअे बढ़ियासे बढ़िया संविधान बनाकर दे दे, परन्तु यदि अुसे अमलमें लानेके लिअे योग्य पुरुष और स्त्रिया न होंगी, तो वह संविधान निकम्मा साबित होगा। क्या तुम समझते हो कि जब तक अेक भी विधवा अैसी है जो अपनी मौलिक आवश्यकताओंकी पूर्ति करना चाहती है, परन्तु अुसे अैसा करनेसे जबरन् रोका जाता है, तब तक हम अपनेको

अैसे मनुष्य कह सकते है, जो अपना या दूसरोंका शासन करने या ३० करोड़के राष्ट्रके भाग्य-विधाता बनने योग्य हैं? यह धर्म नही, अधर्म है। मैं यह बात अिसलिअे कहता हूं कि हिन्दुत्वकी भावना मेरी रग-रगमें समाअी हुअी है। भूलसे यह न समझ लेना कि मुझमें पाश्चात्य भावना बोल रही है। मेरा दावा है कि मुझमें विशुद्ध भारतीय भावना ओतप्रोत है। मैंने पश्चिमसे बहुतसी चीजें लेकर पचा ली है, परन्तु यह चीज नही। हिन्दू धर्ममें अिस प्रकारके वैधव्यका कोअी आधार नही है।

यंग अिंडिया, १५-९-'२७

अेक बंगाली पाठशालाके मुख्य अध्यापक लिखते हैं:

"मद्रासमें विद्यार्थियोंको आपने अपने भाषणमें विधवा लड़कियोंसे ही विवाह करनेकी जो सलाह दी है, अुससे हम बहुत डर गये हैं और अुसके विरुद्ध मैं अपना नम्र किन्तु रोषपूर्ण विरोध प्रगट कर रहा हूं।

"अिस प्रकारकी सलाहसे विधवाओंकी जीवनभर ब्रह्मचर्य पालन करनेकी वह वृत्ति नष्ट हो जायगी, जिससे भारतकी स्त्री-जातिको ससारमें महानतम बल्कि अुच्चतम स्थान प्राप्त हुआ है, और ब्रह्मचर्य द्वारा अेक ही जन्ममें अुनके मोक्ष प्राप्त करनेकी सभावना मिट जायगी और वे सासारिक सुखके अपवित्र मार्ग पर लग जायगी। अिस तरहकी तीव्र सहानुभूति विधवाओंकी बडी कुसेवा करेगी और कुमारिकाओंके प्रति अन्याय करेगी, क्योंकि अुनके विवाहकी समस्या अिस समय बडी पेचीदा और कठिन हो गअी है। आपके विवाहके सिद्धातसे दूसरे शरीरकी प्राप्ति, पुनर्जन्म और मुक्ति तकके हिन्दू सिद्धान्त अुलट जायगे और हिन्दू समाज दूसरे समाजोके स्तर पर अुतर आयेगा, जो हमें पसन्द नही है। बेशक, हमारा समाज आचरण-भ्रष्ट हो गया है। परतु हमें हिन्दू आदर्शोंके प्रति आखें खुली रखनी चाहिये, जहा तक हो सके अूपर अुठना चाहिये और दूसरे

समाजों और आदर्शोंके अुदाहरणोंसे प्रभावित नहीं होना चाहिये। हिन्दू समाजको अहल्याबाओ, रानी भवानी, बेहुला, सीता, सावित्री और दमयंतीकी मिसालें मार्ग दिखायेंगी और अुसे हमें अुन्हींके आदर्शों पर चलाना चाहिये। असलिअे मैं अत्यंत विनीत भावसे प्रार्थना करता हूं कि आप अिन पेचीदा सवालों पर अपना मत प्रगट न करें और समाज जो अुत्तम समझे अुसे करने दें।"

अिस रोषपूर्ण विरोधके बावजूद मैं अपने मत पर कायम हूं और मुझे अुसका पश्चात्ताप भी नहीं है। मेरी सलाहसे अैसी अेक भी विधवा अपने सकल्पसे नहीं हटेगी, जिसकी अपनी निश्चय-शक्ति है, जो ब्रह्मचर्यको जानती है और अुसका पालन करने पर तुली हुआी है। परंतु यदि अुस सलाह पर अमल किया जाय तो बेशक कोमल अवस्थाकी अुन लड़कियोंको बड़ी राहत मिलेगी, जिन्हें विवाहकी रस्म अदा होने समय यह भी पता नहीं था कि विवाहका अर्थ क्या है। अुनके संबंधमें 'विधवा' शब्दका प्रयोग अेक अैसे नामका दुरुपयोग है, जिसके साथ पवित्र परम्पराअें जुड़ी हुआी हैं। ठीक अुसी अुद्देश्यसे, जो मेरे पत्र-लेखकके ध्यानमें है, मैं देशके नौजवानोंको सलाह देता हूं कि या तो वे विधवाओंसे ही शादी करें या शादी करें ही नहीं। अिस संस्थाकी पवित्रताकी रक्षा तभी हो सकती है, जब अुसे बाल-वैधव्यके अभिशापसे मुक्त कर दिया जाय।

अिस कथनके लिअे अनुभवका कोअी भी आधार नहीं है कि विधवाअें ब्रह्मचर्य रखें तो अुन्हें मोक्ष मिलता है। ब्रह्मानंदकी प्राप्तिके लिअे ब्रह्मचर्यके सिवा और भी कअी बातें जरूरी हैं। और जो ब्रह्मचर्य अूपरसे लादा जाता है अुसमें कोअी श्रेय नहीं होता और अुससे अक्सर गुप्त पाप अुत्पन्न होता है। जिस समाजमें अैसा पाप होता है, अुसका सदाचार भ्रष्ट हो जाता है। परमेश्वर जाने कि मैं व्यक्तिगत निरीक्षणके बल पर यह लिख रहा हूं।

मुझे सचमुच खुशी होगी यदि मेरी सलाहके परिणामस्वरूप बाल-विधवाओंके साथ प्रारम्भिक न्याय होने लगे और यदि अुनके

फिरसे यह सलाह देता हूं कि वह अन कुमारियोंके अलावा, जिन्हें भूलसे विधवा कहा जाता है, किसी औरसे शादी करनेसे अिनकार कर दे।

यंग अिंडिया, ६-१०-'२७

३७

संतति-निग्रह

हमारे अन्दर यह बात जमा दी गअी है कि कामवासनाकी तृप्ति मनुष्यका अुतना ही पवित्र कर्तव्य है जितनी वैध रूपमें लिये हुअे कर्जेकी अदायगी, और यह भी कहा जाता है कि अैसा न करनेके फलस्वरूप बुद्धिके ह्रासका दण्ड भुगतना पड़ेगा। अिस कामवासनाको सन्तानोत्पत्तिकी अिच्छासे अलग किया जाता है, और कृत्रिम साधनोंके हामी कहते हैं कि गर्भाधान तो अेक आकस्मिक घटना है जिसे दोनों पक्षोंको सन्तानकी अिच्छा न हो तो रोकना चाहिये। मैं दावेके साथ कहता हूं कि अिस सिद्धान्तका प्रचार कहीं भी अत्यन्त खतरनाक है। भारत जैसे देशमें तो यह और भी भयंकर है, क्योंकि यहां मध्यम श्रेणीका पुरुष वर्ग अपनी जननेन्द्रियके दुरुपयोगके कारण शरीर और मनसे दुर्बल बन गया है। यदि कामवासनाकी तृप्ति धर्म है, तब तो अिस अप्राकृतिक पापके बारेमें मैंने कुछ समय पहले लिखा था वह और दूसरे कअी अुपाय भी प्रशंसनीय हो जायंगे। पाठकोंको ज्ञात होना चाहिये कि बड़े-बड़े आदमी भी, जिन्हें कामवासनाका विजयी कहते हैं, अुसका समर्थन करते पाये गये हैं। अिस कथनसे पाठकोंको आघात लग सकता है। परन्तु यदि किसी भी कारणसे अिस बुराअी पर प्रतिष्ठाकी छाप लग जाती है, तो लड़के-लड़कियोंमें अपनी ही जातिके व्यक्तियोंसे काम-वासनाकी पूर्ति करनेका तूफान आ जायगा। मेरे लिये कृत्रिम साधनोंका अुपयोग अुन साधनोंसे बहुत भिन्न नहीं है, जिनका लोगोंने अपनी कामवासनाकी तृप्तिके लिये आश्रय लिया है और जिनके परिणामोंका

पता बहुत थोड़े लोगोंको है। मुझे मालूम है कि गुप्त पापने पाठशालाके लड़के-लड़कियोंका कैसा भयंकर विनाश किया है। विज्ञानके नाम पर कृत्रिम साधनोंके प्रचलित होने और समाजके प्रसिद्ध नेताओंकी अुस पर मुहर लग जानेसे पेचीदगी और बढ़ गअी है और जो सुधारक सामाजिक जीवनकी शुद्धिका काम करते हैं, अुनका कार्य सम्प्रति असंभव-सा हो गया है। मैं पाठकोंको यह सूचना देते हुअे कोअी विश्वासघात नहीं कर रहा हूं कि अैसी कुमारी लड़कियां हैं, जिनकी प्रभाव पड़नेवाली अुम्र है और जो स्कूल-कालेजोंमें पढ़ती हैं, परन्तु जो बड़ी अुत्सुकतासे संतति-निग्रहके साहित्य और पत्रिकाओंका अध्ययन करती हैं और जिनके पास अुसके साधन भी मौजूद हैं। अुनके प्रयोगको विवाहिता स्त्रियों तक सीमित रखना असंभव है। जब विवाहके अुद्देश्य और अुच्चतम अुपयोगकी कल्पना ही पाशविक विकारकी तृप्ति हो और यह विचार तक न किया जाय कि अिस प्रकारकी तृप्तिका कुदरती नतीजा क्या होगा, तब विवाहकी सारी पवित्रता नष्ट हो जाती है।

मुझे अिसमें जरा भी शक नहीं कि जो विद्वान पुरुष और स्त्रियां मिशनरी जोशके साथ कृत्रिम साधनोंके पक्षमें आन्दोलन कर रहे हैं, वे देशके युवकोंकी अपार हानि कर रहे हैं। अुनका यह विश्वास झूठा है कि अैसा करके वे अुन गरीब स्त्रियोंको संकटसे बचा लेंगी, जिन्हें अपनी अिच्छाके विरुद्ध मजबूरन् बच्चे पैदा करने पड़ते हैं। जिन्हें बच्चोंकी संख्या मर्यादित करनेकी जरूरत है, अुनके पास तो अिनकी आसानीसे पहुंच नहीं होगी। हमारी गरीब औरतोंको न तो वह ज्ञान होता है और न वह तालीम होती है, जो पश्चिमकी स्त्रियोंको होती है। अवश्य ही यह आन्दोलन मध्यम श्रेणीकी स्त्रियोंकी तरफसे नहीं किया जा रहा है, क्योंकि अुन्हें कमसे कम अिस ज्ञानकी जरूरत अुतनी नहीं है जितनी निर्धन वर्गोंको है।

परंतु सबसे बड़ी हानि जो यह आन्दोलन कर रहा है, वह यह कि पुराना आदर्श छोड़कर यह अुसके स्थान पर अेक अैसा आदर्श कर रहा है, जिस पर अमल हुआ तो जातिका नैतिक और

शारीरिक विनाश निश्चित है। वीर्यके स्वयं व्ययको प्राचीन साहित्यमें जो अितना भयंकर माना गया है, वह कोअी अज्ञानजन्य अंधविश्वास नहीं था। कोअी किसान अगर अपने पासका बढ़ियासे बढ़िया बीज पथरीली जमीनमें बोये या कोअी खेतका मालिक बढ़िया जमीनवाले अपने खेतमें असी परिस्थितियोंमें अच्छा बीज डाले जिनमें अुसका अुगना असंभव हो, तो अुसके लिअे क्या कहा जायगा? भगवानने पुरुषको अूचीसे अूची शक्तिवाला बीज प्रदान किया है और स्त्रीको असा खेत दिया है जिसके बराबर अुपजाअू धरती अिस दुनियामें और कहीं नहीं है। अवश्य ही पुरुषकी यह भयंकर मूर्खता है कि वह अपनी अिस सबसे कीमती सम्पत्तिको व्यर्थ जाने दे। अुसे अपने अत्यन्त मूल्यवान जवाहरात और मोतियोंसे भी अधिक सावधानीके साथ अिसकी रक्षा करनी चाहिये। अिसी तरह वह स्त्री भी अक्षम्य मूर्खता करती है, जो अपने जीवोत्पादक क्षेत्रमें बीजको नष्ट हो जाने देनेके अिरादेसे ही ग्रहण करती है। ये दोनों अीश्वर-प्रदत्त प्रतिभाके दुरुपयोगके अपराधी माने जायंगे और जो चीज अुन्हें दी गअी है वह अुनसे छीन ली जायगी। कामकी प्रेरणा अेक सुन्दर और अुदात्त वस्तु है। अुसमें लज्जित होनेकी कोअी बात नहीं है। परन्तु वह सतानोत्पत्तिके लिअे ही बनाअी गअी है। अुसका और कोअी अुपयोग करना अीश्वर और मानवता दोनोंके प्रति पाप है। सन्तति-निग्रहके कृत्रिम साधन पहले भी थे और आगे भी रहेंगे, परन्तु अुन्हें काममें लेना पहले पाप समझा जाता था। पापको पुण्य कहकर अुसका गौरव बढ़ाना हमारी पीढ़ीके ही भाग्यमें बदा है। मेरे खयालसे कृत्रिम साधनोंके हिमायती भारतके युवकोंकी सबसे बड़ी कुसेवा यह कर रहे हैं कि अुनके दिमागोंमें गलत विचारधारा भर रहे हैं। भारतके युवा स्त्री-पुरुषोंको, जिनके हाथमें देशका भाग्य है, अिस झूठे देवतासे सावधान रहना चाहिये, अीश्वरने अुन्हें जो खजाना दिया है अुसकी रक्षा करनी चाहिये और अिच्छा हो तो अुसे अुसी काममें लगाना चाहिये जिसके लिअे वह बनाया गया है।

हरिजन, २८-३-'३६

"आपके लेखसे मुझे सन्देह होता है कि आप युवक मानसको समझते भी हैं या नहीं। आपके लिअे जो संभव हुआ वह सभी युवकोंके लिअे संभव नहीं है। मेरा विवाह हो गया है। मैं सयम रख सकता हूं। मेरी पत्नी नहीं रख सकती। अुसे बच्चे नहीं चाहियें, परतु वह आनंदका अुपभोग जरूर करना चाहती है। मैं क्या करूं? क्या अुसकी भोगेच्छाकी तृप्ति करना मेरा धर्म नहीं है? मैं अितना अुदार नहीं हू कि अुसका दूसरे जरियोंसे अिच्छा-पूर्ति करना सह सकूं। मैं अखबारोंमें पढता हूं कि आप शादियां कराने और अुन्हें आशीर्वाद देनेके विरुद्ध नहीं हैं। यह तो आप अवश्य ही जानते होंगे, या आपको जानना चाहिये, कि आपने जो अुच्च अुद्देश्य बताया है अुसीके लिअे विवाह नहीं किये जाते।"

पत्रलेखकका कहना ठीक है। यह सही है कि मैं बहुतसे विवाहोंको आशीर्वाद देता हूं, जब वे अुन शर्तोंको पूरा कर देते हैं, जो मैंने अुम्र, मितव्यय आदिके बारेमें तय कर दी हैं। अिसी बातसे शायद कुछ-कुछ प्रगट हो जाता है कि मैं देशके युवकोंको अितना जानता हूं कि वे मेरा पथप्रदर्शन चाहें तो मैं वैसा कर सकता हूं।

मेरे पत्रलेखकका मामला अपनी विशेषता रखता है। वह सहानुभूतिका पात्र है। मेरे लिअे यह अेक तरहकी नअी खोज है कि संभोगका अेकमात्र हेतु प्रजोत्पत्ति है। मुझे यह नियम मालूम तो था, किन्तु मैंने अुसे पहले अुतना महत्त्व नहीं दिया था जितना दिया जाना चाहिये था। कुछ दिन पहले तक मैंने अिसे केवल अेक पवित्र अिच्छा ही माना था। अब मैं अिसे विवाहित अवस्थाका बुनियादी कानून समझता हूं, जिसका सर्वोपरि महत्त्व स्वीकार कर लिया जाय, तो अुसका पालन करना कठिन नहीं है। मेरा अुद्देश्य तभी पूरा होगा, जब अिस कानूनको समाजमें अुचित स्थान मिलेगा। मेरे लिअे यह अेक जीवित कानून है। हम अुसे हमेशा तोडते हैं और अुसके भंगकी भारी कीमत चुकाते हैं। यदि मेरा पत्रलेखक अुसका असीम महत्त्व अच्छी तरह समझता है और अुसे अपनी पत्नीसे प्रेम और अपने-आप पर विश्वास है, तो वह अपनी पत्नीको अपने विचारका बना लेगा।

जब वह कहता है कि वह संयम रख सकता है तो क्या सच्चे दिलसे कहता है? क्या अुसका कामविकार किसी अुच्च अभिलाषाके रूपमें, यथा मानव-जातिकी सेवाकी अभिलाषामें, बदल गया है? क्या वह स्वभावतः अैसी कोअी भी बात करनेसे परहेज करता है जिससे अुसकी पत्नीमें कामोत्तेजना हो? अुसे जानना चाहिये कि हिन्दू विज्ञानमें आठ प्रकारके संभोग बताये गये हैं, जिनमें कामोत्तेजक संकेत भी शामिल है। क्या पत्रलेखक अिनसे बचा हुआ है? यदि नहीं है और सचमुच चाहता है कि अुसकी पत्नीकी कामवासना छूट जाय, तो अुसे चाहिये कि अुसके चारों ओर शुद्ध प्रेम बरसा दे, अुसे अिस विषयका धर्म समझाये, सन्तानोत्पत्तिकी अिच्छाके बिना संभोग करनेके शारीरिक परिणाम समझाये और अुसे बताये कि वीर्य क्या चीज है। साथ ही अुसे चाहिये कि अपनी पत्नीको स्वास्थ्यप्रद कामोंमें लगाये रखे और अुसके भोजन और व्यायाम आदिका अिस प्रकार नियमन करनेका प्रयत्न करे जिससे अुसका विकार शान्त हो। सबसे बडी बात यह है कि यदि वह धार्मिक पुरुष है, तो वह अपनी जीवित श्रद्धा अपने साथीमें भी भर देनेकी कोशिश करेगा। कारण, मुझे स्वीकार करना चाहिये कि ब्रह्मचर्य धर्मका पालन अीश्वरमें जीवित श्रद्धा हुअे बिना असंभव है, और अीश्वरमें जीवित श्रद्धाका अर्थ है सत्यका आचरण।

हरिजन, २५-४-'३६

पर अगर संभोगको नीतियुक्त बनानेके लिअे स्त्री-पुरुषकी — चाहे वे पति-पत्नी हों या न भी हों — केवल पारस्परिक अनुमतिका ही होना काफी हो, तब तो अिस युक्तिके अनुसार समान लिंगवाले दो व्यक्तियोंके बीचका संबंध भी नीतियुक्त बन जायगा और संभोग-व्यवस्था सम्बन्धी सारी मर्यादा ही नष्ट हो जायगी। और देशके युवकोंके भाग्यमें केवल 'दुःख और पराजय' ही रह जायगे। भारतमें बहुतसे युवक और युवतियां अैसी पाअी जाती हैं जो संभोगकी लालसाके पंजेसे मुक्त होनेमें सुखी अनुभव करेंगी। यह लालसा मनुष्यको दास बनानेवाले प्रबलसे प्रबल नशेसे भी प्रबल होती है। यह आशा करना व्यर्थ है कि कृत्रिम

अुपायोंका अिस्तेमाल केवल संतति-नियमन तक ही सीमित रहेगा। भद्र जीवनकी आशा तभी तक है, जब तक सभोगका संबंध निश्चित रूपमें गर्भाधानसे हो। अिसमें अप्राकृतिक सभोगकी और, कुछ कम हद तक ही सही, व्यभिचारकी गुजाअिश नही रह जाती। संभोगसे अुसके स्वाभाविक परिणाम हटा लिये जाय तो भयकर व्यभिचार और यदि अप्राकृतिक पापका समर्थन न भी हो, तो अुसकी दरगुजर तो अनिवार्य ही है।

चूकि स्त्री-पुरुष सबधी समस्याका विचार करते समय मेरे अपने अनुभव अिस सिलसिलेमें प्रस्तुत हैं, अिसलिअे मैं अुन पाठकोंको, जिन्होंने मेरी 'आत्मकथा' के वे हिस्से नही पढे हैं, जरा चेतावनी दे देना चाहता हूं कि वे वह निष्कर्ष न निकालें जो मेरे पत्रलेखकने मेरी कामुकताके पापोंके बारेमें निकाले हैं। मेरी जो कुछ कामुकता थी वह सर्वथा अपनी पत्नी तक सीमित थी। और मैं अेक बडे सम्मिलित परिवारमें रहता था, जहा रातके कुछ घटोंके सिवा शायद ही अेकान्त मिलता था। मुझे *तो विषय-सुखके लिअे विषय-सेवन करनेकी मूर्खताका भान* २३ वर्षकी अुम्रमें ही हो गया था। और मैंने १८९९ में अर्थात् जब मै ३० वर्षका था पूर्ण ब्रह्मचर्यका निश्चय कर लिया था। मुझे साधु कहना गलत है। जो आदर्श मेरे जीवनका नियमन करते हैं, अुन्हे मैं आम आदमियोंके माननेके लिअे भेंट कर रहा हू। वहा तक मैं धीरे-धीरे विकास करके पहुचा हू। हरअेक कदम पहलेसे सोचकर, अच्छी तरह विचार करके और अत्यत मननके बाद अुठाया गया था। मेरा ब्रह्मचर्य और मेरी अहिंसा *दोनो निजी अनुभवसे आये हैं और सार्वजनिक कर्तव्यकी पुकारके जवाबमें* आवश्यक बने हैं। दक्षिण अफ्रीकामें गृहस्थ, वकील, समाज-सुधारक या राजनीतिज्ञ जिस रूपमें भी मुझे अलग-अलग जीवन व्यतीत करना पडा, अुसमें अिन कर्तव्योंका भलीभाति पालन करनेके लिअे मुझे स्त्री-पुरुष सबधी जीवनके कठोर नियमन और मानव-संबंधोंमें, भले अपने ही देशबाधवोंके साथ हों या यूरोपीयोंके साथ, अहिंसा और सत्यके कठोर पालनकी जरूरत थी। मैं साधारणसे भी *कम योग्यतावाले औसत* आदमीसे अधिक होनेका दावा नही *करता।* और न बहुत परिश्रमपूर्ण अनुसधानके बाद जो अहिंसा या ब्रह्मचर्य

सिद्ध कर पाया हूं, अुसके लिअे मैं खास श्रेयका दावा कर सकता हूं। मुझे जरा भी सन्देह नही कि जो कुछ मैंने हासिल किया है, वह कोअी भी स्त्री या पुरुष हासिल कर सकता है, बशर्ते कि वह भी वैसा ही प्रयत्न करे और वैसी ही आशा और श्रद्धा सपादन कर ले। श्रद्धाके विना काम करना अैसा ही है, जैसे किसी अथाह खड्डेके पेंदे तक पहुचनेकी कोशिश करना।

हरिजन, ३–१०–'३६

मेरा कहना है कि अपनी कृतियोंके परिणामोका सामना करनेसे *अिनकार करना कायरता है। जो आदमी सतति-निग्रहके कृत्रिम अुपाय* काममें लेते है, वे सयमका गुण कभी नही सीखेंगे। अुन्हे अिसकी आवश्यकता नही होगी। कृत्रिम अुपायोंके साथ अतिसभोगसे बच्चे होना शायद रोका जा सके, परतु अुससे स्त्री और पुरुष दोनोकी — शायद स्त्रियोंमे पुरुषोंकी अधिक — जीवनशक्ति नष्ट हो जायगी। शैतानसे लड़ाअी करनेसे अिनकार करना नामर्दी है। मेरे पत्रलेखकको सयमका निश्चय कर लेना चाहिये, क्योंकि अवाछित बच्चे न होने देनेका अेकमात्र निश्चित और सम्मानपूर्ण अुपाय यही है। वह और अुसके परिजन सौ बार प्रयत्न करके भी असफल रहे तो क्या हुआ? आनद लड़नेमें है। फल अीश्वरकी कृपासे मिलता है।

हरिजन, १७–४–'३७

पश्चिमकी अधी नकल करनेसे हमारा काम नही चल सकता। पश्चिमके लोग कुछ बातें करते है, तो अुनके लिअे अुनके पास प्रतिकारके अुपाय भी होते है। हमारे पास नही होते। सतति-नियमनका ही अुदाहरण लीजिये। सभव है वहा यह अच्छा काम दे रहा हो, परतु यदि हम सतति-नियमनको अुसी तरह अपना लें जैसे पश्चिममें अुसकी हिमायत की जा रही है, तो दस सालमे भारतमें हिजडे ही हिजडे रह जायगे।

अमृतबाजार पत्रिका, ३–८–'३४

३८

अेक विद्यार्थीकी परेशानी

अेक विद्यार्थीने अपने गुरुको पत्र लिखा, जो अुन्होंने मेरे पास टिप्पणीके लिअे भेज दिया है। अुस पत्रका अेक अंश यह है:

"मुझ पर दो चीजें बुरी तरह सवार हैं: मेरा राष्ट्रप्रेम और दूसरी, तेज विषय-वासना। अिनसे सदा मेरे व्यवहारमें विरोधाभास और मेरे निर्णयोंमें असंगतता पैदा होती है। मैं अपने देशका प्रथम सेवक भी बनना चाहता हूं और साथ ही संसारके भौतिक सुख भी भोगना चाहता हूं। मुझे स्वीकार करना चाहिये कि मैं अीश्वरको नहीं मानता। हां, अुससे मुझे कभी-कभी भयकर भय होता है। सारी सृष्टि मुझे अेक पहेली मालूम होती है। मैं नहीं जानता अन्तमें मेरा क्या होनेवाला है। मैंने मृत शरीर जलते देखे हैं। अन्तिम घटना मेरी मांकी थी और अुस घटनाका मुझ पर भयंकर प्रभाव पड़ा। मैं अिस कल्पनाको सहन नहीं कर सकता कि मेरी भी वही दशा होगी। कोअी घाव देखते ही मुझे आघात पहुंचता है, और यह सोचता हूं तो सनसनी पैदा होती है कि किसी दिन मेरा शरीर भी जलेगा। मैं जानता हू कि कोअी अिससे बच नहीं सकता। मुझे यह विश्वास नहीं होता कि मृत्युके बाद भी कोअी जीवन बच रहता है। अिसीलिअे मैं भयभीत हू।

"मेरे लिअे दो ही रास्ते खुले हैं — या तो घुट-घुट कर मर जाअू या संसारके भौतिक सुखोंको भोगू, अुनमें डूबा रहूं और भूल जाअू कि अन्तमें क्या होगा। मैं स्वीकार करता हू (मैंने आपके सामने वे बातें स्वीकार की हैं जो और किसीके सामने कभी नहीं की) कि मैंने दूसरा रास्ता पसंद किया है।

"यह संसार ही अेकमात्र सत्य है, अुसके सुखोंको किसी भी तरह प्राप्त करना चाहिये। अपनी पत्नीके लिअे, जो हाल ही में मर गअी, मेरा दुःख हार्दिक था, परंतु वह दुःख अुसके मरनेका नहीं था, बल्कि मेरे अकेले रह जानेका था। मरनेवालोंके लिअे कोअी समस्या नहीं होती, जीनेवालोंके लिअे सभी समस्याअें हैं। मैं किसी शुद्ध प्रेममें विश्वास नहीं रखता। कथित प्रेम स्त्री-पुरुषके शारीरिक आकर्षणके सिवा कुछ नहीं होता। यदि शुद्ध प्रेम जैसी कोअी चीज होती, तो मुझे अपनी पत्नीकी अपेक्षा अपने मां-बापसे ज्यादा स्नेह महसूस होना चाहिये था, परंतु बात अिससे अुल्टी थी। मैं वफादार पति रहा हूं, परंतु मैं अपनी पत्नीको यह आश्वासन नहीं दिला सकता था कि अुसके मरनेके बाद भी मुझे अुसका दुःख होगा। शायद अुसके गुजर जानेसे मुझे जो असुविधा होती है, अुसीके कारण दुःख होता होगा। आप अिसे मेरी श्रद्धाहीनता कह सकते हैं, परंतु बात यही है। कृपा करके मुझे लिखकर रास्ता बतलाअिये।

अिस अरमें तीन बातें हैं (१) अिन्द्रिय-विकार और राष्ट्र-प्रेममें संघर्ष, (२) अीश्वर और भावी जीवन, और (३) विशुद्ध प्रेम और अिन्द्रिय-सुख।

पहली बात अच्छी तरह बयान की गअी है। कामवासना असली चीज है, राष्ट्रीयता आजकलका शौक है। सत्ताकी राजनीतिके अर्थमें राष्ट्रीयताका कामवासनाकी तृप्तिके साथ पूरा मेल बैठता है। जीवनमें अिसके अनेक अुदाहरण दिये जा सकते हैं। मेरे विचारमें राष्ट्रीयताका अर्थ राष्ट्रके लिअे अैसा जलता हुआ प्रेम है, जिसमें 'देशके गरीब' भी समा जाय। अुससे कामवासना और अैसी दूसरी वस्तुअें जल जानी चाहिये और जलती रही है। अिस प्रकार दोनोंमें कोअी संघर्ष नहीं है, परंतु पहली वस्तु पर दूसरेकी सदा विजय होती है। राष्ट्रके लिअे सर्वग्राही प्रेम होने पर अेक मिनट भी अैसी किसी प्रवृत्तिके लिअे नहीं रह जाता, जो सुन्द

प्रवृत्तिमें दखल देती हो। जिस पर कामवासना सवार हो जाती है अुसका नाश निश्चित है।

अीश्वरमें और मरणोत्तर भविष्यमें अश्रद्धा भी अूपरकी विषय-वासनामें से ही पैदा होती है। अिस वासनासे पुरुष या स्त्रीका संतुलन नष्ट हो जाता है। अनिश्चय अुसे बर्बाद कर देता है। अीश्वरके प्रति श्रद्धा तब रहती है, जब कामविकार नष्ट हो जाता है। दोनों साथ-साथ नहीं रह सकते।

तीसरी पहेली पहलीका ही रूपान्तर है। पति-पत्नीका विशुद्ध प्रेम किसी भी दूसरी तरहके प्रेमकी अपेक्षा अीश्वरके अधिक निकट ले जाता है। जब विशुद्ध प्रेममें वासना मिल जाती है, तब वह अीश्वरसे विमुख कर देती है। अिससे अगर वासना और विषय-सुखकी तृप्ति न हो, तो यह सवाल पैदा होता है कि शादीकी जरूरत ही क्या है? विद्यार्थी सच कहता है कि अुसकी पत्नीके लिअे अुसे कोअी नि:स्वार्थ प्रेम महसूस नहीं होता था। यदि वह नि:स्वार्थ होता तो जीवन-संगिनीकी मृत्युसे जीवन सम्पन्न बनता, क्योंकि शरीर छोड़नेके बाद जीवन-संगिनीकी यादके फलस्वरूप पददलित मानवताकी सेवामें अधिक समर्पण होता।

हरिजन, १९–१०–'४७

३९

माता-पिताके प्रति कर्तव्य

अपने बंगालके दौरेमें मैंने यह विस्मयकारक बात सुनी कि अेक सार्वजनिक संस्थाके सदस्य अपने माता-पिताकी अपेक्षा अपनी संस्थाका पालन-पोषण करना अधिक अच्छा मानते हैं। यह कहा गया कि अिस बातमें मेरा समर्थन है। यदि अिस अरसेमें मैंने कोअी अैसी बात लिख दी है, जिससे अिस प्रकारका खयाल पैदा हुआ हो, तो मैं पाठकोंसे क्षमा मांगता हूं। मुझे अैसे किसी अपराधका भान नहीं है। मैं जो कुछ हूं अुस सबका श्रेय मेरे माता-पिताको है। अुनके प्रति मेरी भावना वैसी ही थी जैसी श्रवणकी अपने माता-पिताके प्रति बताअी जाती है। अिसलिअे जब मैंने यह बात सुनी, तो मेरे मनमें जो क्रोध अुमड़ रहा था अुसे मैं बहुत ही कठिनाअीसे रोक सका। जिस युवकने यह बात कही थी, वह अुसके विषयमें गभीर नहीं था। परन्तु आजकल कुछ नौजवानोंको अिस बातका शौक हो गया है कि वे अपनेको श्रेष्ठ समझते हैं और पूर्णताके अवतार होनेका ढोंग करते हैं। मेरी रायमें बालिग बेटेका प्रथम कर्तव्य अपने बूढ़े और दुर्बल माता-पिताका पालन-पोषण करना है। यदि वे अपने माता-पिताका पालन-पोषण करनेकी स्थितिमें न हों तो विवाह न करें। जब तक यह पहली शर्त पूरी न हो जाय सार्वजनिक काम हाथमें न लें। स्वयं भूखों मर कर भी अपने माता-पिताके लिअे अन्न-वस्त्र जुटाअें। परन्तु नौजवानोंसे यह आशा नहीं रखी जाती कि वे विचारहीन या अज्ञान माता-पिताकी मांगको पूरा करें। अैसे माता-पिता होते हैं जो गुजारेके लिअे नहीं, बल्कि झूठे दिखावे या

लडकियोंके विवाहके अनावश्यक खर्चके लिअे रुपया मांगते हैं। मेरी रायमें सार्वजनिक कार्यकर्ताओंका कर्तव्य है कि वे अैसी मांगोंको माननेसे आदरपूर्वक अिनकार कर दें।

यंग अिंडिया, २५–६–'२५

४०

मद्यपान और धूम्रपान

फिर गांधीजीने अुनसे मद्यपानकी आदत मिटा डालनेके लिअे अनुरोध किया तुम सोचते होगे कि थोड़ा-थोड़ा पीते रहनेमें कोअी हर्ज नहीं है। क्योंकि अिससे तुम्हें कोअी हानि दिखाअी नहीं देती। परंतु जैसा गीताने कहा है, हमें अपना आचरण केवल अपनी ही आवश्यकताओंके अनुसार नहीं रखना है, बल्कि यह भी ध्यान रखना है कि दूसरों पर अुसका क्या असर होता है। यदि तुम देख लो कि यह दुर्व्यसन भारतके श्रमिक वर्गमें कितनी भयंकर बर्बादी कर रहा है, तो तुम शराबको न छूनेका धार्मिक व्रत ले लोगे।

यंग अिंडिया, २८–२–'२९

कालीकटके अेक अध्यापकके अनुरोध पर मैं अब सिगरेट और चाय-कॉफी पीनेके बारेमें कुछ कहूंगा। ये चीजें जीवनके लिअे जरूरी नहीं हैं। कुछ लोग अैसे हैं जो प्रतिदिन १० प्याले कॉफीके चढ़ा जाते हैं। क्या अुनके स्वस्थ विकास और कर्तव्य-पालनके खातिर जागते रहनेके लिअे यह आवश्यक है? यदि जागते रहनेके लिअे कॉफी या चाय पीना आवश्यक है, तो चाय या कॉफी न पीकर सो जाना चाहिये। हमें अिन चीजोंका गुलाम नहीं बनना चाहिये। परन्तु चाय या कॉफी पीनेवाले अधिकांश लोग अुनके गुलाम हैं। सिगार और सिगरेट विदेशी हों या देशी, अुनसे बचना ही चाहिये। सिगरेट पीना अफीम पीनेके बराबर है और जो सिगार तुम पीते हो अुसमें भी अफीमका

पुष्ट होता है। वह तुम्हारे ज्ञानतन्तुओं पर सवार हो जाती है। और बादमें तुम अुसे छोड़ नहीं सकते। कोअी भी विद्यार्थी अपने मुहको धुआंदानी बनाकर गन्दा कैसे कर सकता है? यदि तुम सिगार और सिगरेट, चाय और कॉफी पीनेकी आदतें छोड़ दो, तो तुम्हें खुद पता चल जायगा कि तुम कितनी बचत कर सकते हो। टॉल्स्टॉयकी कहानीमें अेक शराबी हत्याका अपना विचार कार्यान्वित करनेमें अुस वक्त तक हिचकिचाता है, जब तक वह अपनी सिगार नहीं पी लेता। लेकिन ज्यों ही पी लेता है वह मुस्कुराता हुआ अुठ खड़ा होता है और कहता है, 'मैं भी कैसा कायर हूं!' और खंजर लेकर अपना काम कर डालता है। टॉल्स्टॉयने अनुभवकी बात कही है। अुन्होंने खुद अनुभव किये बिना कोअी बात नहीं लिखी, और वे शराबसे भी सिगारके ज्यादा खिलाफ हैं। परन्तु यह समझनेकी भूल न करना कि शराब और तम्बाकूमें शराब छोटी बुराअी है। नहीं। दोनोंमें वैसा ही फर्क है, जैसा नागराज और सर्पराजमें।

यंग अिंडिया, १५-९-'२७

अगर तुममें से कोअी धूम्रपान करते हो, तो आजसे तुम यह बुरी आदत छोड़ दो। बीड़ी पीनेसे सांस गंदी होती है। यह घृणित आदत है। जब बीड़ी पीनेवाला रेलगाड़ीमें होता है, तो कभी परवाह नहीं करता कि अुसके आसपास अैसे स्त्री-पुरुष बैठे हैं जो कभी बीड़ी नहीं पीते और अुसके मुंहसे आनेवाली दुर्गन्ध अुन्हें बुरी लग सकती है।

सिगरेट दूरसे छोटीसी चीज हो सकती है, परन्तु जब सिगरेटका धुआं मुंहमें जाकर बाहर आता है तब वह जहर होता है। बीड़ी पीनेवाले यह परवाह नहीं करते कि वहां थूकना चाहिये।

धूम्रपानसे हमारी बुद्धि मंद हो जाती है। वह अेक दुर्व्यसन है। अगर तुम डॉक्टरोंसे पूछो और वे अच्छे डॉक्टर हों, तो तुम्हें बतायेंगे कि बहुतसे लोगोंके केन्सर नामक विषैले फोडेका कारण वह धुआं ही है या कमसे कम अुसकी जड़में वही होता है।

जब धूम्रपानकी जरूरत नही तो फिर असे किया क्यो जाय? यह कोअी खाद्य-पदार्थ तो है नही। अिसमें कोअी आनन्द भी नही। हा, शुरू शुरूमें दूसरेके बहकावेमें आकर वैसा कुछ लगता होगा।

लड़को, तुम अच्छे लडके हो और अपने माता-पिता और गुरुकी आज्ञा मानते हो, तो धूम्रपान न करना और अुससे जो बचत हो वह मेरे पास भारतके करोडो भूखोंके लिअे भेज देना।

विथ गाधीजी अिन सीलोन, पृ० ७६-७७

४१

व्यायाम

मुझे सचमुच खुशी है कि तुम व्यायाम पर अुचित ध्यान दे रहे हो और खेलकूदमें नाम पाने पर मैं तुम्हें बधाअी देता हू। मुझे पता नही कि तुम्हारे यहा देशी खेल होते हैं या नही। परन्तु यदि मुझे यह कहा जाय कि तुम्हारी पवित्र भूमि पर क्रिकेट और फुटबालका अवतार होनेसे पहले तुम्हारे यहाके लडके सभी खेलकूदसे वंचित थे, तो मुझे बहुत ही आश्चर्य होगा, बल्कि सखेद आश्चर्य होगा। अगर तुम्हारे यहा राष्ट्रीय खेलकूद है, तो मैं तुमसे अनुरोध करता हू कि *तुम्हारी सस्था अैसी है जिसे प्राचीन खेलोका पुनरुद्धार करना चाहिये।* मुझे मालूम है कि भारतमे कअी अुदात्त देशी खेल है, जो अुतने ही दिलचस्प और अुत्साहवर्धक हैं जितने क्रिकेट और फुटबाल हैं। अुनमें अितना लाभ और है कि वे सस्ते है, क्योकि अुनमें खर्च लगभग नहीके बराबर है।

विथ गाधीजी अिन सीलोन, पृ० १०७

४२

विदेश-गमन

अेक भारतीय डॉक्टर नाडियोंसे संबंध रखनेवाली शल्य-विद्या (न्यूरो-सर्जरी) सीखने अमरीका गये, ताकि लौट कर अपने यहाके लोगोंकी सेवा कर सकें। अुन्हें कोलम्बिया विश्वविद्यालयमें मुश्किलसे स्थान मिला है और वे वहा हाअुस सर्जनका काम कर रहे हैं।

वे मुझे लिखते हैं कि मैं विद्यार्थियों पर प्रभाव डालकर अुन्हें विदेश-गमनसे मना करूं। अुन्होंने ये कारण बताये हैं

"(क) हमारा गरीब मुल्क दस विद्यार्थियोंका विदेश भेजकर तालीम दिलानेमें जितना रुपया खर्च करता है अुसका बेहतर अुपयोग यह होगा कि किसी प्रथम श्रेणीके अध्यापककी सेवाअें प्राप्त कर ली जाय। वह ४० विद्यार्थियोंको तालीम देगा और प्रयोगशाला भी तैयार कर देगा।

(ख) जो विद्यार्थी यहा आते हैं अुन्हें साधारण बुनियादी ज्ञान तो मिल जाता है, परन्तु वे यह नहीं जानते कि घर लौटकर प्रयोगशाला कैसे तैयार की जाय।

(ग) अुन्हें सतत कार्यका अवसर नहीं मिलता।

(घ) यदि हम विशेषज्ञ तैयार करें तो हमारी प्रयोग-शालाअें भी संपूर्ण बन जाय।"

मैं हमारे विद्यार्थियोंके विदेश-गमनका कभी समर्थक नहीं रहा हूं। मेरा अनुभव मुझे कहता है कि अैसे लोग लौटने पर गोल छेदोंमें चौकोर खूटियोंकी तरह होते हैं। वही अनुभव सबसे कीमती और विकासका साधक होता है जो स्वदेशमें मिलता है। परन्तु आज तो विद्यार्थियों पर विलायत जानेका भूत सवार है। भगवान करे कि अुन्हें अस चेतावनीका काम दे!

हरिजन, ८-९-'४६

४३

सार

१ विद्यार्थियोको दलबन्दीवाली राजनीतिमें कभी शामिल न होना चाहिये। विद्यार्थी विद्याके खोजी और ज्ञानकी शोध करनेवाले है, राजनीतिके खिलाडी नही।

२ अुन्हें राजनीतिक हडतालें न करनी चाहिये। विद्यार्थी वीरोकी पूजा चाहे करें, अुन्हें करनी चाहिये; लेकिन जब अुनके वीर जेलोमें जायं, या मर जायं, या यो कहिये कि अुन्हें फासी पर लटकाया जाय, तब अुनके प्रति अपनी भक्ति प्रगट करनेके लिअे अुनको अुन वीरोके अुत्तम गुणोका अनुकरण करना चाहिये, हडताल नही। अैसे मौको पर विद्यार्थियोंका शोक असह्य हो जाय, और हरअेक विद्यार्थीकी वैसी भावना बन जाय, तो अपनी सस्थाके अधिकारीकी सम्मतिसे स्कूल और कालेज बन्द रखे जायं। सस्थाके अधिकारी विद्यार्थियोंकी बात न सुनें, तो अुन्हें छूट है कि वे अुचित रीतिसे, सभ्यतापूर्वक, अपनी-अपनी सस्थाओंसे वाहर निकल आयें, और तब तक वापस न जायें जब तक संस्थाके व्यवस्थापक पछताकर अुन्हें वापस न बुलायें। किसी भी हालतमें और किसी विचारसे अुनको अपनेसे भिन्न मत रखनेवाले विद्यार्थियों या स्कूल-कालेजके अधिकारियोंके साथ जबरदस्ती न करनी चाहिये। अुन्हें यह विश्वास होना चाहिये कि अगर वे अपनी मर्यादाके अनुरूप व्यवहार करेंगे और मिलकर अेक रहेंगे तो जीत अुनकी ही है।

३. सब विद्यार्थियोंको सेवाके खातिर शास्त्रीय तरीकेसे कातना चाहिये। कताअीके अपने साधनो और दूसरे औजारोको अुन्हें हमेशा साफ-सुथरा, सुव्यवस्थित और अच्छी हालतमें रखना चाहिये। संभव हो तो वे अपने हथियार, औजार या साधनोंको खुद ही बनाना सीख लें। अलबत्ता, अुनका काता हुआ सूत सबमें बढ़िया होगा। कताअी

सम्बन्धी सारे साहित्यका, और अुसमें छिपे आर्थिक, सामाजिक, नैतिक और राजनीतिक सब रहस्योंका, अुन्हें अध्ययन करना चाहिये।

४ अपने पहनने-ओढ़नेके लिअे वे हमेशा खादीका ही अिस्तेमाल करें, और गावोंमें बनी चीजोंके बदले परदेशकी या कलोंकी बनी वैसी चीजोंको कभी न बरतें।

५ वन्देमातरम् गाने या राष्ट्रीय झंडा फहरानेके मामलेमें दूसरों पर जबरदस्ती न करें। राष्ट्रीय झंडेके बिल्ले वे खुद अपने बदन पर चाहे लगायें, लेकिन दूसरोंको अुसके लिअे मजबूर न करें।

६. तिरंगे झंडेके सन्देशको अपने जीवनमें अुतारकर दिलमें साम्प्रदायिकता या अस्पृश्यताको न घुसने दें। दूसरे धर्मोंवाले विद्यार्थियों और हरिजनोंको अपना भाअी समझकर अुनके साथ सच्ची दोस्ती कायम करें।

७. अपने दुःखी-दर्दी पड़ोसियोंकी सहायताके लिअे वे तुरन्त दौड़ जायं, आसपासके गावोंमें सफाअीका और भंगीका काम करें और गावोंके बड़ी अुमरवाले स्त्री-पुरुषों व बच्चोंको पढ़ावें।

८. आज हिन्दुस्तानीका जो दोहरा स्वरूप तय हुआ है, अुसके अनुसार अुसकी दोनों शैलियों और दोनों लिपियोंके साथ वे राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी सीख लें, ताकि जब हिन्दी या अुर्दू बोली जाय अथवा नागरी या अुर्दू लिपि लिखी जाय, तब अुन्हें वह नअी न मालूम हो।

९ विद्यार्थी जो भी कुछ नया सीखें अुस सबको अपनी मातृभाषामें लिख लें, और जब वे हर हफ्ते अपने आसपासके गावोंमें दौरा करने निकलें, तो अुसे अपने साथ ले जायं और लोगों तक पहुंचायें।

१० वे छुप-छिपकर कुछ न करें, जो करें खुल्लमखुल्ला करें। अपने हर काममें अुनका व्यवहार बिलकुल शुद्ध हो। वे अपने जीवनको संयमी और निर्मल बनायें। किसी चीजसे न डरें और निर्भय रहकर अपने कमजोर साथियोंकी रक्षा करनेमें मुस्तैद रहें। दंगोंके अवसर पर अपनी जानकी परवाह न करके अहिंसक रीतिसे अुन्हें मिटानेको तैयार रहें। और, जब स्वराज्यकी आखिरी लड़ाअी छिड़

जाय, तब अपनी संस्थायें छोड़कर लडाओीमें कूद पड़ें, और जरूरत पडने पर देशकी आजादीके लिअे अपनी जान कुरबान करें।

११. अपने साथ पढनेवाली विद्यार्थिनी बहनोंके प्रति अपना व्यवहार बिलकुल साफ और सभ्यतापूर्ण रखें।

अपर विद्यार्थियोंके लिअे मैंने जो कार्यक्रम सुझाया है, अुस पर अमल करनेके लिअे अुन्हें वक्त निकालना होगा। मैं जानता हूं कि वे अपना बहुत-सा समय यों ही बरबाद कर देते हैं। अपने वक्तकी सख्त बचत करके वे मेरे द्वारा सुझाये गये कामोंके लिअे कअी घण्टोंका समय निकाल सकते हैं। लेकिन किसी भी विद्यार्थी पर मैं बेजा बोझ लादना नहीं चाहता। चुनाचे देशसे प्रेम रखनेवाले विद्यार्थियोंको मेरी यह सलाह है कि वे अपने अभ्यासके समयमें से अेक सालका समय अिस कामके लिअे अलग निकालें। मैं नहीं कहता कि अेक ही बारमें वे सारा साल दे दें। मेरी सलाह यह है कि वे अपने समूचे अभ्यास-कालमें अिस सालको बाट लें, और थोडा-थोड़ा करके पूरा करें। अुन्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि अिस तरह बिताया हुआ साल व्यर्थ नहीं गया। अिस समयमें की गअी मेहनतके जरिये वे देशकी आजादीकी लड़ाओीमें अपना ठोस हिस्सा अदा करेंगे, और साथ ही अपनी मानसिक, नैतिक और शारीरिक शक्तिया भी बहुत-कुछ बढा लेंगे।

रचनात्मक कार्यक्रम : अुसका रहस्य और स्थान।*

---

*नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद–१४ द्वारा प्रकाशित। कीमत ०.३७, डाकखर्च ०.१३।

सूची

हमारे महत्त्वपूर्ण हिन्दी प्रकाशन

अस्पृश्यता	०.१९
अहिंसक समाजवादकी ओर	१ ००
खादी	२ ००
खुराककी कमी और खेती	२ ५०
गांधीजीकी संक्षिप्त आत्मकथा	० ७५
गोखले — मेरे राजनीतिक गुरु	० ५०
दिल्ली-डायरी	३ ००
नओ तालीमकी ओर	१ ००
बापूकी कलमसे	२ ५०
बापूके पत्र — १ : आश्रमकी बहनोंको	१ २५
बापूके पत्र — २ : सरदार वल्लभभाओके नाम	३ ००
बापूके पत्र मीराके नाम	३ ००
मंगल-प्रभात	० ३७
यरवडाके अनुभव	१ ००
रामनाम	० ५०
राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी	१ ५०
वर्ण-व्यवस्था	१ ५०
विद्यार्थियोंसे	२ ००
शिक्षाकी समस्या	२ ५०
सच्ची शिक्षा	२ ००
सत्यके प्रयोग अथवा आत्मकथा	१ ५०
सत्य ही ओश्वर है	० ८०
सर्वोदय	२.००
हमारे गांवोंका पुनर्निर्माण	१ ५०
हरिजनसेवकोंके लिओ	० ३७
विचार-दर्शन	१ ५०
विवेक और साधना	४ ००
सुमवाद	० ५६
महादेवभाओकी डायरी — १	५.००
महादेवभाओकी डायरी — २	५ ००
,, ,, डायरी — ३	६ ००

हमारे महत्त्वपूर्ण हिन्दी प्रकाशन

अस्पृश्यता	०.१९
अहिंसक समाजवादकी ओर	१ ००
खादी	२ ००
खुराककी कमी और खेती	२ ५०
गांधीजीकी संक्षिप्त आत्मकथा	०.७५
गोखले — मेरे राजनीतिक गुरु	० ५०
दिल्ली-डायरी	३ ००
नयी तालीमकी ओर	१.००
बापूकी कलमसे	२ ५०
बापूके पत्र — १ आश्रमकी बहनोंको	१.२५
बापूके पत्र — २ सरदार वल्लभभाओके नाम	३ ००
बापूके पत्र मीराके नाम	३ ००
मंगल-प्रभात	० ३७
यरवडाके अनुभव	१ ००
रामनाम	० ५०
राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी	१ ५०
वर्ण-व्यवस्था	१ ५०
विद्यार्थियोंसे	२ ००
शिक्षाकी समस्या	२ ५०
सच्ची शिक्षा	२ ००
सत्यके प्रयोग अथवा आत्मकथा	१ ५०
सत्य ही ओश्वर है	० ८०
सर्वोदय	२ ००
हमारे गांवोंका पुनर्निर्माण	१ ५०
हरिजनसेवकोंके लिअे	० ३[illegible]
विचार-दर्शन	१ [illegible]
विवेक और साधना	
सुसवाद	
महादेवभाओकी डायरी — १	
महादेवभाओकी डायरी	
महादेवभाओकी	